अंक 57

राजभाषा भारती

1992

राजभाषा भारती

राजभाषा भारती

कलकत्ता बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित राजभाषा चल वैजयन्ती प्रतियोगिता वर्ष 1989 की श्री यज्ञ महाजन, आंचलिक प्रबंधक, बैंक ऑफ इंडिया, श्री बी॰ के. मुखर्जी, कार्यपालक निदेशक युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया (संयोजक) से चल वैजयन्ती प्राप्त करते हुए।

हिन्दी सप्ताह समारोह 1991 के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकतम अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में केरल के मुख्य मंत्री श्री के. करुणाकरन् से शील्ड प्राप्त कर रहे हैं स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर के महा प्रबंधक (योजना एवं विकास) श्री के. भास्कर राव।

पूर्वे वयसि तत् कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।
यावज्जीवेन तत् कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत् ॥ ---विदुर नीति
(मनुष्य को चाहिए कि आयु के पूर्वार्ध में ऐसा कर्म करे जिससे वृद्धावस्था में सुख से रहे, यावज्जीवन ऐसे कार्य करे, जिससे मरकर परलोक में सुख से रहे।)

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 15
अंक : 57

वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ 1914 शक
अप्रैल-जून, 1992

☐ संपादक
डॉ. महेश चन्द्र गुप्त डी. लिट.
निदेशक (अनुसंधान)
फोन : 617807

☐ उप-संपादक
डॉ० गुरुदयाल बजाज
फोन : 698054

संपादन सहायक
शांति कुमार स्याल

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

☐

निःशुल्क वितरण के लिए

☐

पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (11वां तल)
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

अनुक्रम

संपादकीय
पाठकों के पत्र

☐ चिंतन

1. मणिपुर में हिंदी : ऐतिहासिक संदर्भ — डॉ. जगमल सिंह 1
2. चिकित्सा विज्ञान में हिंदी का महत्त्व — डॉ. अनिल कुमार अग्रवाल 3
3. प्रचार-माध्यम और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी — आर. स्वामीनाथन् 5
4. जल संसाधनों के विकास हेतु भूमिगत संरचनाओं की अभियांत्रिकी — प्रभात कुमार सूद 6
5. अंग्रेजी शिक्षा का अभिशाप और उससे मुक्ति — डॉ. (श्रीमती) स्वर्ण प्रभा अग्रहरि 8
6. भारतीय बैंकिंग प्रबंधन और हिंदी — प्रेम सिंह चौहान 9
7. "कार सेवा" या "कर सेवा" — डॉ. शीलम् वेंकटेश्वर राव 12

☐ साहित्यिकी

8. श्री गुरु गोविंद सिंह का कृष्णावतार — मनोहर सिंह बतरा 13
9. हिंदी और मलयालम : रिश्तेनाते संबंधी शब्दावली — डॉ. नरेश कुमार शर्मा 15

☐ पुरानी यादें—नए परिप्रेक्ष्य में

10. स्वामी भवानी दयाल सन्यासी : एक गौरवमय व्यक्तित्व और हिंदी के अनथक सेवक — ब्रह्मदत्त स्नातक 20
11. कच्छ की हिंदी साहित्य को देन — कुंजभाई अ. मेहता 22

☐ विश्व हिन्दी दर्शन

12. अमेरिका में हिंदी — डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री 23

☐ समिति समाचार

(क) हिन्दी सलाहकार समितियों की बैठकें
1. संसदीय कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली 28

(ख) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 29
1. कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग 2. हिन्दुस्तान पेपर कार्पोरेशन लि. पंचग्राम 3. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, 4. गृह मंत्रालय, 5. रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय, मद्रास।

2209 HA/92

(ग) नगर राजभाषा कार्यान्वियन समितियों की बैठकें 3

1. तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश) 2. रायपुर 3. औरंगाबाद 4. गुण्टूर (आन्ध्र-प्रदेश) 5. मंगलूर (कर्णाटक) 6. देवास (मध्य प्रदेश) 7. हैदराबाद (केन्द्रीय कार्यालय) 8. हुबली (कर्णाटक) 9. सूरत (गुजरात) 10. तिरुअनंतपुरम् (बैंक) 11. बंबई (बैंक) 12. कलकत्ता (बैंक) 13. जबलपुर (बैंक) 14. पुणे (बैंक)

(घ) अन्य राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 48

1. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, बंबई-20
2. केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क समाहर्तालय, औरंगाबाद
3. ग्रेफ सैंट्रल एवं रिकार्ड
4. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
5. आयकर आयुक्त जालन्धर प्रभार (पंजाब)
6. केन्द्रीय जल आयोग, भुवनश्वर
7. आयकर उपायुक्त भटिंडा (पंजाब)
8. आकाशवाणी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

☐ राजभाषा सम्मेलन/संगोष्ठियां 56

1. पूर्वांचल हिंदी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन
2. आकाशवाणी : अहमदाबाद में कवि सम्मेलन
3. हिंदुस्तान लिंक लि. विशाखापट्टणम् में राजभाषा तकनीकी सेमिनार
4. आयुध निर्माणी वरणगांव में पश्चिमी क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन
5. केनरा बैंक, आगरा में अधिकारी और कामगार बैठक
6. मध्य क्षेत्र राजभाषा अधिकारी संगोष्टी, भोपाल
7. सड़क दुर्घटना रोकने के लिए तीन 'इ' जरुरी
8. परमाणु ऊर्जा विभाग, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद

☐ हिन्दी के बढ़ते चरण 62

1. नौवहन महानिदेशालय बंबई में अंतर्राष्ट्रीय उद्योग में हिंदी का प्रचार
2. पंजाब नैशनल बैंक, भोपाल में हिंदी में कामकाज
3. हिंदी के पाठक बढ़ रहे हैं, किताबों के नहीं
4. यूनियन बैंक में हिंदी

☐ हिंदी दिवस/सप्ताह समारोह 65

☐ हिंदी कार्यशालाएं 88

☐ विविधा 96

○ हिंदी में विज्ञान लेखन

○ **समाचार दर्शन**

○ **प्रेरणा–पुंज**

○ **राजभाषा प्रोत्साहन/पुरस्कार समारोह**

—पुस्तक समीक्षा

—आदेश/अनुदेश

संपादकीय

भारत के पूर्वी सीमान्त पर स्थित मणिपुर राज्य की राजभाषा मणिपुरी है। मणिपुर से बाहर जाने पर मणिपुरी लोग और बाहर से आने वाले लोगों के लिए मणिपुर में सामान्यतः हिन्दी ही विचारों के आदान-प्रदान की भाषा है। हिन्दी या उसकी बोलियों का यहां प्राचीन काल से संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग होता रहा है। इस ऐतिहासिक तथ्य का विवेचन मणिपुर विश्वविद्यालय (क़ॉचीपुर, इम्फाल) के हिन्दी विभागाध्यक्ष ने अपने लेख "मणिपुर में हिन्दी : ऐतिहासिक संदर्भ" में किया है।

हमारे देश में यह भ्रांति अभी भी कुछ मात्रा में है कि देश यदि उन्नति कर सकता है तो अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही कर सकता है। इस भ्रांति के शिकार देश के कई शिक्षा-विद्, प्रोफेसर और राजनीतिक लोग हैं। देश में अंग्रेजी जानने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम है। जिसका अर्थ है कि एलोपैथी चिकित्सा विज्ञान पढ़ने वाले छात्र उन थोड़े से अंग्रेजी जानने वाले छात्रों में से ही निकलेंगे। यह शोचनीय स्थिति है। इस संबंध में विशद् चर्चा की है डा. अनिल कुमार अग्रवाल ने अपने लेख "चिकित्सा विज्ञान में हिन्दी का महत्व" में।

वर्तमान युग प्रचार का युग है। किसी विषय को जन-मानस तक पहुंचाने के लिए प्रचार माध्यमों का सहारा लेना एक सामान्य बात है। इन सशक्त माध्यमों पर प्रकाश डाला है श्री आर. स्वामीनाथन् ने अपने लेख "प्रचार माध्यम और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी" में।

कुछ लोग अभी भी इस भ्रम में हैं कि हिन्दी में तकनीकी विषयों को व्यक्त करने की क्षमता नहीं है। परन्तु इस भ्रांति का निराकरण उप मुख्य अभियन्ता श्री प्र.क. सूद के तकनीकी लेख "जल संसाधनों के विकास हेतु भूमिगत संरचनाओं की अभियांत्रिकी" से स्वतः हो जाना चाहिए। इस लेख से यह पता चलता है कि कठिन तकनीकी विषय को भी हिन्दी में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जा सकता है।

अंग्रेजों ने भारतीयों को मानसिक रूप से परतन्त्र बनाए रखने के लिए अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर अंग्रेजी शिक्षा प्रारम्भ की थी, जिसका परिणाम यह हुआ कि स्वतंत्रता के 45 वर्ष बाद भी कुछ लोगों का अंग्रेजी भाषा के प्रति अवांछित आकर्षण बना हुआ है। अंग्रेजी के इस अवांछित आकर्षण के बारे में डा. (श्रीमती) स्वर्ण प्रभा अग्रहरि ने अपने लेख "अंग्रेजी शिक्षा का अभिशाप और उससे मुक्ति" में विवेचन किया है। लगभग एक दशक पूर्व तक बैंकों का काम-काज सामान्यतः अंग्रेजी में ही होता रहा है परन्तु जनता तक पहुंचने के लिए बैंकों को अपना काम काज हिन्दी में करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस पृष्ठभूमि में बैंकिंग प्रबंधन में हिन्दी की उपयोगिता के बारे में बताया है श्री प्रेम सिंह चौहान ने अपने लेख "भारतीय बैंकिंग प्रबंधन और हिन्दी" में।

भाषा की शब्द-संपदा की समृद्धि में उस भाषा की पत्र-पत्रिकाओं की विशेष भूमिका होती है। इसी संदर्भ में सभी समाचार पत्रों में 'कार सेवा' शब्द का प्रयोग हो रहा है; जब कि तेलुगु पत्र-पत्रिकाओं में 'कर सेवा'। इन दोनों शब्दों में कौन सा रूप शुद्ध है इस पर प्रकाश डाला है हिन्दी के विद्वान डा. शीलम् वेंकटेश्वर राव ने अपने लेख "कार सेवा" या "कर सेवा" में।

"साहित्यिकी" स्तम्भ के अन्तर्गत श्री मनोहर सिंह बतरा का लेख "श्री गुरुगोविन्द सिंह का कृष्णावतार" जोड़ा गया है। अधिकांश लोगों को यह जानकारी नहीं है कि गुरु गोविन्द सिंह वीर योद्धा होने के साथ-साथ हिन्दी के मान्य कवि भी थे। उन्होंने कृष्णावतार रचना 2492 पदों में रची। दशम गुरु ने कृष्ण चरित्र के संबंध में प्रबंध काव्य लिखने में पहल की है। वे सदैव जुल्म और जबर के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और अन्याय एवं अनैतिकता के विरुद्ध तलवार उठाकर जालिमों का विनाश करते रहे। इन तथ्यों की जानकारी इस लेख में दी गई है। इसी स्तम्भ के अन्तर्गत डा. नरेन्द्र कुमार शर्मा ने "हिन्दी और मलयालम की रिश्ते-नाते संबंधी शब्दावली" लेख में हिन्दी के साथ मलयालम की तुलना प्रस्तुत की है।

"पुरानी यादें : नए परिप्रेक्ष्य में" स्तम्भ में "स्वामी भवानी दयाल सन्यासी : एक गौरवमय व्यक्तित्व और हिन्दी के अनन्य सेवक" लेख श्री ब्रह्मदत्त स्नातक का है। भारतीय सपूतों में 'स्वामी भवानी दयाल सन्यासी' का अनूठा स्थान है। उन्होंने भारत में और भारत के बाहर विशेषतः प्रवासी भारतीयों के लिए जो कार्य किया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वदेश और विदेश में भारतीयों के सुख-दुःख में हिस्सा बंटाना उनका व्रत था, जिसे उन्होंने आजीवन बड़ी निष्ठा के साथ निभाया।

देश में जहां राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है वहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिन्दी अध्ययन-अध्यापन कार्यक्रम द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। अमेरिका के 23 विश्वविद्यालयों में किसी-न-किसी रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती है। सामान्य विषयों में आधे ग्रेड्स का प्रश्न पत्र प्रायः हिन्दी का होता है। छात्रों को हिन्दी पढ़ना और लिखना सीखने के लिए जोर दिया जाता है। अमेरिकी आकाशवाणी व दूरदर्शन में 50 प्रतिशत से ज्यादा कार्यक्रम हिन्दी में ही होते हैं। इन तथ्यों की जानकारी डॉ कुलदीप चन्द अग्निहोत्री के लेख "अमेरिका में हिन्दी" से आप "विश्व हिन्दी दर्शन" स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित लेख से प्राप्त कर सकते हैं। "समिति समाचार" में पूर्ववत् राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों के विवरण तथा निर्णय दिए गए हैं। विश्वास है कि निर्णयों के पालन की समीक्षा निरन्तर की जा रही होगी और हिन्दी में कामकाज की मात्रा बढ़ाने के लिए सुनिश्चित प्रयत्न किए जाएंगे।

"राजभाषा सम्मेलन/संगोष्ठियां", "हिन्दी के बढ़ते चरण", "हिन्दी दिवस/सप्ताह समारोह" तथा "हिन्दी कार्यशालाएं" स्तम्भ के अन्तर्गत पर्याप्त सामग्री दी गई है। कार्यशालाओं में हिन्दी लिखने का अभ्यास करने वाले कर्मचारीगण हिन्दी में काम करें, यह सुनिश्चित कराना आवश्यक है।

"विविधा" के अन्तर्गत "हिन्दी में विज्ञान लेख" जोड़ा गया है। "समाचार दर्शन", "प्रेरणा पुंज", 'राजभाषा प्रोत्साहन/पुरस्कार योजना', 'पुस्तक समीक्षा' तथा "आदेश-अनुदेश संबंधी" विभिन्न आलेख दिए गए हैं।

"राजभाषा भारती" पत्रिका के बारे में पाठकों की प्रतिक्रिया इसे संवारने-निखारने में सहायक होती है। अतः पाठकों के सुझावों/विचारों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

पाठकों के पत्र

"राजभाषा भारती" का अप्रैल-जून 1991 में हिन्दी निरूपण के अन्तर्गत प्रकाशित विभिन्न विचार व लेख जैसे "समकालीन साहित्य में साहित्यिक संस्थानों की भूमिका" "अंग्रेजों के शासनकाल में हिन्दी" तथा "सामाजिक उत्थान में परमाणु विद्युत का योगदान" अत्यंत ही सराहनीय, उच्च स्तरीय ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। ऐसे लेख हमें क्रमशः हिन्दी के विस्तृत प्रयोग इतिहास की विभिन्न पहलू में हिन्दी की स्थिति एवं अंत में विद्युत के उपयोग के प्रति हमारा उचित दृष्टिकोण तथा अभाव के निराकरण के बारे में बहुत ही महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। "चिन्तन" उपशीर्षक के अन्तर्गत उत्तम लेख दिए हैं, जो रोचक और पठनीय हैं तथा ऐसे लेख हमें व्याकरण के शास्त्रों में सर्वोत्तम स्थान के विषय में भी विदित कराते हैं। देश के विभिन्न भागों में सम्पन्न राजभाषा सम्बन्धी कार्यक्रमों तथा इसका अधिकाधिक प्रयोग सम्बन्धित सूचनाएं प्रेरक तथा उत्साहवर्द्धक है। पत्रिका का अधिकांश भाग राजभाषा नीति के कार्यान्वियन संबंधी सूचनाओं से परिपूर्ण है, जिससे हम पाठकों को राजभाषा नीति के कार्यान्वियन के मामले में काफी उत्साहित करते हैं।

भविष्य में यह पत्रिका उतनीही उपयोगी और अनमोल साबित हो जैसा कि अब है। यह भी हमारी कामना है। इस पत्रिका के लेखकों और सम्पादक मंडल को इस निर्माणी के अधिकारीगण एवं कर्मचारी वृन्द की ओर से हार्दिक बधाई।

—राम कंवल, हिन्दी अधिकारी, रक्षा मंत्रालय, धातु एवं इस्पात फैक्टरी, ईशापुर-743144

राजभाषा भारती का अंक 52 अत्यन्त उपयोगी तथा कार्यालयी हिन्दी के सभी पक्षों को उजागर करने वाला सिद्ध हुआ है। इसकी एक विशिष्टता यह भी रही कि इसमें प्रयोजन मूलक तथा कार्यालयीन विषयों पर लिखी पुस्तकों की समीक्षा प्रकाशित की गई है। दरअसल ऐसी पुस्तकों की समीक्षा व्यापारी और साहित्यिक पत्रिकाएं नहीं देती जिस के कारण इन पुस्तकों का उपयोग और गरिमा का परिचय राजभाषा से जुड़े महानुभावों को नहीं हो पाता।

आपका यह प्रयास बहुत सराहनीय है। आशा है कि "राजभाषा भारती" के माध्यम से प्रयोजनमूलक तथा राजभाषा से संबंधित कार्यालयीन विषयों पर लिखी गई समस्त पुस्तकों की समीक्षा धारावाहिक रूप से देंगे।

—दंगल झाल्टे, उप निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान राजेन्द्र नगर, हैदराबाद-500030

"राजभाषा भारती" का अप्रैल-जून 1991 अंक मिला। कुशल मार्गदर्शन में संपादित यह पत्रिका निश्चय ही राजभाषा के प्रयोग, प्रचार का प्रसार के कार्य में लगे लोगों का मार्गदर्शन करती है।

—टोकन लाल शर्मा, हिन्दी अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, ई.एस.आई.सी. भवन, मध्य मार्ग, सैक्टर 19ए, चंडीगढ़-160019

"राजभाषा भारती अंक 52" वैसे तो सारी ही महत्त्वपूर्ण और उपयोगी जानकारी से परिपूर्ण है किन्तु साहित्यिकी खड में प्रकाशित एक मात्र लेख "मातृ भाषा पंजाबी का मानक हिन्दी सीखने में व्याघात : डा. नरेन्द्र कुमार शर्मा" अपने ढंग का अनूठा है। राष्ट्रभाषा हिन्दी का मानक स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक सारे राष्ट्र में ही सभी भाषा-भाषियों के लिए ही सहज और बोधगम्य हो।

यह सक्रांति-काल है जिसमें हिन्दी का मानक स्वरूप विकसित करना से और इसमें सभी भारतीय भाषाओं की अच्छाइयों का समावेश करना है ताकि देश के सभी लोग इसे 'अपनी' भाषा मानने में गर्व और आनन्द अनुभव करें। इस दृष्टि से जिस प्रकार इस लेख में मातृ-भाषा पंजाबी के व्याघात पर शोध किया गया है उसी प्रकार सभी भाषाओं के संबंध में शोध होने की आवश्यकता है। ऐसा शोध भी किसी एकाध लेख तक ही सीमित न हो बल्कि बड़ी गहराइयों तक जाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए इसी लेख में लिंग स्तर पर व्याघात बताते हुए लिखा है कि अखबार शब्द हिन्दी में पुल्लिग है तो पंजाबी में स्त्रीलिंग। इसका स्पष्ट कारण है कि हिन्दी में "समाचार पत्र" पहले से ही मौजूद है जो पुल्लिग है, किन्तु पंजाबी में अपना कोई शब्द न होने के कारण 'अखबार' उर्दू (या फारसी) से ले लिया गया है जो वास्तव में "खबर" शब्द का बहु-वचन है। अब चूंकि खबर स्त्रीलिंग है इसलिए उसका बहु-वचन अखबार भी

स्त्रीलिंग हुआ। इसी प्रकार सभी व्याघातों का विश्लेषण होना चाहिए।

वास्तव में यह भाषा-विज्ञान के विद्वानों का काम है कि वे देश की सभी भाषाओं की विशेषताओं से राष्ट्रभाषा को समृद्ध करें। राजभाषा भारती उनके विचार प्रकाशित करके हिन्दी की अत्यंत महत्त्वपूर्ण सेवा करेगी।

—विश्वंभर प्रसाद गुप्त बंधु', बी-154, लोक बिहार, पीतमपुरा दिल्ली-110034

राजभाषा-भारती का प्रत्येक अंक एक संदर्भ पुस्तिका के रूप में सज-संवर कर सामने आ रहा है। 51वां अंक आद्योपान्त पढ़ा। चिन्तन में प्रकाशित लेख उच्चस्तरीय हैं। "सभी भारतीय भाषाओं की सम्पर्क लिपि देवनागरी" एवं "अंग्रेजी हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोष निर्माण में डा. रघुवीर का योगदान" लेख उत्कृष्ट बन पड़े हैं। समिति समाचार, राजभाषा सम्मेलन, हिन्दी के बढ़ते चरण एवं आदेश-अनुदेश सूचनात्मक हैं जिनका ज्ञान प्रत्येक राजभाषा अधिकारी को होना चाहिए।

—इन्द्र कुमार शर्मा, उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा) आंचलिक कार्यालय, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, 374-बी, एक्जीबिशन रोड, पटना-800 001

पत्रिकाओं के विभिन्न स्तंभों, विशेषतः "चिंतन", "साहित्यिकी" और "पुरानी यादें: नए परिप्रेक्ष्य" के अन्तर्गत प्रकाशित निबंध ज्ञानवर्धक और सूचनाप्रद हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में समायोजित हिन्दी प्रयोग और राजभाषा कार्यान्वियन संबंधी अन्य सूचनाएं हिन्दी के देशव्यापी परिप्रेक्ष्य का परिचय देती हैं।

—डा. ओम प्रकाश मिश्र, राजभाषा अधिकारी, इलाहाबाद बैंक, उत्तर मंडलीय कार्यालय, 17 संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

पत्रिका अत्यंत सुंदर एवं उपयोगी है। संपादकीय समयानुकूल और उपयोगी एवं छात्रों के लिए लाभप्रद है। हिन्दीतर क्षेत्रों के लिए यह पत्रिका बहुत उपयोगी एवं जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुकूल है। यह पत्रिका मनोरंजन तथा उच्चकोटि की है।

—बी.एस. शांताबाई, सचिव, कर्णाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, 178, 4 मुख्य मार्ग चामराज पेट, बेंगलूर-18

चिंतन

मणिपुर में हिंदी : ऐतिहासिक संदर्भ

—डॉ. जगमल सिंह,*

पूर्वी सीमांत पर स्थित मणिपुर राज्य की भाषा मणिपुरी है। मणिपुरी भाषा को "मैतै (मीतै) लोन" भी कहा जाता है। ए. जार्ज ग्रियर्सन ने मणिपुरी भाषा को चीनी-तिब्बती परिवार की एक स्वतंत्र भाषा माना है। हिंदी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। मणिपुरी के अतिरिक्त मणिपुर में तीस मान्यताप्राप्त बोलियां और लगभग इतनी ही अन्य बोलियां प्रचलित हैं, जिन्हें मान्यता नहीं मिल सकी है। 22,327 वर्ग कि.मी. का यह राज्य बहुभाषी है और इसकी चौदह लाख जनता की संपर्क भाषा मणिपुरी है। मणिपुर से बाहर जाने पर मणिपुरी लोग और बाहर से आने वाले लोगों के लिए मणिपुर में हिंदी संपर्क भाषा है। हिंदी या उसकी बोलियों का यहां प्राचीनकाल से संपर्क भाषा के रूप में उपयोग होता रहा है। मणिपुर में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का कब से उपयोग होता रहा है? प्रश्न का उत्तर मणिपुर के उपलब्ध ऐतिहासिक सूत्रों में खोजा जा सकता है।

मणिपुरी भाषा में संस्कृत ग्रंथों के अनुवाद की परंपरा प्राचीनकाल से है। महाभारत के आदि पर्व और अश्वमेध पर्व में मणिपुर का उल्लेख है। अर्जुन का मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा से विवाह और बभ्रुवाहन के जन्म की कथा महाभारत में उपलब्ध है। यद्यपि यह संदर्भ विवादास्पद है तथापि मणिपुरी पौराणिक संदर्भों से मणिपुर का संस्कृत से संबंध सिद्ध होता है। मणिपुरी पुराण में जिन्हें "पुया" कहा जाता है, संस्कृत शब्दों का प्रयोग हुआ है।

1. आव्रजन

मणिपुर के इतिहासकार प्रो. राजकुमार झलजीत सिंह के अनुसार 700 ई. के आसपास मणिपुर में रामायण और महाभारत लोकप्रिय ग्रंथ थे। मणिपुर के हस्तलिखित इतिहास ग्रंथ "चैथरोल कुम्बाबा" में पन्द्रहवीं शताब्दी में राजा कयाम्बा (कियाम्बा) के शासनकाल में भारत के विभिन्न भागों से ब्राह्मण आव्रजन का उल्लेख है। "बामन कुन्थोक" नामक हस्तलिखित ग्रंथ से भी यह तथ्य प्रमाणित होता है। बाहर से आने वाले ब्राह्मणों ने यहां की स्त्रियों से विवाह किए और यहीं के स्थायी निवासी बन गए। ये आव्रजक गुजरात, ब्रज, वृन्दावन, कन्नौज, मथुरा, मिथिला आदि स्थानों से पहुंचे थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में हिंदी विभाषाएं ब्रज, अवधि, मैथिली आदि का अस्तित्व था। अतः मणिपुर में हिंदी की ऐतिहासिक यात्रा का आरंभ इसी समय से माना जा सकता है।

राजा खगेम्बा (सन् 1527-1652) के राज्यकाल में 1606 ई. में कछार से मुसलमान एवं निम्न जाति के हिंदुओं के आव्रजन के ऐतिहासिक प्रमाण हैं। ये सैनिक भारत के पश्चिमी प्रदेशों से आए थे। ये अपनी भाषाएं साथ लाए। ब्राह्मण आव्रजन 1467 ई० से आरंभ हुआ जो 1834 ई० तक जारी रहा। सन् 1470 में एक ब्राह्मण द्वारा विष्णु पूजा का ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है। इन ऐतिहासिक तथ्यों से हिंदी की बोलियों का मणिपुर से पन्द्रहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक निरंतर संपर्क होता रहा।

2. सिक्कों की जबानी

अठारहवीं शताब्दी में मणिपुर में हिंदी प्रचलन की कहानी सिक्कों की जबानी सुनी जा सकती है। महाराजा गरीब निवाज (1809-1891 ई.) के उपलब्ध सिक्कों पर देवनागरी लिपि और संस्कृत भाषा में इबारत मिलती है। 1890-91 ई० तक के सिक्कों पर भी यह स्थिति है। दो शताब्दी के बीच विभिन्न राजाओं के इन सिक्कों से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि मणिपुर में देवागरी लिपि एवं संस्कृत भाषा का प्रचलन था।

3. भक्ति साहित्य

मणिपुर राज्य में 1709 ई. में ही वैष्णव भक्ति का प्रचार-प्रसार हुआ। उसके बाद प्रत्येक राजा ने श्रीराधा-गोविंद की आरती की रचना की। महाराजा भाग्यचन्द्र (1759-98 ई.) की

*हिंदी विभागाध्यक्ष मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर, इम्फाल—3

प्रार्थना उपलब्ध है। इससे पूर्व भी प्रार्थनाएं लिखी गई होंगी किन्तु वे काल कवलित हो गई हैं। भाग्यचन्द्र की प्रार्थना की आरंभ की पंक्तियां हैं—

"प्राणनाथ गोविंद गुनेर सागर
अधम पतित जानि ना छाड़ किंकर"

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि मणिपुर में हिंदी का प्रारंभिक रूप प्रचलित था। भाग्यचन्द्र महाराज की पुत्री बिम्बावती मंजरी को जिन्हें मणिपुरी मीरां या अंडाल कहा जाता है प्रार्थनाओं और विरह गीतों में भी इसी भाषा का प्रयोग है। यह क्रम मणिपुर के अंतिम महाराजा बोधचन्द्र सिंह (1941 से 55 ई.) तक निरंतर चलता रहा ।

4. धार्मिक यात्राएं

धार्मिक कारणों से मणिपुर भारत के अन्य भागों से जुड़ा रहा। महाराजा गरीबनिवाज की पुत्री 18 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में वृन्दावन तीर्थयात्रा पर गई। इससे सहज ही यह अनुमान होता है कि पुरुष इससे पूर्व तीर्थ यात्रा पर जाते रहे होंगे। महाराज भाग्यचन्द्र की गंगा यात्रा और बिम्बावती की वृन्दावन यात्रा भी ऐतिहासिक तथ्य हैं। पश्चिमी भाषाओं और बोलियों के ज्ञान के अभाव में अठारहवीं शताब्दी में ये यात्राएं असंभव थीं। उस समय से आज तक सैकड़ों लोग तीर्थ यात्राओं पर पुरी, वृन्दावन, प्रयाग, काशी, हरिद्वार आदि स्थानों पर जाते हैं। तीर्थ स्थानों पर मणिपुर के राजा-महाराजाओं तथा अन्य लोगों द्वारा बनवाए गए प्राचीन भवन इन यात्राओं के साक्षी हैं। 1890 ई. की मणिपुर क्रांति के प्रसिद्ध शहीद ब्रजवासी पावना का बाल्यकाल ब्रज में व्यतीत हुआ था इसीलिए उनको ब्रजवासी कहा जाता है।

5. स्वतंत्रता आंदोलन

हिन्दी प्रचार का इतिहास स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ा हुआ है। जब हिन्दी प्रचार को देशद्रोह माना जाता था उस समय यहां स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेताओं ने हिन्दी का प्रचार आरंभ किया। तत्कालीन अंग्रेज पॉलीटिकल एजेंट ने उन्हें बुलाकर डराया-धमकाया किन्तु वे भयभीत नहीं हुए। श्री कैशाम कुंज बिहारी, पं. ललित माधव शर्मा, पं बंक बिहारी शर्मा, अतुलचंद्र सिंह, थोकचोम मधु सिंह, जयेन्द्र शर्मा आदि स्वतंत्रता संग्राम के नेता थे जिन्होंने गांधी जी के आदेश पर हिन्दी का प्रचार किया। अपनी हस्तलिखित पुस्तकों से सरकार से छिपकर घर-घर जाकर इन लोगों ने हिन्दी प्रचार किया। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में मणिपुर से अनेक लोक हिन्दी संस्कृत के अध्ययन हेतु काशी, कलकत्ता आदि स्थानों पर गए। वहां वे गांधी जी से प्रभावित हुए और मणिपुर में आकर इन लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ हिन्दी प्रचार भी किया।

6. हिन्दी स्वैच्छिक संस्थाएं

1927 ई. में हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का एक परीक्षा केन्द्र कांचीपुर में खोला गया। 1940 में इम्फाल व अन्य स्थानों पर भी परीक्षा केन्द्र आरंभ किए गए। 1939 ई. में श्री यमुना प्रसाद श्रीवास्तव इम्फाल पहुंचे। उन्होंने कई स्थानों पर जन सभाओं को संबोधित किया। श्री अमृतलाल नाणावटी और काका कालेलकर भी मणिपुर पहुंचे। जब भी ये प्रचारक यहां आए जासूस व पुलिस इनके साथ लगी रही परन्तु जन समर्थन के कारण इन्हें बंदी नहीं बनाया जा सका। 1940 ई. में मणिपुर हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की गई। 1946-47 में पं. छत्रध्वज शर्मा ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा से प्रशिक्षण प्राप्त करके मणिपुर में "समिति" की शाखा आरंभ की "समिति" की यह शाखा आज भी मणिपुर में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही है।

1947 ई. में मणिपुर हिन्दी प्रचार सभा, अकामपात की स्थापना हुई। 1953 ई. में मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल और 1958 में नागरी लिपि प्रचार सभा, इम्फाल की स्थापना हुई। नागा हिन्दी विद्यापीठ (1970), मणिपुर ट्राइबल हिन्दी सेवा समिति (1982), वांबै राष्ट्रभाषा महाविद्यालय (1960), मणिपुर राष्ट्रभाषा शोध लिपि कॉलेज (1976), हिन्दी प्रचार परिषद्, कर्काविड, उरिपोक हिन्दी महाविद्यालय आदि अनेक संस्थाओं की मणिपुर में हिन्दी प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में इन संस्थाओं में पढ़कर विद्यार्थी हिन्दी परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं। मणिपुर के कॉलेजों, मणिपुर विश्व-विद्यालय, पाठशालाओं में भी हिन्दी का अध्ययन अध्यापन होता है।

7. सेना एवं सुरक्षा बलों की भूमिका

सन् 1823 में गंभीर सिंह के नेतृत्व में 500 मणिपुरी सिपाही ब्रिटिश सेना में भरती किए गए। यह संख्या आगे चलकर 3000 तक पहुंच गई। 1835 ई० में मणिपुर में ब्रिटिश सरकार के प्रथम पॉलिटिकल एजेंट की नियुक्ति की गई। उसकी सुरक्षा के लिए ब्रिटिश सेना की टुकड़ी मणिपुर में रहती थी। सेना में हिन्दुस्तानी का संपर्क भाषा के रूप में उपयोग होता रहा है। सेना के साथ बनिये भी रहते थे जो सेना के लिए रसद का प्रबंध करते थे। 1857 ई. की क्रांति में मणिपुर के राजपरिवार के कुछ सदस्यों ने चिटगांग से आने वाले क्रांतिकारी सैनिकों का साथ दिया। संपर्क भाषा के अभाव में यह संभव नहीं था। 1891 ई. की मणिपुर राजप्रसाद की क्रांति से संबंधित पुस्तकों में हिन्दुस्तानी भाषा के प्रचलन के प्रमाण मिलते हैं। मणिपुर में 19 वीं शताब्दी में हिन्दी प्रचार का श्रेय सेना को दिया जा सकता है।

बीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश सेना की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई। द्वितीय विश्व युद्ध के समय तो भारी संख्या में ब्रिटिश सेना घाटी व पर्वतीय भाग में उपस्थित थी। 1944 ई.

[शेष पृष्ठ 4 पर]

चिकित्सा विज्ञान में हिन्दी का महत्त्व

□ डा. अनिल कुमार अग्रवाल*

चिकित्सा विज्ञान हमेशा से ही मनुष्य के जीवन के साथ इस प्रकार जुड़ा हुआ है जैसे सूर्य के साथ सूर्य की किरणें। बिना चिकित्सा विज्ञान के मानव के स्वास्थ्य जीवन की कल्पना करना ही मुश्किल है। चिकित्सा विज्ञान का अधिकतम लाभ जनता को तब ही मिल सकता है जब चिकित्सक और रोगी की भाषा एक ही हो। रोगी अपनी बीमारी के बारे में डाक्टर को केवल अपनी ही भाषा में ठीक प्रकार से बता सकता है। डाक्टर भी रोगी की बीमारी तभी ठीक प्रकार से समझ सकता है जब डाक्टर को भी रोगी की भाषा का पूर्ण ज्ञान हो। तब ही डाक्टर रोगी की बीमारी का ठीक प्रकार से निदान कर सकता है और रोगी को रोग मुक्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त एक विशेष बात यह है कि डाक्टर ने डाक्टरी ज्ञान अर्थात् अपने विद्यार्थी काल में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा किस भाषा के माध्यम से प्राप्त की है। जैसा कि अनुभवों से पता चलता है, वे देश जहां पर चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा उनकी मातृभाषा में दी जाती है वहां के डाक्टर अपने देश के रोगियों का इलाज करने में अधिक सक्षम होते हैं, जैसे चीन, जापान, रूस, फ़्रांस, जर्मन आदि।

हमारे देश में यह एक भ्रांति बहुत ही भयानक रूप से अपनी जड़ें जमाए हुए है कि देश अगर तरक्की कर सकता है तो केवल अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ही कर सकता है। इस भ्रांति के शिकार हमारे देश के अधिकांश शिक्षा-विद, प्रोफेसर, अफसर और राजनैतिक नेतागण आदि हैं। यह भ्रांति उनकी मानसिक परतंत्रता की द्योतक है।

हमारे यहां अंग्रेजी जानने वाले विद्यार्थियों की संख्या दो प्रतिशत से भी कम है। इस का मतलब यह हुआ कि जितने भी डाक्टर हमारे देश में बनेंगे वे सब केवल इन्हीं दो प्रतिशत छात्रों में से बनेंगे। क्योंकि हमारे यहां डाक्टर बनने के लिये शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी है। अब ये मुट्ठी भर छात्र चाहे योग्य हैं या नहीं डाक्टर बनने के काबिल समझे जाते हैं। क्या अन्य छात्र इस योग्य नहीं हैं कि वो भी डाक्टर बन सकें। इसका उत्तर यह है कि अन्य छात्र भी अंग्रेजी जानने वालों से किसी भी प्रकार योग्यता में कम नहीं है। अन्तर सिर्फ इतना है कि ये छात्र जिस परिवेश में रहते हैं, जिस स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते हैं वहां अंग्रेजी केवल एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है और छात्र डाक्टरी में प्रवेश के लिये आयोजित प्रतियोगी परिक्षाओं में हिस्सा नहीं ले पाते हैं क्योंकि प्रवेश प्रतियोगी परिक्षाओं का माध्यम अंग्रेजी है।

यदि हम इन 98 प्रतिशत से अधिक संख्या के छात्रों को भी डाक्टर बनने के लिये प्रोत्साहित करना चाहते हैं तो मेडीकल कालेज में प्रवेश एवं शिक्षा का माध्यम हिन्दी बनाना होगा जिससे हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले योग्य छात्र भी डाक्टर बन सकें और देश की सेवा कर सकें।

इस संदर्भ में एक शंका यह भी की जाती है कि क्या डाक्टरी शिक्षा हिन्दी माध्यम से पढ़ाने के बाद हमारे डाक्टर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य देशों के डाक्टरों का मुकाबला कर सकेंगे। डाक्टरी की पढ़ाई में मुख्य रूप से जो विषय पढ़ाए जाते हैं वे हैं एनाटमी, फिजीयोलोजी, पैथोलोजी, गायनेकोलोजी मेडिकल-सर्जरी, हाइजिन, आदि। एनाटमी में विभिन्न अंगों का ज्ञान करवाया जाता है जिसमें मृत शरीर की चीड़-फाड़ भी शामिल है। यदि हम शरीर के अंगों के नाम चाहें तो पूर्णतया अंग्रेजी वाले भी अपना सकते हैं। और उनका विश्लेषण हिन्दी में कर सकते हैं। एनाटमी की सबसे महत्त्वपूर्ण पुस्तक का नाम ग्रेज एनाटमी है। जिसका हिन्दी रूपांतर बड़े आराम से किया जा सकता है और हिन्दी में रूपांतर करते समय; अंगों, नसों, नाड़ियों, का नाम बिना किसी बदलाव के हिन्दी में प्रयोग कर सकते हैं। चिकित्सा-विज्ञान में अधिकांश शब्द जिन्हें हम अंग्रेजी के शब्द समझते हैं उनमें से अधिकांश शब्द अंग्रेजी के हैं ही नहीं। अंग्रेजी में भी ये सभी शब्द बिना किसी बदलाव के लेटिन भाषा से ग्रहण किए गए हैं और अंग्रेजी को समृद्ध बनाया गया है। इसी प्रकार हम भी इन शब्दों को बिना किसी हिचकिचाहट के हिन्दी में अपना कर चिकित्सा शास्त्र का माध्यम अंग्रेजी से बदल कर हिन्दी में कर सकते हैं। यह उदाहरण चिकित्सा विज्ञान के सभी विषयों पर अमल में आसानी से लाया जा सकता है।

प्रत्येक चिकित्सा प्रणाली में, विशेष रूप से होम्योपैथिक विज्ञान में सबसे अधिक महत्त्व रोगी के लक्षणों को दिया जाता है। ये लक्षण दो प्रकार के होते हैं—मानसिक और शारीरिक। डाक्टर पहले इन लक्षणों को हिन्दी में सुनता है, फिर इनका अंग्रेजी में अनुवाद करता है। उसके बाद इन लक्षणों को मेटीरिया मेडिका में प्रयुक्त लक्षणों के

* यू.वी./114 सी, शालीमार बाग, दिल्ली—52

अनुरूप मिलाने की कोशिश करता है । जब लक्षण मिल जाते हैं तो रोगी का निदान होता है । इसका मतलब यह हुआ कि केवल रोगी के रोग का निदान करने में ही उसे दो बार बीच में भाषा अनुवाद की जरूरत पड़ी। यदि चिकित्सा विज्ञान और रोगी की भाषा का माध्यम एक ही होता तो डाक्टर को इस भाषा अनुवाद के चक्कर में नहीं पड़ना पड़ता । डाक्टर बहुत आसानी से रोगी के रोग का निदान करने में सक्षम हो जाता।

प्रायः यह कहा जाता है कि हिन्दी में चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकों का अभाव है । किन्तु, पिछले दस पन्द्रह वर्षों में चिकित्सा क्षेत्र में भी भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, स्वास्थ्य मंत्रालय, राज्य सरकारों और निजी प्रकाशकों ने काफी अधिक चिकित्सा साहित्य हिन्दी में प्रकाशित किया है । और बहुत सारा प्रकाशनाधीन है। इन पुस्तकों का स्तर अंग्रेजी भाषा में लिखी पुस्तकों से किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। अतः चिकित्सा विज्ञान की प्रत्येक शाखा जैसे एलोपैथी, होम्योपैथी की शिक्षा बहुत ही आसानी से हिन्दी माध्यम में दी जा सकती है।

देश के अनेक वरिष्ठ चिकित्सकों का भी यही मत है कि देश में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही होना चाहिए तभी भारत चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र भी दुनिया में अपना सिर उठा कर चल सकेगा । अन्यथा इस क्षेत्र में भारत हमेशा दूसरे देशों की तरफ मुंह ताकता रहेगा । जो कुछ अन्य देश वाले सिखा देंगे सीख लेगा । लेकिन अपने आप कुछ भी नहीं कर पाएगा क्योंकि प्रत्येक देश की भौगोलिक स्थितियां भिन्न प्रकार की होती हैं जिसके अनुरूप जड़ी बूटियों की खोज और रोगों का निदान करके ही हम अपने देश में फैली हुई अनेक बीमारियों पर काबू पा सकेंगे । देश में उपलब्ध योग्य छात्रों का लाभ देश को पूरी तरह मिल सकेगा ।

हिन्दी माध्यम होने से देहात से जुड़े छात्र भी डाक्टर बन सकेंगे और डाक्टर बनने के बाद ये छात्र ही ग्रामीण जनता की सेवा करने में आगे रहेंगे। हिन्दी माध्यम से बना डाक्टर विदेशों में जाकर बसने की बात नहीं सोचेगा जबकि आज अंग्रेजी माध्यम में पढ़े डाक्टरों का विदेशों के लिये प्रतिभा पलायन होता रहता है । और इस प्रकार राष्ट्र के द्वारा उनकी पढ़ाई पर व्यय किया गया लाखों रुपया बेकार चला जाता है । □

[पृष्ठ 2 का शेषांश]

में आजाद हिन्द फौज भी बर्मा की ओर से मणिपुर में घुस आई और बहुत बड़े भू-भाग पर कब्जा कर लिया । आजाद हिन्द फौज के बहुत से सैनिक यहां बसे हुए हैं। उनका कहना है कि हिन्दुस्तानी के माध्यम से ही हमारा स्थानीय लोगों से संपर्क था । यह मोर्चे पर लड़ने वाले ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की । विश्वयुद्ध के बाद सेना और विभिन्न आरक्षीबल यहां आते रहे हैं जिनका स्थानीय जनता से हिन्दी के माध्यम से ही संपर्क संभव है । प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में मणिपुर से भी बहुत बड़ी संख्या में सैनिक भेजे गए और आज भी सेना में स्थानीय लोगों का जाना जारी है जो हिन्दी के माध्यम से ही संपर्क करते हैं। सेना के कारण सुदूर अगम्य स्थानों से लेकर कस्बों व नगरों तक में हिन्दी बोली व समझी जाती है ।

आकाशवाणी, चलचित्र और दूरदर्शन

मणिपुर में आकाशवाणी और चलचित्रों के द्वारा हिन्दी का प्रचार प्रसार बहुत तेजी से हुआ है । हिन्दी प्रचार में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। जब से दूरदर्शन का आगमन हुआ हिन्दी प्रचार-प्रसार की गति दुगनी हो गई है ।

इस सुदूर प्रान्त को भारत से जोड़ने का कार्य 15 वीं शताब्दी से हिन्दी ने किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् मणिपुरी से हिन्दी और हिन्दी से मणिपुरी अनुवाद कार्य, हिन्दी पुस्तकों का प्रकाशन, हिन्दी पत्रकारिता, कवि सम्मेलन कोश, मणिपुरी एवं हिन्दी भाषा साहित्य पर तुलनात्मक शोध कार्य, मौलिक ग्रंथ तथा पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन मणिपुर में हिन्दी की ऐतिहासिक यात्रा के पथ पर मील के पत्थर हैं । □

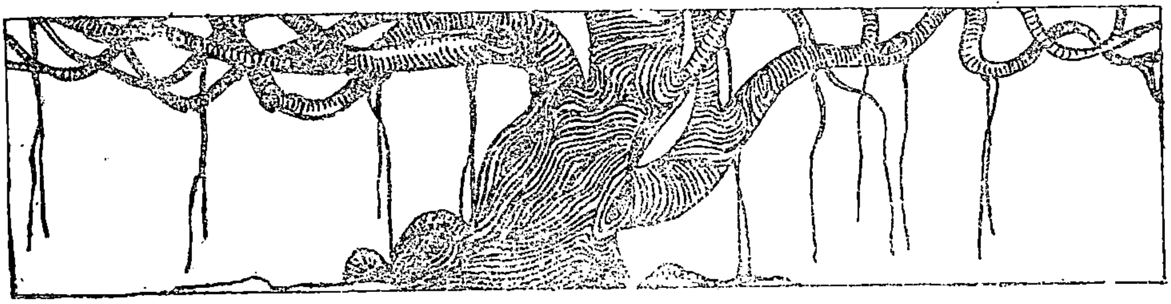

प्रचार माध्यम और हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी

□आर स्वामीनाथन्*

आज का युग प्रचार का युग है किसी विषय को जनमानस तक पहुंचाने के लिए प्रचार एक सशक्त उपाय हैं जिसका काफी प्रभाव पड़ता है।

प्रचार के माध्यम से गुणहीन को गुणवान, घटिया को बढ़िया, महत्त्वहीन को महत्त्वपूर्ण बनाया जा सकता है। इसलिए यह देखा जाता है कि राजनैतिक नेता अधिक से अधिक समाचारों में बने रहना चाहते हैं।

बार बार किसी चीज का प्रचार करने से स्वयं उसका प्रसार होने लगता है यही कारण है कि हर क्षेत्र में इस साधन का उपयोग किया जाने लगा है। पूंजीवादी व्यवस्था में उसी व्यक्ति को बड़ा समझा जाता है जिसके पास कार, आलीशान कोठो बंगला आदि हो। ऐसे में प्रत्येक उत्पादक का यह लक्ष्य रहता है कि उसके उत्पादन की विशेषताओं या गुणों का प्रचार आम जनता तक अधिक से अधिक हो जिससे अपने उत्पादन की बिक्री को बढ़ाकर वह अपने लाभ को अधिकतम कर सके।

प्रचार माध्यमों के अंतर्गत मोटे तौर पर प्रेस, रेडियो, दूरदर्शन, साईन बोर्ड, समाचार पत्र और सिनेमा को मुख्य रूप से माना जा सकता है।

यह स्पष्ट है कि प्रचार धार्मिक हो, सामाजिक हो, राजनैतिक हो, व्यापारिक हो या वैयक्तिक हो वह जनसाधारण की भाषा में ही होना चाहिए।

स्वतन्त्रता के पूर्व हम लोग ब्रिटिश सरकार के अधीन थे। इसलिए उस समय हमारे देश की राजकाल की भाषा सामान्यता अंग्रेजी थी, जो ब्रिटिश सरकार की राजभाषा थी। तब अधिकांश प्रचार और प्रचार अंग्रेज़ी में होता था। अभी भी हो रहा है। यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है

स्वतन्त्रता के बाद हमारे संघ को राजभाषा संविधान की धारा 343 की उप धारा (1) के अन्तर्गत देव नागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी स्वीकार की गई और संघ के राजकार्य प्रयोजन के लिए प्रयोग होने वाले अंक भारतीय अंको के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप (यानी वर्तमान में रोमन अंको) को स्वीकार किया गया।

डा. शंकर दयाल शर्मा जी ने कहा है कि भाषागत वैविध्यता हमारी सांस्कृतिक समृद्धता का प्रमाण है। लेकिन राष्ट्रीय एकता एक ऐसे सूत्र की मांग करती है, जिसमें इन पुष्पों को पिरोया जा सके ताकि वे सब एक दूसरे की खुशबुओं से परिचित हो सकें। हिन्दी भाषा को मैं एक ऐसा ही सूत्र मानता हूं।

हमारी देश की जनसंख्या के सबसे बड़े भाग द्वारा समझी बोली और लिखी जाने वाली भाषा हिन्दी को प्रचार प्रसार के माध्यम के रूप में प्रयोग करने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

(एक) रेडियो पर अधिकतर कार्यक्रम हिन्दी भाषाओं में प्रसारित होना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लोग आनन्द उठा सकें। (दो) वस्तुओं के विक्रय के सम्बन्ध में विज्ञापन भी हिन्दी में होना चाहिए। (तीन) हम जानते हैं कि दूरदर्शन अधिक लोकप्रिय और प्रभावी माध्यम है। इस में अधिक से अधिक हिन्दी में कार्यक्रम होने चाहिए। (चार) सरकार की फिल्म डिवीजन को ज्यादातर फिल्में हिन्दी में होनी चाहिए। (पांच) संसद सदस्यों का व्यवहार सब हिन्दी भाषा में ही होनी चाहिए। (छः) हमारी सरकार अपने हर स्तर पर हिन्दी का खुलकर प्रयोग करे तो प्रचार माध्यमों में अपने आप इसका प्रयोग होने लगेगा क्योंकि प्रचार माध्यमों का दिन रात यही काम रहता है कि सरकार कहां क्या कर रही है। इस बात को जन भाषा में पहुंचाना इससे सरकार को भी दोहरे लक्ष्य की प्राप्ति होगी। (सात) महानगरों में सड़क के चौराहों पर बड़े-बड़े धातु बोर्ड, बसों द्वारा किए जाने वालों प्रचार में हिन्दी को पहला स्थान देना अनिवार्य कर देना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र को संस्था यूनेस्को ने स्वीकार किया है कि हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा हैं भारत के अतिरिक्त लगभग 50 देशों में हिन्दी के जानने वाले लोग हैं।

हिन्दी की लोकप्रियता का प्रमाण अब तक हुए तीन विश्व हिन्दी सम्मेलन भी हैं अनेक मित्र देशों में हिन्दी के पठन-पाठन के कार्य भी चल रहे हैं।

मैं अंत में लिखना चाहता हूं कि जरूरत है दृढ़ संकल्प की। जरूरत है अधिक से अधिक हिन्दी के प्रयोग की।

हिन्दी भाषा क्षेत्र के लोग जब हिन्दी को उचित सम्मान देगें तो गैर हिन्दी भाषा लोग भी इसे अपनाने से पीछे नहीं हटेंगे। हिन्दी भाषियों को हिन्दी के प्रचार प्रसार में सद्भावना पूर्ण तरीके का प्रयोग करते हुए गैर हिन्दी भाषियों के लोगों के हृदय में हिन्दी के लिए स्थान बनाने की जरूरत है।

और आगे लिखना चाहता हूं कि हम सभी सांप्रदायिकता, जातीयता, क्षेत्रीयता, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक हिन्दी भाषी अहिन्दी भाषी आदि संकीर्णताओं से ऊपर उठे और एक जुट हो दृढ़ संकल्प और निष्ठा के साथ इस भाषायी क्रान्ति में अपना योगदान दें जिस तरह अपनी भाषाओं के उपयोग से सफलता के शिखर पर पहुंचने वाले सोवियत रूस, पश्चिम जर्मनी और चीन की तरह भारत भी हिन्दी भाषा के माध्यम से ही शिक्षा एवं कार्यालय आदि के समस्त कार्य करके सार्थक करके दिखाएं। □

*भारतीय जीवन बीमा निगम, शाखा कार्यालय, मयिला दुरै, तंजाऊर मंडल तमिलनाडु–609001

जल-संसाधनों के विकास हेतु भूमिगत संरचनाओं की अभियांत्रिकी

□प्रभात कमल सूद, उप मुख्य अभियन्ता*

परिचय : मानव आदिकाल से ही अपने रचानात्मक कार्यों में भूमिगत संरचनाओं को विशेष महत्त्व देता आया है। आरम्भ में ऐसी संरचनाएं खनिजों तथा बहुमूल्य पत्थरों इत्यादि के खनन के लिए बनाई जाती थीं। अभेद्य दुर्ग तथा गुप्त मार्गों आदि बनाने के लिए भी भूमिगत भवनों तथा सुरंगों का निर्माण किया जाता था। अजंता तथा एलोरा की गुफाओं का निर्माण मानव ने पूजा-स्थल बनाने के लिए किया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध तथा बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में मानव ने दुर्गम पहाड़ी मार्गों को लांघने के लिए रेल और सड़क मार्गों पर अनेक सुरंगों का निर्माण किया। इसके साथ ही तीव्र औद्योगिक विकास के लिए ऊर्जा की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए अनेक भूमिगत जलविद्युत परियोजनाओं का पदार्पण हुआ। आज संपूर्ण विश्व में अनेकानेक भूमिगत जल-विद्युत परियोजनाएं मानव कल्याण के लिए ऊर्जा उत्पादन में महत्त्वपूर्ण योगदान कर रही हैं। भारतवर्ष में इडुक्को (केरल) तथा कोयना (महाराष्ट्र) के भूमिगत जल-विद्युत गृह गत बीस से भी अधिक वर्षों से सेवारत हैं। यह दोनों ही योजनाएं उच्च श्रेणी की दीर्घायु चट्टानों में बनाई गई हैं। छिब्रो (उत्तर प्रदेश), चूखा (भूटान) तथा संजय (हिमाचल प्रदेश) के भूमिगत विद्युत-गृह अपेक्षाकृत अल्पायु एवं दुर्बल श्रेणी की चट्टानों में स्थित हैं तथा इनके अभिकल्प एवं निर्माण में भारतीय अभियन्ताओं को अत्यधिक संघर्ष करना पड़ा। आगे आने वाली कई भूमिगत परियोजनाएं (नाथपा झाखड़ी, टिहरी आदि) ऐसी ही अल्प-आयु एवं दुर्बल श्रेणी की हिमालयी चट्टानों में निर्मित की जाएंगी। भारतीय अभियन्ता किस प्रकार से इन परियोजनाओं का परिकल्प तथा अभिकल्प तैयार करता है यह आने वाले समय में प्रतीत होगा।

भूमिगत संरचनाओं का अभिकल्प

भूमिगत संरचनाओं के अभिकल्प का अपना एक इतिहास है। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक चट्टान-अभियांत्रिकी का उदय पूर्ण रूप से नहीं हुआ था इसी कारण उस समय की बनी सुरंगों में एक ही प्रकार का निर्माण विधि दिखाई पड़ती है। इन सुरंगों को, जो आज भी फ्रांस, ब्रिटेन तथा यूरोप के कई अन्य देशों में देखने को मिलती हैं, लकड़ी के मोटे गट्ठों तथा शहतीरों आदि से सहारा दिया जाता था। समय के साथ-साथ यह गट्ठे अपनी शक्ति खो बैठे हैं और अब इन सुरंगों को नवीनतम प्रणालियों से सुधारा जा रहा है। फ्रांस में तो यह कार्य युद्ध-स्तर पर किया जा रहा है।

तरजागी की चट्टान भार तालिका

बीसवीं सदी के प्रारम्भ के वर्षों में औद्योगिकीकरण में तीव्रता आई तथा रोलिंग-विधि से तैयार किए गए इस्पात खंड जो लकड़ी से कहीं अधिक भार सह सकने में सक्षम थे और जिनके गलने-सड़ने का भय भी न था प्रयोग में लाए जाने लगे। परन्तु उस समय तक भी उनका प्रयोग अभियन्ता के व्यक्तिगत अनुभव पर निर्भर करता था। सन् 1940 के लगभग सुरंग बनाने की विधि में यूरोप के कई देशों ने दक्षता प्राप्त कर ली थी जिसका मुख्य कारण उच्च श्रेणी के तथा सुगमता से प्रयोग में लाए जाने वाले विस्फोटक पदार्थ तथा उन्हें प्रयोग में लाने वाले अभियन्ताओं का अनुभव था। उन्हीं दिनों एल्प्स पर्वत श्रेणी में अनेक सड़क सुरंगों पर कार्य करते हुए तरजागी ने "चट्टान-भार" मालूम करने के लिए एक आसान विधि सुझाई। उन्होंने चट्टानों को छः अलग-अलग श्रेणियों में बांटा और "चट्टान-भार" जो सुरंग की छत पर आएगा अनुमानित करने में सुरंग की ऊंचाई तथा चौड़ाई के हिसाब से एक तालिका बनाई। अनुमानित "चट्टान-भार" को सह सकने योग्य इस्पात खंडों का नाप, उनके बीच की आपसी दूरी इत्यादि निकाल लेने की ग्राफिक-विधि "प्रॉक्टर और व्हाइट" ने सुझाई जो आज भी सुरंग अभियन्ताओं तथा भूगर्भ-शास्त्रियों में अत्यन्त लोकप्रिय तथा प्रचलित है। भारत में अब तक बनी लगभग सभी सुरंगें इसी विधि पर अभिकल्पित तकनीक से बनाई गई हैं।

नई आस्ट्रियन सुरंग तकनीक

सन् 1960 के लगभग आस्ट्रिया, जर्मनी, स्वीडन, नार्वे तथा अन्य स्कैंडिनेवियाई देशों के अभियन्ता सुरंग अभिकल्प तथा निर्माण में क्रांति लाए जो आज "नई आस्ट्रियन सुरंग तकनीक" के नाम से जानी जाती है।

*कैलाश भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली।

इस तकनीक के जन्मदाता डॉ० पाखर तथा डॉ० रापसाविज़ के अनुसार "चट्टान-भार" तभी विकसित होता है जब सुरंग को खुदाई के बाद उसे "तुरंत सहारा" नहीं दिया जाता। इस्पात के भारी-भरकम खंड बैठाने में काफी समय लग जाता है और इस बीच चट्टानें फिसलना आरम्भ कर देती हैं तथा कई बार पूरी सुरंग ढह जाती है। नई तकनीक में खुदाई के तुरंत बाद सुरंग के आसपास की चट्टानें जो विस्फोट के कारण विचलित होती हैं तुरंत सम्भाल ली जाती हैं जिसमें उनमें आगे आने वाली अस्थिरता पैदा न हो सके। यह "सहारा" विस्फोट द्वारा उत्पन्न टूटी हुई चट्टानों का मलबा उठाने से पहले ही प्रदान कर दिया जाता है। इस काम के लिए दक्ष कर्मचारी विस्फोटक धुएं के निकास के तुरंत बाद सुरंग में प्रविष्ट होकर उखड़ी हुई सतहों पर वायु वेग से फेंके गए कांक्रीट की पतली तहें जमा देते हैं। इसके कुछ देर बाद ही चट्टानों में सूराख बना कर उन सूराखों में इस्पात की छड़ें सीमेंट के घोल से जमा दी जाती हैं। सीमेंट को जल्द शक्ति प्रदान करने के लिए उसमें कुछ रासायन मिलाए जाते हैं। कुछ घंटों में सीमेंट जम जाने के बाद इस्पात छड़ों में खिंचाव दे दिया जाता है और सुरंग पूर्ण रूप से सुरक्षित हो जाती है।

नई तकनीक के प्रयोग में सावधानियां

जैसा की ऊपर बताया जा चुका है, नई सुरंग तकनीक में हर पल कीमती है। समय नष्ट करने का सीधा अर्थ होगा सुरंग का नष्ट होना। नई तकनीक को सफलतापूर्वक अपनाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना होगा—

—उच्च कोटि का अभिकल्प जो संगणक से संभव है;

—चट्टानों की अन्दरूनी हरकतों तथा हलचलों पर पूर्ण निगरानी जिसके लिए विस्तृत उपकरणों का उपयोग;

—चट्टानों की अन्दरूनी हरकतों तथा हलचलों को देखते और समझते हुए तुरंत अतिरिक्त सहारा प्रदान करना; तथा

—समय-समय पर इस्पात छड़ों के खिंचाव को जांचना तथा नियंत्रित करना।

यह निश्चय ही बहुत प्रसन्नता की बात है कि आज उच्च श्रेणी तथा तीव्र गति के संगणक हमारे पास उपलब्ध हैं तथा केन्द्रीय जल आयोग और कई अन्य संगठनों के अभियन्ता उनके उपयोग में दक्षता प्राप्त कर चुके हैं। अभी हाल ही में केन्द्रीय जल आयोग तथा वाप्कोस के अभियंताओं ने नई तकनीक के नियमानुसार अल्जीरियायी रेल मार्ग के लिए दुर्बल श्रेणी की चट्टानों में स्थित सात सुरंगों का अभिकल्प तैयार किया जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सराहा तथा अनुमोदित किया गया। इसी विधि का उपयोग "जम्मू-ऊधमपुर रेल मार्ग विस्तार परियोजना" की सुरंग संख्या-8 के अभिकल्प के लिए किया जा रहा है। इसी विधि से "नाथपा-झाखड़ी" तथा "रोहतांग दर्रा सड़क सुरंग" की भूमिगत संरचनाओं का अभिकल्प तैयार किया जाएगा।

सुझाव

आने वाले वर्षों में अनेक भूमिगत परियोजनाएं कार्यान्वित की जाएंगी। समय तथा धन की बचत को ध्यान में रखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उच्च कोटि की आधुनिकतम सुरंग मशीनों तथा उपकरणों का आयात तथा निर्माण तुरंत किया जाए। इन मशीनों तथा उपकरणों के अभाव में तकनीकी और मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार होने पर भी हम नई आस्ट्रियन तकनीक का प्रयोग करने में अपने आप को असमर्थ पाएंगे। □

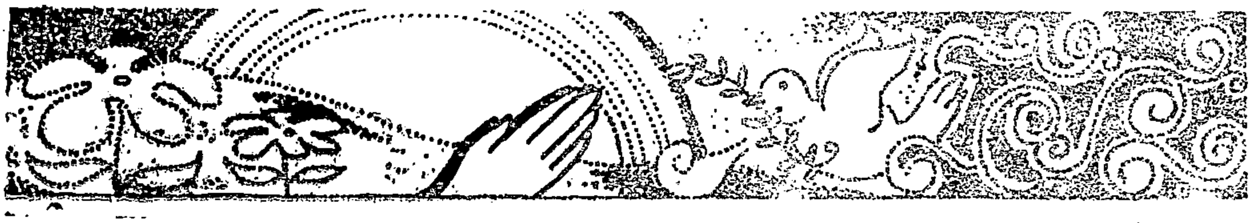

अंग्रेजी शिक्षा का अभिशाप और उससे मुक्ति

□डॉ. (श्रीमती) स्वर्ण प्रभा अग्रहरि*

अंग्रेजी शिक्षा का आरंभ अंग्रेजों द्वारा उनके स्वार्थ-साधन के उद्देश्य से किया गया था। इस नीति का विरोध मेकाले के जमाने में ही हागसन ने किया था। उसने कहा था कि 'भारतीयों को ऐसी शिक्षा देना, जिसका उनके धर्म से बिल्कुल संबंध न हो, और जिसका संकीर्ण उद्देश्य केवल सरकारी काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति तैयार करना हो, उनकी सांस्कृतिक हत्या करने जैसा है। यहां धर्म को किसी मत मतांतर, सम्प्रदाय आदि से न जोड़कर, यदि इसका व्यापक और भारतीय परिप्रेक्ष्य में पारंपरिक अर्थ मानव का जीवन-दर्शन या कर्त्तव्य लगाया जाए, तो स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी शिक्षा का सूत्रपात जान-बूझकर भारतीयों की सांस्कृतिक हत्या के उद्देश्य से ही किया गया था जो काफी सफल रहा है।

आज अंग्रेजी शिक्षा के कारण ही पढ़े लिखे लोग हाथ से काम करना हेय समझते हैं जिससे बेरोजगारी बढ़ रही है। अंग्रेजी पढ़े लोग भारतीय भाषाओं को, भारत देश को और हर तरह की भारतीयता को हीन दृष्टि से देखते हुए देश से कटे-कटे रहते हैं। वर्तमान उच्च शिक्षा पाए हुए लोग अपने ही देशवासियों के साथ लगाव न अनुभव करते हुए सहानुभूति, दया दाक्षिण्य आदि मानवतालक्षी सद्‌गुणों से हरे से लगते हैं, जो कि हमारे देश की जनता की गरीबी, निरक्षरता और भोलेपन को देखते हुए बहुत आवश्यक और वांछनीय गुण हैं।

उपर्युक्त सभी तथा और भी बहुत सी बुराइयों का इलाज है भारतीय शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से देना। इस संबंध में महात्मा गांधी के शब्दों से अधिक जोरदार कुछ कहना संभव नहीं है। आजादी मिलते ही उन्होंने 21-9-1947 के 'हरिजन' में लिखा था कि "एक संस्कृति अपहारक के रूप में अंग्रेजी को भी हमें उसी तरह निकाल फेंकना चाहिए जिस तरह हमने अंग्रेजों के राजनीतिक शासन को सफलतापूर्वक उखाड़ फेंका।" पूज्य बापू ने तो यहां तक कहा था कि "यदि मेरे पास किसी निरंकुश शासक की शक्ति होती तो मैं विदेशी भाषा से अपने बच्चों की शिक्षा आज ही बंद करा देता। यह एक ऐसी बुराई है जिसका तत्काल उपचार होना ही चाहिए।"

हमारे संविधान में शिक्षा को जितना महत्व दिया गया है, खेद है कि देश में उसकी उतनी ही उपेक्षा हुई है। हमारी समस्याएं जटिल से जटिलतर इसीलिए होती गई हैं कि हमारे कर्णधारों में उद्देश्य के प्रति निष्ठा एवं सच्चाई का अभाव है। शिक्षा के ही क्षेत्र में देखिए भारतीय संसद के दोनों सदनों में सर्वसम्मति से 1967 में पारित और 1968 में राजपत्रित संकल्प के अनुसार सरकारी सेवा के लिए भर्ती परीक्षाओं का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिएं। किन्तु गुलाम मानसिकता वाले अंग्रेजी भक्त नेतृत्व ने उस संकल्प पर अमल नहीं होने दिया; जनता के सत्याग्रह, हड़ताल और अनशन का भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा; और हमारे जन-प्रतिनिधि भी संकल्प पारित कर मौन खड़े जनता को बहकाते रहे।

आजादी के 43 वर्ष बाद भी अगर हम चेत जाएं तो देर आयद दुरुस्त आयद। इसलिए अब भी भारतीय नेतृत्व से यह अपेक्षा है कि वह कोई ठोस और जोरदार कदम उठा कर देश को अंग्रेजी शिक्षा से मुक्ति दिलाए और भारतीय भाषाओं को शिक्षा के क्षेत्र में उचित स्थान दिलवाए। अंग्रेजी के अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए यह सुझाव है कि देश में बिना किसी अपवाद के:

(1) कक्षा 5 तक की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए और संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी एक भाषा का ज्ञान करा दिया जाए।

(2) पांचवीं से कक्षा 12 तक की शिक्षा संविधान की आठवीं सूची में उल्लिखित किसी एक भाषा के माध्यम से दी जाए जो प्रथम भाषा हो और दूसरी भाषा के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी पढ़ाई जाए।

(3) जहां हिन्दी प्रथम भाषा हो वहां संविधान की आठवीं अनुसूची की कोई एक और भाषा दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाए।

(4) छठवीं कक्षा से ही एक तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाए और सभी भारतीय भाषाओं एवं योरोपीय भाषाओं के उद्‌गम के रूप में संस्कृत की स्थिति समझाई जाए ताकि

[शेष पृष्ठ 12 पर]

* हिंदी विभाग, दौलतराम कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

भारतीय बैंकिंग प्रबन्धन और हिन्दी

□प्रेम सिंह चौहान*

खाड़ी युद्ध की विभीषिका आज सम्पूर्ण मानव जाति के सम्मुख एक महासंकट बना हुआ है। हम सभी विनाश की भयावहता से आतंकित हैं। इसके मूल में और जो कुछ भी हो, परन्तु भौतिक ऐश्वर्य की निर्बाध चाह एक कारण स्वरूप अवश्य है। इसने हम सबको यह सोचने के लिए विवश किया है कि हमारी महत्त्वाकांक्षा का अंतिम पड़ाव क्या है? उसकी उपलब्धि की कीमत कितनी देने के लिए हम तत्पर हैं? हमारे लक्ष्य-प्राप्ति के साधनों में कहीं न कहीं आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। इनमें हमें मानवीय मूल्यों और अपने क्रियाकलापों की अवधारणाओं का नए सिरे से विश्लेषण करके पुनर्निर्धारण करना होगा। यह विचारदृष्टि आगे प्रशासन अथवा प्रबंधन के हमारे विश्लेषण की भी संवाहिका रहेगी।

प्रबंधन बनाम प्रशासन

किसी कार्यक्रम में भाषा विशेष के प्रयोग की आवश्यकता और संभावनाओं के परिप्रेक्ष्य में विचार करते हैं। तो उन दोनों (कार्यक्षेत्र एवं भाषा) की अवधारणा और प्रकृतियों का विश्लेषण करना होता है। विचारणीय यहां यह है कि प्रशासन का प्राणतत्व (अवधारणा) क्या है? राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न संस्थाओं का गठन और उनके सुव्यवस्थित संचालन के लिए नियम और कार्यविधि तैयार की जाती है। इन नियमों और कार्यविधि को क्रियान्वित करने का नाम प्रशासन है जिसे व्यावसायिक प्रबंध शास्त्र में "प्रबंधन" की संज्ञा दी जाती है। इन नियमों और कार्यविधि के हिन्दी में तैयार किए जाने पर व्याख्या सम्बंधी भ्रान्तियां नहीं के बराबर होंगी तथा प्रबंध के सभी स्तरों पर सहज बोध-गम्यता होगी।

हिन्दी औरों की अपेक्षा उसकी उत्तम संवाहिका किस प्रकार सिद्ध होगी?

सामान्यत: प्रशासन को संवेदनहीन, असंपृक्त और यांत्रिक कार्य, प्रशासक को हृदयहीन एवं प्रशासन तंत्र को गणितीय बौद्धिकतंत्र माना जाता है, परन्तु वास्तविकता यह नहीं होती। जिसका लक्ष्य मानव और उससे निर्मित समूह हो उसमें संवेग, मूल्यों, जीवनदर्शन, विचारशीलता, अन्योन्याश्रित रागात्मकता और इससे उद्भूत अथवा दिग्दर्शित व संचालित क्रियाकलापों को पृथक नहीं रखा जा सकता। दूसरे शब्दों में देश, काल और संस्कृतिक परिवेश की सापेक्षता प्रशासन के लिए भी उतनी ही सुसंगत है जितनी कि मानव जीवन से जुड़ी अन्य विधाओं के लिए। फिर इसकी अभिव्यक्ति अथवा मुखरता की प्रभावशीलता के लिए भी वही सब उपयोगी है जो अन्य के लिए अर्थात् एक ऐसी भाषा जिसने प्राण और देह उसी मिट्टी से पाए हों जहां उसके बोलने वाले हों।

भारत में प्रशासन इस देश की आचार, जीवन पद्धति, शैली, सोच-प्रणाली और उसके मूल में निहित सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का परांगमुखी नहीं हो सकता। भारतीय समाज की उदारता, समरसता दया और सहिष्णुता को प्रशासन एवं प्रबंधन में प्रतिकार, प्रतिशोध बर्बरता, "जैसे को तैसा" पर अधिमान देना ही होगा। किसी अपराध के दण्डस्वरूप चौराहे पर चाबुक, अंगच्छेदन जैसे दण्ड उस समाज में सर्वग्राहय नहीं होंगे जिसमें जनमानस हत्या के अभियुक्त के प्रति भी उस पर आश्रितों के लिए उपजी दया के वशीभूत क्षमादान के लिए लालायित हो उठता है। इसी प्रकार बैंकिंग जैसे विशुद्ध व्यावसायिक संस्थानों में भी प्रबंधन मानवीय मूल्यों और जीवन दर्शन निरपेक्ष नहीं रह सकता।

बैंकिंग प्रबंधन के आयाम

भारतीय बैंकिंग प्रबंधन के संगठनात्मक सोपान हैं :—

(क) शाखा (ख) जिला समन्वयक (ग) क्षेत्रीय (घ) आंचलिक (ङ) मुख्यालय

जनसंख्यावार तीन वर्ग हैं :

(1) ग्रामीण (2) अर्धशहरी और (3) महानगरीय

गतिविधिवार प्रबंधन की मुख्यत: विशेषताएं निम्नलिखित हैं :—

(क) बैंकिंग सेवा प्रदायन (ख) आंतरिक लेखांकन (ग) संगठनात्मक

उक्त सभी वर्गीकरणों में बैंकिंग गतिविधि अर्थात् दैनिक जमा/आहरण, ऋण, धन-प्रेषण एवं विविध बैंकिंग सेवाओं का प्रदायन इसके लिए अपेक्षित रिकार्ड व्यवस्था अर्थात् आंतरिक लेखांकन और इन दोनों कार्यों के लिए आवश्यक मानव-शक्ति, भवन और अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करके अलग-अलग सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाले ग्राहक समूहों की जरूरतें

*प्रबंधक (राजभाषा), प्रबंध परामर्श सेवाएं प्रभाग, पंजाब नेशनल बैंक, 7—भीकाजी कामा प्लेस नई दिल्ली—66

पूरी करने से संबंधित कार्य आते हैं। इसे प्रबंध—शास्त्र में मानवशक्ति, वित्त और सामान (मैन, मनी और मैटीरियल) का एकत्रीकरण कहा जाता है जिनसे उत्पादन शुरू होता है।

बैंकिंग प्रशासन में अंग्रेजी का वर्चस्व

एक तो देश के अन्य कार्यक्षेत्रों के समान बैंकिंग को भी अंग्रेजी वर्चस्व की विरासत में प्राप्ति; दूसरे, नपोन्मेषी बैंकिंग के नित नए कार्यक्षेत्रों में प्रवेश जिनकी पृष्ठभूमि और अवधारणाओं में अंग्रेजी की प्रधानता होना; तीसरे, दैनिक कार्यप्रणाली का अंग्रेजी पर आधारित यांत्रिकीकरण में अंतरण बैंकिंग में अंग्रेजी-वर्चस्व के प्रमुख कारण हैं। परन्तु पिछले 15 वर्ष के दौरान बैंकों में राजभाषा नीति लागू होने के फलस्वरूप देश के अन्य समकक्ष संस्थानों की तुलना में हिन्दी प्रयोग की परिधि में तीव्र प्रसार हुआ है। अनेक शाखाओं व प्रशासनिक कार्यालयों में 95 प्रतिशत से भी अधिक काम हिन्दी में किया जाता है। बैंक मुख्यालयों तक में हिन्दी का प्रयोग सभी कार्य-क्षेत्रों में बढ़ रहा है। एक प्रत्यक्षदर्शी की हैसियत से इस संदर्भ में मैं पंजाब नैशनल बैंक का नामोल्लेख करना चाहूंगा। जहां ग्रामीण ही नहीं शहरी और महानगरीय शाखा से लेकर जिला, क्षेत्र अंचल स्तरीय प्रशासनिक कार्यालयों के साथ ही साथ प्रधान कार्यालय में हिन्दी प्रयोग समस्त कार्यों में बढ़ रहा है जिसकी सराहना संसदीय (तीसरी उप समिति) राजभाषा समिति ने हाल के निरीक्षण सहित समय-समय पर अपने निरीक्षणों में की है।

दूसरे, औद्योगिक व्यापारिक और इलैक्ट्रोनिकीकरण के विकास के साथ हुई आर्थिक समृद्धि, वैभव और ऐश्वर्य ने उपभोक्तावादी, उन्मुक्तता और प्रदर्शन प्रधान प्रवृत्तियों का प्रसार व्यापक पैमाने पर किया है। इसने स्वयं का दूसरों से अलगाव, पृथक दिखने की धारणा को बलवती बनाया है और इसके लिए राष्ट्र में अल्पसंख्यक अंग्रेजी भाषी अंग्रेजी को अपनी एक शरणस्थली अनुभव करते हैं।...

उनकी बात दूसरे न समझें, यह उनकी अहं तुष्टि करता है। बैंकों में इस सोच की तह तेजी से टूट रही है।

परन्तु एक समाज और राष्ट्र के अस्तित्व के लिए ये सभी प्रवृत्तियां प्राणघाती हैं। हमारा स्वातंत्र्योत्तर अनुभव यह सिद्ध करता है कि हमारी भौतिक, औद्योगिक, व्यापारिक एवं आर्थिक उन्नति आज साम्प्रदायिकता, अलगाववाद, हिंसा और राष्ट्रद्रोही विघटनकारी आक्रमणों से आक्रांत हैं। इसका अर्थ यह है कि हमने मानवीय सुख-समृद्धि के साधन एकत्र किए परन्तु उनको भारतीय जीवन दर्शन की भट्टी में पिघलाकर भारतीय स्वरूप प्रदान नहीं किया।

बैंकिंग उद्योग में परिवेश

बैंकिंग कार्यप्रकृति की दृष्टि से ठोस यथार्थ पर आधारित आर्थिक तंत्र है। इसकी राष्ट्र की आर्थिक चेतना में महत्वपूर्ण भागीदारी है। अतः इसके भीतर और बाहर के परिवेश में राष्ट्रवादिता, सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, संस्था के साथ प्रतिबद्धता जैसे उच्च आदर्शों की स्थापना उतनी ही आवश्यक है जितनी बैंकिंग उद्योग की लाभप्रदता का बना रहना क्योंकि यदि लाभप्रदता पर इसका अस्तित्व होता है तो उच्चादर्शों पर वह चिरस्थायी होता है।

बैंकों की लाभप्रदता में ह्रास, बैंकिंग एवं अनेक गैर बैंकिंग संस्थानों के साथ गहन प्रतिस्पर्धा, चहुंमुखी मूल्य बृद्धि से निरन्तर बैंक सेवा लागत में वृद्धि, देश की सामाजिक संरचना में विभिन्न कारणों से उत्पन्न तनाव, हिंसा, तोड़फोड़ अनिश्चितता के वातावरण में दबावों जैसी अनेक कठिन चुनौतियां हैं जिनसे बैंकों को मुकाबला करना पड़ रहा है।

फिर राष्ट्रीयकरण के उपरांत बैंकों पर सामाजिक, आर्थिक परिवर्तनों राष्ट्र के साथ सक्रिय भागीदारी की भूमिका निभाने का दायित्व भी है। वे अब मात्र लाभ अर्जक वाणिज्यिक संस्थान नहीं हैं। दूसरी ओर, अब बैंकिंग चिन्तन में आमूल परिवर्तन हो गए हैं। बैंक के पास ग्राहक आने के बजाय ग्राहक के पास स्वयं बैंक पहुंचता है अर्थात् केबिन बैंकिंग का स्थान "ग्राहक की पौड़ियों पर बैंकिंग", साहूकार "वित्त पोषक" में "कर्ज" वित्तीय सहायता" में बदल गए हैं। "सेवा क्षेत्र प्रणाली" जैसी नई अवधारणाएं लागू हो गई हैं। महानगरोन्मुखी बैंकिंग पर ग्रामोन्मुखी बैंकिंग स्थापित हो चुकी है। गरीबी, रोजगार, आवास जैसी राष्ट्रीय समस्याओं में बैंकिंग उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। "मालिक-मजदूर" संबंध पर अब "प्रबंधन में भागीदारी शैली" को अधिक प्रभावी एवं फलदायक मान लिया गया है।

बैंकिंग प्रबंधन में स्वदेशीपन की समसामयिकता

वर्तमान भारत के संदर्भ में "स्वदेशीपन" एक समसामयिक आवश्यकता है जिसे सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्वभाषा हिन्दी ने इस भावना की स्थापना में अहम भूमिका निभायी है। महात्मा गांधी ने तत्कालीन परिवेश में स्वाधीनता रूपी साध्य प्राप्ति के लिए "स्वदेशी आंदोलन" को एक साधन बनाया। उसके परिणामों को यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं, लेकिन यह उल्लेख करना संदर्भानुकूल होगा कि उन दिनों भी स्वदेशी आंदोलन से बैंकिंग क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा था। उन दिनों राय मूलराज की सलाह पर पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने आंदोलन के एक रचनात्मक कदम के रूप में एक ऐसा स्वदेशी बैंक स्थापित करने की योजना बनाई जिसे पूरी तरह भारतीय पूंजी से, भारतीयों के प्रबंध में चलाया जाए। अतः 23-5-1894 को देश के अलग-अलग भागों से अलग-अलग धर्मों और पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों को शामिल करके एक निदेशक मंडल बनाया गया जिसमें सरदार दयाल सिंह मजीठिया (डी. ए. वी. कालेज व दैनिक ट्रिब्यून के संस्थापक) श्री लाला लाल चंद, श्री काली प्रसन्न राय (प्रसिद्ध) वकील, श्री लाला ढोलनदास, ई. सी. जायसवाल (पारसी) व्यापारी, श्री लाला हर किशन लाल एवं लाला प्रभुदयाल (समाजसेवी एवं व्यापारी) शामिल थे। फलतः 12 अप्रैल, 1895 को

जाब नैशनल बैंक नाम से इस पहले स्वदेशी बैंक ने अपना कार्य शुरु कर दिया। यह तत्कालीन धार्मिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता का अद्भुत उदाहरण बना। आज भी स्वदेशी भावना समान रूप से समय की मांग है।

स्वदेशीपन के लिए "स्वभाषा" का प्रयोग अनिवार्य है। बैंकिंग जैसी संस्था जिसका प्रभाव समाज के हर आयु, धर्म, इलाके, आर्थिक स्तर के व्यक्ति पर गहरा होता है, उसमें हिन्दी का प्रयोग राष्ट्रीय एकता के लिए जरूरी है और उससे भी अधिक जरूरी है बैंकर और ग्राहक के परस्पर घनिष्ठ विश्वासपूर्ण संबंधों के लिए।

बैंकिंग प्रबंधन में साधारणीकरण-प्रक्रिया और हिन्दी

उक्त परिस्थितियों में प्रबंधन या प्रशासन चलाने के लिए उच्चकोटि के प्रबंध कौशल की जरूरत है जिसकी अनिवार्य शर्त होती है, उच्च आदर्शों व मूल्यों पर आधारित प्रबंधन नीतियों की और उनके क्रियान्वयन हेतु सक्षम एवं प्रभावी भाषा रूपी संचार माध्यम की जो कि प्रशासित समूह की आकांक्षाओं, सांस्कृतिक मान्यताओं से निर्मित समूचे व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व कर सके।

चूंकि हिन्दी भारतीय परिवेश में रची बसी भाषा है, वह यहां की रागात्मक संबंधों, संस्कारों, जीवन शैली से पली बढ़ी भाषा है, इसलिए प्रबंधन में साधारणीकरण की प्रक्रिया को सरलता से ला सकती है। नियमों व कार्यविधि के प्रति सर्व सहमति व सर्व ग्राहयता इसी साधारणीकरण के दूसरे नाम हैं। नीति निर्धारक, उनके क्रियान्वयन कर्ता एवं नीतियों के लक्षित समूह इन तीनों स्तरों पर नीति प्रयोजनों का साधारणीकरण हो जाए तो "कर्मचारी प्रबंधक" बैंक ग्राहक संबंधों में अपनत्व की गहराई बढ़ेगी। परस्पर तनाव वैमनस्य समाप्त होंगे और तादात्मय और प्रतिबद्धता बढ़ेगी।

कठिनाइयां

यद्यपि भारत संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के दौरान बैंकों में आशातीत तीव्र गति से हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है और इससे अतीत में व्याप्त समस्त धारणाएं निर्मूल सिद्ध हो गई हैं। **अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य किसी भी भाषा का बैंकिंग में प्रयोग किए जाने पर व्यवधान की आशंका की जाती थी लेकिन परिणाम इसके ठीक विपरीत और उत्साहवर्धक हैं** फिर भी कतिपय व्यावहारिक कठिनाइयां हैं।

बैंक में हिन्दी : अनुवाद की भाषा

बैंकिंग उद्योग में हिन्दी का प्रवेश अनुवाद की एक भाषा के रूप में हुआ और आज भी अधिकांशतः उसका अनुवाद स्वरूप ही बना हुआ है जो कि बैंकिंग कारोबार की विशुद्धता बौद्धिक गतिविधि में रोचकता का अभाव दूर नहीं कर पाती। इस भाव को "दुरूहता" की संज्ञा दी जाती है जबकि हिन्दी ने अंग्रेजी में अभिव्यक्त सुविकसित प्रौढ़ता प्राप्त बैंकिंग का स्थान ग्रहण किया है।

राजभाषा नीति और शिक्षा प्रणाली में विरोधाभास

देश में रोजगार प्राप्ति के क्षेत्र में अंग्रेजी की अधिमानता एक ऐसा कटु सत्य है जो अंग्रेजी शिक्षितों को हिन्दी शिक्षितों के ऊपर अधिमान प्रदान करती है। इस शिक्षा प्रणाली में शिक्षा प्राप्त करके बैंक सेवाओं में आने वाले कर्मचारी हिन्दी की तुलना में अंग्रेजी में ज्यादा सुविधा पाते हैं, इसलिए बैंकों में हिन्दी में मौलिक प्रयोग की संभावना दुष्प्रभावित होती है। इसके बावजूद भी इंडियन इंस्टीट्यूट आफ बैंकर्स (भारतीय बैंकर्स संस्थान) द्वारा आयोजित विशुद्ध आर्थिक एवं वाणिज्यिक विषयों की परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम चयन कर्ताओं तथा उत्तीर्ण होने वालों का प्रतिशत अधिक होना, सचमुच हिन्दी की बढ़ती ग्राह्यता का प्रशंसनीय प्रमाण हैं।

बैंकिंग की वैविध्यतापूर्ण प्रकृति

बैंकिंग के कार्यक्षेत्र में नित नए आयाम जुड़ते चले जा रहे हैं जिनके बारे में किसी भी एक कर्मचारी की जानकारी होने की आशा कम है। अतः राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारी भी इस विषमता से प्रभावित है लेकिन धीरे धीरे इसका समाधान होता जा रहा है।

बैंकिंग शब्दावली बनाम विधि शब्दावली

भारतीय रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों में प्रयुक्त शब्दावली में एकरूपता बनाए रखने के लिए काफी पहले से बैंकिंग शब्दावली परिचालित कर दी थी। इसके अनुरूप बैंकिंग दस्तावेज द्विभाषी तैयार किए गए और प्रयोग में आ रहे हैं परन्तु भारत सरकार के विधि न्याय मंत्रालय (विधायनी विभाग) द्वारा प्रकाशित विधि शब्दावली में किए पर्याय बैंकिंग शब्दावली से एकदम भिन्न हैं, उदाहरणार्थः—

	बैंकिंग शब्दावली	विधि शब्दावली
Hypothecation	दृष्टिबंधक	आडमान (तमिल)
Moveable	चल	जंगम
Requisition	मांग/अपेक्षा	अध्यपेक्षा
Letter of Credit	साख पत्र	प्रत्यय पत्र

बैंकिंग कार्य प्रकृति को ध्यान में रखते हुए यह अत्यावश्यक है कि इन शब्दावलियों में उदार दृष्टिकोण और समन्वय स्थापित हो।

बैंकिंग शब्दावली : कुछ गतिरोध

अंग्रेजी की प्रकृति मूलतः पृथक है जिसमें एक ही शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है इससे तकनीकी शब्दावली में एक भ्रांति या अस्पष्टता का अवरोध बना रहता है। उदाहरणार्थ – गवर्नर के लिए "राज्यपाल" शब्द का प्रयोग होता है परन्तु भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर को "राज्यपाल" कहना

[शेष पृष्ठ 19 पर]

"कार सेवा" या "कर सेवा"

□डा. शीलम् वेंकटेश्वर राव*

किसी भी भाषा की शब्द-सम्पदा की समृद्धि में उस भाषा की पत्र-पत्रिकाओं की अपनी भूमिका होती है। इसी संदर्भ में "कार सेवा" का एक उदाहरण दिया जाता है। शब्द पिछले आठ–नौ वर्षों से पत्र-पत्रिकाओं और बोलचाल की भाषा में बहुत चल पड़ा है। यह शब्द आजकल बहुचर्चित है। सभी समाचार पत्रों में 'कार सेवा' शब्द का प्रयोग हो रहा है, जबकि तेलगु पत्र पत्रिकाओं में "कर सेवा"। अब प्रश्न उठता है कि इन दोनों शब्दों में कौन-सा रूप शुद्ध है।

"कार सेवा" शब्द प्रायः धर्म एवं श्रद्धा भक्ति के संदर्भ में प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है–स्वैच्छापूर्वक किया हुआ "श्रमदान" या "निःस्वार्थ सेवा"। चूंकि "श्रमदान" हाथों से किया जाता है, इसलिए उस श्रम को "कार सेवा" कहने के बजाए 'कर सेवा' कहना उचित जान पड़ता है।

मेरे विचार में तेलगु पत्र-पत्रिकाओं में जो "कर सेवा" शब्द प्रयुक्त हो रहा है, वह शुद्ध रूप है, क्योंकि "कर" का अर्थ "हाथ" होता है। चूंकि सेवा हाथों से की जाती है। इसलिए "कर सेवा" ही शुद्ध रूप जान पड़ता है। इस शब्द को यदि क्रियारूप भी मान लिया जाए, तो वह आदेशात्मक क्रिया रूप हो जाता है–जैसे "कर सेवा" अर्थात् "सेवा कर"।

"कार सेवा" शब्द पर सम्भवतः अंग्रेजी भाषा का भी प्रभाव हो सकता है जैसे आन्ध्र को आन्ध्रा, "कर्नाटक" को "कर्नाटका" "केरल" को "केरला" गुप्त जी को गुप्ता जी, मिश्रजी को "मिश्राजी" आदि शब्द अंग्रेजी के प्रभाव से लिखे और बोले जाते हैं। वैसे ही शायद "कर सेवा" के बजाय "कार सेवा" का प्रयोग हो रहा हो, जिसका कोई अर्थ नहीं लगता है। कुछ भाषाविद् इस मत से सहमत नहीं है। उनके मतानुसार अंग्रेजी के प्रभाव के कारण हिन्दी के आकारान्त वाले शब्द आकारान्त हो सकते हैं, परन्तु शब्द के मध्य में कोई विकार सम्भव नहीं है। फिर भी इस संबंध में चर्चा की गुंजाइश है।

कुछ विद्वानों का यह भी अभिमत है कि "कार" शब्द "कार्य" तत्सम शब्द का तद्भव रूप है, जिसे पंजाबी भाषा से ग्रहण कर लिया गया है। "कार्य" शब्द में से अन्त्य "य्" वर्ण लुप्त होकर "कार्य से "कार" शब्द हो गया है। यह मत अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है।

"कार सेवा" की तरह इन दिनों पंजाबी भाषा का एक दूसरा नया शब्द आंतकवादी" "उग्रवादी" या "लडाका" के अर्थ में, हिन्दी में "खाड़कू" शब्द का प्रयोग चल पड़ा है। वैसे यह शब्द अब तक उतना प्रचलित नहीं हुआ है जितना "कार सेवा"। परन्तु धीरे-धीरे यह शब्द भी सर्वग्राही हो जाएगा।

इस प्रकार भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करने की प्रवृत्ति से जहां हिन्दी भाषा की शब्द-सम्पदा की श्रीवृद्धि होगी, वहीं भारतीय संविधान की 351 की धारा में राज भाषा हिन्दी के जिस स्वरूप एवं सामाजिक भारतीय संस्कृति की जो संकल्पना की गई है, उसे साकार करने में यह कदम सहायक सिद्ध होगा। वस्तुतः यह कदम स्वागत योग्य है।□

*निवास–– 5–8–108, महेश नगर, नाम पल्ली, स्टेशन मार्ग, हैदराबाद–1

[पृष्ठ 8 का शेष]

आगे चलकर कोई भी भाषा और भारतीय भाषाओं की तकनीकी शब्दावली की रचना सरलता से समझी जा सके।

(5) सभी प्रकार की विश्वविद्यालयीन और तकनीकी शिक्षा का माध्यम संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाएं हों। तकनीकी शब्दावली भारत सरकार द्वारा सभी भाषाओं में प्रयोग के लिए निर्धारित शब्दावली ही हो।

(6) अंग्रेजी या कोई भी विदेशी भाषा सीखने की व्यवस्था कक्षा बारह के बाद अतिरिक्त विषय के रूप में उपलब्ध हो और उनकी शिक्षा का माध्यम संविधान की आठवीं अनुसूची की भाषाएं हों।

(7) अंग्रेजी या किसी विदेशी भाषा की अनिवार्यता कहीं भी किसी भी स्तर पर पढ़ाई या परीक्षा के माध्यम के रूप में न रखी जाए।

(8) 'क्षेत्रीय भाषा' या 'आधुनिक भारतीय भाषा' ऐसे संदिग्ध पदों के बजाय 'संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषा' ही सर्वत्र स्पष्ट रूप से कहा जाए ताकि निहित स्वार्थ से प्रेरित कोई अधिकारी नीति के कार्यान्वयन के समय कोई अन-अभिप्रेत अर्थ न निकाल सके।

(9) संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं का ही व्यवहार सरकार और जनता द्वारा किया जाए इसके सार्थक और प्रभावी उपाय हों ताकि विदेशी भाषा के प्रति लोगों का मोह दूर हो। □

साहित्यिकी

श्री गुरु गोविंद सिंह का कृष्णावतार

□मनोहर सिंह बतरा*,
पूर्व उपमहानिदेशक, आकाशवाणी
तथा सचिव, पंजाबी अकादमी, दिल्ली

श्री गुरु गोविन्द सिंह रचित दशम ग्रंथ में कृष्णावतार सबसे बड़ी और महान रचना है। गुरुजी एक वीर और योद्धा होने के साथ-साथ सर्वोच्च स्तर के कवि भी थे। आपने कृष्णावतार 2,492 पदों में रचा। इसके आरम्भ में उन्होंने संकेत दिया है कि उन्होंने यह कथा 11092 छंदों में लिखी थी।

जे जे किपन चरित्र दिखाए।
दसम बीच सब भाख सुनाए।
ग्यारा सहस बानवे छंदा।
कहे दसम पुर बैठ उनन्दा॥

ऐसा प्रतीत होता है कि गुरू साहब की श्रीकृष्णा से संबंधित बड़ी रचना कहीं आलोप हो गई और पाउंटा साहब में लिखी गयी संक्षिप्त रचना संसार के सामने आई। अन्तिम पदों में गुरुजी लिखते हैं:

दशम गुरु ने कृष्णा चरित्र के संबंध में प्रवन्ध काव्य लिखने में पहल की है। वे सदैव जुल्म और जबर के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और अन्याय एवं अनैतिकता के खिलाफ तलवार उठाकर जालिमों का विनाश करते रहे।

सत्रह से पैंताली महि सावन सुदि थिति दीप।
नगर पांवटा सुभ करन जमुना वहै समीप।
(2490)

दशम कथा भागवत की भाखा करी बनाये
अवर वासना नाहि प्रभु धर्म युद्ध के चाये।
(2451)

*एम-211, ग्रेटर कैलाश II नई दिल्ली-110048

मैंने संवत 1745 के सावन मास की सातवीं तिथि (24 जुलाई 1688) को पाउंटा के शुभ नगर, जिसके समीप यमुना बहती है, भागवत पुराण के दसवें स्कंध की कथा सामान्य भाषा में रची है। हे प्रभु, मेरी और कोई कामना नहीं। मात्र यही चाव है कि मैं धर्मयुद्ध करूं।

दशम गुरु ने कृष्ण चरित्र के संबंध में प्रबंध काव्य लिखने में पहल की है। वे सदैव जुल्म और जबर के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और अन्याय एवं अनैतिकता के खिलाफ तलवार उठाकर जालिमों का विनाश करते रहे।

कृष्णावतार लिखने में दशम गुरू का उद्देश्य संसार के जीवों को मुरली मनोहर की वीरता, साहस एवं दिलेरी से उत्साहित करना था।

कृष्णावतार

कृष्णावतार को चार भागों में बांटा जा सकता है, बाललीला, रासमंडल, गोपी-विरह एवं युद्ध वर्णन। पहले तीन भाग 756 पदों में हैं। चौथा भाग सबसे बड़ा है जिसमें कृष्णजी की बहादुरी और निर्भयता का चित्रण किया गया है। तीसरे भाग अर्थात् गोपी-विरह में भी श्रीकृष्णजी का विश्वासुर, कंस एवं विश्वासुर जैसे असुरों के साथ युद्ध का वर्णन किया है। किन्तु चौथा भाग तो युद्धों, मुठभेड़ों और शत्रुओं के संहार की अनुपम कथा है। ये दुश्मन के भारी दलों के बावजूद युद्धों में लड़कर उन पर विजय प्राप्त करके गरीब एवं कमजोर जनता को डर और भय से मुक्त कराने का योजनाबद्ध साधन है। बेबसी और कायरता को त्यागने एवं सम्मान की भावना को उजागर करने का उपदेश है। कृष्णजी ने अपने जीवन काल में अनेक युद्ध किये लेकिन वह मिथिहास का अध्याय बनकर रह गये। गुरू गोविन्द सिंह ने उन युद्धों का विस्तृत वर्णन करके कृष्ण जी को धर्मवीर एवं लोकरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया है। युद्ध वर्णन रचना का मुख्य आधार है।

दिलचस्प बात ये हैं कि युद्धों में पठानों और सैय्यदों के नाम मिलते हैं, जिनका इतिहास के पक्ष से उस समय अस्तित्व नहीं था, लेकिन गुरुजी ने समकालीन स्थितियों को सामने रखते हुए ऐसे पात्रों को युद्धों में शामिल किया। इस प्रकार आपने हिंदु जाति पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध लोगों को जागृत करने का प्रयास किया। ऐसे पात्रों की पहचान आसानी से हो सकती है। सवा-लाख से एक को लड़ाने वाले गुरु ने हर प्रकार से हिन्दू जाति की सहायता की। कृष्णजी की वीरता द्वारा दैत्यों एवं असुरों का विनाश होता भी दिखाया गया है श्री कृष्ण ने पृथ्वी पर पापों और अत्याचारों की आंधी को रोकने के लिए जन्म लिया।

कृष्णजी ने अपने जीवन काल में अनेक युद्ध किए, लेकिन वह मिथिहास का अध्याय बनकर रह गये। गुरु गोविन्द सिंह ने उन युद्धों का विस्तृत वर्णन करके कृष्णजी को धर्मवीर एवं लोकरक्षक के रूप में प्रस्तुत किया है। युद्ध वर्णन रचना का मुख्य आधार है।

अब बरणो किसना अवतारु।
जैस भांत बपु धरयो मुरारु।
धरम पाप ते भूम डरानी।
डगमगात विध तीर सिधानी॥
ब्रह्मा गयो क्षीरनिध जहां।
कालपुरख इसथित ते तहां।
कहयो बिशन कह निकट बुलाई।
किशन अवतार धरो तुम जाई॥2॥

अब मैं कृष्णावतार का वर्णन करता हूं कि किस तरह उन्होंने शरीर धारण किया। पृथ्वी पाप से डगमगाती हुई विधाता के पास पहुंची। ब्रह्मा क्षीर-सागर पहुंचे जहां प्रभु विराजमान थे। भगवान ने विष्णु को पास बुलाकर कहा कि आप धरती पर जाकर कृष्णावतार धारण करो। कृष्णजी को विष्णु का इक्कीसवां अवतार माना गया है

श्रीकृष्ण की बाल-लीला के संबंध में गुरु जी लिखते हैं:

अंत भए रुत ग्रीखम की रुत पावस आइ गई सुखदाई।
कान्ह फिरै बन बीथन में संगि लै बछरे तिनकी अरु माई।
बैठि तबै फिरि मद्ध गुफा गिर गावत गीत सभै मन भाई।
ता छबि की अति ही उपमा कवि ने मुख ते इस भाख सुनाई॥
(230)

ग्रीष्म-ऋतु का अंत एवं सुहावनी वर्षा ऋतु का आगमन हो गया है। कन्हैया कुंज-गलियों में गइयों और बछड़ों को लेकर घूमते हैं वहां गुफाओं में बैठकर सबके मन भावन गीत गाते हैं। उस छवि का वर्णन कवि ने किया है।

कृष्णजी की ओर से गोपियों के चीर हरण का वर्णन दशम् गुरु इस प्रकार करते हैं:

न्हावन लागि जबै गुपिआं, तब लै पट
कान चरयो तर ऊपै।
तऊ मुसक्यान लगीं सभ आपन
कोई पुकार करे हरि जू पै।
चीर हरे हमरे छल सो तुम सो ठग
नाहि किधो कोई भू पै।
हाथन साथ सु सारी हरी
द्रिग साथ हरो हमरो तुम रुपै॥251॥

गोपियां स्नान करती हुई कहती हैं कि कान्हा वृक्ष के ऊपर चढ़ गया। गोपियां मुसकराती हैं और कुछ कृष्ण को पुकारती हैं, कि तुमने छल से हमारे कपड़े चुरा लिये हैं तेरे जैसा ठग और कोई नहीं है। तुमने हाथों से हमारे वस्त्रों का हरण किया, और अब अपने नयनों से हमारा रूप चुरा रहे हो।

दशम गुरु कृष्णजी की बासुरी की महिमा इस प्रकार करते हैं:

बाजत बसंत अरु भैरव हिंडोल राग
बाजत है ललता के साथ है धनासरी।
मालवा कलयान और मालकऊस मारु राग
बन मैं बजावै कान्ह मंगल निवासरी।
सुरी अरु आसुरी अऊ पनगी जे हुती तह।
धुनि के सुनत पै न रही सुध जासु री।
कहै इयों दासरी, सु ऐसी बाजी बांसुरी,
सु मेरे जाने या मैं सभ राग को निवास री।

गुरुजी ने कई पौराणिक कथाओं की व्याख्या की है एवं अवतारों के गुणों की महिमा की है। आरम्भ में सरस्वती की उपमा करते हैं, जो बेअंत गुणों की स्वामिनी और कृपालिनी है।

रे मन भज तू शारदा
अनगन गुण है जाहि।
रचों ग्रंथ इह भागवत,
ज्यों हे कृपा कराहि

कृष्णावतार में गुरुजी ने भगवतीजी की उपमा इस प्रकार की है:

यहां भैरवी भूतेश्वरी भवानी।
भधि भावनी भधधम काली कृपानी।
जया आजया हिंगुला पिंगला हैं।
शिवा शीतला मंगला तोतला हैं।

गुरु जी देव-देवियों को महान ज्योति का स्वरूप समझते हैं और लोगों को इनसे प्रेरणा लेने की शिक्षा देते हैं। उनके उदाहरणों से लोगों में वीर-रस का संचार करते हैं।

कृष्णावतार में शास्त्रीय-काव्य से अधिक घटना प्रधान लोक-काव्य है। वीरता पूर्ण कथाओं और चमत्कारों का सागर है। कृष्ण-शक्ति का श्रोत है। जरासंध के सेनापति खड़गसिंह से युद्ध करते हैं, जो स्वयं शक्ति तथा वीरता का नमूना है। गुरुजी शूरवीरों के रूप-वर्णन से अधिक युद्ध-वर्णन की ओर
[शेष पृष्ठ 19 पर]

हिन्दी और मलयालम की रिश्तेनाते संबंधी शब्दावली

डा० नरेन्द्र कुमार शर्मा*
(हिन्दी प्राध्यापक)
आर० रामचन्द्रन पिल्लै
(मलयालम)
शोध-छात्र

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः समाज में रहने के नाते उसे विचार-विनिमय भी करना पड़ता है। यह विचार-विनिमय दो प्रकार का हो सकता है मौखिक और लिखित यानि बोलकर और लिखकर। विचार-विनिमय से ही मनुष्य समाज का सभ्य प्राणी कहलाता है । सभ्य-असभ्य का पता उसके व्यवहार से चलता है। चूंकि मनुष्य समाज में रहता है इसलिए 'रिश्तेदार' बनना स्वाभाविक-सा है। रिश्तेदार/रिश्तेनाते को अंग्रेजी में रिलेशन्स/रिलेशनशिप और मलयालम में बन्धू कहा जाता है। इस लेख में रिश्तेनाते की शब्दावली को विस्तार से तुलनार्थ व्यतिरेकी रूप में लिया गया है। रिश्तेनाते/की शब्दावली में हिन्दी के साथ द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा मलयालम को रखा गया है। वास्तव में "खग ही जाने खग की भाषा" और 'गूंगा ..... सर्करा खाक और मुस्काए' की कहावत को ध्यान में रखकर इस लेख को लिखा गया है। रिश्तेनाते की शब्दावली का व्यतेरेकी विश्लेषण लेख को प्रौढ़ता प्रदान करता है। लेख चार्ट रूप में दिया गया है।

हिन्दी	मलयालम	अर्थ
1	2	3
पिता	पिताव, अच्छन	जन्म देने वाला।
माता	माताव, अम्मा	जन्म देने वाली।
भाई/सहोदर	सहोदरन्	पिता की संतान पुत्र होने पर।
बहन/सहोदरा	सहोदरी	पिता की संतान पुत्री होने पर।
बड़ा भाई	वलयण्णन्	पिता का बड़ा पुत्र । भाई से बड़ा।
बड़ी बहन	बलिय चेच्ची	पिता की बड़ी पुत्री। बहन से बड़ी।
छोटा भाई	अनुजन्	पिता का छोटा पुत्र। भाई से छोटा।
छोटी बहन	अनुजन्ती	पिता की छोटी पुत्री। बहन से छोटी।
चाचा	चिट्टप्पन्	पिता का छोटा भाई।
चाची	कुञ्ञम्मा	पिता के छोटे भाई की पत्नी।
बड़ा चाचा	वलिय चिट्टपन्	पिता का छोटे से बड़ा भाई।
बड़ी चाची	वलिय कुञ्ञम्मा	पिता के छोटे से बड़े भाई की पत्नी।
ताया/ताऊ	मूलेच्छन	पिता का बड़ा भाई
ताई	मूत्तम्मा	पिता के बड़े भाई की पत्नी
छोटा चाचा	कोंच्चु चिट्टप्पन्	पिता का छोटे से छोटा भाई।
छोटी चाची	कोच्चु कुञ्ञम्मा	पिता के छोटे से छोटे भाई की पत्नी।
फूफा	अम्मावन	पिता की बहन का पति। (जिसे बच्चे फूफा कहते हैं)
फूफी/बुआ	अप्पच्ची	पिता की बहन। जिसे बच्चे फूफ़ी या बुआ कहते हैं।
मामा	अम्मावन	माता का भाई। जिसे बच्चे मामा कहते हैं।
मामी	अम्मायी	माता के भाई की पत्नी ।
साला	अलियन	पत्नी का भाई। जिसे उसके घर वाला साला कहता है।
साली	अनुचली	पत्नी की बहन। जिसे उसके घर वाला साली कहता है।
नाना	अप्पुप्पन	माता के पिता।

*हिन्दी शिक्षण योजना, मद्रास

1	2	3
नानी	अम्मुम्मा, सुलइसी	माता की मां।
दादा	अच्छाच्चन्	पिता के पिता।
पितामह	पितामहन्	पिता के पिता।
दादी	अच्छाम्मा	पिता के पिता की पत्नी
मौसा	चिट्टप्पन्	माता की बहन का पति।
मौसी	चिट्टम्मा	माता की बहन।
भाभी	चेट्टत्ती	भाई की पत्नी
भाई	चेट्टन	
वर	वरन्	लड़का जिसका शादी हुई हो।
वधु	वधु	लड़की जिसकी शादी हुई हो।
दूल्हा	वरन्	शादी शुदा लड़का। (नई शादी वाला)
दूल्हिन	वधु	शादी शुदा लड़की (नई शादी लली)
ज्येष्ठ	चेट्टन, ज्येष्ठन्	पिता का बड़ा भाई। जिसे उसकी पत्नी की ज्येष्ठ कहती है ।
जेठानी	चेट्टत्ती	पिता के बड़े भाई की पत्नी
बड़ा ज्येष्ठ	वलिय ज्येष्ठन्	पिता के बड़े से बड़ा भाई। जिसे उसकी पत्नी बड़ा ज्येष्ठ कहती है।
बड़ी जेठानी	वलिय चेट्टत्ती	पिता के बड़े से बड़े भाई की पत्नी ।
छोटा ज्येष्ठ	कोच्चु ज्येष्ठन्	पिता का बड़े से छोटा भाई।
छोटी जेठानी	कोच्चु ज्येष्ठत्ती	पिता के बड़े से छोटे भाई की पत्नी।
देवर	अनुजन्	पिता का छोटा भाई । जिसे देवर कहा जाता है।
देवरानी	अनुजत्ती	पिता के छोटे भाई की पत्नी
भतोजा	मकन्	पिता के बड़े/छोटे भाई का लड़का। जिसे पिता की बहन भतीजा कहती है।
भतीजी	मकल	पिता के बड़े/छोटे भाई की लड़की। जिसे पिता की बहन भतीजी कहती है।
भानजा	शेषक्कारन्	पिता की बहन का लड़का । जिसे पिता भानजा कहते हैं ।
भानजी	शेषक्कारी	पिता की बहन की लड़की। जिसे पिता भान्जी कहते हैं।
जामाता	मरुमकन्	पिता की लड़की का पति।
ससुर/श्वसुर	अम्मावन्	लड़की के पति के पिता/लड़की की पत्नी के पिता।
सास	अम्मावी	लड़की के पति की मां। लड़के की पत्नी की मां।
समधी	संबंधक्कारन्	लड़की के पिता और लड़के के पिता आपस में में समधी लगते हैं।
समधिन	संबंधक्कारी	लड़की का मां और लड़के की मां आपसी में समधिन लगते हैं।
दोयता/नाती	चेरुमकन्	पत्नी का लड़का। जिसे पत्नी की मां या पिता दोता कहते हैं।
दोहती/नातिन	चेरुमकल्	पत्नी की लड़की। जिसे पत्नी की मां या पिता दोती कहते हैं ।
पोता/नाती	चेरुमकन्	पति का लड़का। जिसे पति की मां या पिता पोता कहते हैं ।
पोती/नातिन	चेरुमकल्	पति की लड़की। जिसे पति की मां या पिता पोती कहते हैं ।
जीजा	चेट्टन्	बहन का पति।
जीजी	चेट्टत्ती	बहन।
बच्चा	आण् कुञ्ञ	छोटा बच्चा।
बच्ची	पेण् कुञ्ञ	छोटी बच्ची।
फुफेरा भाई	मुरचेरुक्कन मलियन्	पिता की बहन का लड़का। जिसे पिता का लड़का/लड़की का फुफेरा भाई कहता है।
फुफेरी बहन	मुरप्पेण्णु (नात्तून्)	पिता की बड़ी/छोटी बहन का लड़का। जिसे पिता का लड़का/लड़की फुफेरी बहन कहते है।

1	2	3
ममेरा भाई	मुरच्चेरुक्कन् अलियन्	माता के भाई का लड़का । जिसे उसकी लड़की या लड़का ममेरा भाई कहते हैं ।
ममेरी बहन	मुरप्पेण्णु (नात्तून)	माता के भाई की लड़की । जिसे उसकी लडकी या लड़का ममेरी बहन कहते हैं ।
चचेरा भाई	सहोदरन्	पिता के छोटे भाई का लड़का । जिसे पिता का लड़का/लड़की चचेरा भाई कहते हैं ।
चचेरी बहन	सहोदरी	पिता के छोटे भाई की लड़की ।
ताऊ का लड़का	सहोदरन्	पिता के बड़े भाई का लड़का । जिसे पिता का लड़का या लड़की ताऊ का लड़का कहते हैं ।
ताऊ की लड़की	सहोदरी	पिता के बड़े भाई की लड़की ।
लड़का	आण् क्कुट्टी	पिता की संतानं लड़का (पुल्लिग) होने पर ।
लड़की	पेण् क्कुट्टी	पिता की संतान लड़की (स्त्रीलिंग) होने पर ।
पुत्र	पुत्रन् (मकन)	पिता की संतान लड़का (पुल्लिग) होने पर ।
पुत्री	पुत्री (मकल्)	पिता की संतान लड़की (स्त्रीलिंग) होने पर ।
पुरुष	पुरुषन्	पुरुष ।
स्त्री	स्त्री	स्त्री ।
पराई मां	रण्डानम्मा	पिता की एक पत्नी की मृत्यु हो जाने/छोड़ देने पर दूसरी को बच्चे पराई मां कहते हैं ।
पराया बाप	रण्डानच्छन्	पत्नी के एक पति की मृत्यु हो जाने/छोड़ देने पर दूसरे पति को बच्चे पराया बाप कहते हैं ।
सौतन	रण्डा भाभी	एक व्यक्ति की दो पत्नियां होने पर एक दूसरे को सौतन कहा जाता है ।

1	2	3
कुंवारा/कुमार	कुमारन्	लड़का जिसकी शादी न हुई हो ।
कुंवारी/कुमारी	कुमारी	लड़की जिसकी शादी न हुई हो ।
ननद	नात्तून	पिता की बहन ।
ननदोई	चेट्टन (नात्तून का पति)	पिता की बहन का पति ।
दतोहू	मरुमकल्	दोहते/नाती की पत्नी ।
पड़दादा	वलिय अच्छाच्छन्	दादा के पिता ।
पड़दादी	वलिय अच्छाम्मा	दादा के पिता की पत्नी ।
पड़नाना	वलिम अप्पूप्पन्	नाना के पिता ।
पड़नानी	वलिम अम्म्म्मा	नाना के पिता की पत्नी ।
पड़दोहता/नाती	चेरुमकन	पत्नी का लड़का । जिसे पत्नी की दादी या दादा पड़दोता कहते हैं ।
पड़दोहती/नातिन	चेरुमकल	पत्नी की लड़की । जिसे पत्नी के दादी या दादा पड़दोती कहते हैं ।
पड़पोता/नाती	चेरुमकन	पति का लड़का । जिसे पति के दादा या दादी पड़दोता कहते हैं ।
पड़पोती/नातिन	चेरुमकल	पति की लड़की । जिसे पति के दादा या दादी पड़पोती कहते हैं ।
मंझला भाई	कोच्चु अण्णन्	बड़े और छोटे भाई के बीच का भाई ।
मंझली बहन	कोच्चु चेच्ची	बड़े और छोटे भाई के बीच के भाई की पत्नी ।
छोटा देवर	कोच्चच्चन	पिता का छोटे से छोटा भाई ।
छोटी देवरानी	इलयम्मा	पिता के छोटे से छोटे भाई की पत्नी ।
विधुर	विभार्यन्	वह व्यक्ति जिसकी पत्नी मर गई हो ।
विधवा	विधवा	वह स्त्री जिसका पति मर गया हो ।
पतोहू	मरुमकल	नाती की पत्नी ।

इसी प्रकार पड़मामा, पड़मामी, पड़मौसा, पड़मौसी, पड़फूफा, पड़फूफी (पड़बुआ) आदि रिश्तेनाते की शब्दावली में प्रचलित संबंधित शब्द हैं। इन शब्दों के स्थान पर मलयालम में भिन्न प्रकार के शब्दों का प्रयोग प्रचलित है।

व्यतिरेकी विश्लेषण–व्यतिरेक शब्द संस्कृत की 'रिच' धातु से बना है। 'रिच' धातु का अर्थ होता है "अलग करना", 'रिच' के पूर्व 'वि' (विशेष) अति (अत्यधिक) उपसर्ग और अंत में भाववाचक प्रत्यय 'घञ्' जोड़ने से (वि + अति + रिच् + धञ्) शब्द बनता है तथा इसका अर्थ है "विरोध या असमानता"। व्यतिरेक शब्द में 'ई' भाववाचक प्रत्यय लगाने से ही व्यतिरेकी शब्द बना है जिसका अर्थ हैं विरोध या असमानता दिखाने वाला। "इसी अर्थ में व्यतिरेकी शब्द को हिन्दी में अंग्रेजी कंट्रास्टिव का पर्याय माना गया है। कंट्रास्टिव लिंग्विस्टिक के लिए व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का प्रयोग किया जा रहा है।"

व्यतिरेकी विश्लेषण को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया है—

शिवेन्द्र किशोर वर्मा के अनुसार—दो या दो से अधिक भाषाओं के स्वनिक, रूपिक और आर्थिक तत्वों के तोलन-वर्णनात्मक (तुलनात्मक वर्णनात्मक) अध्ययन को व्यतिरेकी विश्लेषण की संज्ञा दी जाती है।" पृ. 333 रमानाथ सहाय के अनुसार "व्यतिरेकी भाषावैज्ञानिक विवरणों के आधार पर स्त्रोत और लक्ष्य भाषाओं के विविध पक्षों की गहराई में समानताएं और असमानताएं ढूंढी जाती हैं। आमुख (ख) व्यतिरेकी भाषाविज्ञान—डा. विजयराघव रेड्डी।

रोमानियन इग्लिश कंट्रास्टिव एनेलिसिस प्रोजेक्ट के आयोजकों के अनुसार "दोनों भाषाओं की ध्वनि व्यवस्था, व्याकरण, शब्दावली एवं लेखन व्यवस्थाओं की तुलना प्रस्तुत करना इस तुलना का उद्देश्य दोनों भाषाओं में विद्यमान ऐसी संरचनागत समानताओं और असमानताओं पर प्रकाश डालना है।"

पृ. 24 व्यतिरेकी भाषाविज्ञान—डा. विजयराघव रेड्डी।

डा. विजय राघव रेड्डी के अनुसार "दो भाषाओं की समकालिक संरचनाओं को इस तरह आमने-सामने रखा जाए या दो भाषाओं की समकालिक संरचनाओं का इस तरह वैषम्य प्रस्तुत किया जाए कि दोनों भाषाओं में विद्यमान समानताएं और विषमताएं या भिन्नताएं स्पष्टतः प्रकट हो जाएं।" पृ. 25 व्यतिरेकी भाषा विज्ञान।

डा. भोला नाथ तिवारी के अनुसार —"दो या दो से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर समानताओं असमानताओं को दिखाना ही व्यतिरेकी विश्लेषण कंट्रास्टिव एनेलिस्टिक कहते हैं।" 'हि. भा. शि. पृ. 49'

व्यतिरेकी भाषा विज्ञान को पारिभाषित करते हुए वे लिखते हैं—"व्यतिरेकी भाषाविज्ञान, भाषा विज्ञान के उस रूप को (प्रकार को) कहते हैं जिसमें दो भाषाओं या भाषा रूपों की विभिन्न स्तरों पर तुलना करके उन के आपसी विरोधों या व्यतिरेकों का पता लगाते हैं।" पृ. 12 व्यतिरेकी भाषा विज्ञान "दो भाषाओं की तुलना करने पर दो प्रकार की बातें हमारे सामने आती हैं। दोनों भाषाएं किन-किन बातों में समान हैं और किन-किन बातों में असमान हैं।

डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार—"व्यतिरेकी विश्लेषण दो वस्तुओं के बीच पाई जाने वाली संरचनात्मक समानता और विषमता के निर्धारण का क्षेत्र हैं। अतः पहली आवश्यकता है कि दो वस्तुओं को एक साथ ग्रहण किया जाए और एक साथ ही उन के बीच की समानता और विषमता की खोज की जाए।" पृ. 69 भाषा शिक्षण।"

वास्तव में "व्यतिरेकी विश्लेषण में दो भाषाओं की तुलना करने के पश्चात् समानताओं और असमानताओं का वर्णन किया जाता है।

हिन्दी और अन्य भाषाओं की शब्दावली में दो व्यक्तियों के साथ रहने पर किसी न किसी प्रकार का संबंध स्थापित हो जाता है जिसे रिश्ते नाते की शब्दावली का रूप दिया जाता है।

व्यतिरेकी विश्लेषण करने पर यह देखने को मिलता है कि हिन्दी व मलयालम में पिता व माता के लिए समान शब्दावली का प्रयोग भी देखने को मिलता है।

—वर व वधु के लिए हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम में मिलता है।

—पुत्र व पुत्री के लिए भी हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम में मिलता है।

—पुरुष व स्त्री के लिए भी हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम म मिलता है।

—कुंवारी के लिए भी हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम में मिलता है।

—विधवा के लिए भी हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम में मिलता है।

—ज्येष्ठ के लिए भी हिन्दी के समान शब्दावली का प्रयोग मलयालम में मिलता है।

—भाई व बहन और ताऊ का लड़का और चाचा का लड़का, ताऊ की लड़की और चाचा की लड़की शब्दावली हिन्दी में भिन्न रूप से मिलती है जबकि मलयालम में यह शब्द भाई (सहोदरन्) बहन (सहोदरी) के रूप में समान रूप से चलती है।

—फुफेरी बहन, ममेरी बहन और ननद के लिए हिन्दी में भिन्न शब्दावली का प्रयोग मिलता है जबकि मलयालम में यह समान रूप से (नात्तून) मिलती है।

—हिन्दी में फूफी व फूफा शब्द का प्रयोग होता है परन्तु जब बड़ा फूफा, छोटा फूफा, बड़ी फूफी, छोटी फूफी का प्रयोग किया जाता है तो शब्दावली समान रूप से रहती है जबकि मलयालम में इसके समान मामन् व मामी का प्रयोग मिलता है जबकि मामा/मामी का संबंध हिन्दी में माता का भाई और माता के भाई की पत्नी से है।

—ताई और बड़ी ताई दोनों के लिए हिन्दी में अलग-अलग शब्द मिलते हैं जबकि मलयालम में एक ही शब्द 'मूत्तेम्मा' से दोनों संबंधों का काम लिया जाता है।

—साला व फुफेरा भाई के लिए हिन्दी में अलग-अलग शब्दों का प्रयोग मिलता है जबकि मलयालम में दोनों के लिए एक ही शब्द 'अलियन' का प्रयोग मिलता है।

—मलयालम में बड़ी साली व भाभी के लिए एक ही शब्द चेट्टत्ती का प्रयोग मिलता है जबकि हिन्दी में यह संकल्पना ही भिन्न है।

—इसी प्रकार पड़पोता, पड़पोती, पड़दोहित्र, पड़दोहित्री छोटा भतीजा व छोटी भतीजी के लिए हिन्दी में अलग-अलग शब्दों का प्रयोग मिलता है जबकि मलयालम में चेरुमकन् और चेरुमकक् शब्दों का प्रयोग ही मिलता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. भाषा त्रैमासिक—1973 "हिन्दी भाषा विज्ञान अंक" केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय समाज कल्याण मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।

2. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान—डा. विजय राघव रेड्डी—विनोद पुस्तक मंदिर आगरा। डा. रांगेयराघव मार्ग प्रथम सं. 1986।

3. हिन्दी भाषा शिक्षण—डा. भो.ना.ति.डा. कैलाश चन्द भाटिया, लिपि प्रकाशन, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2 प्रथम संस्करण 1980।

4. व्यतिरेकी भाषाविज्ञान—डा. भो.ना.ति. डा. किरण बाला प्रथम संस्करण 1983। आलेख प्रकाशन वी-8 नवीनशाहदरा, नई दिल्ली-32।

5. भाषा शिक्षण—डा. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव प्रथम संस्करण 1979। दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली। □

[पृष्ठ 11 का शेष]

उपयुक्त नहीं और अब तक इसके लिए उचित पदनाम नहीं निर्धारित किया जा सका है। इसके विपरीत कुछ और नमूने प्रस्तुत हैं।

President के लिए अध्यक्ष व सभापति शब्द हैं जो कि
Chairman इन सभी के लिए प्रयुक्त होते हैं परन्तु
Speaker President of India में राष्ट्रपति शब्द प्रयुक्त होता है।

आशय यह है कि ऊपर संकेतस्वरूप कठिनाइयों के समाधान हेतु सरकार के संबद्ध विभागों के बीच आपसी समन्वय स्थापित होना चाहिए और यदि आवश्यक हो, तो पदनामों में अनुकरण प्रवृत्ति अपनाए रखने के स्थान पर संशोधन किए जाएं।

सारांश

उक्त विश्लेषण में यह प्रयास किया गया है कि बैंकिंग प्रबंधन में हिन्दी का प्रयोग मात्र एक भाषा माध्यम से जुड़ा प्रश्न नहीं है, बल्कि बैंकिंग प्रबंधन को भारतीय संस्कृति जीवन शैली से तादात्मय स्थापित करने के लिए एक अनिवार्यता है। इससे प्रबंधन के प्रयोजनों का प्रबंधकों, कर्मचारियों और बैंक ग्राहकों के बीच परस्पर साधारणीकरण होगा अर्थात् ये तीनों वर्ग यह समझेंगे कि उनके अपने प्रयोजन हैं, किसी अन्य के नहीं जैसे रचनाकार, अभिनेता और दर्शक का अभिनीत चरित्र की भावनाओं—दुख-सुख का होता है और उनके वशीभूत हो वह रोता हंसता है, साहित्यिक भाषा में "रसास्वादन या रसानुभूति करता है। फलस्वरूप औद्योगिक-विवाद कम होंगे और "भागीदारी प्रबंधन शैली" का सही अर्थों में क्रियान्वयन हो सकेगा। अंततः इससे बैंकिंग कारोबार के प्रति संबंधित पक्षों की प्रतिबद्धता बढ़ेगी और नकारात्मक प्रवृत्तियों का शमन होगा। □

[पृष्ठ 14 का शेष]

ध्यान देते हैं। दशम् गुरु ने लिखा है कि कृष्णजी ने ऐसा युद्ध किया कि उनसे लड़ने वाला कोई शेष नहीं बचा। अपनी यह दशा देखकर कालयवन ने कई करोड़ दल और भेजे, जो दो महूरत तक लड़े, और अंत में यमलोक को सिधार गये। समस्त देवता प्रसन्न होकर कहने लगे कि कृष्णजी ने बहुत उत्तम युद्ध किया है।

अपने संबंध में दशम् गुरु कहते हैं कि मैं देश, धर्म, तिलक और जनेऊ की रक्षा करने वाले शूरवीर श्री गुरु तेग बहादुर का सपूत हूं। मुझे कब, कहां तपस्या करनी आती है, जो करूं? मुझे गृहस्थ के जितने जंजाल हैं, हे प्रभु, क्या आपको त्याग कर उनकी ओर ध्यान दूं'

अब रीझकै देहु वहै हम कऊ जोऊ
हउ विनती कर जोर करों
जब आउ की अउध निदान बनै,
अतिही रन मैं तब जूझ मरों॥2425॥

अब मेरी एक ही इच्छा है, जिसके लिए मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं कि जब मेरे जीवन की अवधि समाप्त होने लगे, तब मैं घोर संग्राम में लड़कर शहीद हो जाऊं।

अपना जानि मुझे प्रतिपरिऐ।
चुनि चुनि शत्रु हमारे मरिऐ।
देठा तेग जग मैं दोऊ चलै।
राख आप मुहि अउरु न दलै॥436॥

दशम् गुरु की यह वीर-रस प्रधान रचना हर प्रकार से महान है समूची भारतीय संस्कृति का एक बहुमूल्य खजाना एवं प्रेरणा स्रोत है। (कादम्बिनी, अप्रैल 1992 से साभार) □

पुरानी यादें नए परिप्रेक्ष्य

स्वामी भवानी दयाल संन्यासी : एक गौरवमय व्यक्तित्व और हिंदी के अनथक सेवक

☐ब्रह्मदत्त स्नातक*

उन्नीसवीं सदी में जन्में भारतीय सपूतों में 'स्वामी भवानीदयाल संन्यासी' का विशिष्ट और अनूठा स्थान है। यों तो उनका जन्म भारत के बाहर दक्षिण अफ्रीका में हुआ और उनके जीवन का काफी बड़ा भाग भी वहीं बीता। परन्तु अंतिम सांस तक वे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भारत की सेवा में लगे रहे। अपनी कुशल किन्तु असाधारण रूप से क्रियाशील काया से उन्होंने भारत में और भारत के बाहर विशेषतः प्रवासी भारतीयों के लिए जो कार्य किया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। स्वदेश और विदेश में भारतीयों के सुख-दुःख में हिस्सा बटाना उनका व्रत था, जिसे उन्होंने आजीवन बड़ी निष्ठा के साथ निभामा।

पिछली शती के अंतिम चरण में एवं इस शती के प्रारंभिक दशकों में प्रवासी भारतीयों के लिए जिन महानुभावों ने विशेष रूप से काम किया, उनमें लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, गोपाल कृष्ण गोखले, महात्मा गांधी, स्वामी शंकरानन्द, दीनबंधु एंड्रूज, सरोजिनी नायडू, वी.एस. श्री निवास शास्त्री और पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रायः उन सभी का स्वामीजी से सम्पर्क था और वे सब स्वामीजी की निष्ठा एवं कार्यशक्ति की कद्र करते थे।

भवानीदयालजी का जन्म 10 सितम्बर, 1892 को जोहानीजबर्ग में हुआ था। इस तरह उनकी जन्मभूमि दक्षिण अफ्रीका थी। किन्तु उनकी जड़ें भारत में थी, जहां से उनके बिहार निवासी पिता जयराम सिंह और अवध निवासिनी माता मोहिनीदेवी शर्तबंद कुलियों के रूप में दक्षिण अफ्रीका पहुंचे थे। इस तरह प्रवासी भारतीयों की सेवा की ललक और भारत भक्ति भवानीदयाल जी को घुट्टी में मिली थी।

सन् 1899 में अंग्रजों एवं बोअरों के बीच युद्ध छिड़ा और उसमें मुठ्ठी भर बोअरों ने युद्धकला में ऐसी करामात दिखायी कि अंग्रेजों के छक्के छूट गये। महात्मा गांधी ने इस युद्ध में अंग्रेजों की ओर से घायलों की सेवा की थी और उसके लिए उन्हें ब्रिटिश सरकार से तमगा दिया था। बोअरों के सेनापति जनरल ज्युबर्ट और जनरल बोथा की वीरता की कथाएं बालक भवानीदयाल ने सुनी और उनका उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

महात्मा गांधी द्वारा स्थापित अखबार "इंडियन ओपीनियन" में रूस-जापान युद्ध (1905) में जापानियों की वीरता के जो वर्णन छपे, उन्होंने बालक भवानीदयाल को बहुत आकर्षित किया। उन्हीं दिनों जोहानीजवर्ग में प्लेग फैला और इस अवसर पर भवानीदयाल ने गांधीजी के सहायक के रूप में रोगियों की बड़ी लगन से सेवा की।

फिर भवानी दयाल के पिता सपरिवार बिहार में अपने गांव बहुआरा वर्तमान नाम भोजपुर (जिला आरा) लौट आए। यहां 1906 में दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में हुए कलकत्ता अधिवेशन तथा 1908 में मुजफ्फरपुर में अंग्रेज मजिस्ट्रेट किंग्स फोर्ड पर बम फेंकने वाले नाबालिग क्रांतिवीर खुदीराम बोस की फांसी और उसके साथी प्रफुल्ल चाकी की आत्महत्या से भवानीदयाल के मन में क्रान्ति की भावनाएं उमड़ी। 1907 में उनका विवाह श्रीमती जगरानी देवी से हुआ।

गांधीजी से भेंट एवं असहमति

कुछ वर्ष भारत में बिताकर दिसम्बर, 1912 में बीसवर्षीय भवानीदयाल जोहानीजबर्ग वापिस चले गये। वहां पहुंच कर उसी दिन वे गांधीजी के दर्शन करने फीनिक्स आश्रम गए। इस भेंट का मार्मिक वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा में यों किया है :

"रास्ते में मैं महात्मा गांधीजी की उसी मूर्ति की कल्पना कर रहा था, जिस रूप में उन्हें अपने बचपन में जोहानीजबर्ग

* सी 4बी-332बी, जनकपुरी, दिल्ली-58

में देख चुका था। किन्तु वहां पहुंचते ही मेरी कल्पना भ्रान्त सिद्ध हुई। आश्रम के निकट पहुंचा तो देखता हूं कि महात्मा गांधी बहुत मोटे कपड़े का जांघिया और अधबंही (आधी बाह का कुरता) पहने खेत में कुदाल चला रहे हैं। न पैरों में जूते थे न सिर पर टोपी। व कुदाल इस तेजी से चला रहे थे कि उनके सभी साथी पीछे छूट गये थे। मैंने मुखाकृति देखकर उन्हें पहचान लिया और उनके चरणों की धूल माथे पर चढ़ायी।"

गांधीजी ने भवानीदयाल से "इंडियन ओपीनियन" के हिन्दी भाग का संपादन करने और फीनिक्स आश्रम में रहने का प्रस्ताव किया। भवानीदयाल सहर्ष तैयार हो गए। इसी दौर में उनका दीनबंधु सी.एफ. एंड्रूज से परिचय हुआ, जिससे उन्हें प्रवासी भारतीयों की सेवा और भारतीय स्वाधीनता के कार्यों के लिए बड़ी प्रेरणा मिली।

सन् 1919 में भवानीदयाल अपनी पत्नी जगरानीजी को दक्षिण अफ्रीका में मरणासन्न छोड़कर अपने पुत्र और भतीजे को गुरुकुल वृंदावन में भरती करवाने भारत आए और अगस्त 1920 तक यहां रहे। भारत निवास की इस स्वल्पावधि में अनेक संपर्कों की नींव पड़ी। इसी दौर में उनकी भेंट पं. बनारसीदास चतुर्वेदी से हुई।

इस यात्रा के दौरान उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के भारतीय आंदोलन पर एक पुस्तक भी लिखी। इसमें उन्होंने गांधीजी के कुछ निर्णयों की निर्भीक भाव से आलोचना की थी। उनका कहना था कि 1907 के आंदोलन में भारतीयों को अपमान का कड़वा घूंट पीना पड़ा था। दुर्भाग्य से या गलतफहमी से गांधीजी ने उंगलियों की छाप देने के मामले में दक्षिण अफ्रीका सरकार की नीति का समर्थन किया और इससे क्रुद्ध होकर मीर आलम नामक पठान ने उन पर आक्रमण किया था, जिससे उनके आगे के दो दांत टूट गए थे। भवानीदयाल मानते थे कि उस मामले में भी गांधीजी से भूल हुई थी।

इसी तरह जब नैटाल में रहने का अधिकार छोड़कर स्वेच्छा से स्वदेश लौटने वाले भारतीयों के लिए दक्षिण अफ्रीका सरकार ने पुरस्कार योजना चालू की और गांधीजी और एंड्रूज ने उसका समर्थन किया तब भवानीदयाल ने उसका विरोध किया था।

हिन्दी के श्रेष्ठ लेखक व पत्रकार

दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए भवानीदयालजी ने एक प्रेस खोलकर "हिन्दी" नामक पत्र निकाला। मारिशस, फीजी, डमरारा, ट्रिनीडाड, सूरीनाम, टांगानीका, युगांडा, केन्या, रोडेशिया (जांबिया और जिम्बाब्वे) आदि देशों के प्रवासी भारतीयों में यह समाचार पत्र लोकप्रिय हुआ। परन्तु बाद में भवानीदयालजी को पारिवारिक कारणों से इसे बंद करके भारत लौट आना पड़ा।

भारत में रहते हुए उन्होंने, पटना में "आर्यावर्त" का और हजारीबाग जेल में हस्तलिखित "कारागार" का संपादन किया। हिन्दी में लिखी उनकी बहुत सी पुस्तकें हैं, जिनमें से मुख्य हैं: 1. दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास, 2. दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव, 3. हमारी कारावास कहानी, 4. महात्मा गांधी, 5. ट्रान्सवाल में भारतवासी, 6. नैटाली हिन्दू, 7. वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता, 8. शिक्षित और किसान, 9. वैदिक प्रार्थना, 10. वैदिक धर्म और आर्य समाज, तथा 11. प्रवासी की कहानी।

विदेश में निवास एवं शिक्षा के कारण स्वामी भवानीदयालजी को अंग्रेजी में लेखन तथा धाराप्रवाह भाषण का अभ्यास था, परन्तु स्वदेशवासियों से वे यथासंभव हिंदी में ही बोलते थे और उन्हें भी हिन्दी में बोलने को विवश करते थे। दक्षिण अफ्रीका में भारत सरकार के प्रतिनिधि श्री श्रीनिवास शास्त्री ने जब अंग्रेजी को प्रवासी भारतीयों की शिक्षा का माध्यम रखने के पक्ष में अपनी रिपोर्ट दी, तो स्वामीजी ने उसका डटकर विरोध किया। भारतीय वेशभूषा के भी वे बड़े आग्रही थे और संन्यासी होने के बाद देश-विदेश में जहां भी रहे, गेरुआ रंग की पगड़ी, चोगा और पाजामा पहनते थे।

वे निष्ठावान आर्य समाजी और हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के अनन्य प्रेमी थे, परन्तु कट्टरता के घोर शत्रु थे। खंडन-मंडन और धार्मिक वैमनस्य की बातों से सदा दूर रह कर उन्होंने अपने जीवन में रचनात्मक कार्य को महत्त्व दिया।

उन्होंने हिन्दी का व्यापक प्रचार करने का बीड़ा उठाया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने जगह-जगह हिन्दी प्रचार सभाएं और हिन्दी रात्रि पाठशालाएं स्थापित कीं। अनेक व्यायामशालाएं एवं क्रीड़ागार भी उन्होंने खुलवाए। इन सबमें उन्होंने हिन्दी को प्रमुख व्यवहार भाषा का स्थान दिलाया। आज दक्षिण अफ्रीका के वेस्टविल डर्बन विश्वविद्यालय में हिन्दी की स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाई होती है। स्वामीजी के जीवन काल में वहां हिन्दी का जो व्यापक प्रचार था, उसका श्रेय मुख्यतः उन्हीं को था। यह दुःख की बात है कि दक्षिण अफ्रीका के भारतवंशी अब हिन्दी से विमुख हो गए हैं।

भारत में रहते हुए स्वामी भवानीदयालजी ने कलकत्ते में हिन्दी पत्रकार सम्मेलन और कानपुर में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की अध्यक्षता में हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सक्रिय भाग लिया था। 1931 में देवघर में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे सभापति बनाए गए। वृंदावन में हुए प्रवासी भारतीयों के प्रथम अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर उन्होंने जेल से अपना अध्यक्षीय भाषण हिन्दी में ही लिखकर भेजा था।

अपनी भारत यात्राओं में वे राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के अधिवेशनों एवं अन्य सम्मेलनों में सदा भाग लेते थे। 1919 की अमृतसर कांग्रेस में प्रवासी भारतीयों के बारे में

राष्ट्रीय प्रस्ताव उन्होंने ही प्रस्तुत किया था, जो सर्वसम्मति से पास हुआ। 1925 में वे दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधियों के साथ भारत आए और मथुरा की दयानन्द जन्म शताब्दी में भाग लेने के बाद भारतीय पत्रों में लेखों के जरिये प्रवासी भारतीयों के सम्बन्ध में बराबर, प्रचार करते रहे। 1927 में वे दक्षिण अफ्रीका लौट गए और अक्तूबर 1932 में फिर भारत आए और प्रवासी भारतीयों के कार्य तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेते रहे। इस सिलसिले में उनकी गिरफ्तारी भी हुई और उन्हें हजारीबाग (बिहार) में रखा गया। मार्च 1932 में वे दक्षिण अफ्रीका लौट गए। 1935 में वे स्थायी रूप से भारत आ गए और अजमेर में रहने लगे।

स्वामी भवानीदयालजी के जीवन पर आर्य समाज और वैदिक धर्म का गहरा प्रभाव था वे दक्षिण अफ्रीका की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रथम अध्यक्ष थे, जिसकी हीरक जयंती में भाग लेने का अवसर इस लेखक को 1985 में दिसम्बर में मिला। उस समारोह में सभा के विशाल तिमंजिले भवन की तीसरी मंजिल पर स्वामीजी की स्मृति में एक सभाकक्ष की नामपट्टिका का अनावरण हुआ। मैंने देखा कि उस संगमरमर की तख्ती पर अंग्रेजी में "स्वामी भवानीदयाल चेंम्बर" लिखा गया था। उसमें स्वामी दयानन्द के दक्षिण अफ्रीकी शिष्यों की हिन्दी के प्रति अनास्था प्रकट होती थी। निश्चय ही स्वामी भवानीदयालजी की दिवंगत आत्मा को उससे क्लेश पहुंचा होगा।

गत वर्ष दक्षिण अफ्रीका जाने पर हमें ज्ञात हुआ कि स्वामीजी की स्मृति में डरबन कार्पोरेशन ने उनके मकान वाली सड़क का नाम "दयाल रोड़" रखा है। उनकी पत्नी व दोनों पुत्र ब्रह्मदत्त एवम् रामदत्त भारत में दिवंगत हो चुके हैं। उनके स्वर्गीय भाई की पत्नी दक्षिण अफ्रीका के स्टगर नामक स्थान पर रहती है। मुझे बताया गया कि उनका बेटा यानी स्वामीजी का भतीजा हिन्दी अध्यापक है और इस समय डरबन विश्वविद्यालय में स्वामीजी के सम्बन्ध में शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करने की तैयारी कर रहा है। स्वामीजी के एक और भतीजे डॉ. दयाल डरबन में चिकित्सा काय करते हैं।

स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी ने लगभग आधी शती तक प्रवासी भारतीयों एवं मातृभूमि की सेवा द्वारा बृहत भारत के निर्माण में अपना जीवन खपाया। 9 मई 1950 में अजमेर में उनका स्वर्गवास हुआ, जहां उन्होंने प्रवासी भारतीयों की सेवा के लिए "प्रवासी ट्रस्ट" की स्थापना की थी। आज वह ट्रस्ट निष्क्रिय एवम् गतिहीन हो गया है। □

कच्छ की हिन्दी साहित्य को देन

—कुंजभाई अ. महतो—

कच्छ के महाराज लखपतजी ने भुज शहर में संवत् 1808 और 1817 के बीच ब्रजभाषा पाठशाला की स्थापना की थी। ब्रजभाषा पाठशाला में कविता सिखाने की व्यवस्था थी। यह पाठशाला दुनिया भर में अद्वितीय थी। अनेक कवि ने शिक्षा प्राप्त करके राजदरबारों में राजकवि हो गए थे। काव्यशास्त्र सिखाया जाता था। प्रथम अध्यापक विद्वान जैन यति कनक कुशलजी थे। कवियों को खाने-पीने, आवास-प्रशिक्षण की व्यवस्था निःशुल्क थी। उत्तीर्ण होने वालों को इनाम, पोशाक, पदवी देकर सम्मान किया जाता था। आजादी मिलते ही 1948 में कच्छ राज्य भारत में विलीन हुआ और भारत सरकार ने पाठशाला बंद कर दी।

लखपतजी खुद कवि थे। उन्होंने लखपति शृंगार, हरि-विलास लखपति मान-मंजरी, सुरतरंगिनी, मृदंग महोरा, राग-सागर लखपति भकित विलास, शिवव्याह इस तरह अनेक काव्यग्रन्थ लिखे थे। आशा है कि इन ग्रंथों की खोज करके हिन्दी साहित्य जगत में प्रचलित करना जरूरी है। लखपतजी ने लखपत शृंगार में लिखा है कि :—

धरनी सब रूपे के पत्र सीता पर चंदन लेप लगायौ चांदनी
पारद-सी लपरानी है ऊजलता सो सबै जग जायौ।
सूत कियो ससि की सब अंसुनि हाथन तें विधि आवे बतायौ
ब्यौत बनाब कियौ चतराई दसौ दिसि अंबर ऐसो सुहायौ।

इस तरह का सुंदर वर्णन-चांदनी का काव्य-संग्रह में है। आशा है कच्छ में प्राचीन हिन्दी साहित्य कृति का संशोधन कराके कोई इस कार्य को बढ़ाएंगे।

(राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की मासिक पत्रिका राष्ट्र-भाषा' जनवरी 1992 से साभार)। □

अमेरिका में हिंदी

□डॉ० कुलदीप चंद अग्निहोत्री

प्रस्तावना: पृष्ठभूमि---अमेरिका में भारतीयों के आ बसने का काफी लंबा व कष्टप्रद इतिहास है। स्वतंत्रता संग्राम में अमेरिका स्थित भारतीयों की गतिविधियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। गदर आंदोलन का तो इतिहास ही प्रकारांतर से अमेरिकी भारतीयों का इतिहास है। उन्हीं दिनों से अमेरिका में हिंदी की कहानी प्रारंभ होती है। "गदर की गूंज" नामक पत्रिका का प्रकाशन अमेरिका की भूमि पर हिंदी का प्रथम सृजनात्मक प्रयास था। तब से लेकर अब तक हिंदी ने एक लंबी यात्रा तय की है। आज यहां के भारतीय, पाकिस्तानी, बंगलादेशी, लंकाई एवं कुछ सीमा तक अफगानिस्तानी लोगों की आपसी बोलचाल की भाषा हिंदी बन गई है। हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ है। दूरदर्शन व आकाशवाणी से हिंदी ध्वनि दिग्-दिगंतों में प्रसारित होती है। बहुत थोड़ी सीमा तक भारतीय घनता वाले नगरों या क्षेत्रों में सरकार ने भी किसी न किसी रूप में हिंदी को मान्यता प्रदान की है। डाकखानों व अन्य सार्वजनिक स्थानों पर कहीं इक्का-दुक्का कोई सूचना हिंदी में लटकी मिल जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। देश के अनेक सार्वजनिक पुस्तकालयों में हिंदी कक्ष तो अब साधारण बात हो गई है।

इधर कुछ युवा उत्साही हिंदी प्रेमी साहित्य सृजन में भी संलग्न है। वेद प्रकाश बटुक, उषा निकोलसन, कृष्ण बलदेव वैद इत्यादि विद्वान तो बाकायदा अपने परिश्रम से हिंदी साहित्य में प्रतिष्ठित हुए हैं। प्रस्तुत निबंध में अमेरिका में हिंदी का इन्हीं सभी विविध आयामों से सांगोपांग अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। दरअसल यह एक प्रकार से अमेरिका में हिंदी की गतिशीलता का एक तथ्यात्मक लेखा-जोखा है, जिसमें हमारा दृष्टिकोण तथ्यात्मक ज्यादा रहा है, समीक्षात्मक कम।

विश्वविद्यालयों में हिंदी---अमेरिका के 23 विश्वविद्यालयों में किसी न किसी रूप से हिंदी पढ़ाई जाती है। बी.ए. में ऐच्छिक विषय के तौर पर भी। सामान्य विषयों से आधे ग्रेड्स का प्रश्नपत्र प्रायः हिंदी का होता है। दो तीन वर्ष के इस पाठ्यक्रम में प्रायः ज्यादा जोर इस बात पर दिया जाता है कि छात्र हिंदी पढ़ना और बोलना सीख लें। हिंदी साहित्य का इन पाठ्यक्रमों में स्थान प्रायः नगण्य ही होता है। वास्तव में अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया जाता है, साहित्यिक दृष्टि से नहीं। जिन एक-दो केंद्रों (मिशगन स्टेट विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय आदि) में हिंदी साहित्य का भी गंभीर अध्ययन व समीक्षा होती है वहां अंग्रेजी माध्यम से होती है हिंदी माध्यम से नहीं। इसी प्रकार जिन विश्वविद्यालयों में हिंदी में उच्चस्तरीय शोध की सुविधा प्रदान की जाती है वहां भी माध्यम अंग्रेजी है। विश्वविद्यालय अपने प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तकें प्रायः स्वयं विभाग के प्राध्यापकों द्वारा ही तैयार करवाते हैं, भारत से पाठ्यपुस्तकों का आयात प्रायः नहीं किया जाता। अनेक विश्वविद्यालयों में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की विदेशी छात्रों को हिंदी सिखाने की पाठ्य-सामग्री का प्रयोग अवश्य होता है।

अमेरिका में प्रायः दो प्रकार के विश्वविद्यालय हैं: शासकीय एवं प्राइवेट। सम्मान एवं मान्यता की दृष्टि से द्वितीय प्रकार के विश्वविद्यालय ही इक्कीस पड़ते हैं। इन्हीं विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई की ज्यादातर व्यवस्था है। परंतु हिंदी कक्षाओं के छात्रों की संख्या विशेष उत्साहजनक नहीं होती। दस से लेकर बीस पच्चीस तक। चीनी व जापानी भाषा के मुकाबले यह संख्या कहीं कम है। प्रायः तीन प्रकार के छात्र हिंदी विषय लेने को वरीयता देते हैं।

(क) भारतीय आप्रवासियों के बच्चे।

(ख) ऐसे विद्यार्थी जो भारतीय संस्कृति से आकृष्ट हों।

(ग) दोनों के मित्र जो केवल मित्रता निभाते हैं।

हिंदी विभाग नाम से स्वतंत्र विभाग शायद अमेरिका के किसी भी विश्वविद्यालय में नहीं है। "दक्षिण एशिया अध्ययन विभाग" के अंतर्गत जहां अन्य दक्षिण एशियाई भाषाएं पढ़ाने की व्यवस्था है वहीं हिंदी की भी। कहीं-कहीं इसी विभाग में "भारतीय अध्ययन" के अंतर्गत ही हिंदी पढ़ाकर संतोष कर लिया जाता है। अध्यापक प्रायः भारतीय भी हैं और

अमेरिकी भी लेकिन अमेरिकी अध्यापक भी भारत में हिंदी अध्ययन कर चुके होते हैं, अतः उनका हिंदी अधिकार प्रायः, संतोषप्रद ही होता है ।

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में उर्दू भाषा का अध्ययन भी प्रायः हिंदी के अंतर्गत ही कराया जाता है । वास्तव में, वहां उर्दू हिन्दी को एक ही शैली के अंतर्गत माना जाता है । अतः प्रत्येक छात्र जो हिंदी पढ़ता है, वह उर्दू भी सीख लेता है और इस प्रकार अरबी लिपि से भी परिचित हो जाता है । कुछ विश्वविद्यालय में उच्च डिग्री हासिल करने के लिए किसी विदेशी भाषा के अध्ययन का भी प्रावधान है । अतः वहां विदेशी भाषाओं में हिंदी भी दर्ज होने से चार-पाँच हिंदी छात्र भी निकल आते हैं ।

"दक्षिण एशिया अध्ययन विभाग" की ओर से प्रायः विश्वविद्यालयों में शोध पत्रिकाएं प्रकाशित होती है । इनमें भी हिंदी विभाग के प्राध्यापकों के हिंदी विषयक शोध निबंध कभी-कभार अंग्रेजी में प्रकाशित होते हैं । लेकिन जैसा ऊपर संकेतित है, ये निबध हिंदी की भाषावैज्ञानिक चीर-फाड़ से संबंधित होते हैं ।

हिंदी विभागों में हिंदी पुस्तकालय (जिनमें प्रायः साहित्य सबंधी रहती हैं) में समाचार पत्र, पत्रिकाएं उपलब्ध रहते हैं ।

हिन्दी साहित्यिक संस्थाएं : नव सृजन का सशक्त माध्यम

(क) अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति—अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की स्थापना भारत के प्रसिद्ध हिंदी सेवी कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह जी की प्रेरणा से 18 अक्टूबर, 1980 को रोजलिन वर्जीनिया में हुई थी । समिति ने चार वर्ष की अल्पायु में ही अमेरिका में हिंदी गतिविधियों को सुसंठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । समिति के उद्देश्यो में

(i) प्रवासी भारतीयों के मध्य भाषा एवं संस्कृति की जागृति बनाए रखना एवं भारतीय भाषाओं में निहित जीवन मूल्यों का प्रसार करना । (ii) व्यक्तिगत तथा सामूहिक स्तर पर विचार विनिमय को प्रोत्साहित करना । (iii) भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रति युवा पीढ़ी में अनुराग उत्पन्न करने के लिए विभिन्न आयोजन करना । भारतीय मूल के समाजशास्त्रियों एवं वैज्ञानिकों को तकनीकी विषयों पर भारतीय भाषाओं में अनुवाद और मूल लेखन की प्रेरणा प्रदान करना । भारतीय भाषाओं के लेखकों के लिए एक मंच स्थापित करना ।

निस्संदेह समिति के ये उद्देश्य हिंदी से भी परे संपूर्ण भारतीय भाषाओं में सृजनात्मक अवसर खोजने में संलग्नता के द्योतक है एवं हिंदी को मात्र साहित्य की भाषा तक सीमित कर समाजविज्ञान एवं अन्य पदार्थ विज्ञानों तक ले जाने को उद्यत हैं । समिति अब तक अनेक महत्त्वपूर्ण आयोजन कर चुकी है जिनमें प्रमुख हैं—अमेरिकन विश्वविद्यालयों में प्रसिद्ध कवि सुब्रह्मण्यम् भारतीय का जन्म शताब्दी समारोह (1 अक्तूबर 1982), प्रसाद निराला जयंती (5 फरवरी 1983), मेरीलैंड विश्वविद्यालय में सूर जयंती उत्सव (8 मई 1983), टाउसन स्टेट विश्वविद्यालय में कबीर जयंती (25 जून, 1983), मेरीलैंड राकविल में तुलसी जयंती (3 सितबंर 1983), गांधी जयंती (15 अक्टूबर, 1983), समिति ने अनेक कवि सम्मेलनों का आयोजन भी किया है । 15 जुलाई, 1983 को राकविल मेरीलैंड में काव्य पाठ करने वाले कवियों में श्री अटल विहारी बाजपेयी भी थे । समिति में अमेरिका के अनेक हिंदी विद्वान यथा डा. रवि प्रकाश सिंह (सचिव), मोही तैयर, अनिल भाटिया, डा. अशोक सिन्हा, गिरिजा शंकर शुक्ल, सतीश भाटिया, राधेश्याम द्विवेदी, डॉ. वेद प्रकाश वटुक, सच्चिदानंद गुप्ता, विद्यानंद सिंह, मुर्तजाखान, नटवर गांधी इत्यादि सक्रिय हैं । समिति ने जिसका प्रधान कार्यालय वाशिंगटन डी-सी में हैं अन्य प्रांतों में भी अपनी शाखाएं स्थापित की हैं। इनमें से एटलांटा (नंदु अभयंकर कमला दत्त), कलीव लैंड (डॉ. राजेंद्र मिश्र सैन फ्रांसिस्को (लतिका नेवी, अरुण चौहान), डेट्रायट (हरी बाबू जिंदल), विमिपेग कनाडा (डॉ. वेदानंद, डॉ. सुरेश भट्ट, डॉ. हर्षेंद्र कुमार), मान्ट्रियल (डॉ. टी.डी. द्विवेदी) शाखाएं काफी सक्रिय हैं ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकल्प अमेरिका व कनाडा भर में फैले हिंदी कवियों की कविताओं का एक संकलन प्रकाशित करना है । "अमेरिका के हिंदी कवि" संपादक डॉ. रवि प्रकाश सिंह नामक इस संकलन में 51 कवियों की सौ से भी अधिक कविताएं संकलित हैं ।

गद्य के क्षेत्र में समिति ने दूसरा महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रवासी भारतीयों की मानसिकता का जीवन चित्र राजेंद्र मिश्र का 'बातें मन की' प्रकाशित किया है । शीघ्र ही समिति डॉ. अशोक सिन्हा के खंड काव्य "एकलव्य" को प्रकाशित कर रही है । हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अ.हि.स. के ये मील के पत्थर हैं । टाउसन विश्वविद्यालय के आधुनिक भाषा विभाग के अंतर्गत समिति ने हिंदी प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी प्रारंभ किया है ।

(ख) हिंदी साहित्य सभा—इलिनाय राज्य में हिंदी साहित्य सभा की स्थापना जनवरी, 1984 को हुई थी । लेकिन इस शैशव काल ही में सभा की गतिविधियों की सफलता आश्चर्यजनक है ? सभा "भारतीय" संपादिका किरण चतुर्वेदी, पत्रिका का जन्म काल से ही सफल प्रकाशन कर रही है । बच्चों में हिंदी के प्रति आकर्षण पैदा करने के लिए कुछेक "पिकनिक कार्यक्रम" का आयोजन किया गया जहां हिंदी में कुछ हल्के-फुल्के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए । वास्तव में सभा के प्रेरणास्रोत एवं संरक्षक डा. सुधारी साहु हैं और इन्हीं की प्रेरणा से इस हिंदी मंच की स्थापना हुई है । डॉ. साहु के इस हिंदी स्वप्न को मूर्त करने में चतुर्वेदी दंपत्ति (महेन्द्र चतुर्वेदी, किरण चतुर्वेदी) की कार्य-निष्ठा एवं परिश्रम प्रसंशनीय है । सभा के उद्देश्यों में :

(i) विदेश में हिंदी भाषा को मुखरित करना ।

(ii) हिंदी भाषा के माध्यम से साहित्यिक अभिरुचियों को जागृत करना ।

(iii) भारतीय भाषाओं के लेखकों व कवियों की सृजनात्मक प्रतिभा के विकास हेतु स्थायी मंच प्रदान करना ।

(iv) समय-समय पर साहित्यिक गोष्ठियों एवं कवि सम्मेलनों का आयोजन करना ।

(v) बच्चों में भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रति रुचि जागृत करना ।

समिति ने अब तक एक वर्ष में दो कवि दरबार सफलतापूर्वक आयोजित किए जिनमें अनेक स्थानीय कवियों ने कविता पाठ किए ।

(ग) हिंदी साहित्य संघ—कैलिफोर्निया के सेन होजे नामक नगर में कुछ स्थानीय हिंदी प्रेमियों के सद्प्रयत्नों का परिणाम हिंदी का साहित्य संघ है इसके सचिव प्रो. सुखविंदर सिंह कटवोज हैं । संघ मास-दो-मास में स्थानीय बुद्धिजीवियों को लेकर गोष्ठी आदि करता रहता है । इनकी गतिविधियां भी प्रायः पंजाब के हिंदी प्रेमियों तक सीमित हैं । 1984 से संघ ने प्रत्येक वर्ष पंजाब के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार को सम्मानित करने का निर्णय लिया है और 1984 के लिए पंजाब के प्रसिद्ध हिंदी नाटककार डा. चन्द्रशेखर (पंजाबी विश्वविद्यालय) को सम्मानित किया है ।

(घ) अन्य—कुछ अन्य साहित्यिक व दूसरी संस्थाएं जो प्रत्यक्ष तो हिंदी से संबंधित नहीं है परंतु अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी हेतु कुछ न कुछ करती रहती हैं । भारतीय विद्या भवन न्यूयार्क उनमें से प्रमुख है । भवन, प्रति वर्ष भारतीय भाषाओं में नाटक प्रतियोगिता संपन्न करता है जिसमें हिंदी के नाटक भी अभिनीत किए जाते हैं । इसी प्रकार अनेक मंदिरों में हिंदी की धार्मिक पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का संग्रह रहता है जिन्हें दर्शनार्थी प्रयोग करते हैं । हरे राम हरे कृष्ण मंदिरों में हिंदी भजनों के प्रतिदिन सस्वर पाठ होते हैं और कई उत्साही कृष्ण भक्त नए भजनों की रचना भी करते हैं । जहां-जहां भारतीयों की घनता ज्यादा हैं, वहां कई बार सरकारी क्रिया-कलाप भी हिंदी को प्रोत्साहित करते हैं । उदाहरण के लिए न्यूयार्क में फिलशंग क्षेत्र में जहां भारतीय सर्वाधिक हैं, वहां की डाउन-टाउन फिलशंग डेवलपमेंट कारपोरेशन ने खरीददारी के लिए एक शब्दकोश प्रकाशित किया है । यह शब्दकोश अंग्रेजी के साथ-साथ स्पेनी, चीनी, कोरियाई एवं हिंदी में है ।

आकाशवाणी व दूरदर्शन के माध्यम से हिन्दी

अमेरिका में आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दोनों ही निजी संस्थाओं की संपत्ति है एवं विशुद्ध व्यावसायिक दृष्टिकोण से इनका संचालन होता है परंतु इन दोनों का जितना प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव अमेरिकी जनमानस पर है उतना शायद ही किसी अन्य माध्यम का हो । अमेरिका के प्रायः प्रत्येक नगर के अपने-अपने आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्र हैं और वे स्वतंत्र रूप से कार्यक्रम स्थानीय रुचियों को देखकर तैयार करते हैं । इस प्रकार हजारों आकाशवाणी व दूरदर्शन केंद्र दिन रात (चौबीस घंटे) कोई न कोई कार्यक्रम प्रसारित करते ही रहते है । दूरदर्शन के कार्यक्रमों में अत्यंत विविधता रहती है, क्योंकि दसियों चैनलों में चयन की सुविधा दर्शन को रहती है ।

भारतीय भी प्रायः अमेरिका के छोटे-बड़े हर नगर में बसे हुए हैं । अतः भारतीय संस्थाएं इन्हीं आकाशवाणी व दूरदर्शन केन्द्रों से अपने कार्यक्रम प्रसारित करती हैं । इन कार्यक्रमों में प्रायः तीन प्रकार की सामग्री होती है ।

(क) चलचित्र संगीत, (ख) चलचित्र (दूरदर्शन से), (ग) समाचार एवं अमेरिका में भारतीय संस्थाओं के समाचार (घ) विज्ञापन कार्यक्रमों की उद्घोषणा प्रायः अंग्रेजी में होती है । लेकिन कार्यक्रम का अधिकांश समय जो फिल्मी गीतों को समर्पित होता है वह स्वभावतः हिंदी में ही होता है । फिल्में तो प्रायः भी हिंदी की ही दिखाई जाती हैं । समाचार कुछ कार्यक्रमों में अंग्रेजी में होते हैं एवं कुछ में हिंदी में । विज्ञापन अधिकांशतः अंग्रेजी में होते हैं । कुल मिलाकर 50% से ज्यादा कार्यक्रम हिन्दी में ही होते हैं ।

आकाशवाणी कार्यक्रमों के नाम ही इस बात का संकेत करते हैं कि ये प्रायः फिल्मी गीतों से संबंधित है ऐसे कार्यक्रमों का 90% भाग हिंदी में ही रहता है । उदाहरणार्थः गीतांजलि (वैस्ट हार्टफोर्ट), मधुधुन (बाल्टीमोर), विविध भारती (बाल्टीमोर), नवरंग (बोस्टन), रागमालिका (बोस्टन), गीतांजलि (बोस्टन), विश्व भारती (वोर सैस्टर), गीतमाला (ब्लूम फील्ड), विश्वगीत माला (ट्रांटन), रंग महल (साइरकस) मनोरंजन (पिट्सबर्ग), संगीत (पिट्सबर्ग), मन चाहे गीत (कैलीफोर्निया, पैनसलवानियां), भारत की झंकार (न्यूयार्क), गुंजन (न्यूयार्क), भारत वाणी (न्यूयार्क), मधुवत (न्यूयार्क) ।

ये भारतीय हिंदी कार्यक्रम प्रायः शनिवार व रविवार सप्ताहांत में ही प्रसारित होते हैं । कोई-कोई कार्यक्रम सप्ताह के अन्य दिनों में भी प्रसारित होते हैं । इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त शासकीय आकाशवाणी केंद्र 'वायस ऑफ अमेरिका' से भी नित्य प्रति प्रसारित होता है परंतु उसका लक्ष्य भारत स्थित श्रोता होते है अतः वह अमेरिका में कम ही सुनाई देता है । वह विशुद्ध हिंदी का कार्यक्रम है ।

जिन नगरों में भारतीयों की संख्या अपेक्षतया अधिक है जैसे न्यूयार्क, शिकागो, लॉस एंजेल्ज, सानफ्रांसिस्को इत्यादि वहां ये कार्यक्रम सप्ताहांत के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी प्रसारित होते हैं, एवं इनकी अवधि भी ज्यादा अर्थात् दो-दो घंटे तक ही होती है । परन्तु अन्य नगरों में यह अवधि आधा घंटा से लेकर एक घंटे तक ही समटी रहती है ।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के इन हिंदी कार्यक्रमों ने निस्संदेह अमेरिका में बसे भारतीयों को उनकी मूल भाषा से जोड़ रखने का महा कार्य किया है। साथ ही साथ नई पीढ़ी को हिंदी से परिचित करवाया है एक उनकी हिंदी में रुचि उत्पन्न की है ।

हिन्दी चलचित्र कैसट वीडियो, दृश्यमाध्यम : एक वरदान

हिंदी के प्रचार-प्रसार का जितना कार्य हिंदी चलचित्रों एवं हिंदी फिल्मी संगीत ने किया है उतना शायद अन्य सभी माध्यमों ने मिल कर न किया हो । हिंदी फिल्मों के गीतों की रिकार्डिड कैसेट प्रायः बाजारों में उपलब्ध हैं और भारतीयों के घरों में इन गीतों की गूंज सुनाई पड़ती रहती है । इससे भी महत्त्वपूर्ण योगदान है वीडियो का। अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में वीडियो का प्रचलन इतना बढ़ा है कि इसने चल-चित्र जगत में लगभग क्रांति ही ला दी है । अब घर का ड्राईंग रूम ही प्रकारांतर से इच्छानुसार सिनेमा हाल में परिवर्तित हो गया है । भारतीय स्टोर प्रायः वीडियो फिल्मों से भरे पड़े हैं और प्रत्येक भारतीय के घर में कुछ संख्या में फिल्में अवश्य रहती हैं । वीडियो से हिंदी फिल्म इतनी नजदीक एवं प्रत्येक व्यक्ति की सामर्थ्य में आ गई हैं जिसकी दस वर्ष पहले कल्पना ही नहीं की जा सकती थी । इन हिंदी फिल्मों ने

(i) अमेरिका में जन्मी व पली नई पीढ़ी में हिंदी समझने-बूझने की आदत डाली है ।

(ii) वेस्ट इंडीज के भारतीयों (जो अमेरिका में रहते हैं) में ये हिंदी फिल्म अतीत लोकप्रिय हैं । अतः ये भारतीय जो प्रायः हिंदी से कट ही गए थे, अब पुनः हिंदी के संपर्क में आ रहे हैं ।

(iii) अहिंदी भाषी भारतीयों के हिंदी के निकट लाने में सहायता की है ।

(iv) इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले भारतीयों को हिंदी फिल्मों के निर्माण की ओर प्रेरित किया है । दो हिंदी फिल्मों का निर्माण यहां अमेरिकी भारतीय पात्रों की सहायता से पूरा किया गया है ।

कहना न होगा कि हिंदी अभ्युदय के प्रारंभिक काल में जो कार्य देवकीनंदन खत्री के तिलस्मी और ऐय्यारी उपन्यासों ने किया था । अमेरिका में वही कार्य हिंदी फिल्में कर रही हैं ।

हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं—प्रकाशन का संकट

अमेरिका में भारतीयों की संख्या कई लाख है । यहां प्रत्येक एथॉनिक समुदाय की अनेक पत्र-पत्रिकाएं उनकी अपनी-अपनी भाषा में प्रकाशित होते हैं। उदाहरणार्थ चीनी, कोरियाई, जर्मन, हिब्रू, स्पेनी, रूसी इत्यादि भाषाओं में । भारतीयों के भी अनेक साप्ताहिक यथा इंडिया अब्रोड/न्यूज इंडिया, इंडिया न्यूज, इंडिया आब्जरवर, इंडिया ट्रिब्यून, इंडिया ओवरसियर इत्यादि प्रकाशित होते हैं और इनकी प्रसार संख्या भी प्रभावी है । तथापि राष्ट्रभाषा हिंदी में कोई प्रमुख पत्र-पत्रिका अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाई है । मलयालम में 'प्रभातम्' एवं गुजराती में "गुजराती समाचार" है लेकिन हिंदी इस मामले में उपेक्षित है, ऐसा कहना पड़ेगा । इस क्षेत्र में संपूर्ण अमेरिका में कुल मिलाकर निम्न पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख किया जा सकता है ।

(क) भारती—भारती द्विमासिक हिंदी पत्रिका है जिसका प्रकाशन इलिनॉय राज्य के प्रसिद्ध नगर शिकागो से होता है । पत्रिका का प्रकाशन आरंभ जनवरी 1984 में हुआ था । इस प्रकार जनवरी, 1985 को पत्रिका ने अपने जीवन का प्रथम वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण किया। पत्रिका की पुस्तक आकार की पृष्ठ संख्या लगभग तीस होती है, जिसमें कविता, लघु कहानी शिक्षाप्रद निबंध, बच्चों को हिंदी शिक्षण इत्यादि सामग्री सम्मिलित रहती है । क्षेत्रीय हिंदी लेखकों एवं नवोदित लेखकों को यह पत्रिका एक प्रकार से मंच प्रदान करती है । परन्तु इसकी प्रसार संख्या कुछ सौ तक समिति है । पत्रिका की संपादिका श्रीमती किरण चतुर्वेदी जी ने, जो अमेरिका की लब्धप्रतिष्ठि हिंदी कवियित्री हैं । इनकी कविताओं का समावेश "अमेरिका के हिंदी कवि" नामक संकलन में भी हुआ है । कहना न होगा, यह प्रयास डॉ. सुधारी साहू, प्रो. कालीचरण बहल, श्रीमती विमला बहल, रेखा, सुधा उपाध्याय, शब्द श्रीवास्तव, महेन्द्र चतुर्वेदी, उर्मिला चावला इत्यादि हिन्दी प्रेमियों के सामूहिक सद्‌प्रयत्नों का सुफल है । मजरूह सुलतान-पुरी ने पत्रिका की महत्ता के बारे में लिखा है—पराए देश, पराए समाजी माहौल में रहकर अपनी जबान, अपनी तहजीब की पाशदारी यकीनन एक ऐसा काम है जिसकी दाद ही नहीं बल्कि उसका एहतिराम भी किया जाना चाहिए ।

(ख) भारत समाचार –"भारत समाचार" साप्ताहिक हिंदी पत्रिका है जिसका प्रकाशन न्यूयार्क से होता है। इसका जन्म छब्बीस जनवरी, 1985 को हुआ था। पत्रिका का प्रकाशन विश्व सेवा आश्रम न्यूयार्क की ओर से होता है । नंद किशोर शर्मा, राधेश्याम नागर, श्री सूर्यकांत पत्रिका के संपादक है। पत्रिका आठ पृष्ठों एवं भारत में प्रकाशित सामान्य साप्ताहिकों पाँचजन्य, ब्लिटज्, इत्यादि के आकार की है। इसमें भारत से संबंधित समाचार, निबंध, कहानी, कविता इत्यादि सामग्री का समावेश है । वास्तव में इस पत्रिका का प्रकाशन विश्व सेवा आश्रम के संचालक श्री स्वामी विश्व-हितैषी जी महाराज के सद्‌प्रयत्नों का ही परिणाम है। स्वामी जी हिंदी के उद्‌भट विद्वान है, जिनकी कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं जिनमें गुरूनानक वाणी एवं कुछ अन्य गुरुओं की वाणी पर प्रकाशित आपके ग्रंथ उल्लेखनीय हैं । साप्ताहिक की प्रकाशन प्रेरणा के बारे में स्वामी हितैषी जी का कथन है—"एक स्वाभिमानी राष्ट्र-भक्त के लिए अपनी राष्ट्रभाषा के प्रति जागृत रहना आवश्यक है । अनेक छोटे-छोटे राष्ट्रों की भी अपनी राष्ट्रभाषाएं हैं और वहां के निवासी उन भाषाओं का प्रयोग बड़े गर्व से करते हैं । अनेक विकसित राष्ट्रों ने भी अपनी राष्ट्रभाषाओं के माध्यम

से अद्भुत वैज्ञानिक प्रगति की है। जापान, रूस, फ्रांस, जर्मन, इसरायल, चीन इसके जागृत प्रमाण है। अमेरिका से जहां कि लाखों की संख्या में भारतीय रहते हैं, हिंदी पत्रिका न होना विचार का विषय था।"

हिन्दी पुस्तकालय : महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक भूमिका

अमेरिका में हिंदी पुस्तकालयों का विभाजन निम्नानुसार किया जा सकता है:

(क) सार्वजनिक पुस्तकालयों के हिंदी प्रभाग—अमेरिका में सार्वजनिक पुस्तकालयों की अत्यंत समृद्ध व प्रभावी श्रृंखला विद्यमान है। प्रायः सभी छोटे-बड़े नगरों में पब्लिक पुस्तकालय हैं। उदाहरणार्थ बोस्टल पब्लिक पुस्तकालय, सैन होजे पब्लिक पुस्तकालय, न्यूयार्क पब्लिक पुस्तकालय इत्यादि। इन पुस्तकालयों में अंग्रेजी पुस्तकों के अतिरिक्त एक भाग विदेशी भाषाओं की पुस्तकों का अनिवार्य होता है। जिन-जिन नगरों में भारतीयों की संख्या अधिक है वहां वहां इन पुस्तकालयों में विदेशी भाषाओं के अंतर्गत हिंदी पुस्तकों का विशाल संग्रह रहता है। और प्रायः इन्हीं सार्वजनिक पुस्तकालयों में से हिंदी की सर्वाधिक पुस्तकें पढ़ी जाती हैं जो कि पुस्तकों के पीछे "तिथि मोहर" से स्पष्ट हो जाता है। शिकागो, न्यूयार्क, न्यू जरसी, कनैक्टीकट, बोस्टन, लॉस एंजेलस, सॉन फ्रांसिस्को, सेनहोजे इत्यादि अनेक नगरों में इस प्रकार के हिंदी पुस्तकालय हैं। न्यूयार्क में तीन महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय हैं ब्रुकलेन पब्लिक पुस्तकालय, न्यूयार्क पब्लिक पुस्तकालय, क्वीनज पब्लिक पुस्तकालय। इन पुस्तकालयों की सारे न्यूयार्क में दसियों शाखाएं-प्रशाखाएं हैं। उन सभी में हिंदी कक्ष विद्यमान हैं और प्रायः पुस्तकें पाठकों की पर्याप्त संख्या में होने से गतिशील रहती हैं। न्यूयार्क पब्लिक पुस्तकालय की तो एक पूरी शाखा ही "विदेशी भाषाओं" को समर्पित है। इसमें हिंदी कक्ष अन्य पुस्तकालयों से अपेक्षाकृत विशाल है।

(ख) विश्वविद्यालयों के हिंदी पुस्तकालय—अमेरिका के अनेक (तेईस) विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन होता है। इन विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में भी हिंदी खंड की व्यवस्था है। अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी पुस्तकालय केवल विभागीय पुस्तकालय के रूप में स्थापित हैं एवं अन्य में यह सामान्य विश्वविद्यालय पुस्तकालय का ही अंग है। इन पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों की संख्या हजार तक प्रायः कम ही पहुंच पाती है। इनके पठन का दायरा भी सार्वजनिक पुस्तकालयों से कम है।

(ग) दूतावास पुस्तकालय—वाशिंगटन डी.सी. स्थित भारतीय दूतावास का अपना पुस्तकालय है जिसमें अच्छी संख्या में हिंदी पुस्तकों का संग्रह है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध नगरों यथा न्यूयार्क, शिकागो, लॉस एंजेलस में भारत के कॉउंसुलेट हैं। इनके पुस्तकालयों में भी हिंदी पुस्तकों की प्रशंसनीय संख्या है। परन्तु इन पुस्तकालयों की संतोषजनक सदस्यता व्यवस्था न होने के कारण जितना उपयोग इन पुस्तकालयों का होना चाहिए उतना हो नहीं पाता।

(घ) "लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस—वाशिंगटन डी.सी. में स्थित विश्व प्रसिद्ध पुस्तकालय "लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस" का हिंदी प्रभाग शायद अमेरिका के अन्य सभी हिन्दी पुस्तकालयों से समृद्ध एवं विशाल है। हिंदी की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण पुस्तकें इस पुस्तकालय में संगृहीत की गई हैं। यह पुस्तकालय कभी-कभार देश के अन्य सार्वजनिक पुस्तकालयों को भी हिंदी पुस्तकें प्रदान करता है।

(ङ) अन्य पुस्तकालय—देश के अनेक अन्य संस्थान जो किसी न किसी रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हिंदी से संबंधित हैं उनके भी संस्थागत हिंदी पुस्तकालय हैं। यथा वॉयस ऑफ अमेरिका एवं भारतीय विद्याभवन न्यूयार्क के हिंदी पुस्तकालय। परन्तु इन हिंदी पुस्तकालयों का उपयोग सार्वजनिक न होकर केवल संस्था से संबंधित लोगों तक ही सीमित है।

पुस्तकालय : उपयोगिता एवं क्रिया-कलाप

अमेरिका के हिंदी पुस्तकालयों की उपयोगिता एवं आंतरिक क्रियाकलापों को अध्ययनार्थ निम्न तीन उपभागों में बांटा जा सकता है।

(क) पुस्तकें: विषयगत विवेचन—हिंदी पुस्तकालयों में प्रायः तीन प्रकार की पुस्तकें विद्यमान हैं। सबसे अधिक संख्या में कथाकहानी संबंधी पुस्तकें हैं, जिनमें उपन्यास, कहानी, यात्रा-संस्मरण इत्यादि सभी प्रकार की पुस्तकें आ जाती हैं। उपन्यास-कहानी में सभी नए-नए व अप्रसिद्ध लेखकों की पुस्तकों की भरमार है। फिर भी प्रेमचन्द, गुरूदत्त, टैगोर, विमल मित्र, शंकर, शिवानी, इत्यादि प्रसिद्ध उपन्यासकारों की रचनाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। दूसरे प्रकार की पुस्तकों में हिंदी साहित्य की समीक्षा व आलोचना से संबंधित पुस्तकों की संख्या है एवं तीसरी कोटि में सामान्य विषयों से संबंधित हिंदी पुस्तकें आती हैं। लेकिन इनकी संख्या प्रायः उंगलियों पर गिनी जा सकती है।

(ख) पुस्तकें स्रोत—इन हिंदी पुस्तकालयों में प्रायः तीन स्रोतों से पुस्तकें प्राप्त की जाती हैं। प्रथम तो पुस्तकालय के बजट का एक लघु भाग हिंदी की पुस्तकों के क्रय पर व्यय करके। द्वितीय पी.एल. 480 की धनराशि से प्राप्त पुस्तकें। तीसरा और सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली द्वारा इन पुस्तकालयों को निःशुल्क प्रदत्त पुस्तकें। कभी-कभार कुछ पुस्तकें लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस वाशिंगटन से भी प्राप्त हो जाती हैं।

(ग) पाठक—रुचि एवं गतिशीलता—पाठकों में अधिकांश संख्या अधेड़ भारतीयों की रहती है जो अरसे से अमेरिका में बस गए हैं। उसके बाद अमेरिका में रह रहे अवैधानिक भारतीय आप्रवासियों का नंबर आता है। अमेरिका में पैदा व पली नई भारतीय पीढ़ी की संख्या हिंदी पाठकों में नगण्य

[शेष पृष्ठ 61 पर]

समिति समाचार

(क) हिंदी सलाहकार समिति की बैठक

1. संसदीय कार्य मंत्रालय

संसदीय कार्य मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की छठी बैठक श्री गुलाम नबी आजाद, संसदीय कार्य मंत्री की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

श्री पी. आर. कुमारमंगलम्, संसदीय कार्य तथा विधि और न्याय तथा कम्पनी कार्य राज्य मंत्री, श्री राधा कृष्ण मालवीय, संसद सदस्य (राज्य सभा), श्री अर्जुन सिंह यादव, संसद सदस्य (लोक सभा), श्री सुधाकर पाण्डेय, भूतपूर्व सांसद, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी, श्री मिर्जा ईर्शाद बेग, भूतपूर्व सांसद, श्री नरेश चन्द्र चतुर्वेदी, भूतपूर्व सांसद, श्री जगदीश चन्द्र डंगवाल, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, नई दिल्ली, डा. वाई. लक्ष्मी प्रसाद, आन्ध्र विश्वविद्यालय, वालटेयर, विशाखापट्टनम, डा. विलट पासवान शास्त्री, रीडर हिन्दी विभाग, पटना कालेज, पटना, श्री अवध बिहारी सिंह, वाराणसी, श्री आर. श्रीनिवास, सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय, श्री सर्वेश्वर झा, निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग श्री जी. वी. सुब्रहमण्यम, उप सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय, श्री देव राज तिवारी, उप सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय, ने समिति के सदस्यों का स्वागत किया। उन्होंने यह कहा कि हमें यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि संसदीय कार्य मंत्रालय को वर्ष 1989–90 के दौरान हिन्दी में अधिक कार्य करने के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड का प्रथम पुरस्कार मिला है। यह पुरस्कार उप राष्ट्रपति द्वारा 28-11-1991 को प्रदान किया गया। अध्यक्ष महोदय ने यह भी कहा कि पिछली बैठक के आश्वासन के अनुसरण में अखिल भारतीय हिन्दी लेख प्रतियोगिता के पुरस्कारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए रु. 1000/– से रु. 2100/–, रु. 750/– से रू० 1500/–और रु 500 से रु. 1100/– बढ़ा दिया गया है। आज पुरस्कार विजताओं को बढ़ी हुई राशि के पुरस्कार दिए जाएंगे। अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों से अपने विचार प्रकट करने को कहा।

सर्व श्री सुधाकर पाण्डेय और मिर्जा ईर्शाद बेग ने मंत्री महोदय और मंत्रालय के अधिकारियों को प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने पर बधाई दी।

क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों के हिन्दी में सब-टाईटल

सदस्यगण मामले में की गई कार्रवाई से संतुष्ट थे परन्तु उन्होंने अध्यक्ष महोदय से प्रार्थना की कि वह इस मामले में सूचना और प्रसारण मंत्री को शीघ्र कार्रवाई करने के लिए स्मरण कराएंगे। अध्यक्ष महोदय ने ऐसा करने का आश्वासन दिया।

संविधान सभा के वाद विवाद के हिन्दी रूपान्तर का प्रकाशन

अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को आश्वस्त किया कि वह स्वंय इस मामले में अध्यक्ष, लोकसभा से बातचीत करेंगे।

संविधान में राजभाषा से संबंधित संविधान सभा के अनुच्छेदों का प्रकाशन

श्री सर्वेश्वर झा, निदेशक (नीति), राजभाषा विभाग ने समिति को सूचित किया कि वह इस मामले में पहले ही कार्रवाई कर रहे हैं।

श्री सुधाकर पाण्डेय ने यह सुझाव दिया कि यह प्रकाशन हिन्दी में किया जाए और यदि आवश्यक हो तो अंग्रेजी के भाग का हिन्दी रूपान्तर करवाया जाए।

श्री पी. आर. कुमारमंगलम, संसदीय कार्य और विधि, न्याय तथा कम्पनी कार्य राज्य मंत्री ने सुझाव दिया कि विधि और न्याय मंत्रालय (विधायी विभाग) के राजभाषा खण्ड को आवश्यक सहायता ली जा सकती है।

30 सितम्बर, 1991 को समाप्त तिमाही के दौरान मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति

श्री जगदीश चन्द्र डंगवाल ने कहा कि मंत्रालय पहले ही हिन्दी में सराहनीय कार्य कर रहा है और मंत्रालय द्वारा प्राप्त किया गया प्रथम पुरस्कार इस तथ्य को पुष्टि करता

है। श्री सुधाकर पाण्डेय ने भी कहा कि मंत्रालय हमेशा अपने हिन्दी के कार्य की मात्रा को बढ़ाने का प्रयास करता रहता है।

तिमाही प्रगति रिपोर्ट की सभी ने सराहना की।

श्री सर्वेश्वर झा ने सूचित किया कि इस विसंगति को दूर करने के लिए एक प्रस्ताव वित्त मंत्रालय को विचारार्थ भेजा गया है। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि वह इस मामले में शीघ्र निर्णय के लिए प्रयत्न करेंगे।

श्री सुधाकर पाण्डेय ने सुझाव दिया कि प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेखों को सरकारी पत्रिकाओं में छपवाया जाए। श्री सर्वेश्वर झा ने आश्वासन दिया कि इन्हें राजभाषा भारती में छपवाया जाएगा।

श्री देव राज तिवारी, उप सचिव, संसदीय कार्य मंत्रालय ने सदस्यों से प्रार्थना की कि वह अगली अखिल भारतीय हिन्दी लेख प्रतियोगिता के लिए विषयों का सुझाव दें।

तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद के साथ बैठक समाप्त हुई।

(ख) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

1. कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग

कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 42वीं बैठक संयुक्त सचिव (सतर्कता) श्रीमती कृष्णासिंह की अध्यक्षता में दिनांक 10 जनवरी, 1992 को हुई।

पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई के संबंध में एक विस्तृत नोट परिचालित किया गया। इस संबंध में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि डा. महेश चन्द्र गुप्त ने कुछ मुद्दों को उठाया और उन पर निम्नलिखित चर्चा हुई :

(1) केन्द्रीय भंडार में प्रयोग में लाए जा रहे अधिकतर फार्म केवल अंग्रेजी में है। इन्हें द्विभाषी रूप में बनवाने के लिए केन्द्रीय भंडार से कहा जाए।

गत बैठक में केन्द्रीय भंडार की विक्रय रसीदों को द्विभाषी रूप में जारी किये जाने की अपेक्षा के संबंध में भी श्री एस. एम. सहारियार, अवर सचिव (कल्याण) ने बताया कि केन्द्रीय भंडार ने सूचित किया है कि द्विभाषी रूप में बिक्री रसीदें जारी करने वाली कोई भी मशीन बाजार में उपलब्ध नहीं है। राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि से अनुरोध किया गया कि उनकी जानकारी में यदि ऐसी कोई मशीन बाजार में उपलब्ध हो तो कृपया उसकी सूचना दें। डा. गुप्त ने कहा कि केन्द्रीय भंडार की कुछ शाखाओं में मशीन का प्रयोग न करके हस्तलिखित कैशमीमों जारी होते होंगे अतः ऐसी रसीदें द्विभाषी रूप से छपवाई जा सकती है और इन्हें आसानी से हिन्दी में जारी किया जा सकता है।

डा. गुप्त ने यह भी उल्लेख किया कि केन्द्रीय भंडार द्वारा सप्लाई की जा रही लेखन सामग्री यानि फाइल कवर, रजिस्टरों इत्यादि में कहीं भी हिन्दी प्रिन्ट नजर नहीं आता है। इन्हें द्विभाषी रूप में बनवाने के लिए कहा जाए। अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि केन्द्रीय भंडार से इन कमियों को दूर करने के लिए कहा जाए।

कम्प्यूटरीकृत रूप से जारी पत्रों के संबंध में सदस्य सचिव, श्री ब्रजराज ने सूचित किया कि प्रशिक्षण प्रभाग में अभी भी "क" तथा "ख" क्षत्रों को पत्र अंग्रेजी में भेजे जा रहे हैं और मंत्रालय से जारी कुल पत्रों में ऐसे पत्रों का अंश 50/ से भी अधिक है। श्री जे एस सिन्हा, (निदेशक) प्रशिक्षण ने सूचित किया कि उनके यहां लगी द्विभाषी कम्प्यूटर व्यवस्था में कुछ तकनीकी खराबी थी और परिणामस्वरूप उस पर द्विभाषी रूप से कार्य नहीं हो पा रहा था। अब इसे पूर्णतः बदल (रिप्लेस) दिया गया है परन्तु हिन्दी साफ्टवेयर के कार्यचालन में लगभग दो महीने का और समय लगेगा। इस पर राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि ने सूचित किया कि हिन्दी अनुभाग के प्रतिनिधियों को प्रशिक्षण प्रभाग में स्वयं जाकर इन कमियों को दूर करने के लिए उपाय सुझाने चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि मंत्रालय के प्रशासनिक सुधार विभाग में लगी कम्प्यूटर प्रणाली सफलतापूर्वक हिन्दी में काम कर रही है। यदि आवश्यकता हो तो प्रशिक्षण विभाग उनसे सहयोग लेकर काम कर सकता है। सदस्य सचिव ने सूचित किया कि पेंशन विभाग और नार्थ ब्लाक में लगी कम्प्यूटर प्रणाली में द्विभाषी रूप में काम संतोषजनक ढंग से हो रहा है। प्रशिक्षण प्रभाग में भी अब ऐसी कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए।

विभाग की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा

30-6-91 तथा 30-9-91 को समाप्त तिमाहियों के आंकड़ों की सूचना उपलब्ध करा दी गई थी। इस संबंध में विभाग द्वारा "क" तथा "ख" क्षेत्र की राज्य सरकारों/गैर सरकारी व्यक्तियों को अपेक्षानुसार हिन्दी में पत्र न जारी होने के बारे में चिन्ता व्यक्त की गई। ऐसे पत्रों का एक वृहत अंश प्रशिक्षण प्रभाग से कम्प्यूटरीकृत रूप से जारी किया गया था

जिस पर दूसरी मद के रूप में चर्चा की जा चुकी थी। अध्यक्ष के आग्रह पर उन अन्य प्रभागों ने नाम भी गिनाए गए जहां से अधिकतर पत्र अंग्रेजी में जारी हुए थे।

यह महसूस किया गया कि स्थापना, ए. आई. एस., सी. एस. और पेंशन प्रभागों की स्थिति संतोषजनक नहीं है।

निदेशक (राजभाषा) डा. गुप्त के अनुसार हिन्दी भाषी राज्यों के साथ अधिकतर पत्राचार भी केवल अंग्रेजी में किया जा रहा है। उनका मानना था कि हिन्दी में अनुवाद कराने के स्थान पर मूल रूप से हिन्दी में ही मसौदे आदि प्रस्तुत किए जाने चाहिए।

अध्यक्ष ने कहा कि हिन्दी पत्राचार की मात्रा बढ़ाने के लिए हमें अनुवाद व्यवस्था को और सुदृढ़ करना होगा और इसके लिए अतिरिक्त हिन्दी स्टाफ की व्यवस्था करनी पड़ेगी ताकि अनुवाद व्यवस्था में होने वाले विलम्ब के संकोच के कारण अंग्रेजी में ही पत्र भेजने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सके।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि डा. गुप्त ने कहा कि विभाग द्वारा मैनुअलों इत्यादि के अनुवाद और मुद्रण की दिशा में काफी अच्छा काम किया गया है। तथापि हिन्दी में अनुदित 6 मैनुअलों को शीघ्र छपवाने के लिए भी कार्रवाई की जाए। इस संबंध में समिति को सूचित किया गया कि एफ. आर. एस. आर. का हिन्दी संस्करण प्रकाशित हो चुका है और यह विक्री के लिए प्रकाशन विभाग में उपलब्ध हैं।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि का यह भी कहना था कि विभाग से एक भी तार हिन्दी में नहीं भेजा गया। साधारण प्रकृति के तारों को बिना किसी कठिनाई के हिन्दी में भेजा जा सकता है। देवनागरी तारों के प्रेषण में खर्च भी कम आता है। श्रीमती अजली चिब ने तारों को हिंदी में भेजने के लिए आने वाली दिक्कतों को उनके तत्काल टंकण आदि की अपेक्षा का जिक्र किया और बताया कि इसी कारण हिन्दी में तार भेजने में संकोच होता है। तय किया गया कि इन दिक्कतों को दूर किया जाए और यदि आवश्यकता हो तो हिन्दी अनुभाग का सहयोग लिया जाए। उप निदेशक (राजभाषा) ने आश्वासन दिया कि तारों के मामले में हिन्दी अनुभाग द्वारा तत्परता से तत्काल कार्रवाई की जाएगी। मंत्रालय में द्विभाषी रूप में टैलेक्स उपलब्ध हैं। टेलेक्सों को हिन्दी में भेजे जाने पर भी जोर दिया गया।

अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी/हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षण

बैठक में इस बात पर चिन्ता व्यक्त की गई कि प्रशिक्षण के लिए नामित किए गए सभी अधिकारी कर्मचारी प्रशिक्षण के लिए नहीं जाते हैं कुछ बीच में भी छोड़ जाते हैं। अध्यक्ष ने कहा कि इसे हतोत्साहित किया जाना चाहिए और जो कर्मचारी प्रशिक्षण पर नहीं जाते हैं उनकी सूचना उप सचिव (प्रशासन) व उन्हें दी जाए। हिन्दी आशुलिपि और हिन्दी टंकण के प्रशिक्षण में तेजी लाने की अपेक्षा महसूस की गई।

बैठक के दौरान राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि ने अध्यक्ष का ध्यान केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो में चलाए जा रहे प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की ओर दिलाया जहां सम्पूर्ण प्रशिक्षण सामग्री केवल अंग्रेजी में है उन्होंने सामग्री प्रशिक्षण को हिन्दी में तैयार करवाने तथा हिन्दी के माध्यम से प्रशिक्षण देने पर जोर दिया। ब्यूरो द्वारा प्रकाशित किए जा रहे "सी.बी.आई. बुलेटिन" में हिन्दी खण्ड को भी शामिल करने का अनुरोध किया था इसके नवीनतम अंक की ओर ध्यान दिलाया जिसमें कवर पृष्ठ पर मात्र शीर्षक ही द्विभाषी रूप में छपा था वह भी अंग्रेजी ऊपर तथा हिन्दी नीचे। उन्होंने कहा कि काफी समय वे सन् 1980 तक बुलेटिन में हिन्दी में भी लेख आदि प्रकाशित होने थे जो अब नहीं हो रहे हैं। इसमें हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाए।

डा. गुप्त ने कहा कि हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण देने के मामले में सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबन्ध संस्थान में भी लगभग यही स्थिति है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। अध्यक्ष ने कहा कि इस मामले को प्रशिक्षण प्रभाग के संयुक्त सचिव के साथ उठाया जाए।

डा. गुप्त ने सतर्कता संबंधी रिपोर्ट के पत्र व प्रोफार्मा को हिन्दी में तैयार करने का सुझाव दिया। अध्यक्ष ने इसको हिन्दी में तैयार करने की व्यवहार्यता को देखने का निदेश दिया।

कुछ विषयों पर कार्यवाही हिन्दी माध्यम से करने की अपेक्षा के संदर्भ में डा. गुप्त ने कहा कि प्रशासनिक तथा विभिन्न सरकारी कार्यों में हिन्दी में काम करने की और गुंजाइश है अतः इसे यथा सम्भव बढ़ाया जाना चाहिए।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि ने चैक तथा वेतन पर्ची को हिन्दी में जारी करने का सुझाव दिया। अध्यक्ष ने निदेश दिए कि इन्हें हिन्दी में तैयार करवाने की व्यावहार्यता पर विचार किया जाए।

अधिकांश सदस्यों की राय थी कि अधिकारियों को स्वयं हिन्दी में काम करने में पहल करनी चाहिए ताकि उनका अनुकरण कर अधीनस्थ कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रोत्साहन मिल सके।

2. हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि० कछाड़ पेपर मिल पंचग्राम–788802

कछाड़ पेपर मिल की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 28-12-91 को हुई।

मिल में राजभाषा प्रगति संबंधी जानकारी :— सर्व प्रथम डा. प्रमथ नाथ मिश्र, हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य

सचिव ने अध्यक्ष एवं सदस्यगण का स्वागत किया। तत्पश्चात विगत तिमाही में किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया एवं भविष्य में किए जाने वाले कार्यों पर प्रकाश डाला गया। प्रस्तुति के क्रम में सदस्य सचिव ने राजभाषा कार्यक्रमों के त्वरित कार्यान्वयन से संबंधित 11 (ग्यारह) प्रस्ताव समिति के समक्ष उनके विचार एवं चर्चा के लिए प्रस्तुत किए।

1. राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन	इस मद के लिए अध्यक्ष महोदय ने सभी संबंधित को निर्देश दिया कि संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियां, संविदाएं, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा पत्र, निविदा सूचनाएं तथा निविदा प्रारूप आदि यथा संभव अधिकाधिक रूप में द्विभाषी जारी किए जाएं, इसके लिए उक्त संबंधित सामग्री हिन्दी अनुभाग को भी अनुवाद के लिए मार्क कर दी जाए।
2. राजभाषा नियम 11 का अनुपालन	इस मद के लिए अध्यक्ष महोदय ने संबंधित विभागाध्यक्षों को निर्देश दिया कि मिल के सभी आवश्यक फार्म, रजिस्टर, लिफाफे, परिचय पत्र, स्टेशनरी तथा मैनुअल व संहिताएं आदि द्विभाषी करा दिए जाएं।
3. सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा तैयार किए गए सामान पर उनके नाम आदि हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में तैयार करना	इस मद पर उक्त बैठक में कोई विचार नहीं हुआ।
4. इलैक्ट्रानिक टाइपराइटर केवल द्विभाषी खरीदे जाएं :	इस मद के लिए अध्यक्ष महोदय का सुझाव यह था कि काम की स्थिति देखकर भविष्य में इस पर विचार किया जाए।
5. हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	अध्यक्ष ने कार्यशाला के आयोजन हेतु अपनी सहमति व्यक्त की और जनवरी माह के बाद इसके आयोजन का निर्देश दिया।
6. प्राज्ञ परीक्षा हेतु हिन्दी कक्षाओं का शुभारम्भ करना	अध्यक्ष ने इस पाठ्यक्रम को चलाने का निदेश दिया।
7. लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखना :	अध्यक्ष ने "क और "ख" क्षेत्रों को जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते देवनागरी लिपि में लिखे जाने के लिए सहमति व्यक्त की।
8. हिन्दी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर हिन्दी में देना	अध्यक्ष ने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिया और बताया कि यह हमारे हिन्दी संबंधी अनिवार्य सांविधिक कर्तव्य है।
9. रबड़ की मोहरों का द्विभाषीकरण :	इस मद के लिए अध्यक्ष का सुझाव था कि भविष्य में जो भी मोहर बनवाए जाएं वे या हिन्दी में हों अथवा द्विभाषी हों।

अध्यक्ष ने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग हेतु निरन्तर प्रगति के लिए मिल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि प्रत्येक महीने के प्रथम कार्य दिवस को वे अपना हस्ताक्षर हिन्दी में करें और उस दिन अधिक से अधिक सूचनाएं, आदेश, परिपत्र आदि हिन्दी में जारी करें ताकि "ग" क्षेत्र में स्थित सरकारी उपक्रमों आदि के लिए हिन्दी में कार्य करने का जो लक्ष्य है उसको क्रमशः पूरा किया जा सके।

अंत में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक श्री विनोद विहारी, वरिष्ठ प्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने अध्यक्ष एवं उपस्थित सभी सदस्यों को साधुवाद दिया।

3. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

सचिव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा संयुक्त सचिव कृ. अ. शि. वि. की अध्यक्षता में परिषद और विभाग की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 30-12-91 को बैठक हुई।

उप निदेशक (रा. भ.) ने सूचित किया कि शीघ्र ही हिन्दी के बड़े प्रिंट वाले टाईपराईटरों के कुंजी पटल बदलवाकर उनमें छोटे कुंजी पटल लगवा दिये जाएंगे। उन्होंने निदेशक (अनुसंधान), राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी टाइपराइटरों की संख्या बढ़ाने के अनुरोध पर टिप्पणी करते हुए कहा कि अभी उनके पास हिन्दी के छ: टाइपराइटर सुलभ हैं और उन्हें अनुभागों की मांग पर मुहैया किया जा सकता है। इस संबंध में एक परिपत्र जारी करके अनुभागों से हिन्दी टाइपराइटरों की मांग भेजने का अनुरोध किया गया है।

सचिव ने आदेश दिया कि 10 जनवरी तक प्रतीक्षा करके तथा जिस अनुभाग से हिन्दी टाइपराइटर की मांग आए या जहां हिन्दी/द्विभाषिक टाइपिस्ट हों उन्हें दे दें।

निदेशक (अनुसंधान) ने आगे अनुरोध किया कि अनुभाग अधिकारी हिन्दी अनुभाग से अपने अंग्रेजी के टाईपिस्टों को हिन्दी टाईपिंग का प्रशिक्षण दिलवाने के लिए स्वत: नामित करने का अनुरोध करें तथा प्रशिक्षण के चार महीने पूरे करने के बाद उनसे हिन्दी टाईप का काम लेना शुरू कर दें। इसके अलावा हिन्दी और हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण भी सुनिश्चित किया जाए। इस पर सचिव महोदय ने भी अपनी सहमति व्यक्त की और आदेश दिया कि निदेशक (हिन्दी) इस दिशा में कारगर कदम उठाएं। प्रधान सम्पादक श्री रमेश दत्त शर्मा ने प्रकाशन –I को, श्रीमती शकुन ने पुस्तकालय को और निदेशक (हिन्दी) ने कार्मिक–I और III को तत्काल हिन्दी टाईपराईटर देने का अनुरोध किया।

विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त या प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित सभी परीक्षाओं में उत्तर देने के लिए हिन्दी माध्यम के विकल्प पर चर्चा के दौरान निदेशक (अनु.) राजभाषा विभाग ने सुझाव दिया कि परिषद की ओर से ऐसे सभी संस्थानों को हिन्दी माध्यम का विकल्प देने और हिन्दी में थीसिस (प्रबन्ध) प्रस्तुत करने की छूट देने के लिए पत्र लिख दिया जाए। सचिव महोदय ने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि सभी सम्बद्धों को एक पत्र जारी कर दिया जाए।

शोध पत्रिका और कृषि विज्ञान आदि विषयक प्रकाशित पुस्तकों की पुस्तकाकार सूची ने प्रकाशन के पिछले निर्णय के सन्दर्भ में निदेशक (अनुसंधान) राजभाषा विभाग ने कहा कि माननीय प्रधान मंत्री ने हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य और वैज्ञानिक पत्र पत्रिकाएं सुलभ कराने का संसद में आश्वासन दिया है। अत: परिषद की पत्रिकाओं में हिन्दी का अंश भी होना चाहिए। निदेशक (हिंदी) ने सूचित किया कि पिछले हिन्दी दिवस/सप्ताह के अवसर पर भारतीय पशु अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर ने एक शोध पत्रिका प्रकाशन शुरू किया है। इस अवसर पर पशु अनुसंधान पर आयोजित व्याख्यानों का संकलन भी प्रकाशित किया गया है। इसके अलावा भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने भी "श्वेत स्वर्णिमा" नामक एक पत्रिका का प्रकाशन-आरम्भ भी किया है। इससे पता चलता है कि इस दिशा में सक्रिय प्रयास शुरू हो गये हैं। प्रधान सम्पादक (हिन्दी) श्री रमेश दत्त शर्मा ने सूचित किया कि पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय द्वारा एक शोध पत्रिका के प्रकाशन का प्रस्ताव परिषद के शिक्षा प्रभाग में विचाराधीन है। अत: उसके लिए वित्तीय व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि परिषद को हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ शोध निबन्ध भेजने का अनुरोध किया जाना चाहिए।

सचिव महोदय ने निर्णय दिया कि शोध निबन्ध भेजने के लिए सम्बद्धों से अनुरोध किया जाए और कृषि विज्ञान आदि विषयक प्रकाशित पुस्तक की सूची वर्ष 1992 तक प्रकाशित कर दी जाएं।

समिति की पिछली बैठक के निर्णय के अनुसार निदेशक (हिन्दी) संस्थानों की प्रबंध समिति की बैठकों में भाग लेने वाले उप महानिदेशकों सहायक महानिदेशकों से पत्र लिखकर पूछें कि उन्होंने किन संस्थानों की प्रबन्ध समितियों में भाग लिया और वहां शिक्षा और परीक्षा में हिन्दी माध्यम के विकल्प के बारे में क्या चर्चा की गयी और उसका परिणाम क्या निकला।

एक दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया और इस अवसर पर हुए व्याख्यानों का संकलन भी प्रकाशित किया गया है।

हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने की दृष्टि से कम्प्यूटरों के प्रयोग पर बल देते हुए निदेशक (अनु०) ने पुन: कम्प्यूटरों के द्विभाषीकरण तथा निदेशक (हिन्दी) को एक द्विभाषिक कम्प्यूटर देने पर बल दिया ताकि उनका काम आसान हो सके अन्यथा राजभाषा कार्य के लिए स्टाफ की व्यवस्था की जानी चाहिए।

सचिव महोदय ने कहा कि पहले दो कम्प्यूटरों को द्विभाषिक बनाने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। उनकी उपयोगिता देखकर अन्यों को भी द्विभाषिक करने पर विचार किया जाएगा। फिलहाल निदेशक (हिन्दी) उनके प्रस्तावित द्विभाषिक कम्प्यूटर का प्रयोग करेंगे।

निदेशक (अनु०) ने सुझाव दिया कि आगे से कर्मचारी चयन आयोग से अवर श्रेणी लिपिक या आशुलिपिक की मांग करते समय हिन्दी के ही आशुलिपिक या टाइपिस्टों की मांग की जानी चाहिए, ताकि इनके लिए निर्धारित लक्ष्य पूरे किये जा सकें। इस पर सचिव महोदय ने उप सचिव (प्रशासन) और अवर सचिव (प्रशासन) को आदेश दिया कि वे तदनुसार कार्रवाई करें।

निदेशक (अनुसंधान) (राजभाषा विभाग) ने सुझाव दिया कि संस्थानों आदि की प्रगति के बारे में पता करने के लिए इस समिति की अगली बैठक में तीनों क्षेत्रों से दो-दो संस्थानों के प्रतिनिधियों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाय तथा उसमें करनाल को निश्चित रूप से आमंत्रित किया जाए। और निर्देश दिया जाए कि सहायक निदेशक (राजभाषा) से ऊपर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ही इसके लिए नामित किये जाएं। सचिव महोदय ने इस दिशा में आवश्यक कार्रवाई का निर्देश दिया।

संस्थानों आदि में हिन्दी पदों के सृजन संबंधी चर्चा के दौरान सचिव महोदय ने कहा कि संस्थानों को अलग से पदों के लिए बजट का प्रावधान करना तो संभव नहीं है पर संस्थान अपनी वर्तमान बजट में ही पदों के लिए प्रावधान कर सकें तो पदों के सृजन में कोई कठिनाई नहीं हो सकती। उन्होंने निदेशक (हिन्दी) को इस सम्बन्ध में संस्थानों से पूछ-ताछ करने का आदेश दिया।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए कार्यशालाओं के आयोजन पर चर्चा के दौरान निदेशक (अनु.) ने सुझाव दिया कि पिछले साल जिन-जिन संस्थानों को कार्य-शालाओं का आयोजन करने के बारे में निर्णय लिया गया था, उनमें से कुछ संस्थानों में ही कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है, जबकि उनके द्वारा मांगी गई सूचना भी राजभाषा विभाग द्वारा भेज दी गई है। इस पर टिप्पणी करते हुए निदेशक (हिन्दी) ने सूचित किया कि 11 संस्थानों को कार्यशालाओं के आयोजन के लिए लिखा गया था, जिनमें से भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जत नगर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा और भा० कृ० इंजी० सं० भोपाल नामक 3 संस्थानों में कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय चारागाह एवं चारा अनु० संस्थान, झांसी ने भी एक दिवसीय कार्य-शाला का आयोजन किया है। इस पर टिप्पणी करते हुए सचिव महोदय ने कहा कि इस बारे में संस्थानों से पूछ-ताछ कर ली जाये। निदेशक (अनु०) ने अध्यक्ष महोदय से अनुरोध किया कि अन्य संस्थानों को भी कार्यशाला आयोजित करने के लिए आदेश दिया जाना चाहिए। ऊंट, भेंड़, घोड़ा और बकरी अनुसंधान संबंधी संस्थानों में कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए। सचिव महोदय ने इस दिशा में आवश्यक कार्रवाई का आदेश दिया।

4. गृह मंत्रालय

गृह मंत्रालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 23वीं बैठक सोमवार, 30 दिसम्बर, 1991 को संयुक्त सचिव श्री ए०के० नारायणन की अध्यक्षता में हुई।

इस बात पर असंतोष व्यक्त किया गया कि बैठक में सदस्यों की उपस्थिति काफी कम थी। अध्यक्ष ने निदेश दिया कि सदस्यों के बैठक में भाग न लेने के लिए उनके संयुक्त सचिवों को पत्र लिखा जाए और सदस्यों द्वारा बैठक में भाग लेने पर बल दिया जाए। राजभाषा विभाग की ओर से उप-सचिव श्री भगवान दास पटैरिया ने भाग लिया।

पिछली बैठक के निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई

पिछली बैठक के निर्णयों पर की गई कार्रवाई नोट की गई। अधिकाधिक सरकारी काम को हिन्दी में निपटाने के लिए संयुक्त सचिव की ओर से पुनः अनुदेश जारी किए हैं।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि ने कहा कि अनुदेशों के बावजूद मंत्रालय द्वारा द्विभाषी रूप में जारी होने वाले कागजात में अंग्रेजी को ऊपर तथा हिन्दी को नीचे रखा जा रहा है। रोकड़ अनुभाग के कुछ प्रोफार्मे अभी भी अंग्रेजी में हैं। अधिनियम की धारा 3(3) के अधीन जारी होने वाले कुछेक कागजात केवल अंग्रेजी में जारी किए जा रहे हैं। इस सिलसिले में उन्होंने लाइब्रेरी और प्रशासन-3 अनुभाग से जारी कागजात का दृष्टान्त भी समिति को दिया। समिति ने निर्णय लिया कि इस प्रकार की तिमाही को दूर करने के लिए पग उठाए जाएं।

30 जून 1991 को समाप्त तिमाही की समीक्षा

मंत्रालय की 30 जून, 1991 को समाप्त तिमाही की प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की गई। उप सचिव श्री भगवान दास पटैरिया ने सुझाव दिया कि तिमाही के आंकड़ों में प्रतिशत इंगित करने के साथ-साथ संख्या भी दी जानी चाहिए।

यह सुझाव दिया गया कि तिमाही बैठक की कार्यसूची में निम्नलिखित जानकारी शामिल की जाए :—

(1) प्रशिक्षण कार्यक्रम के संबंध में जानकारी;

(2) संसदीय राजभाषा समिति द्वारा हाल ही में मंत्रालय के निरीक्षण के दौरान समिति को दिए गए आश्वासनों और उनकी पूर्ति के संबंध में जानकारी।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित सुझाव भी दिए गए :—

(1) मंत्रालय में संयुक्त सचिव (प्रशा०) की सुविधा-नुसार कभी-कभार विचारगोष्ठी आदि भी की जाए जिसमें मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उपायों पर विचार किया जाए। इस में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि को भी बुलाया जा सकता है।

(2) अध्यक्ष का सुझाव था कि शील्ड एवं विभिन्न प्रोत्साहनों का वितरण एक समारोह का आयोजन करके किया जाना चाहिए ताकि हिन्दी का प्रचार हो और उसमें कार्य करने के लिए उपर्युक्त वातावरण बने। इसका सभी ने समर्थन किया।

(3) अधिकाधिक संख्या में कार्यशालाएं की जाएं तथा चैक प्वाइंट को प्रभावी बनाया जाए।

(4) तिमाही बैठक से पूर्व उप सचिव कम से कम मंत्रालय के एक अनुभाग का हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने के लिए निरीक्षण करें और उसकी चर्चा तिमाही बैठक में की जाए।

5. रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय मद्रास-600018

दिसम्बर 1991 को समाप्त तिमाही के लिए रक्षा लेखा नियंत्रक कार्यालय, मद्रास में दिनांक 22-1-92 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक श्री वे० नागराजन, आई०डी०ए०एस० रक्षा लेखा नियंत्रक की अध्यक्षता में हुई।

(क) सामन्य आदेशों को द्विभाषी जारी करना

अनुभागों में उपयोग हेतु सामान्य आदेशों के द्विभाषी प्रेषण पत्र भेज दिए गए हैं। सभी प्रभारी अधिकारियों को इनका उपयोग करने के लिए निर्देश दिया गया ताकि सामान्य

आदेश द्विभाषी जारी किए जा सकें तथा इससे संबंधित प्रावधानों का अनुपालन हो सके। सदस्य सचिव ने बताया कि इसका अनुपालन कुछ अनुभागों द्वारा नहीं हो रहा है। इस संबध में अध्यक्ष ने दुबारा निर्देश दिया कि सामान्य आदेशों को द्विभाषी प्रेषण पत्र के अन्तर्गत जारी किया जाए।

(ख) हिन्दी कक्षाओं के लिए कर्मचारियों को नामित करना

हिन्दी कक्ष द्वारा जारी परिपत्र अनुसार लेखा अनुभाग से कर्मचारियों को नामित किया गया परन्तु अन्य अनुभागों से नामांकन की स्थिति संतोषजनक नहीं है। प्रशिक्षण के लिए शेष कर्मचारियों की अधिक संख्या को देखते हुए, अनुभागों के प्रभारी अधिकारियों को दुबारा निर्देश दिया गया है कि आगामी तिमाहियों में अधिक से अधिक कर्मचारियों को हिन्दी कक्षाओं के लिए नामित करें। बताया गया कि उपकार्यालयों को भी निदेश दिया गया कि वे अधिक से अधिक कर्मचारियों को हिन्दी कक्षाओं के लिए नामित करें।

(ग) हिन्दी टाइपराइटर उपलब्ध कराना

सदस्य सचिव ने बताया कि क्षेत्रीय लेखा कार्यालय, सिकन्दराबाद को हिन्दी टाइपराइटर उपलब्ध कराने के विषय पर अभी तक कार्रवाई पूरी नहीं हुई। प्रशासन अनुभाग को इस विषय पर शीघ्र कार्रवाई करने को कहा गया। सदस्य सचिव ने सूचित किया कि, संयुक्त निरीक्षण दल ने कोच्चि तिरुअनंतपुरम् स्थित कार्यालयों के निरीक्षण के दौरान यह सुझाव दिया कि जिस स्टेशन पर एक से अधिक कार्यालय हो वहां के एक कार्यालय में हिन्दी टाइपराइटर उपलब्ध कराया जाए। बेंगलूर, तिरुअनंतपुरम्, कोच्चि, गोवा, विशाखपट्टनम् जैसे उपकार्यालय इसका लाभ उठा सकें।

वर्ष 1991-92 के वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन

सदस्य सचिव ने समिति को सूचित किया कि, वर्ष 1991-92 के लिए वार्षिक कार्यक्रम में विहित लक्ष्य के अनुपालन की प्रगति से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट भेजी जानी है और इसका संकलन किया जा रहा है। वार्षिक कार्यक्रम 91-92 का अनुपालन करते हुए, हिन्दी दिवस पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को रक्षा लेखा नियंत्रक ने पुरस्कृत किया :—

हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी रिपोर्टों की तुलना

पिछली तिमाहियों की रिपोर्टों की समीक्षा करने पर अध्यक्ष ने बताया कि हमें संतोषजनक प्रगति करने का अधिक प्रयास करना चाहिए।

हिन्दी में तार जारी करना

सदस्य-सचिव ने बताया कि हिन्दी में तार जारी करना अंग्रेजी में जारी करने की अपेक्षा सस्ता पड़ता है। इस संबंध में अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि हिन्दी में तार जारी करने के लिए अधिक प्रयास करना चाहिए ताकि इस संबंध में कुछ प्रगति हो सके।

(ग) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

1. तिरूपति (आन्ध्र प्रदेश)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरूपति की बैठक दि० 22-1-92 को भारतीय स्टेट बैंक, अंचल कार्यालय में हुई। उसमें अनुसंधान अधिकारी श्री एन० ठाकुर ने हिस्सा लिया। भारतीय स्टेट बैंक के मुख्य प्रबंधक (कार्मिक), श्री साइनाथ राव ने सभा की अध्यक्षता की। बैठक में 30 कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, उनमें से अधिकांश विभागाध्यक्ष थे। बैठक में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग पर चर्चा हुई। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के शतप्रति अनुपालन पर जोर दिया गया। इसी क्रम में प्रशिक्षण की चर्चा हुई। अधिकांश सदस्यों ने हिन्दी कक्षा के उस दिन तक प्रारम्भ न किए जाने पर खेद व्यक्त किया। अनुसंधान अधिकारी श्री ठाकुर ने सर्व कार्यभारी से अविलंब कक्षा प्रारम्भ करवाने का अनुरोध किया। श्री ठाकुर ने सभा में उपस्थित सदस्यों से यथासमय तिमाही प्रगति रिपोर्ट भेजने को कहा। साथ ही, उन्होंने रिपोर्ट के असंपूर्ण, अस्पष्ट तथा भ्रामक होने की बात भी कही। इस पर बैठक में निर्णय किया गया कि आगामी जून महीने में नराकास के तत्वाधान में एक दिन की कार्यशाला की जाए, जिसमें सभी कार्यालयों के संबंधित सहायकों को सही ढंग से रिपोर्ट तैयार करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाने का भी निर्णय किया गया। नराकास की अगली बैठक दि० 12-8-92 को करने का निर्णय किया गया। उस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाएगा। सदस्य सचिव श्री के. एन. के. स्वामी तथा भारतीय स्टेट बैंक के हिन्दी अधिकारी श्री हीरालाल फर्नावट बैठक को सफल बनाने में सक्रिय रहें।

2. रायपुर

वर्ष 1991 की दूसरी छमाही बैठक दिनांक 28-11-91 को रायपुर में सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, के तत्वाधान में हुई।

बैठक की अध्यक्षता पूर्व की भांति नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रायपुर के अध्यक्ष श्री राधा कृष्ण झा, प्रादेशिक अधिकारी, (क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, सूचना और

प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार) ने की। मुख्य अतिथि दैनिक समाचार पत्र "नवभास्कर" रायपुर के सम्पादक श्री रम्मू श्रीवास्तव थे तथा राजभाषा विभाग, भारत सरकार के उप-निदेशक श्री चन्द्र गोपाल शर्मा विशेष अतिथि के नाते उपस्थित थे।

बैठक में निम्नलिखित कार्यालयों से उनके प्रतिनिधि उपस्थित नहीं हुए :—

1. कर्मचारी चयन आयोग, रायपुर।
2. बैंक आफ इंडिया, रायपुर।
3. दूर संचार विभाग, रायपुर।
4. भारतीय जीवन बीमा निगम, रायपुर।
5. वैगन मरम्मत कारखाना, रायपुर।
6. स्टेशन अधीक्षक, द.पू. रेलवे, रायपुर।
7. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, रायपुर।
8. सिविल विमानन विभाग, रायपुर।
9. बैंक आफ सौराष्ट्र, रायपुर।
10. दण्डकारण्य परियोजना, रायपुर।
11. भारतीय खाद्य निगम, रायपुर।
12. श्रम विभाग, रायपुर।
13. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, रायपुर।
14. केन्द्रीय आसूचना, रायपुर।
15. संभागीय यंत्री माइक्रोवेव प्रोजक्ट, रायपुर।
16. केन्द्रीय वेयर हाऊसिंग कार्पोरेशन, रायपुर।
17. भारतीय उर्वरक निगम, रायपुर।
18. आयकर उपायुक्त, आयकर कार्यालय, रायपुर।
19. आयकर आयुक्त (अपील) रायपुर।
20. आयकर उपायुक्त जांच (2) रायपुर।
21. आयकर उपायुक्त परिक्षेत्र-1, रायपुर।
22. भारतीय भू-वैज्ञानिक परीक्षण संस्थान, रायपुर।
23. रेलवे पुलिस, रायपुर।
24. केनरा बैंक, रायपुर।

सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक श्रीकृष्ण कुमार सेठ ने मुख्य अतिथि श्री रम्मू श्रीवास्तव का पुष्पहार से स्वागत किया।

अध्यक्ष ने जोर देकर कहा कि कुछ हमारे साथी अंग्रेजी भाषा से आवश्यकता से अधिक प्रभावित हैं जिसके कारण राजभाषा की जितनी प्रगति होनी चाहिए, वह नहीं हो रही है।

उप निदेशक श्री चन्द्र गोपाल शर्मा ने समिति के क्रिया-कलापों के प्रति संतोष व्यक्त किया और आशा प्रकट की कि रायपुर की समिति द्वारा आगे भी सराहनीय कार्य किया जाएगा।

दूसरे सत्र में उप निदेशक श्री शर्मा ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के संबंध में सदस्य कार्यालयों के साथ गहन विचार विमर्श किया उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे हिंदी प्रयोग की तिमाही प्रगति विवरणी नियमित रूप से उनके कार्यालय को भेजना सुनिश्चित करें ताकि सरकार के सम्मुख उनके कार्यालय में चल रहे हिन्दी प्रयोग की जान-कारी रखी जा सके। उन्होंने कम्प्यूटरों में भी हिन्दी प्रयोग की आवश्यकता बताई।

सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री अ.पु. खांडकर ने धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन सेन्ट्रल बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री राजीव अग्रवाल में किया।

3. औरंगाबाद

13वीं बैठक दिनांक 14 फरवरी, 1992 को सम्मेलन कक्ष, केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमाशुल्क समाहर्तालय, औरंगाबाद में हुई।

31-12-1991 की हिंदी की प्रगामी प्रयोग की रिपोर्ट की समीक्षा तथा विभिन्न कार्यालयों की स्थिति

जिन सदस्य कार्यालयों से 31-12-1991 को रिपोर्ट प्राप्त हुई उनकी स्थिति निम्नानुसार है :—

धारा 3(3) के तहत जारी कागजों का प्रतिशत।

(1)	केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क समाहर्तालय	90%
(2)	टेलीफोन कार्यालय	कालम नहीं भरा
(3)	भारतीय स्टेट बैंक	67%
(4)	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	100%
(5)	न्यू इंडिया इं.कं.लि.	100%
(6)	राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण	100%
(7)	होटल औरंगाबाद अशोक	100%
(8)	आकाशवाणी	90%
(9)	भारतीय जीवन बीमा निगम	100%
(10)	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	44%
(11)	ओरीएण्टल इं.कं.लि.	कालम नहीं है।
(12)	नैशनल इं.कं.लि.	कालम नहीं है।
(13)	औरंगाबाद टैक्सटाईल मिल्स	100%
(14)	सिविल एयरोड्रम	कालम अस्पष्ट है।
(15)	युनाइटेड इं.इं.कं.लि.	कालम नहीं है।
(16)	केंद्रीय तार घर	75%
(17)	पर्यटक कार्यालय	20%
(18)	लघु उद्योग सेवा संस्थान	55%
(19)	बैंक ऑफ बड़ौदा	100%

2209 HA/92—6

हिन्दी पत्राचार एवं तारों का प्रतिशत

	पत्राचार	तार
1. केन्द्रीय उत्पाद शुल्क तथा सीमा शुल्क	53%	22%
2. टेलीफोन कार्यालय	29%	—
3. भारतीय स्टेट बैंक	43%	16%
4. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	73%	21%
5. न्यू इंडिया इं.कं.लि.	52%	20%
6. राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण	24%	10%
7. होटल औरंगाबाद अशोक	63%	कालम नहीं भरा
8. आकाशवाणी	57%	41%
9. भारतीय जीवन बीमा निगम	64%	100
10. बैंक ऑफ महाराष्ट्र	55%	—
11. ओरीएण्टल इं.कं.लि.	40%	—
12. नैशनल इं.कं.लि.	29%	—
13. औरंगाबाद टैक्सटाईल मिल्स	23%	—
14. सिविल एयरोड्रम	कालम नहीं भरा	—
15. युनाइटेड इं.इं.कं.लि.	37%	कालम नहीं भरा
16. केन्द्रीय तार घर	57%	38%
17. पर्यटक कार्यालय	35%	—
18. लघु उद्योग सेवा संस्थान	59%	100%
19. बैंक आफ बड़ौदा	26%	70%

कुछ कार्यालयों के सदस्यों ने जानना चाहा कि जिन कार्यालयों के कर्मचारियों ने अपनी शिक्षा के दौरान हिन्दी भाषा को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ा है उन्हें हिन्दी शिक्षण योजना की परीक्षाएं पास करने पर क्या वे नकद पुरस्कार प्राप्त करने के लिये पात्र रहेंगे ? इस संबंध में राजभाषा विभाग से स्पष्टीकरण मांगा जाए।

कुछ सदस्यों ने यह सूचित किया कि, उनके कार्यालय में हिंदी से संबंधित कोई पद नहीं है और यदि है तो वे रिक्त पड़े हैं। ऐसी स्थिति में कार्यालय के अन्य कर्मचारियों से हिन्दी का कार्य लिया जा रहा है। सदस्यों ने यह जानना चाहा कि राजभाषा विभाग समिति को यह सूचित करें कि क्या इन कर्मचारियों को हिन्दी का कार्य अतिरिक्त रूप से करने पर कुछ मानदेय की राशि दी जाए ऐसा प्रावधान राजभाषा विभाग ने किया है या नहीं यदि हां तो उसका स्पष्टीकरण मंगवाया जाए।

4. गुण्टूर (आन्ध्र प्रदेश)

गुण्टूर की तीसरी बैठक आयकर आयुक्त, श्री प्रसाद की अध्यक्षता में दिनांक 4-12-91 को हुई।

समिति में कुल 40 सदस्य कार्यालय हैं, जिनमें से लगभग 21 कार्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। उपस्थित विभागाध्यक्षों की संख्या नगण्य थी। प्राय: अनुवादक या हिंदी से संबंधी काम देखने वाले अधिकारी/लिपिक ही उपस्थित हुए थे। गृह मंत्रालय की ओर से क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय के उप निदेशक (का.) ने भाग लिया।

इस बैठक के लिए लगभग 8 कार्यालयों से ही रिपोर्ट प्राप्त हुई थीं, जिन पर बैठक में ही विस्तृत चर्चा की गई और उनकी समीक्षा की गई। तिमाही प्रगति रिपोर्ट में निहित सभी मदों पर चर्चा करने के साथ-साथ विशेष रूप से गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षाओं, उपलब्धियों और लक्ष्य प्राप्ति के लिए किए जाने वाले उपायों पर चर्चा की गई। कुछ कार्यालयों की तो रबड़ की मोहरें भी अभी तक अंग्रेजी में ही चल रही हैं और अधिनियम की धारा 3(3) के अनुपालन की तो बात ही दूर थी कुछ कार्यालयों में हिंदी संबंधी कोई भी पद न होने के कारण भी राजभाषा के रूप में इसके प्रयोग की गति अत्यंत धीमी है। ऐसे कार्यालय अपने मंत्रालय/मुख्यालय के माध्यम से हिंदी कर्मियों की मांग कर रहे हैं। बैठक में हुई चर्चा के अनुसार यह आवश्यक लगता है कि राजभाषा विभाग के निर्धारित मानदण्डों के अनुसार न्यूनतम हिंदी कर्मियों की नियुक्ति प्रत्येक कार्यालय में की ही जानी चाहिए। इस प्रसंग में वित्त मंत्रालय/व्यय विभाग से अनुरोध करना उचित रहेगा कि वे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानदंडों के अनुसार आने वाले हिंदी पद सृजन के प्रस्तावों पर उदारतापूर्वक विचार करें और स्वीकृति दें।

बैठक के बाद और बैठक से पहले बहुत से सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुटूर का सचिवालय/अध्यक्ष कार्यालय बदला जाना चाहिए क्योंकि स्वयं आयकर कार्यालय (जहां समिति सचिवालय है) में हिंदी संबंधी बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं केवल एक हिंदी टंकक हिंदी स्टाफ के रूप में कार्यरत है।

बैठक में अध्यक्षीय भाषण में श्री प्रसाद ने हिंदी अपनाने पर बल दिया। समिति के संयोजक सचिव के रूप में श्री रवींद्र साईं तथा पूर्व सचिव श्री शैलेंद्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

5. मंगलुर (कर्णाटक)

ग्यारहवीं बैठक दि. 31-10-91 को कार्पोरेशन बैंक मंगलूर के प्रधान कार्यालय में अध्यक्ष श्री के. आर. राम मूर्ति की अध्यक्षता में हुई। समिति के 77 सदस्य-कार्यालयों में से लगभग 46 सदस्य कार्यालय में उपस्थित थे।

उपस्थित कार्यालयों में 4 कार्यालय प्रमुख थे और शेष या तो राजभाषा अधिकारी थे अथवा फिर हिंदी से संबंधित काम देखने वाले लिपिक या अनुवादक थे। बैठक में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उप निदेशक (का.) दक्षिण, डा. नवल किशोर शर्मा ने भाग लिया।

अध्यक्ष श्री मूर्ति ने अनुरोध किया कि सदस्य-कार्यालय हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में अपने-अपने कार्यालयों में और अधिक सक्रिय कद उठाएं और कार्यशाला आदि के आयोजनों में एक-दूसरे को सहयोग देकर सरकारी काम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें।

श्री नरसिंह प्रसाद यादव ने सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों को समेकित करके प्रस्तुत किया और कहा कि समिति सचिवालय द्वारा मांगी गई रिपोर्ट सदस्य कार्यालय समय पर प्रस्तुत करने की कृपा करें। 77 कार्यालयों में से 29 बैंक कार्यालय हैं, जिनमें से लगभग 15 बैंक कार्यालय की रिपोर्ट बैठक होने तक समिति सचिवालय को प्राप्त नहीं हुई थी। सरकार उपक्रमों में 11 में से 6 कार्यालयों की रिपोर्टें मिली हैं, जबकि केन्द्रीय सरकार के 36 कार्यालयों में से 20 कार्यालयों से रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई। यह दशा शोचनीय है।

बैठक में चर्चा के लिए रखे गये विषय इस प्रकार थे :—

गत बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि, गत बैठक के लिये निर्णयों पर की गई कार्रवाई, विभिन्न कार्यालयों द्वारा भेजे गये आंकड़ों की समीक्षा निर्धारित लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए निम्नानुसार:—कर्मचारियों का हिंदी ज्ञान एवं प्रशिक्षण, हिंदी टाइप-आशुलिपि के प्रशिक्षण की स्थिति, हिंदी टाइपराइटरों की स्थिति, धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किये गए कागजात की स्थिति, हिंदी में प्राप्त पत्रों की स्थिति, पत्राचार की स्थिति, हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन की स्थिति, हिंदी पदों की स्थिति, कार्यालय के प्रयोग में आने वाले सामग्री फार्म, मोहरों, नामपट्टी की स्थिति, वर्ष में हिंदी दिवस/समारोह तथा अन्य प्रतियोगिताओं की स्थिति, धार्मिक कार्यक्रम के अनुपालन की स्थिति, अन्य कोई मद अध्यक्ष की अनुमति से।

केनरा बैंक के प्रतिनिधि श्री शेट्टी, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की प्रतिनिधि श्रीमती उमा कृष्णमूर्ति, हिंदी प्राध्यापक श्री बचन प्रसाद, बैंक ऑफ महाराष्ट्र की ओर से श्री वेणुगोपाल ने विशेष रूप से भाग लिया। इन लोगों ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अधिकार क्षेत्र एक ही बैंक की अलग-अलग शाखाओं के संबंध में रिपोर्ट, हिंदी/हिंदी आशुलिपि व हिंदी टंकण के प्रशिक्षण आदि के संबंध में विशेष रूप से प्रश्न उठाए और चर्चा की।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने इस बात पर विशेष बल दिया कि टैलैक्स मशीन हिंदी में उपलब्ध कराने के लिये राजभाषा, विभाग, गृह मंत्रालय को संचार मंत्रालय से विशेष संपर्क करना चाहिये। इस आशय की मांग और कार्यालयों ने भी की। टैलैक्स मशीन के संबंध में बार-बार लिखने पर संचार मंत्रालय के कार्यालयों से उन्हें केवल प्रतीक्षा सूची से अपनी क्रम संख्या बता दी जाती है। राजभाषा विभाग की ओर से आश्वासन दिया गया कि उप सचिव (का.) इस संबंध में शीघ्र ही संचार मंत्रालय से संपर्क करने और किसी भी कार्यालय से टैलैक्स मांग जाने पर टैलैक्स मशीन शीघ्र स्थापित करने के लिये संचार मंत्रालय से अनुरोध करेंगे।

उप निदेशक (का.), दक्षिण ने बैठक में समिति सचिवालयों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा की। उन्होंने बहुत-सी रिपोर्ट, जो अधूरी थी और जो केवल अंग्रेजी में ही भरी हुई थी और उनके अग्रेषण पत्र भी अंग्रेजी में थे। उन पर रबर स्टांप केवल अंग्रेजी की थी तथा कुछ रिपोर्टों पर हस्ताक्षर नहीं थे या कुछ विभाग अध्यक्ष द्वारा देखी नहीं गई थी। उप निदेशक (का.) ने अनुरोध किया कि वे भविष्य में इन कमियों को दूर करके रिपोर्ट दें तथा प्रोत्साहन योजनायें विशेष रूप से चलायें, ताकि अधिकारियों और कर्मचारियों के हिंदी ज्ञान का उपयोग हो सके। धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करें इसके लिये जांच बिंदुओं पर जोर दिया गया। पत्राचार में निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिये भी पत्रों के मानकीकरण पर बल दिया गया ताकि अधिक से अधिक पत्र हिंदी में लिखे जा सकें।

नगर के बहुत से कार्यालयों में हिंदी प्रशिक्षण का काम पूरा किया जाना बाकी है। यह निश्चय किया गया कि सभी सदस्य कार्यालय नवंबर के दूसरे सप्ताह तक ऐसे अधिकारियों और कर्मचारियों की सूची तैयार करके कार्पोरेशन बैंक (समिति सचिवालय) को दे देंगे, ताकि हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आगामी जनवरी से होने वाले सत्र में प्रशिक्षण की दिशा में और आगे कदम बढ़ाया जा सके। मंगलूर में हिंदी टाइपिंग व आशुलिपि के प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है और निजी क्षेत्रों में भी उसका अभाव है। इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह सुझाव दिया गया है कि समिति सचिवालय ऐसे कार्यालयों से विशेष संपर्क करें, जिनमें देवनागरी टाइपराइटर अधिक हैं और ऐसे व्यक्ति की सहायता लें, जो हिंदी टाइपिंग और आशुलिपि अच्छी जानता हो। सदस्य कार्यालय ऐसे योग्य व्यक्ति को मानदेय देकर अपने कर्मचारियों को ऐसे नव गठित केन्द्र से प्रशिक्षित करा लें और हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत उन्हें परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिये प्रेरित करें। इस दिशा में कार्रवाई करने का आश्वासन दिया गया। बैठक के अंत

में केनरा बैंक के श्री आदि नारायण शेट्टी ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

6. देवास (मध्य प्रदेश)

आठवीं बैठक दिनांक 18-12-91 को केन्द्रीय विद्यालय, देवास में हुई । इसकी अध्यक्षता बैंक नोट मुद्रणालय, देवास के उपमहाप्रबन्धक श्री टी.के. रामस्वामी ने की।

श्री टी.के. रामस्वामी ने अधिकांश कार्यालयों के प्रभारी अधिकारियों की उपस्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा —

"सर्वप्रथम मैं आप सब लोगों के इन प्रयासों की सराहना करूंगा जिनके प्रयासों से इस बैठक से पूर्व नगर समिति कार्यालय को 20 कार्यालयों से प्रगति सम्बन्धी जानकारी प्राप्त हुई जबकि पिछली बैठक में केवल 11 कार्यालयों की सूचना मिली थी और बैठक के दौरान तीन अन्य कार्यालयों से जानकारी प्राप्त हुई । यह एक शुभ और सार्थक लक्षण है।

पिछली बैठक के दौरान देवास नगर के कार्यालयों से लगभग 80% पत्राचार हिन्दी में हुआ । इस तिमाही के दौरान प्रगति की यही दर बनी रही। मेरा इस विषय में यह अनुरोध है कि हम यह प्रयास अवश्य करें कि प्रति छमाही हमारे हिन्दी पत्राचार में वृद्धि जरूर हो चाहे वह एक प्रतिशत ही क्यों न हो।

देवास नगर समिति हिन्दी कार्यशाला के माध्यम से एक और स्वस्थ परम्परा प्रारम्भ कर रही है, इसका श्रेय आप सब अधिकारियों को ही है, दूसरी बैठक के दौरान हमने इस बारे में छोटा सा प्रयोग किया था जो काफी सफल रहा था।

हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं बल्कि भारतीयता की पहचान है । इसका विकास, इसकी समृद्धि, इसकी उन्नति का दायित्व केवल हिन्दी अनुभाग, हिन्दी अधिकारी या हिन्दी वालों का ही नहीं बल्कि प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी भारतीय का है । वास्तव में आजादी के 45 वर्ष के बाद भी जनता से पत्र व्यवहार में अंग्रेजी का वर्चस्व-एक चिंता का विषय है । विदेशी भाषा न केवल हमारे चिंतन की मौलिकता को प्रभावित करती है बल्कि राष्ट्र की सामसिक संस्कृति पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है ।

आशा है कि आप स्वयं हिंदी को अपनाकर अपने अधीनस्थ सहयोगी कर्मचारियों को प्रेरित कर अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेंगे, हमें बेहतर परिणाम प्राप्त कर आपस में भावनात्मक रूप से भी जुड़ सकने में भी सहायक होगा।"

यह अनुरोध किया गया कि जिन कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बन चुकी हैं वे कृपया प्रति तिमाही उनकी निमित बैठक करें तथा उनकी सूचना नगर समिति कार्यालय और भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय को अवश्य दी जाए।

छोटे कार्यालयों को समानधर्मी सहयोगी कार्यालयों के साथ मिलकर समिति बनाने विषयक सुझावों पर पुन: चर्चा हुई। इसमें पिछले सुझावों के अतिरिक्त यह सुझाव आया कि अग्रणी बैंक में होने वाली तिमाही बैठकों में बैंक तथा साधारण बीमा की चारों कंपनियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहते हैं। उनमें भी राजभाषा विषयक प्रगति पर चर्चा की जा सकती है। यह निर्णय किया गया कि साधारण बीमा निगम कर्मचारी कार्यालयों की समिति के समन्वयक का कार्य श्री दीपक प्रसाद, शाखा प्रबंधक, न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी करेंगे, स्टेट बैंक ऑफ इंदौर की तीनों शाखाओं का समन्वय श्री एस. आर. भारद्वाज शाखा प्रबंधक, मुख्य शाखा तथा बैंक ऑफ इंडिया की तीनों शाखाओं/कार्यालयों का समन्वय श्री जे. के. भार्गव, अग्रणी जिला प्रबंधक द्वारा किया जाएगा।

अग्रणी बैंक में बैंकों और साधारण बीमा कार्यालयों की तिमाही बैठकों में भी राजभाषा विषयक चर्चा की जा सकती है। यह भी राजभाषा प्रगति की दिशा में एक सराहनीय कदम होगा।

बैंक ऑफ बड़ौदा ने उनकी शाखा में हिंदी टाइपराइटर उपलब्ध हो जाने विषयक सूचना दी।

नगर के कार्यालयों में हिन्दी प्रगति

सदस्य सचिव ने सर्वप्रथम उन 20 कार्यालयों के प्रति आभार व्यक्त किया जिनसे बैठक के पूर्व राजभाषा प्रगति संबंधी जानकारी प्राप्त हुई। दो कार्यालयों से बैठक के दौरान रिपोर्ट प्राप्त हुई।

निम्नलिखित कार्यालयों से प्रगति रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई :

स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, मुख्य शाखा, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ इंडिया, औद्योगिक क्षेत्र शाखा, बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा; उपमंडल कार्यालय, टेलीफोन; केन्द्रीय उत्पाद शुल्क; तथा यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी।

बैठक से पूर्व 20 कार्यालयों तथा बैठक के दौरान दो कार्यालयों के प्रगति विवरण के अनुसार देवास स्थित 22 कार्यालयों की प्रगति का विवरण इस प्रकार है :—

हिन्दी पत्रोत्तर

1. हिंदी में प्राप्त कुल पत्र—	21,233
2. हिंदी में उत्तर	12,988
3. अंग्रेजी में उत्तर	—

पत्राचार

कुल जारी पत्र	हिंदी पत्र	अंग्रेजी	हिंदी में प्रेषित पत्रों का %
25,241	20,962	4,279	83%

तार	हिंदी तार	अंग्रेजी तार	हिंदी में प्रेषित तारों का %
578	277	351	39%

तारों के संबंध में यह पुनः स्पष्ट किया गया कि बैंकों के मुद्रा संबंधी कोड तारों की संख्या इसमें शामिल करने की आवयकता नहीं है।

राजभाषा अधिनियम की धारा–3(3) के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा इसका सही तरह से अनुपालन नहीं किया गया:—

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल; दूर संचार विभाग; केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (विद्युत); भारतीय खाद्य निगम; भारतीय जीवन बीमा निगम, बैंक ऑफ महाराष्ट्र।

इस संदर्भ में छठीं बैठक के इस निर्णय को पुनः दोहराया गया कि देवास स्थित सभी कार्यालय राजभाषा विषयक मार्गदर्शन, सलाह सामयिक अनुवाद सुविधा के लिए सदस्य सचिव ने संपर्क कर तत्संबंधी लाभ ले सकते हैं।

प्रशिक्षण

भारत सरकार द्वारा इस समय हिन्दी संबंधी विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर काफी बल दिया जा रहा है। इसी तारतम्य में देवास को विशेष रूप से अंशकालिक केन्द्र की सुविधा मिली हुई है। इसमें प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ के साथ-साथ हिंदी टाइपिंग और आशुलिपि के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था है और देवास स्थित कार्यालयों को इन सुविधाओं का पूर्ण लाभ उठाना चाहिए। इस संदर्भ में सभी कार्यालयों से अप्रशिक्षित कर्मचारियों को इन कक्षाओं के लिए मनोनीत करने का अनुरोध किया गया।

इसके साथ ही साथ सभी कार्यालयों से यह अनुरोध किया गया कि वह हिन्दी टाइपिंग/आशुलिपि तथा प्रबोध/प्रवीण और प्राज्ञ के प्रशिक्षण के लिए संबंधित कर्मचारियों अधिकारियों के नाम प्रशिक्षण हेतु 31-12-91 तक नगर समिति कार्यालयों में पहुंचाने की व्यवस्था करें, जिससे जनवरी-फरवरी' 92 से नई कक्षाओं का गठन किया जा सके। बैठक के दौरान न्यू इंडिया इंश्योरेंस कंपनी, बैंक ऑफ बड़ौदा ने हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण हेतु एक-एक तथा बैंक ऑफ इंडिया, अग्रणी कार्यालयों ने हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण हेतु एक कर्मचारी भेजने की जानकारी दी। सभी सदस्यों को यह जानकारी दी गयी कि प्रशिक्षण हेतु मनोनीत कर्मचारी को कक्षाओं में उपस्थित होना तथा प्रशिक्षण समाप्ति पर परीक्षा में शामिल होना अनिवार्य है।

काव्य संध्या

अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री भार्गव ने यह सुझाव दिया कि बैठक के उपरांत हिंदी काव्य संध्या का आयोजन किया जाना चाहिए। सुझाव से सभी सदस्यों ने सहमति व्यक्त की और यह निर्णय लिया था कि यदि बैंक ऑफ इंडिया द्वारा इसे प्रायोजित किया जाता है तब अगली बैठक के उपरांत काव्य संध्या का आयोजन किया जाएगा।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि द्वारा शंका समाधान

अग्रणी बैंक प्रबंधक श्री भार्गव ने द्विभाषी टैलेक्स सुगमतापूर्वक उपलब्ध न होने की कठिनाई की ओर ध्यान आकर्षित कराया। राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि श्री रामजग यादव, अनुसंधान अधिकारी ने इस संदर्भ में यह जानकारी दी कि फिलहाल द्विभाषी टैलेक्स उत्पादन मांग से कम हो रहा है और जो कार्यालय द्विभाषी टैलेक्स लेना चाहते हैं वे अपनी मांग विधिवत् दूरसंचार कार्यालय में दर्ज कराकर प्रतीक्षा सूची में अपना नाम लिखवा लें जिससे उन्हें यथासमय द्विभाषी टैलेक्स मिल सकें। इनका उत्पादन बढ़ाने के लिए सघन प्रयास जारी हैं।

श्री यादव ने लगभग 90% उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि इन बैठकों में कार्यालय प्रधान की उपस्थिति से राजभाषा कार्यान्वयन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल को अभी भी केवल 3-4 कार्यालय से ही तिमाही प्रगति रिपोर्ट नियमित रूप से प्राप्त हो रही है। देवास स्थित प्रत्येक कार्यालय को अपनी तिमाही रपोर्ट नियमित रूप से नगर समिति कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को भेजना चाहिए।

सराहनीय, उल्लेखनीय, अनूठे और प्रेरक कार्यों की सूचना नगर समिति और क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को देने में संकोच नहीं करना चाहिए। अच्छा कार्य करने वाले बधाई के पात्र है। सहयोग-प्रेरणा और प्रोत्साहन से हिंदी का प्रयोग वातावरण बनता और बढ़ता जाएगा। इसके लिए सतत-गहन संपर्क हेतु उन्होंने संपर्क दल बनाने का सुझाव दिया।

7. हैदराबाद (केन्द्रीय कार्यालय)

18वीं बैठक दि० 13-12-91 को दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री मदन शर्मा की अध्यक्षता में हुई। बैठक में 153 सदस्य कार्यालयों में से लगभग 70 कार्यालयों के प्रतिनिधि उपस्थित थे तथा बैठक प्रारम्भ होने तक 58 कार्यालयों की रिपोर्टें समीक्षा के लिए प्राप्त हुई थीं। इन केवल एक तिहाई कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर नगरद्वय में केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में हुई हिन्दी की प्रगति की समीक्षा आंशिक रूप से ही हो सकी। बैठक के आरम्भ में ही समिति के सदस्य सचिव श्री पी एन रेड्डी ने

कहा कि "पिछली बैठक में भी सभी विभागाध्यक्षों से रिपोर्ट नियमित रूप से भेजने का अनुरोध किया गया था लेकिन कुछ प्रमुख मंत्रालयों जैसे रक्षा, गृह, श्रम, खाद्य, मानव संसाधन, स्वास्थ्य आदि के अन्तर्गत काम करने वाले कार्यालयों से रिपोर्ट अब भी प्राप्त नहीं हो रही है"। इस कथन पर उप निदेशक (का०) ने बैठक में आश्वासन दिया कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उच्च स्तर पर भारत सरकार के मंत्रालयों, विभागों से पुनः अनुरोध करेगा कि वे अपने कार्यालयों को निर्देश दें कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को वे सहयोग दें और उनकी बैठकों में भाग लें।

बैठक में रिपोर्टों के प्रत्येक मद पर विस्तार से चर्चा की गई और उप निदेशक ने यह स्पष्ट किया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन, हिन्दी में प्राप्त पत्र का उत्तर, हिन्दी में देने तथा लेखन सामग्री को द्विभाषिक रूप में एक साथ हिन्दी और अंग्रेजी में तैयार करने के संदर्भ में किसी भी क्षेत्र अथवा कार्यालय को छूट प्राप्त नहीं है। अतः इस संबंध में वर्तमान भाषा नीति और नियमों का दृढ़ता से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। उप निदेशक (का०) ने इस बात पर भी जोर दिया कि रिपोर्ट अधूरी न भेजी जाएं तथा प्रत्येक कार्यालय में कुछ कार्यों को अथवा कुछ फाइलों के लिए केवल हिन्दी का प्रयोग करने की दिशा में कार्रवाई की जाए। हिन्दी मदों के सृजन और भर्ती की दिशा में कार्रवाई करने के लिए भी कार्यालयों द्वारा कदम उठाए जाएं। विभागीय परीक्षाओं में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने और अपनाने के लिए भी उप निदेशक (का०) ने जोर दिया और यह कहा कि पिछले वर्षों में हुई परीक्षाओं के प्रश्न पत्रों के आदर्श उत्तर हिन्दी में तैयार कराए जाएं और उपलब्ध कराए जाएं, ताकि अधिक से अधिक कर्मचारी विभागीय परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम अपनाने के लिए रुचि लेकर बढ़ें।

विभागीय निरीक्षणों के समय हिन्दी प्रगति के निरीक्षण पर भी जोर दिया गया और सुझाव दिया गया कि हिन्दी को मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जाए ताकि कहीं भी उसके संबंध में न तो उपेक्षाओं को और न ही कोई भूल हो। इस प्रयोजन के लिए विभागीय निरीक्षण के प्रपत्र में ही हिन्दी प्रगति की कुछ मदें भी जोड़ दी जाए तो स्वतः ही हिन्दी का प्रगति का निरीक्षण भी सामान्य अथवा मुख्य निरीक्षण का एक अंग बन जायेगा।

निम्नलिखित विषयों पर भी चर्चा हुई और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय से उचित कार्रवाई की अपेक्षा की गई।

1. हिन्दी शिक्षण और कार्यान्वयन के लिए विशेष श्रव्य, दृश्य कार्यक्रम तैयार किए जाएं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हिन्दी शिक्षण और कार्यान्वयन को नयी दिशा मिलेगी तथा शीघ्र ही लक्ष्य प्राप्ति होगी।

2. हिन्दी कार्यान्वयन बोध व प्रयोग के लिए प्रश्न मंच जैसे प्रतियोगिताओं के आयोजन किए जाएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी समय-समय पर किए जाएं। उनके आयोजन आदि के लिए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय विशेष ध्यान दें और पहल करें।

3. नगर स्तर पर कार्यान्वयन कार्यालय नराकास की देख रेख में कुछ कार्यदल (टास्क फार्म) गठित किए जाए, जो विभिन्न कायालयों में हिन्दी संबंधी गतिविधियों का मूल्यांकन करते हुए कार्यालयों को हिन्दी में कार्य करने के लिए व्यावहारिक सहायता दे सकें।

4. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों उपक्रमों आदि में कार्यरत वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा नीति से परिचित कराने के लिए विशेष पुनः चर्या पाठ्यक्रम/2 दिन की कार्यशालाएं चलाई जाए। (हिन्दी अधिकारियों और अनुवादकों, के लिए ऐसे कार्यक्रम का प्रस्ताव राजभाषा विभाग द्वारा पहले ही पारित किया जा चुका है)।

5. कई उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने इस बात पर जोर दिया कि केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों की भांति ही उपक्रमों के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी हिन्दी शिक्षण योजना के माध्यम से निःशुल्क प्रशिक्षित किया जाए तथा इस कार्य के लिए उपक्रमों से कोई पैसा न लिया जाए। कुछ उपक्रमों ने वर्तमान प्रणाली केन्द्रीय कार्यालय के रूप में उपक्रमों के साथ सौतेला व्यवहार बताया और निःशुल्क हिन्दी प्रशिक्षण को जरूरी बताया गया।

हिन्दी के लिए पूर्व समर्पित अधिकारी श्री मदन एम एल शर्मा, महा प्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन हर परिस्थिति में सुनिश्चित करने के लिए कार्यालयों से अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि दृढ़ निश्चय से काम करने पर हिन्दी में काम कोई मुश्किल बात नहीं है। अतः सभी कार्यालय सकारात्मक रुख रखते हुए सरकारी कामकाज में हिन्दी को अपनाने और बढ़ाने के लिए काम करें।

8. हुबली (कर्णाटक)

दि० 19-12-91 को मंडल रेल प्रबंधक श्री वरियर की अध्यक्षता में हुई बैठक के आरम्भ में सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय का स्वागत भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने सभी कार्यालय प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक अपने उद्देश्य में तभी सफल होगी जब नगर में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालय, बैंक और उपक्रम इसे अपना पूरा सहयोग देंगे।

संयोजक सदस्य सचिव श्री आनंद मोहन चतुर्वेदी ने बात इस को दोहराया कि नगर में कार्यरत केन्द्रीय सरकार के बहुत कम कार्यालय अपनी रिपोर्ट समिति सचिवालय को भेजते हैं और जो भेजते हैं वे अधिकांश रूप से अधूरी होती

जिससे प्रगति प्रस्तुतिकरण और मूल्यांकन में बाधा पड़ती है। उन्होंने अनुरोध किया कि सभी कार्यालय, बैंक और उपक्रम अपनी रिपोर्ट बैठक से कुछ दिन पूर्व निर्धारित तारीख तक समिति सचिवालय को भेजना सुनिश्चित करें ताकि भविष्य में उन पर विस्तार से चर्चा हो सके। उन्होंने सदस्यों को सूचित किया कि नगर में कार्यरत उन कार्यालयों को जिन्होंने सर्वाधिक कार्य हिन्दी में किया है, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शील्ड देकर सम्मानित करना चाहती है।

उप निदेशक (का०) ने बैठक में विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्टों की विस्तृत समीक्षा की और जिन मदों पर आवश्यकता समझी उन पर समिति सदस्यों का ध्यान खींचते हुए उनका मार्गदर्शन किया तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति पर प्रकाश डाला। उन्होंने केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सिंडिकेट बैंक, श्रम मंत्रालय के कार्यालय की रिपोर्टों की समीक्षा के संदर्भ में बताया कि उन्होंने अपने यहां की सभी रबड़ की मोहरों को आंकड़ों में द्विभाषिक बताया है, किन्तु वास्तव में उनकी रिपोर्टों पर लगी हुई मोहरें केवल अंग्रेजी में है, जो रिपोर्टों के प्रामाणिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है। उन्होंने कहा कि तथ्यों के विपरीत रिपोर्ट प्रस्तुत करने से प्रगति का सही मूल्यांकन नहीं हो सकता।

दक्षिण मध्य रेलवे, हुबली की केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद शाखा, शाखा मंत्री श्री म० अठवले ने राजभाषा विभाग का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि हिन्दी परीक्षाओं के लिए दिया जाने वाला मानदेय कम है और पर्यवेक्षको को छुट्टी भी नहीं दी जाती। उन्होंने मांग की कि हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन होने वाली परीक्षाओं के लिए भी रेल भर्ती परीक्षा बोर्ड के समान ही पर्यवेक्षक कर्मचारियों को मानदेय प्रदान करने की व्यवस्था की जाए और साथ ही उन्हें प्रतिपूर्ति छुट्टी भी दी गए।

9. सूरत (गुजरात)

दिनांक 24 दिसम्बर, 1991 को बैठक का आरम्भ अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार तिवारी सूरत के आयुक्त के स्वागत-कथन से हुआ, जिसकी विशेष दिलचस्पी के परिणामस्वरूप एक लंबे अन्तराल के बाद आज की इस बैठक का आयोजन संभव हो सका था। बैठक में हिस्सा लेने के लिए उपस्थित विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों, बैंकों तथा निगम उपक्रमों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए, अध्यक्ष ने यह बताया कि लगभग पिछले 45 सालों के प्रयत्नों के बावजूद हम हिन्दी को अंग्रेजी के स्थान पर प्रस्थापित नहीं कर पाये हैं, यह असफलता जितनी आश्चर्यजनक, उतनी ही खेदजनक भी है। माना कि पहले की अपेक्षाकृत हिन्दी में कार्य-निष्पादन में कुछ वृद्धि हुई है, लेकिन कुल मिलाकर जो प्रगति हुई है वह सतही स्तर की है। ऐसा क्यों ? इस "क्यों" का सही उत्तर पाने के लिए हमें अपने अन्तर्मन को टटोलना होगा और अपनी कमजोरियों को भली भांति पहचानना होगा। भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। विविध भाषाएं भारत की अमूल्य निधियां हैं। भारत के भाषा रूपी मुक्तकों की एकसूत्रता के लिए जिस मजबूत सूत्र की आवश्यकता है ऐसा एक सूत्र बन सकने की क्षमता केवल हिन्दी में है, न कि अंग्रेजी में। विभिन्न क्षेत्रों के, विभिन्न जाति, धर्म-संप्रदायों से संबंध रखने वाले भारत के लोगों के बीच परस्पर सम्पर्क हिन्दी के अभाव में कभी संभव नहीं हो सकता था। स्वतंत्रता-संघर्ष के दिनों में जिस हिन्दी ने भारत के लोगों को एकजुट किया था, उस हिन्दी की अनन्य सेवा के इतिहास को भारत की आजादी के इतिहास से बहुत पुराना बताते हुए श्री तिवारी ने यह बात खास तौर पर बताई कि सबसे पहले हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा। उन्होंने अपने अनुभव के आधार पर इस तथ्य का पुनरोच्चार किया कि यहां के कार्मिक गुजराती और हिन्दी के मिलते-जुलते पन के कारण अंग्रेजी की बनिस्पत हिन्दी आसानी से बोल लिख सकते है अत सूरत के सरकारी कार्यालयों/बैंकों आदि में राजभाषा-हिन्दी के प्रयोग की संभावनाएं उज्ज्वल हैं :

सदस्य कार्यालयों की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा

भारतीय जीवन बीमा निगम, कृभकों, देना बैंक, बैंक आफ बड़ोदा, बैंक आफ इण्डिया, आन्ध्र बैंक तथा आयकर आयुक्त कार्यालय को छोड़कर शेष सदस्यों की प्रगति रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई थी। आन्ध्र बैंक की रिपोर्ट मिली थी किन्तु उसके प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित नहीं थे। श्री धर्मपाल ने बताया कि रिपोर्ट के अभाव में प्रगति के बारे में सही-सही सूचना मिल पाना संभव नहीं। सभी सदस्यों को प्रगति रिपोर्ट प्रत्येक बैठक के आयोजन के पहले भेजनी चाहिए ताकि उस की समीक्षा भी की जा सके।

प्रगति उपलब्धियों की सूचना

कृषक भारतीय कॉआपरेटिव लिमिटेड (कृभको) में कुल मिलाकर स्थिति बेहतर थी। विविध क्षेत्रों में हिन्दी में कार्य-निष्पादन हो रहा था। कुल 45 कर्मचारियों को हिन्दी टंकण आशुलिपिकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका था। यद्यपि रोमन लिपि के 60 टाइपराइटरों की तुलना में केवल चार देवनागरी टाइपराइटर खरीदे गए, तथापि अध्यक्ष ने पिछले दिनों कृभको कार्यालय के निरीक्षण के समय स्वयं यह देखा था कि नकद पुरस्कार योजना सहित विभिन्न योजनाओं के कार्यान्वयन/रोजमर्रा के कार्य निष्पादन तथा प्रतियोगिता आदि के आयोजन के मामले में कृभकों की प्रगति औरों के लिए अनुकरणीय है। बैंक आफ बड़ौदा की प्रगति भी, उल्लेखनीय पाई गई। बैंक में लगभग 50 प्रतिशत पत्रादि हिन्दी में भेजे जाने की जानकारी पर, सभी सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की। आयकर आयुक्त कार्यालय, देना बैंक, एयर इंडिया आदि अन्य सदस्य इकाइयों में समय-समय पर हिन्दी कार्याशाला, हिन्दी सप्ताह आदि का आयोजन हो रहा था किन्तु व्यावहारिक कठिनाइयों के फलस्वरूप, हिन्दी में कार्य-निष्पादन का अनुपात अत्यल्प था।

समस्याएं

समिति के गठन से समिति से जुड़े होने के नाते ज्यादातर सदस्यों ने इस समिति की उपयोगिता के समक्ष सवालिया निशान लगाते हुए पूर्व-सचिव से यह जानना चाहा कि समिति ने, किन मसलों

का हल तलाशने में, उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। पिछले निर्णयों का हवाला देते हुए सदस्यों ने बताया कि निर्णयों पर, जैसी कि अपेक्षा थी तदनुरूप कार्यान्वयन नहीं हो पाने की स्थिति में हिन्दी के प्रशिक्षण/तकनीकी प्रशिक्षण के मामले में जैसे थे की स्थिति बनी हुई है।

इसी प्रकार हिन्दी संबंधी पदों की स्वीकृति/पदाधिधिकारियों की पदोन्नति के मामले में भी, राजभाषा विभाग ने कोई विशेष प्रयत्न किया हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। राजभाषा विभाग के अपवाद' को छोड़कर अन्य कार्यालयों में अपेक्षित संख्या में वरिष्ठ पदों की स्वीकृति नहीं हो पाने की स्थिति तथा स्वीकृत पदों की रिक्तियां बनी रहने की परिस्थिति को प्रगति में व्यवधान बताते हुए, सदस्यों ने यह बताया कि इस समिति के माध्यम से सदस्यों की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद राजभाषा विभाग से जिस सहयोग की अपेक्षा थी, वह पूरी नहीं हो पाई है। इस के परिणामस्वरूप समस्याएं जहां थीं, वहीं ठहरी हुई हैं। इस पर श्री मिस्त्री ने यह बताया कि हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित करने संबंधी राजभाषा विभाग के आश्वासन पर, अमल बरामदगी नहीं हो पाती है तब तक पत्राचार पाठ्यक्रम/निजी प्रयत्नों से प्रशिक्षण की योजना का लाभ उठाया जाए। हिन्दी संबंधी पदों की रिक्तियों की समाप्ति हो तथा सामान्य/वरिष्ठ पदों की स्वीकृति के मामले में अपेक्षित कार्रवाई संबंधित इकाइयों के वरिष्ठ कार्यालयों द्वारा की जानी चाहिए परन्तु राजभाषा विभाग द्वारा उनके साथ इस संदर्भ में पत्राचार किया जाने पर स्थिति में सुधार हो सकता है। और राजभाषा विभाग की तरह अन्य कार्यालयों/बैंकों में भी हिन्दी संबंधी वरिष्ठ पदों को स्वीकृति मिल सकती है क्योंकि ऐसे कार्यालयों के पास इसके लिए 'औचित्य के उनका अपना आधार भी है। 'राजभाषा भारती, की पर्याप्त प्रतियां मिलने पर सभी सदस्यों को वितरित करने का आश्वासन दिया गया। यह मुद्दा भी स्वीकृत किया गया कि भविष्य की बैठकों में, सदस्यों की समस्याओं के निराकरण में राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए सहयोग अथवा निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई करने में दिखाई गई शिथिलता के अनुपात की भी संवीक्षा की जाएगी ताकि बैठकों के आयोजन की औपचारिकता में सार्थकता का मुद्दा जोड़ा जा सके।

अधीनस्थ कार्यालयों तथा मंत्रालयों के लिए स्वीकृत "नकद पुरस्कार योजना" में पुरस्कार-राशि की विषमता को दूर किया जाए।

उक्त योजना के तहत मंत्रालयों/अधीनस्थ कार्यालयों में सेवारत कर्मचारियों को (प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को) मिलनेवाली पुरस्कार राशि में जो अन्तर है, उसे समाप्त करने तथा योजना को अधिक आकर्षक बनाने के मुद्दों पर चर्चा के बाद निर्णय लिया गया कि इस संबंध में राजभाषा विभाग से पत्राचार किया जाएगा।

संयुक्त कार्यशाला का आयोजन

समिति के स्तर पर सदस्य-कार्यालयों के लिए संयुक्त-कार्यशाला चलाने का मुद्दा सैद्धांतिक रूप से स्वीकृत कर लिया गया। इससे उन कार्यालयों के कर्मचारियों को भी व्यावहारिक हिन्दी का प्रशिक्षण दिया जा सकेगा, जिन कार्यालयों में हिन्दी संबंधी स्टाफ का नितान्त अभाव है।

नगर राजभाषा कार्यालय की बैठकें बारी-बारी पृथक-पृथक कार्यालयों के परिसर में की जाएं

सुझाव स्वीकृत निर्णय किया गया कि अगली बैठक का आयोजन कृभको या अन्य किसी कार्यालय/बैंक में आयोजित की जाएगी बशर्ते कि इस के लिए बाकायदा प्रस्ताव प्राप्त हो।

उप-समिति का गठन

कार्यालयों/बैंकों की कार्य-प्रणाली को ध्यान में रखते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में, उप-समितियां गठित करने का निर्णय लिया गया, जिनकी बैठकें समय-समय पर बुलाई जाएंगी।

"समिति" के स्तर पर पत्रिका का प्रकाशन-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का समय-समय पर आयोजन

सुझाव स्वीकृत। इसके लिए बैंक/निगम/उपक्रम वित्त-प्रबन्ध का प्रस्ताव अध्यक्ष के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

अध्यक्ष की अनुमति से अन्य विषय

समिति का कार्य निर्धारित नीतियों पर कार्यान्वयन सुनिश्चित करने तथा प्रगति की समीक्षा करते हुए, कठिनाइयों का हल तलाशने की दिशा में संयुक्त रूप से प्रयत्न करने तक सीमित होने के बावजूद खुली चर्चा के माहौल में निम्नलिखित प्रस्ताव सामने आए, जिन्हें संबंधित मंत्रालय/प्राधिकरणों को विचारार्थ अग्रसर करने की बाबत अध्यक्ष ने सहमति जताई:

सेवारत कर्मचारियों को हिन्दी का प्रशिक्षण देने की दिशा में जो प्रयास किए जा रहे हैं, उसकी तुलना में प्रशिक्षित कर्मचारियों को ही सेवा में भर्ती किया जाना चाहिए। सरकारी/बैंक की सेवा में प्रवेश के लिए हिन्दी को लाजिमी बनाया जाना चाहिए।

हिन्दी के लिए मांग आम लोगों की तरफ से उठने पर ही ठोस परिणाम देखे जा सकते हैं। इसके लिए ठोस प्रयत्न किये जाने चाहिएं। उदाहरणतया:

रेलवे में आरक्षण के लिए आवेदन पत्र हिन्दी में भरने पर यात्रियों को किराए में एक या दो प्रतिशत की छूट;

हिन्दी में भरी गई आयकर विवरणी का अग्रता के आधार पर निपटान किया जाना।

इस सिलसिले में चर्चा के दौरान नियमों का अनुपालन नहीं करने के लिए दण्ड का प्रावधान किए जाने की आवश्यकता भी अनुभव की गई।

धन्यवाद

अध्यक्ष के प्रारंभिक कथन में उल्लिखित इस बात का हवाला देते हुए कि अधिकतम कर्मचारी अंग्रेजी लिखने में असंख्य गलतियां करते हैं, आयकर विभाग के राजभाषा अधिकारी श्री पी.एन. संचान, उप आयुक्त ने यह विचार व्यक्त किया कि एक विदेशी भाषा में गलतियां करने के बजाय यह उचित होगा कि हम राजभाषा में ही गलतियां करें, जिसे क्षम्य समझा जाने में औचित्य भी होगा।

10. तिरूअनंतपुरम् (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), तिरूअनन्तपुरम् की 14वीं बैठक 21 जनवरी 1992, को केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, तिरुअनन्तपुरम में की गई। श्री के.आर. शेणाय, सहायक महाप्रबन्धक, ने बैठक की अध्यक्षता की, श्री रामचन्द्र मिश्र उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोचिन ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व किया। श्री एल डिसूजा, उप मुख्य अधिकारी एवं श्री काजी मुहम्मद ईसा, राजभाषा अधिकारी भारतीय रिजर्व बैंक के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित रहे। ओरियंटल बैंक तथा पंजाब एंड सिन्ध बैंक को छोड़कर शेष सभी बैंकों के प्रतिनिधि बैठक में उपस्थित रहे। सदस्य सचिव डा. सोहन लाल ने समिति की 13वीं बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई पर रिपोर्ट प्रस्तुत की जो इस प्रकार है।

1. बैंक कार्यपालकों/वरिष्ठ अधिकारियों के लिए 20 सितम्बर 91 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय लिया गया था, तदनुसार उक्त कार्यशाला की गई जिसमें 50 कार्यपालकों/अधिकारियों रा.भा. अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में सभी सदस्य बैंकों का प्रतिनिधित्व हुआ। संकाय सहायता श्री राजेश्वर गैंगवार, उप मुख्य अधिकारी, भा०रि.बैं. बम्बई तथा श्री आर.एस.एल. प्रभु, मंडल प्रबन्धक, कैनरा बैंक, प्र.का. बेंगलूर ने प्रदान की।

उप निदेशक (राजभाषा विभाग, क्षे. कार्यालय, कोचीन) ने सुझाव दिया कि उक्त कार्याशाला में प्रशिक्षित अधिकारियों के लिए ही अप्रैल/मई 92 तक एक और कार्यशाला की जाए जिसमें उन्हें हिन्दी में टिप्पण, प्रारूपण जैसी प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रशिक्षण दिया जाए।

2. बैंकों में अतिरिक्त हिन्दी स्टाफ की भर्ती संबंधी मामला सचिव, वित्त मंत्रालय को भेजने का निर्णय लिया गया था। तदनुसार मामला सचिव को भेजा गया था। इस संबंध में वित्त मंत्रालय, बैंकिंग प्रभाग से उत्तर मिल चुका है जिसके अनुसार :

"भर्ती पर लगी वर्तमान रोक केवल राजभाषा पदों के लिए ही नहीं अपितु एक निर्धारित सीमा के बाद सभी पदों के लिए समान रूप से लागू है, बैंक अपनी आवश्यकतानुसार इस सीमा के अंतर्गत बाकी पदों के साथ-साथ राजभाषा संबंधी पदों को भी भर सकते हैं और इस पर किसी प्रकार की रोक नहीं है, इसके साथ-साथ यह भी स्पष्ट किया जाता है कि रा.भा. अधिकारियों की भर्ती का आई आर अनुभाग के दिनांक 4 जून 1987 के पत्र सं. 5/1/87–आई आर में निहित मार्ग निर्देशों के अनुसार बैंक के अर्हता प्राप्त कर्मचारियों से भी किए जाने का प्रावधान है (संदर्भ: सं. 11015/1/91 हिन्दी 20/9/1991) टोलिक की बैठकों में नाबार्ड की भूमिका पर वित्त मंत्रालय तथा भारतीय रिजर्व बैंक से स्थिति स्पष्ट करने का अनुरोध किया जाए ऐसा निर्णय लिया गया था। तदनुसार **कार्रवाई की गई तथा उक्त दोनों संस्थाओं ने स्पष्ट किया है कि राजभाषा अधिनियम 1963 तथा नियम 1976 भा०औ वि० बैं/नाबार्ड जैसी वित्तीय संस्थाओं पर भी लागू हैं। अतः इनसे अपेक्षा की जाती है कि संयोजक को अपनी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करें तथा सदस्य के रूप में बैठकों में भाग लें।**

प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा

सदस्य बैंकों से प्राप्त प्रगति रिपोर्टों की मदवार समीक्षा की गई।

राजभाषा अधिनियम 1963 : धारा 3(3) का अनुपालन

समिति ने इस बात पर गहरा असंतोष प्रकट किया कि कुछ बैंक अभी तक उक्त अधिनियम का उल्लंघन करते जा रहे हैं, इनमें बैंक आफ इंडिया, इंडियन बैंक तथा इंडियन ओवरसीज बैंक की स्थिति गंभीर है, कारण पूछे जाने पर बैंक ऑफ इंडिया तथा इंडियन बैंक के प्रतिनिधियों ने अपनी कठिनाई व्यक्त करते हुए कहा कि कई बार मामला प्र.का. को भेजे जाने पर भी उनके यहां रा.भा. अधिकारी उपलब्ध नहीं करवाए गए हैं, इस बात की पुष्टि करते हुए सदस्य सचिव ने भी कहा कि समिति की ओर से भी यह मामला संबंधित बैंकों के प्र.का. को भेजा गया था, परन्तु इस संबंध में कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई, यह निर्णय लिया गया कि रा.भा. विभाग, भारत सरकार के स्तर पर संबंधित बैंकों से मामला उठाया जाए, साथ ही उक्त दोनों बैंकों के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया गया कि तब तक वे स्थानीय स्तर पर अनुवाद की कोई व्यवस्था कर लें तथा उक्त अधिनियम का 100% अनुपालन सुनिश्चित करें।

इंडियन ओवरसीज बैंक ने स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा कि तिरुअनन्तपुरम् नगर में उनका आंचलिक कार्यालय एवं क्षे. का दोनों स्थित हैं, आंचलिक कार्यालय में उक्त अधिनियम का अनुपालन हो रहा है किन्तु क्षे.का. में क्योंकि राजभाषा अधिकारी नहीं हैं, इसलिए अनुवाद के लिए कठिनाई है, समिति की राय थी कि जब तक क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा अधिकारी की व्यवस्था नही हो जाती, तब तक अं.का. के रा.भा. अधिकारी की सेवाएं क्षे.का. को भी उपलब्ध करवाई जाएं।

सेंट्रल बैंक आफ इंडिया में भी उपर्युक्त अधिनियम का उल्लंघन पाया गया, यद्यपि बहुत कम दस्तावेज अंग्रेजी में जारी हुए हैं। सेंट्रल बैंक के प्रतिनिधि ने आश्वासन दिया कि भविष्य में शतप्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित किया जाएगा। पंजाब नेशनल बैंक की तिरुअनंतपुरम् नगर में केवल एक शाखा है तथा धारा 3(3) के अंतर्गत दर्शाए दस्तावेजों की संख्या काफी अधिक है। बैंक के प्रतिनिधि से पूछने पर पता चला कि ये आंकड़े धारा 3(3) से संबंधित नहीं है तथा रिपोर्ट में चूक हुई है।

इसी तरह बैंक ऑफ बड़ौदा का क्षेत्रीय कार्यालय नगर में स्थित है किंतु धारा 3(3) शून्य दर्शायी गई है। क्षेत्रीय प्रबंधक से इस विषय में अनुरोध किया गया कि भविष्य में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए।

हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर (नियम 5)

बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, देना बैंक, इंडियन बैंक तथा यूको बैंक में उक्त नियम का उल्लंघन पाया गया। इन बैंकों के प्रतिनिधियों से उक्त नियम का 100% अनुपालन सुनिश्चित करने का अनुरोध किया गया।

शाखा कार्यालय द्वारा भेजे गए हिंदी पत्र

यह पाया गया कि अधिकतर बैंक अभी भी 30% के निर्धारित लक्ष्य से पीछे चल रहे हैं। इनमें से अनेक बैंकों का प्रयास अच्छा है जबकि कुछ मामलों में कोई प्रगति नहीं है। सभी बैंकों के प्रतिनिधियों से इस विषय में ध्यान देने का अनुरोध किया गया।

हिन्दी टाइपलेखन प्रशिक्षण

उक्त प्रशिक्षण की स्थिति भी कई बैंकों में अभी तक संतोषजनक नहीं है। कुछ बैंकों की शिकायत थी कि उन्हें टाइपलेखन कक्षाओं की सूचना न मिलने के कारण वे समय पर अपने कर्मचारियों को नहीं भेज पाते। इस पर सदस्य सचिव ने कहा कि जो बैंक टाइपलेखन कक्षाओं में अपने कर्मचारियों को भेजने के इच्छुक हैं वे भेजे जाने वाले कर्मचारियों की संख्या बता दें तो हिंदी शिक्षण योजना केन्द्र से इस बारे में संपर्क किया जा सकता है। इस पर 7 बैंकों ने कुल 12 कर्मचारियों के भेजे जाने की पुष्टि की। साथ ही, यह सुझाव दिया गया कि हिंदी शिक्षण योजना के प्रभारी अधिकारी से अनुरोध करके कक्षाओं के लिए 10 से 11 तथा 4 से 5 बजे का समय मांगा जाए।

चर्चाओं के बाद रामचन्द्र मिश्र, उप निदेशक, राजभाषा विभाग, श्री एल डिसूजा, उप मुख्य अधिकारी, भा. रि. बैंक, तथा श्री एन एल कोहली, सहायक महाप्रबंधक, केनरा बैंक, प्र. का. बेंगलूर ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। श्री कोहली ने "हिंदी प्रशिक्षण के लिए समन्वित प्रयास" विषय पर भा. रि. बैंक से प्राप्त पत्र पढ़कर सुनाया जिसमें अनुरोध किया गया है कि जिन केन्द्रों पर हिंदी शिक्षण योजना की सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं, वहां जिला अग्रणी बैंक को हिंदी शिक्षण कक्षाओं का दायित्व निभाना चाहिए।

श्री के. आर. शेणाय ने प्रसन्नता प्रकट की कि सभी सदस्य बैंक समय पर अपनी-अपनी प्रगति रिपोर्ट समीक्षार्थ भेजने लगते हैं। उन्होंने पुनः अनुरोध किया कि जिन मामलों में अभी तक अधिक सुधार की जरूरत है। वे तुरंत इस विषय पर अपना ध्यान दें। साथ ही जिन बैंकों ने अच्छे परिणाम हासिल कर लिए हैं, उनकी प्रशंसा की।

11. बम्बई (बैंक)

12वीं छमाही बैठक दिनांक 27 दिसंबर, 1991 को यूको बैंक में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता बैंक ऑफ महाराष्ट्र के उप-महाप्रबंधक श्री प्रभाकर अनंत चितके ने किया। इस अवसर पर, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री कृष्ण ना. मेहता, हिंदी शिक्षण योजना की सहायक निदेशक श्री मती सुधा श्रीवास्तव एवं बैंकिंग सेवा भर्ती बोर्ड के प्रबंधक श्री शर्मा भी उपस्थित थे। बैठक में केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् के डॉ. महामंत्री पांडे ने भी भाग लिया। इस अवसर पर बंबई के बैंकों के कई कार्यपालक एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में समिति के पिछले कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत चर्चा हुई तथा सदस्यों को निम्नलिखित कार्यक्रमों की जानकारी दी गई:—

(क) संयुक्त रूप से विजया बैंक के संयोजन में अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया।

(ख) 8 अंतबैंकीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पर समिति की गृह पत्रिका के प्रकाशन के संदर्भ में भी विस्तृत चर्चा हुई।

राजभाषा विभाग एवं विभिन्न बैंकों के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मुद्दों पर विचारविमर्श के बाद निम्नलिखित निर्णय लिये गये:

(क) संयुक्त प्रचार समिति को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए भी विज्ञापन आदि जारी करने हेतु सुझाव भेजा जाये।

(ख) बंबई के बैंकों में भी पत्राचार बढ़ाने के लिए सघन उपाय किए जाएं।

(ग) कार्यालयों में यांत्रिक सुविधाओं को लक्ष्यानुसार हिंदी में परिवर्तित करने के लिए त्वरित कार्यवाई की जाए। इस संदर्भ में राजभाषा विभाग द्वारा मार्गदर्शन किया जायेगा।

यूको बैंक के सहायक महाप्रबंधक ने सभी का स्वागत किया।

12. कलकत्ता (बैंक)

कलकत्ता स्थित बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
संयोजक : युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया
राजभाषा प्रभाग : प्रधान कार्यालय, कलकत्ता-700001

12वीं बैठक दिनांक 28 नवंबर, 1991 को युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय में हुई। बैठक की अध्यक्षता युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक श्री बी. के. मुखर्जी ने की।

समिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए श्री बी. के. मुखर्जी ने प्रस्ताव रखा कि कार्यसूची में सन्निविष्ट अन्य मदों के पूर्व वर्ष 1989 की राजभाषा चल वैजयन्ती श्रेष्ठता प्रमाण-पत्र तथा दिनांक 10-10-1991 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के स्तर पर संपन्न हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार एवम् सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाय जो सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

सबसे पहले हर्षोल्लास के वातावरण में राजभाषा चल वैजयन्ती तथा पुरस्कारों की घोषणा की गई। उक्त चल वैजयन्ती अध्यक्ष बैंक ऑफ इंडिया के आंचलिक प्रबंधक श्री यश महाजन को प्रदान किया। इलाहाबाद बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, कार्पोरेशन बैंक तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र को श्रेष्ठता प्रमाणपत्र दिया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर संपन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार एवम् सहभागिता प्रमाण-पत्र अधोलिखित प्रतियोगिताओं में वितरित किए गए :

हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता

क्रमांक	पुरस्कार	विजेताओं का नाम	बैंक का नाम
1.	प्रथम	श्री एस. घोष मौलिक	इलाहाबाद बैंक
2.	द्वितीय	श्री जगदीश प्रसाद कश्यप	युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया
3.	तृतीय	श्री संजित सिन्हा	बैंक ऑफ इंडिया

हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

1.	प्रथम पुरस्कार	श्री एफ. जे. कछुआ	कार्पोरेशन बैंक
2.	द्वितीय "	कैप्टन अरुण कुमार भोला	—तदैव—
3.	तृतीय "	श्री समरेन्द्र चौधुरी	इलाहाबाद बैंक

पिछली बैठक से लिए गए निर्णयों पर की गयी अनुवर्ती कार्रवाई पर प्रकाश डालते हुए सदस्य सचिव ने सूचित किया कि राजभाषा चल बैजयन्ती प्रतियोगिता वर्ष 1990 के लिए निष्पादन रिपोर्ट विहित प्रपत्र में केवल 17 बैंकों से प्राप्त हुई है।

हिंदी पत्रिका, भारतीय बैंकर्स संस्थान द्वारा संचालित बैंकोन्मुख हिंदी परीक्षा पर विशेषांक प्रकाशन की दिशा में प्रगति हो रही है। इलाहाबाद बैंक के प्रतिनिधि ने सुझाव दिया कि उक्त पत्रिका की प्रकाशन सामग्री में हिंदी कविताओं तथा कहानियों को भी समाविष्ट किया जाय।

19 बैंकों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्टों को समेकित करके बैठक में समीक्षार्थ प्रस्तुत किया गया।

(क) हिंदी प्रशिक्षण—सदस्य बैंकों की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए यह अनुमान लगाया गया कि अभी भी लगभग 4000 अधिकारी एवम् 8500 कर्मचारियों को हिंदी प्रशिक्षण दिया जाना शेष है जबकि उक्त अवधि में अधिकारी 168 एवम् 630 कर्मचारी प्रशिक्षणाधीन थे।

(ख) सदस्य सचिव ने सूचित किया कि कुछ सदस्य बैंक अपने पूरे अंचल/क्षेत्रों के आंकड़ों को समेकित करके रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं जबकि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की सीमा केवल कलकत्ता नगर तक सीमित है। सदस्यों ने आश्वासन दिया कि भविष्य में विहित मापदंडों के अनुसार अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे।

(ग) हिंदी टंकण और आशुलिपि प्रशिक्षण—समीक्षोपरांत प्रगति सभी हुई पाई गई।

(घ) राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत सांविधिक प्रावधानों के कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया तथा यह प्रकाश में आया कि कुछ बैंकों को छोड़कर समस्त बैंक प्रावधानों के अनुसार अनुपालन करते हैं। यह निर्णय लिया गया कि चूककर्ता बैंकों को पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए।

(ङ) प्राप्त हिंदी पत्रों का जवाब हिंदी में देने वाले नियमों का कार्यान्वयन संतोषजनक पाया गया।

(च) हिंदी में मूल पत्राचार—प्रकरण पर विचार-विमर्श हुआ एवम् यह निर्णय लिया गया कि समस्त सदस्यों बैंकों को, विशेषकर जो बहुत पीछे हैं स्थिति सुधारने के लिए प्रभावी कदम उठाना चाहिए। यूको बैंक के प्रतिनिधि ने इस संदर्भ में रचनात्मक कदम उठाने पर बल दिया एवम् कहा कि मुद्रित मानक एवम् चक्रमुद्रित के आंकड़ों को ही तरजीह न देकर मूलपत्र लिखा जाना चाहिए। कुछ बैंकों ने अपनी रिपोर्टों में प्राप्त प्रतिशत का उल्लेख नहीं किया था।

(छ) हिंदी कार्यशाला नियमित रूप से करने पर बल दिया गया जिससे अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना-अपना कार्य हिंदी में करने के लिए सक्षम बनाया जा सके।

(ज) राजभाषा नियम, 1976 के नियम II का अनुपालन संतोषजनक पाया गया।

कार्पोरेशन बैंक के प्रतिनिधि ने राजभाषा अधिनियम व नियम के संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला करने का प्रस्ताव रखा। यह निर्णय किया गया कि प्रत्येक सदस्य बैंक अपने बैंक के आकार के अनुसार कम से कम एक/दो सदस्य नामित करे जिससे इस प्रकरण को वित्त मंत्रालय, बैंकिंग प्रभाग तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा प्रभाग को मार्गदर्शन एवम् समुचित सहायता के लिए लिखा जा सके।

13. जबलपुर (बैंक)

12वीं बैठक दिनांक 22-11-91 को सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, रायपुर अंचल के आंचलिक प्रबंधक श्री के. के. सेठ की अध्यक्षता में हुई। बैठक में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भोपाल के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) श्री चन्द्रगोपाल शर्मा, हिंदी शिक्षण योजना, जबलपुर के सहायक निदेशक श्री शोभानाथ त्रिपाठी सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया केन्द्रीय कार्यालय के प्रतिनिधि श्री मुकुल मराठे, राजभाषा अधिकारी एवं विभिन्न बैंकों के कार्यपालकगण एवं प्रतिनिधि तथा अंतर बैंक प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारीगण उपस्थित थे।

उपाध्यक्ष श्री जय कृष्ण टंडन ने बताया कि नराकास की तरफ से हिंदी दिवस/सप्ताह में विभिन्न प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक प्रविष्टि भेजने वाले बैंक को चल राजभाषा शील्ड प्रदान की जाती है। इस वर्ष शील्ड हेतु भारतीय स्टेट बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक द्वारा सर्वाधिक समान प्रविष्टि भेजने पर संयुक्त रूप से भागीदार होंगे।

श्री के. के. सेठ ने सभी सदस्यों से कहा कि हिंदी में कार्य करने में हमें गर्व महसूस होना चाहिए। हिंदी दिवस/सप्ताह के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में 164 कर्मचारियों के हिस्सा लेने पर प्रसन्नता जाहिर की ओर आशा प्रकट की कि इस क्रम को बनाए रखा जाएगा।

श्री चन्द्रगोपाल शर्मा उपनिदेशक (कार्यान्वयन) ने भारत सरकार की राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं पर विचार प्रकट किए एवं हिंदी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की।

हिंदी शिक्षण योजना के सहायक निदेशक श्री शोभनाथ त्रिपाठी ने जबलपुर नगर में स्थित हिंदी शिक्षण में हुई प्रगति पर प्रकाश डाला। एवं बैंकों में हिंदी प्रशिक्षण के प्रति संतोष प्रकट किया। उन्होंने टंककों एवं आशुलिपिकों के लिए सरकार के 70 प्रतिशत के लक्ष्य को प्राप्त करने पर बल दिया।

पूर्व अध्यक्ष डॉ. एस. बी. वायसे की सेवाओं की सराहना की गई।

प्रारंभ में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा छपवाये पोस्टर "हर दिवस **हिन्दी दिवस, हर कार्य** हिंदी कार्य" का अध्यक्ष ने अनावरण किया तथा अंतर बैंक प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक प्रविष्टियों के लिये भारतीय स्टेट बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक को संयुक्त रूप से समिति की ओर से 6-6 माह के लिये चल शील्ड प्रदान की एवं विभिन्न अन्तर बैंक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन

समेकित रिपोर्ट के अनुसार नगर के बैंकों में से 11 बैंकों द्वारा धारा 3(3) का पूर्णतः अनुपालन किया गया, जबकि दो बैंकों द्वारा इसका पालन नहीं किया गया। ये बैंक हैं केनरा बैंक एवं पंजाब एंड सिंध बैंक। उपनिदेशक (कार्यान्वयन) ने अपेक्षा की कि भविष्य में ऐसी पुनरावृत्ति न हो। शेष 12 बैंकों द्वारा इस मद में सूचना प्रस्तुत नहीं की गई।

कार्यालय द्वारा जारी पत्र

कुल 126261 जारी पत्रों में से 111416 पत्र हिंदी में तथा 14845 पत्र अंग्रेजी में जारी किए गए इस प्रकार छः माही में हिन्दी में प्रेषित पत्रों का औसत प्रतिशत 88.24 हो गया जिसमें पिछली छः माही की अपेक्षा 18.36 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई। नगर के आठ बैंक सैंट्रल बैंक आफ इंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक आफ इंडिया, न्यू बैंक आफ इंडिया एवं यूनाइटेड बैंक को 90 प्रतिशत से अधिक पत्राचार हिंदी में करने पर बधाई दी गई तथा अपेक्षा की कि सभी बैंक लक्ष्य प्राप्ति के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे।

तारों की स्थिति

हिन्दी में जारी तारों की समीक्षा करते हुए उपनिदेशक (कार्यान्वयन) ने संतोष व्यक्त किया। उन्होंने सैंट्रल बैंक आफ इंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, इलाहाबाद बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, बैंक आफ इंडिया, बैंक आफ महाराष्ट्र, न्यू बैंक आफ इंडिया, देना बैंक, आन्ध्र बैंक, प्रशिक्षण केन्द्र–इलाहाबाद बैंक को हिंदी में तार प्रेषण का लक्ष्य-प्राप्त करने पर बधाई दी तथा अपेक्षा की कि जो बैंक अभी लक्ष्य पूर्ति में पीछे हैं, वे ठोस कदम उठायें।

आंतरिक कार्य में हिन्दी

श्री चन्द्र गोपाल शर्मा ने संतोष व्यक्त किया कि सैंट्रल बैंक आफ इंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, यूनियन बैंक आफ इंडिया, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, केनरा बैंक, न्यू बैंक आफ इंडिया में औसत 90 प्रतिशत आंतरिक कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार सभी

15 मदों में शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में करने का अनुरोध किया। श्री शर्मा ने टाइपराइटरों संबंधी लक्ष्य प्राप्ति के लिये प्रयास करने की सलाह दी।

तीन बैंक ओरियंटल बैंक ऑफ कामर्स, महाकौशल क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं भारतीय स्टेट बैंक प्रशिक्षण विद्यालय की रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई तथा स्टेट बैंक ऑफ इंदौर की रिपोर्ट देरी से प्राप्त होने के कारण समेकित विवरण में सम्मिलित नहीं हो सकी।

सभी सदस्यों ने द्विभाषिक टेलेक्स मशीनें लगवाने के लिये अनुरोध किया कि इस विषय में प्रयास किये जाएं। श्री चन्द्रगोपाल शर्मा उपनिदेशक ने अनुरोध किया कि वे अपनी मांग की सूचना यथाशीघ्र समिति को भेजे ताकि इस संबंध में आगे की कार्यवाही की जा सके।

सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया केन्द्रीय कार्यालय के प्रतिनिधि श्री मुकुल मराठे ने आभार प्रकट किया।

14. पुणे (बैंक)

बैंक ऑफ महाराष्ट्र, पुणे अंचल में पांचवीं बैठक

आरंभ में समिति की सचिव पुणे अंचल की राजभाषा अधिकारी डा. विदुला गोरे ने सभी का स्वागत किया। डा. गोरे ने इस बैठक की विशषता स्पष्ट की कि इस बैंक में संगणक का द्विभाषीकरण का डिमोंस्ट्रेशन रखा हुआ है जो पिछली दो बैठकों का चर्चित विषय रहा है।

इसके बाद सचिव ने विभिन्न बैंकों से प्राप्त रिपोर्टों की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कर्मचारियों से संबंधित जानकारी प्रस्तुत की। कार्यसाधक ज्ञान की चर्चा के बारे में श्री मेहता ने उन बैंकों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की जिनकी कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों की संख्या 10 से अधिक है। विभिन्न बैंकों ने अपनी-अपनी योजनाएं प्रस्तुत की। श्री मेहता ने कहा कि कर्मचारियों के लिए कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त करना अनिवार्य है। इसलिए बैंकों को विशेष उपाय करने चाहिए। टंकक और टंकण यंत्रों की लक्ष्यपूर्ति की संदर्भ में हुई चर्चा के अन्तर्गत श्री मेहता ने कहा कि प्रत्येक कार्यालय में एक टंकणयंत्र होना ही चाहिए। संसदीय राजभाषा समिति ने "क" क्षेत्र में 90%, "ख" क्षेत्र में 66.2/3% और "ग" क्षेत्र में 36% लक्ष्य की सिफारिश की है। इन लक्ष्यों की पूर्ति 1994-95 में होनी चाहिए इसलिए हर साल इसमें अधिक प्रयास कर लक्ष्यपूर्ति के लिए आग बढ़ना चाहिए। बैंकों में इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटरों से यह लक्ष्यपूर्ति आसानी से हो सकेगी। हमारे लिए साधनों का अभाव नहीं है, अभाव है मानसिकता का। जिन बैंकों ने 35% लक्ष्य की पूर्ति नहीं की है वे लक्ष्यपूर्ति का प्रयास करें और नया टाइपराइटर खरीदने में 7 से 8 हजार तक खर्च आता है तो रोमन टाइपराइटर देवनागरी में रु० 1800/- खर्च कर बदलवा लें। लेकिन टाइपराइटर और टाइपिस्ट ये दोनों लक्ष्य साथ-साथ चलने चाहिए। सचिव ने कहा कि हिन्दी आशुलिपिकों के बारे में बैंक ऑफ इंडिया में 5 हिन्दी आशुलिपिक हैं। इस पर श्री मेहता ने कहा कि हम उनका सम्मान करते हैं और उनसे अनुरोध करते हैं कि वे दूसरे बैंकों को भी लाभान्वित करें।

हिन्दी में पत्राचार का 70% लक्ष्य केवल 2 बैंकों ने पूरा किया है—यूनियन बैंक ऑफ इंडिया और पंजाब नेशनल बैंक। इस पर श्री मेहता ने कहा कि 50% से ऊपर जो बैंक पत्राचार करते हैं वे प्रयास करें कि मार्च 92 तक लक्ष्यपूर्ति होती है। लेकिन जिन बैंकों का पत्राचार 50% के भीतर है उन्हें इसे बढ़ाने के लिए काफी प्रयास करने पड़ेंगे। वे ऐसे पत्राचार को अभिनिर्धारित करें जिसे वे हिन्दी में कर सकते हैं। दस में से दो पत्र भी हिन्दी में लिखने शुरू हो जाए तो लक्ष्यपूर्ति में सहायक होंगे। उन्होंने सलाह दी कि तकनीकी प्रकार के पत्र छोड़कर बाकी पत्र हिन्दी में भेजें। कार्यपालक भी छोटे-छोटे पत्र हिन्दी में आने पर ही हस्ताक्षर करें। हिन्दी पत्राचार मात्र राजभाषा अधिकारी का काम नहीं है, बल्कि दूसरे अधिकारियों को भी इसमें सहयोग देना चाहिए। इस पर रा०कृ० और ग्रा०वि० बैंक के प्रतिनिधि ने बताया कि वे दस पंक्तियों से कम पंक्तियों वाले पत्र हिन्दी में ही भेजते है। सभी ने इस उपाय का स्वागत किया।

देवनागरी में तार भेजने के मामले में रा०कृ० और ग्रा० वि० बैंक और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने सराहनीय कार्य किया है जिस पर समिति के सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की। रा०कृ० और ग्रा०वि० बैंक के प्रतिनिधि ने सुझाव दिया कि केवल "क" क्षेत्र ही नहीं "ख" क्षेत्र के भी तार इस स्तम्भ में जोड़े जायें।

पंजाब नेशनल बैंक ने सूचना दी कि उन्होंने 4 हिन्दी कार्यशालाएं संपुट पाठ्यक्रम के रूप में चलाई हैं। सचिव ने इसे नोट किया।

रा०कृ० और ग्रा०वि० बैंक के प्रतिनिधि ने कहा कि केन्द्रीय हिन्दी उपसंस्थान जो हाल ही में पुणे में खोला गया है उनके प्रतिनिधि को भी बैठक में आमंत्रित किया जाए और उनका पाठ्यक्रम भी देखा जाए। इस पर डॉ० खडसे ने कहा कि बैंकों का पाठ्यक्रम एक जैसा है और वह उनकी विशिष्ट आवश्यकता के अनुरूप है और सुव्यवस्थित ढंग से चल रही है इसलिए उनके पाठ्यक्रम के बजाय उन्हें बैठक में आमंत्रित किया जाए ताकि ज्ञान का आदान प्रदान हो सके। सचिव ने इसे नोट किया।

इसके बाद दो बैंकों से प्राप्त सुझावों पर विचार किया गया। इसमें से भारतीय औद्योगिक वित्त निगम के हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षित आशुलिपिकों को हिन्दी भाषा का ज्ञान देने पर ध्यान देने का सुझाव नोट किया गया। साथ ही सेंट्रल बैंक आफ इंडिया द्वारा प्रस्तुत सुझाव इस रिपोर्ट के प्रारम्भ में राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) में

(शेष पृष्ठ 55 पर)

(घ) अन्य राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

1. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग मुख्य इंजीनियर का कार्यालय (प.अ.) 14वां माला, महर्षि कर्वे रोड़, निष्ठाभवन अनेक्स, बम्बई-20

मुख्य इंजीनियर (प०अ०) अध्यक्षता में दि० 17-12-91 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई :—

1. अधिकारियों के लिये आधे दिन की हिन्दी कार्यशाला चलाई जाए तो हिन्दी प्रयोग को विशेष प्रोत्साहन मिल सकेगा।

2. मु०इ० कार्यालय में हिन्दी प्राशिक्षित आशुलिपिक है अतः उनसे हिन्दी में काम अवश्य ही लिया जाना चाहिये। इसी प्रकार प्रशिक्षित हिन्दी टंककों से भी हिन्दी में कार्य करवाना चाहिए।

3. सभी कार्यालय प्रमुख यह सुनिश्चित करें कि उनके कार्यालय में कम से कम एक हिन्दी टाइपराइटर ठीक स्थिति में अवश्य हो तथा टंकक की भी व्यवस्था हो।

4. श्री कृष्ण कांत, अ०इं० ने सुझाव दिया कि कम से कम अपने विभागों से पत्राचार हिन्दी में ही करने का प्रयास किया जाना चाहिए। एतदर्थ हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी को विशेष ध्यान देना चाहिए कि जो पत्र हिन्दी में भेजे जा सकते हैं उन्हें अंग्रेजी में जारी न किया जाये।

5. श्री चौधरी अ०इं० ने अपने कार्यालय की तिमाही सभा मु०इ० कार्यालय के साथ ही करने की सहमति दी।

6. "क" क्षेत्र अर्थात् हिन्दी भाषी राज्यों को जाने वाले सभी पत्र केवल हिन्दी में ही जायें ऐसा सभी प्रयास करें।

7. श्री विजयकुमार घुमरे अ०ई० ने समस्या बताई कि तकनीकी कार्य हिन्दी में करना कठिन है। श्री कृष्ण नारायण मेहता उपनिदेशक क्रियान्वयन ने स्पष्ट किया कि प्रारम्भ में कठिनाई होगी बाद में अभ्यास होता जाता है। हिन्दी में कार्य के लिये कुछ लक्ष्य निर्धारित किए जाने चाहिये कि इस तिमाही में हम यह कार्य (तकनीकी) हिन्दी में अवश्य ही करेंगे। श्री घुमरे की शंका का समाधान करते हुए श्री मेहता ने स्पष्ट किया कि अनुवादकों का कार्य मुख्यतः अनुवाद करना है। अनुवाद की जांच (वैटिंग) का कार्य वरिष्ठ अनुवादक तथा हिन्दी अधिकारी का है।

8. प्रत्येक विभाग का दूसरा उच्च अधिकारी पदेन राजभाषा अधिकारी होता है।

9. जो पत्र इंग्लिश में आते हैं उनका उत्तर भी हिन्दी में दिया जा सकता है। प्रत्येक विभाग के डिस्पैचर लिपिक को आदेश दें कि वे "क" और "ख" क्षेत्रों को जाने वाली डाक पर पते केवल हिन्दी में लिखें।

10. कार्यालयों के निरीक्षण में यह देखा गया है कि कई फार्म इंग्लिश में ही प्रयोग में लाए जा रहे है। इन फार्मों का हिन्दी अनुवाद तुरन्त जारी होना चाहिये।

11. रोस्टर में सभी अधिकारी कर्मचारियों के हिन्दी ज्ञान का भी अंकन करें तथा हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारी कर्मचारियों के लिये सभी कार्य हिन्दी में करने का आदेश जारी करें।

12. श्री कृष्ण नारायण मेहता ने राजभाषा नियमों की जानकारी दी।

13. स०नि०रा०भा० ने महानिदेशालय से प्राप्त पत्रांक 1-1-91 हिन्दी दि० 2-12-91 के अनुसार सूचित किया कि सभी सरकारी तार केवल देवनागरी में ही भेजे जाने हैं।

2. केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क समाहर्तालय : औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

समिति की 25वीं बैठक दिनांक 13-1-1992 को श्री आर.जी. राजू, समाहर्ता की अध्यक्षता में हुई।

अध्यक्ष के आदेशानुसार सचिव ने उन सभी टिप्पणियों को उपस्थित सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत किया जो पिछली बैठक में लिए गये निर्णयों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के संबंध में थी जिन्हें पढ़कर दोहराया गया और समीक्षा की गई।

दिनांक 31-12-1991 को समाप्त अवधि की तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा।

सचिव ने अध्यक्ष के समक्ष सभी अनुभागों द्वारा मद संख्यां के अनुसार हिन्दी में किये गये कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया जो निम्नलिखित हैं :–

राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के संबंध में : मुख्यालय कार्यालय से लेखा अनुभाग, तकनीकी अनुभाग, प्रशासन अनुभाग, स्थापना अनुभाग, गोपनीय अनुभाग, तथा न्याय निर्णय अनुभाग द्वारा कुल 1233 कागजात जारी किये गये जिनमें से निवारक अनुभाग से 3 स्थापना अनुभाग से 4 और न्यायनिर्णयन अनुभाग से 36 (कारण बताओ नोटिस तथा न्यायनिर्णयन आदेश) जारी किये गये हैं। शेष 1187 कागजात द्विभाषी रूप में जारी किये गये।

मूल पत्नाचार विवरण निम्नलिखित है :–

अनुभाग का नाम	क तथा ख क्षेत्रों की राज्य/संघ राज्य क्षेत्र की सरकारी, उनके गैरसरकारी व्यक्तियों को भेजे गए पत्रादि (लक्ष्य 100 %)	क तथा ख क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों (लक्ष्य 60%)	"ग" क्षेत्र में स्थित केंन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए पत्रादि (लक्ष्य 20%)
लेखा अनुभाग	100	100	––
लेखा परीक्षा अनुभाग	71	81	––
न्यायनिर्णयन	35	33	––
वैधानिक	––	2	––
पुन:रीक्षण	––	19	––
तकनीकी	––	44	––
सतर्कता	39	22	––
सांख्यिकी तथा आसूचना	––	12	––
निवारक	0	42	––
प्रशासन	78	88	––
स्थापना	––	70	––
गोपनीय	––	11	––
वेतन तथा लेखा	46	66	––
मूल्यांकन तथा वर्गीकरण	––	81	––
हिन्दी अनुभाग	100	100	100

तारों का ब्यौरा

क्र.सं.	अनुभाग का नाम	क तथा ख क्षेत्र में भेजे गए तार (हिन्दी तार) (लक्ष्य 35%)	ग क्षेत्र में भेजे गए तार (हिन्दी तार) (लक्ष्य 10%)
1	2	3	4
1.	लेखा अनुभाग	––	––
2.	लेखा परीक्षा	40	––
3.	न्यायनिर्णयन	21	––
4.	वैधानिक	6	––
5.	पुन:रीक्षण	45	––
6.	तकनीकी	22	––
7.	सतर्कता	28	––
8.	सांख्यिकी तथा आसूचना	40	––
9.	निवारक	0	––
10.	प्रशासन	66	––
11.	स्थापना	––	––
12.	गोपनीय	––	––
13.	वेतन तथा लेखा	66	––
14.	मूल्यांकन तथा वर्गीकरण	––	––
15.	हिन्दी	100	––

अध्यक्ष ने जिन अनुभाग प्रमुखों के प्रभार में हिंदी में कार्य असंतोषजनक रहा उन्हें निर्देश दिया कि इस मामले में अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझकर ध्यान विशेष दें और हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिये हर संभव प्रयास करें। जिन अनुभागों ने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। अध्यक्ष ने उन अनुभाग प्रमुखों की प्रशंसा की ।

मुख्यालय से जारी पत्रों का क्षेत्रानुसार समेकित विवरण निम्नानुसार :—

		लक्ष्य	31-12-91 तक की प्रगति
1.	क तथा ख क्षेत्रों के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र का गैर सरकारी व्यक्तियों को भेजे गए पत्रादि	100%	69%
2	क तथा ख क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को भेजे गए पत्रादि	60%	53%
3.	ग क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालय को भेजे गए पत्रादि	20%	100% (यह पत्राचार केवल अनुभाग से हुआ)

मुख्यालय द्वारा जारी तारों का क्षेत्रानुसार समेकित ब्यौरा :—

1	क तथा ख क्षेत्रों को हिन्दी में भेजे गए तारों का प्रतिशत (लक्ष्य 35%)	32%

2 ग क्षेत्र को भेजे गए तारों का प्रतिशत (हिन्दी में)

मण्डल कार्यालयों में तिमाही बैठकों का आयोजन :

अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि, उन मंडल कार्यालयों के सहायक समाहर्ताओं को पत्र लिखा जाए जिन्होंने अभी तक हिन्दी की प्रगति के संबंध में तिमाही बैठक का आयोजन नहीं किया है। पत्र में यह भी उल्लेख किया जाय कि, तिमाही बैठक प्रत्येक तिमाही के समाप्ती के बाद क्रमश: जनवरी, अप्रैल, जुलाई, अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में ली जाए।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) और अन्तर अनुभागीय पत्राचार के बारे में

अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि, राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) और अन्तर अनुभागीय पत्राचार के सम्बन्ध में उपनिदेशक, राजभाषा विभाग (पश्चिम) बम्बई से प्राप्त पत्र की जानकारी से सभी अनुभाग प्रमुख मुख्यालय एवं सहायक समाहर्ता मंडल कार्यालय को अवगत कराया जाए।

हिन्दी—अंग्रेजी शब्द सहचर के वितरण के बारे में।

अध्यक्ष निर्देश दिया कि, मुख्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने के लिए सहायतार्थ हिन्दी-अंग्रेजी शब्द सहचर साइक्लोस्टाइल करके वितरित किया जाए।

अर्जित छुट्टी तथा आकस्मिक छुट्टी के आवेदन पत्रों के बारे में

अध्यक्ष ने सभी राजपत्रित और अराजपत्रित अधिकारियों को निर्देश दिया कि, वे अपना अर्जित छुट्टी, प्रतिपूरक/आकस्मिक छुट्टी आदि का आवेदन पत्र हिन्दी में ही दें जिससे हिन्दी में पत्राचार में वृद्धि हो।

समाहर्तालयीन हिन्दी पत्रिका के बारे में

अध्यक्ष महोदय ने समाहर्तालय से प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली "देवगिरी" हिन्दी पत्रिका में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को लेख, कविता, चुटकले, आदि देने के लिए कहा तथा साथ-साथ समाहर्ता ने पत्रिका में समाहर्तालय के श्रेष्ठ खिलाड़ियों के फोटो, नयें क्वार्टर्स के फोटो, नये कार्यालय भवन, अजंता, एलोरा तथा दौलताबाद किले आदि के फोटो तथा हिन्दी पत्रिका में ले कर देने वालों के फोटो, समाहर्तालय के पुरस्कृत अधिकारी/कर्मचारी के फोटो तथा हिन्दी सप्ताह के फोटो हिन्दी पत्रिका में छपवाने के बारे में कहा।

हिन्दी कार्य के सम्बन्ध में सही आंकड़ों को भरने तथा हिन्दी प्रगति के बारे में

अध्यक्ष ने सभी अनुभाग प्रमुखों को निर्देश दिया कि, तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करते समय अनुभाग प्रमुख यह सुनिश्चित करें कि आंकड़े सही रूप में भरे हैं अथवा नहीं तथा सभी अनुभाग प्रमुख यह ध्यान रखें कि, प्रत्येक तिमाही में हिन्दी में कार्य में कम से कम 15% की वृद्धि हो।

3. ग्रेफ सेंटर एवं रिकार्ड

ग्रेफ सैंटर एवं रिकार्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 1991 की चौथी बैठक (दिनांक 31 दिसंबर, 1991 को समाप्त तिमाही की) दिनांक 11 जन., 1992 को श्री जी. एस. कोर अधीक्षण अभियन्ता (सिविल), स्थानापन्न कमांडर ग्रेफ सैंटर की अध्यक्षता में हुई।

अध्यक्ष ने बैठक में उपस्थित हुए सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि हमें सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि सभी अधिकारीगण अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को हिन्दी में अधिक से अधिक काम करने हेतु प्रोत्साहित करें। बैठक में निम्नलिखित विषयों पर भी चर्चा की गई:—

(क) हिन्दी प्रगति को समीक्षा :— अध्यक्ष ने समाप्त तिमाही की हिन्दी प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि यद्यपि इस तिमाही में हमने पहले की अपेक्षा काफी वृद्धि की है। परन्तु हमें इस और अधिक प्रयास करने चाहिए, जिससे कि हम निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। सभी अनुभाग अधिकारी इस ओर प्रभावी कदम उठाएं।

(ख) मासिक हिन्दी प्रगति रजिस्टर का रखरखाव :— अध्यक्ष ने मासिक हिन्दी प्रगति रजिस्टर के रख-रखाव पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि हमें हिन्दी में और अधिक पत्राचार करने हेतु प्रयास करने चाहिए। उक्त रजिस्टर को अनुभागों द्वारा समय से मुख्य कार्यालय/हिन्दी कक्ष को नहीं भेजा जाता, जिससे कि समेकित रिपोर्ट तैयार करने में अनावश्यक देरी होती है। रजिस्टर जब तक मुख्य कार्यालय/हिन्दी कक्ष को नहीं भेजा जाता तब तक कि अनुभागों को बार-बार याद न दिलाया जाए। अत: सभी अनुभाग अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि उक्त रजिस्टर प्रत्येक माह की 25 तारीख को मुख्य कार्यालय/हिन्दी कक्ष में पहुंच जाए।

(ग) अध्यक्ष ने बताया कि सीमा सड़क महानिदेशालय द्वारा मैनुअल ऑफ डाक्यूमैंटेशन का हिन्दी अनुवाद कराया जा रहा है। इसका अनुवाद पूरा हो जाने पर इसे द्विभाषी रूप में छपवाया जाएगा। जिसकी वजह से इसके परिचालन में कुछ समय लगने की आशा है। अत: जब तक इसका द्विभाषी रूप प्राप्त हो तब तक हमें दैनिक आदेश भाग—दो हिन्दी में प्रकाशित करने हेतु सेवा पुस्तिकाओं में हिन्दी में प्रविष्टियां करने हेतु "सेवा पंजी प्रविष्टियां" नामक पुस्तक से मदद ली जा सकती है। इस बारे में अध्यक्ष ने आदेश दिया कि दैनिक आदेश भाग—दो तत्काल द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं।

4. वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, अनुसंधान भवन रफी मार्ग, नई दिल्ली-1

नौवीं बैठक दिनांक 2-1-1992 को हुई ।

पिछली बैठक दिनांक 27-8-1991 के कार्यवृत्त की मदों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा

(क) पी आइ डी द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वैज्ञानिक तथा तकनीकी पुस्तकों की निदेशिका के बारे में विस्तृत चर्चा के बाद पी आइ डी की ओर से यह आश्वासन दिया गया कि इस निदेशिका को पिछली निदेशिका में शामिल पुस्तकों सहित अद्यतन बनाकर वर्ष 1992 के अंदर प्रकाशित कर दिया जाएगा ।

(ख) पी आइ डी द्वारा जून, 1991 से हिंदी में निकाली जाने वाली प्रस्तावित अनुसंधान-पत्रों की नई पत्रिका के संबंध में निर्णय लिया गया कि यदि एक भी अनुसंधान लेख/पत्र रैफरी द्वारा स्तरीय पाया जाता है तो उसके साथ ही इस प्रस्तावित पत्रिका का श्रीगणेश कर दिया जाएगा ।

दीवार समाचार पत्र "विज्ञान अन्वेषण संदेश" के बारे में श्री रणकिशोर सहाय, (सूचना अधिकारी हिंदी) ने आश्वासन दिया कि आगे से इस समाचार पत्र का प्रकाशन पूर्व में दिए गए लिखित वचन के अनुसार ही हर माह के प्रथम सप्ताह रूप में नियमित रूप से किया जाता रहेगा ।

भर्ती तथा विभागीय परीक्षाओं में हिंदी के प्रयोग के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। सी एस आइ आर द्वारा अभी हाल ही में अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति के विशेष भर्ती अभियान के अंतर्गत अनुभाग अधिकारी/सहायकों की भर्ती हेतु निकाले गए विज्ञापन में परीक्षा का माध्यम हिंदी होने का उल्लेख न किए जाने के संबंध में भी चर्चा हुई । कर्मचारी चयन आयोग द्वारा सामान्य अंग्रेजी के 100 अंकों के प्रश्न पत्र के विकल्प में दूसरा प्रश्न-पत्र (50 प्रतिशत अंग्रेजी/50 प्रतिशत हिंदी) लिए जाने की भी चर्चा की गई । इस संबंध में निर्णय लिया गया कि :—

(क) अब से आगे दिए जाने वाले विज्ञापनों में यह स्पष्ट उल्लेख किया जाएगा कि उम्मीदवार प्रश्न-पत्र का उत्तर हिंदी में भी दे सकते हैं ।

(ख) सी एस आइ आर. द्वारा अभी हाल ही में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विशेष भर्ती अभियान के अंतर्गत विज्ञापित पदों के बारे में आवेदन करने वालों को आवेदन की अंतिम तारीख की समाप्ति के बाद लिखित में सूचित किया जाएगा कि वे अंग्रेजी प्रश्न पत्र को छोड़कर शेष का उत्तर हिंदी में भी दे सकते हैं।

(ग) प्रश्न पत्र-बनाने वाली एजेंसी से प्रश्न-पत्र हिंदी/अंग्रेजी दोनों में बनाए जाने के लिए कहा जाएगा ।

हिन्दी में कामकाज कराने से संबंधित पदों का सृजन करने, संवर्ग बनवाने व प्रोन्नति के अवसर उपलब्ध कराए जाने के संबंध में बताया गया कि हिंदी कार्य संबंधी पदों के बारे में प्रयोगशाला/संस्थानों से प्राप्त सूचना के अनुसार 4—5 कर्मचारियों को अपने पदों पर 7—8 वर्ष से अधिक कार्य करते हुए पाया गया, जिनके बारे में काडर समीक्षा के समय अन्य संवर्ग वाहय तथा आइसोलेटेड पदों के साथ समुचित विचार किया जाएगा । फिलहाल स्थिति यह है कि हिंदी के संवर्ग बाह्य पदों पर कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों को 11 वर्ष के बाद अगली पदोन्नति दिए जाने का प्रावधान है । हिंदी पदों के अलग से संवर्ग बनाए जाने के बारे में भी विचार व्यक्ति किया गया ।

मुख्यालय के अनुभागों की हिंदी प्रगति संबंधी तिमाहीं रिपोर्ट की समीक्षा करने के बाद यह पाया गया कि यह ठीक नहीं है । इस बारे में बैठक में संबंधित अनुभाग के अधिकारियों को विशेष तौर पर बुलाए जाने का निर्णय लिया गया साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि संबंधित अनुभाग/प्रभाग/यूनिट की तिमाहीं रिपोर्ट संबंधित अवर सचिव/उप सचिव/प्रभागाध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षरित होनी चाहिए ।

प्रयोगशाला/संस्थानों को हिंदी संबंधी तिमाहीं प्रगति रिपोर्ट राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आदि मुख्य-मुख्य मदों की सूचना के बारे में निर्णय लिया गया कि प्रयोगशाला/संस्थानों विषयक सूचना भी इस बैठक में रखी जानी चाहिए ताकि प्रयोगशाला/संस्थानों के राजभाषा विषयक कार्य की समीक्षा कर कार्यान्वयन को प्रभावी बनाया जा सके।

सी एस आइ आर की कई प्रयोगशालाओं द्वारा अंग्रेजी के टाइपिस्ट आशुलिपिकों की भर्ती भारत सरकार के आदेशों का उल्लंघन करके किए जाने के बारे में निर्णय लिया गया कि संबंधित प्रयोगशालाओं के विषय में स्थिति का आकलन किया जाएगा और उसके बाद संबंधित पत्र लिखे जाएंगे।

हिंदी भाषा/हिंदी टंकण आशुलिपि में प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों से हिंदी में काम किए जाने के संबंध में अध्यक्ष ने जोर देकर कहा कि यह संबंधित अधिकारियों का उत्तरदायित्व है कि वे उनसे हिंदी में भी कार्य लें और अधिकारी अपने-अपने आशुलिपिकों को हिंदी में डिक्टेशन दें।

वैज्ञानिकों को साक्षात्कार के समय उनके बुलावा पत्रों में हिंदी में साक्षात्कार दिए जाने संबंधी स्पष्ट उल्लेख के विकल्प के संबंध में निर्णय लिया गया है कि अब से आगे वैज्ञानिकों के साक्षात्कार से संबंधित बुलावा पत्रों में यह स्पष्ट उल्लेख किया जाएगा कि उन्हें हिंदी में भी साक्षात्कार देने की छूट होगी।

5. आयकर आयुक्त जालन्धर प्रभार, पंजाब

समिति की वर्ष 1991-92 की तृतीय बैठक, आयकर आयुक्त की अध्यक्षता में 13 दिसम्बर, 1991 को राजस्व भवन, जालन्धर में हुई।

समिति की बैठक में हुई चर्चा तथा समिति द्वारा किए निर्णयों का सक्षिप्त विवरण निम्नलिखित अनुसार है:

हिन्दी में पत्राचार की स्थिति

सूचित किया गया कि राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा "ख" क्षेत्र के लिए राजभाषा संबंधी पत्राचार का लक्ष्य 60 प्रतिशत रखा गया है। जालन्धर प्रभार में साधनों की कमी होने के कारण हिन्दी में पत्राचार 35 से 40 प्रतिशत के बीच में हुआ है। 30 सितम्बर, 1991 को समाप्त तिमाही में यह पत्राचार 38 प्रतिशत से कुछ अधिक हुआ।

अध्यक्ष ने अनुरोध किया कि पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाए। उनका विचार था कि हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों पर लिख दिया जाय कि "इस पत्र का उत्तर हिन्दी में देना है" तथा यह ध्यान भी रखा जाये कि ऐसे पत्रों का उत्तर केवल हिन्दी में ही दिया जाये। उन्होंने बताया कि राजभाषा नियम 5 के अनुसार हिन्दी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर हिन्दी में ही दिये जाने चाहिएं। ऐसा न करना अधिनियम की अवहेलना होगा, जो कि सरकारी अधिकारियों द्वारा नहीं की जानी चाहिए।

सूचित किया गया कि प्रभार के सभी प्रभारी अधिकारियों से अनुरोध किया गया था कि वे मुख्यालय से प्राप्त हिन्दी में जारी पत्रों की ओर विशेष ध्यान दिया करें। अध्यक्ष ने सहायक निदेशक (राजभाषा) को ऐसा ही एक और पत्र जारी करने का निदेश दिया, जिसमें यह बता दिया जाय कि मुख्यालय द्वारा हिन्दी में जारी पत्रों में केवल राजभाषा संबंधी सूचनाएं ही नहीं होतीं, बल्कि उनमें अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों संबंधी सूचनाएं भी भेजी/मंगवाई जाती हैं।

निर्धारित प्रयोजनों के लिए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग

समिति को सूचित किया गया कि प्रशासन संबंधी लगभग सभी आदेश हिन्दी में या द्विभाषी जारी हो रहे हैं। पूरी तिमाही में एक दो स्थानांतरण आदेश बठिण्डा रेंज के वेतन-निर्धारण आदेश केवल अंग्रेजी में जारी हो गए थे। उनका हिन्दी अनुवाद करवाया जा रहा है। आयकर उपायुक्त बठिण्डा रेंज, बठिंडा ने सूचित किया कि वह भविष्य में इस बात का ध्यान रखेंगे कि उनके कार्यालय से वेतन निर्धारण संबंधी तथा अन्य प्रशासनिक आदेश द्विभाषी रूप में या हिन्दी में जारी हों। उन्होंने सहायक निदेशक (रा.भा.) को वेतन निर्धारण आदेश तथा अन्य प्रशासनिक आदेशों के हिन्दी के नमूने उपलब्ध करवाए जाने को कहा। इस पर अध्यक्ष ने टिप्पणी की कि यथासंभव प्रशासनिक आदेश हिन्दी में जारी किए जाएं। यदि कोई आदेश केवल अंग्रेजी में जारी हो जाता है तो उसमें टिप्पणी कर दी जाये कि हिन्दी पाठ अलग से जारी किया जा रहा है और यह ध्यान भी रखा जाए कि हिन्दी पाठ साथ ही जारी हो जाएं।

तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा

अध्यक्ष ने कुछ प्रभारी अधिकारियों के कार्यालयों में हिन्दी में पत्राचार की कमी की ओर ध्यान दिलाया। उपायुक्तों ने आश्वासन दिया कि वे राजभाषा संबंधी निरीक्षण के समय इस कमी को ओर इंचार्ज अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करेंगे। तिमाही रिपोर्टों की समीक्षा करने पर यह भी पता चला कि प्रभार में समरी-निर्धारण कार्य अधिकतर अंग्रेजी में ही हो रहा है। आयकर उपायुक्तों का विचार था कि ऐसा कम्प्यूटर सिस्टम के कारण है। अध्यक्ष का विचार था कि कि समरी निर्धारण आदेश तथा अन्य दस्तावेज द्विभाषी रूप में छपे हुए हैं। यदि उनका हिन्दी भाग प्रयोग में लाया जाये, अधिकारी की मोहर हिन्दी में लगाई जाये, उस पर हस्ताक्षर हिन्दी में हों तो यह कार्य हिन्दी में ही किया हुआ माना जाएगा। अतः समरी निर्धारण संबंधी उपर्युक्त कार्य हिन्दी में ही किया जाना चाहिए।

हिन्दी टाइपराइटरों, टाइपिस्टों, आशुलिपिकों, अनुवादकों की कमी

समिति को सूचित किया गया कि हिन्दी अनुभाग की आशुलिपिक के लिए नया "गोदरेज" टाइपराइटर खरीद लिया गया है। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने सूचित किया कि जनवरी, 1992 में हो रही हिन्दी टाइपिंग परीक्षा के लिए जालन्धर प्रभार के 3 कर्मचारियों के प्रवेश पत्र भेजे गए हैं। सूचित किया गया कि आयकर कार्यालय बठिण्डा में हिन्दी टाइपराइटर भी उपलब्ध हैं तथा वहां एक आशुलिपिक हिन्दी टाइपिंग भी जानता है। आयकर उपायुक्त बठिण्डा ने सुझाव दिया कि यदि समिति चाहे तो वहां हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा सकता है। अध्यक्ष ने सहायक निदेशक (राजभाषा) को निदेश दिया कि वे आयकर उपायुक्त बठिण्डा रेंज-बठिण्डा में इंगलिश हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण केन्द्र प्रारम्भ करने हेतु आवश्यक कागज पत्र उपलब्ध करवाएं। सूचित किया गया कि अन्य कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु सभी इंचार्ज अधिकारियों से अनुरोध किया जा चुका है कि वे संबंधित कर्मचारियों को पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिन्दी टाइपिंग प्रशिक्षण लेने हेतु प्रेरित करें।

समिति का ध्यान प्रभार में हिन्दी अनुवाद की कमी की ओर भी आकर्षित किया गया। अध्यक्ष ने निदेश दिये कि इस संदर्भ में मुख्य आयकर आयुक्त (पटियाला) से पुनः अनुरोध किया जाए।

हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की खरीद

बताया गया कि राजभाषा विभाग और मुख्य आयुक्त, पटियाला द्वारा जारी हिन्दी पुस्तक सूची को अध्यक्ष ने प्रस्तुत किए जाने के निदेश दिए ताकि वह इसमें से कुछ और पुस्तकें हिन्दी पुस्तकालय हेतु खरीदने की सिफारिश करें।

सूचित किया गया कि हिन्दी पुस्तकालय के लिए "इंडिया टुडे" (हिन्दी) तथा "सरिता" (पाक्षिक) मंगवाई जा रही हैं। सदस्यों के अनुरोध पर अध्यक्ष ने कादम्बिनी "वामा" तथा "निरोगधाम" पत्रिकाएं मंगवाएं जाने की स्वीकृति दी। उन्होंने निदेश दिया कि प्रशासन अनुभाग इस बात का ध्यान रखेंगे कि ये पत्रिकाएं नियमित रूप से कार्यालय को प्राप्त हों।

राजभाषा संबंधी निरीक्षण

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में वर्ष में कम से कम 10 कार्यालयों के राजभाषा संबंधी निरीक्षण का लक्ष्य रखा गया है। आयकर उपायुक्त रेंज-2, ने सूचित किया कि उन्होंने आयकर कार्यालय कपूरथला तथा फगवाड़ा में राजभाषा संबंधी निरीक्षण कर लिया है। आयकर उपायक्त रेंज-1 जाल. ने सूचित किया कि उन्होंने आयकर कार्यालय होशियारपुर में राजभाषा संबंधी निरीक्षण कर लिया है तथा आयकर कार्यालय मोगा का निरीक्षण इसी महीने कर लिया जायगा। आयकर उपायुक्त बठिण्डा रेंज-बठिण्डा ने समिति को बताया कि उन्होंने भी अपनी रेंज के 2 कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण कर लिया है तथा वे बाकी 3 कार्यालयों का निरीक्षण इसी तिमाही में करने का प्रयास करेंगे। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने बताया कि राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा आयकर उपायुक्त रेंज-2 जाल. का निरीक्षण पिछली तिमाही में किया गया था तथा आयकर उपायुक्त रेंज-1 जाल. कार्यालय का निरीक्षण 9 दिसम्बर, 1991 को किया जा चुका है। अध्यक्ष ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि प्रभार के राजभाषा संबंधी निरीक्षण के लक्ष्य इसी तिमाही में पूरा किये जाने की आशा है। उन्होंने निरीक्षण करने वाले अधिकारियों से अनुरोध किया कि निरीक्षण करते समय तिमाही प्रगति रिपोर्ट में पाई गई कमियों को दूर करवाने हेतु संबंधित अधिकारियों को निदेश दें।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जांच-बिन्दु

सूचित किया गया कि पिछली बैठक में निर्धारित जांच-बिन्दुओं पर आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है। अध्यक्ष ने निदेश दिए कि निम्नलिखित जांच-बिन्दुओं पर भी आवश्यक कार्रवाई की जानी चाहिए :—

1. किसी भी पत्र या दस्तावेज पर केवल अंग्रेजी की मोहर न लगी हो। यदि कोई ऐसा मामला ध्यान में आए तो यह उस पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी/इस कार्यालय के हिन्दी अनुभाग के ध्यान में लाया जाए।

2. सभी प्रशासनिक-आदेश द्विभाषी/हिन्दी में जारी किए जाएं। यदि कोई आदेश जल्दी में केवल अंग्रेजी में जारी हो जाए तो उसका हिन्दी पाठ भी तत्काल जारी करवाया जाए।

3. हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हर हालत में हिन्दी में ही दिए जायें।

6. केन्द्रीय जल आयोग, भुवनेश्वर

संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केन्द्रीय जल आयोग, भुवनेश्वर की दूसरी बैठक श्री के०एन० राव, अधीक्षक अभियंता की अध्यक्षता में हुई।

तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा

30-9-91 को समाप्त तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई। इसमें यह पाया गया कि ब्राह्मणी सुवर्णरेखा मंडल, (केन्द्रीय जल आयोग, भुवनेश्वर) में हिन्दी का प्रयोग संतोषप्रद है। सर्किल आफिस में हिन्दी अनुवादक और हिन्दी टाइपिस्ट नहीं रहने के कारण उक्त तिमाही के दौरान हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत संतोषप्रद नहीं है, फिर भी सितम्बर 91 के बाद वाले महीने में कुछ हिन्दी पत्राचार में वृद्धि हुई है। पूर्वी नदियां मंडल कार्यालय में 14% कार्य हिन्दी में हुए हैं। इसमें वृद्धि लाने की आवश्यकता है।

हिन्दी प्रशिक्षण

श्री शिवपूजन प्रसाद, हिन्दी अनुवादक ने परिमंडलीय एवं मंडलीय कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों और कर्मचारियों की सूची तैयार की थी जिन्हें हिन्दी का प्रशिक्षण दिया जाना है। बैठक में श्री ए०के० सिन्हा, अधिशासी अभियन्ता ने यह जानकारी दी कि पूर्वी नदियां मंडल से हिन्दी का ज्ञान नहीं रखने वाले कर्मचारियों का मनोनयन हिन्दी प्रशिक्षण हेतु किया जा चुका है। ब्राह्मणी सुवर्णरेखा मंडल में भी इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। परिमंडल (सर्किल) कार्यालय से कर्मचारियों को अनिवार्य हिन्दी प्रशिक्षण हेतु मनोनीत करना बाकी है। जिसके लिए आवश्यक कार्यवाही की जा रही है।

हिन्दी कार्यशाला

बैठक में ब्राह्मणी सुवर्णरेखा मंडल में हुई हिन्दी कार्यशाला दिनांक 20-11-91 से दिनांक 7-12-91 तक के बारे में श्री राजेन्द्र कुमार जैन, अधिशासी अभियंता ने जानकारी दी।

यह निर्णय किया गया कि कार्यशाला समाप्त होने के बाद परीक्षा प्रत्येक कार्यशाला के लिए अलग-अलग आयोजित की जाएगी। इस परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान

प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को क्रमश: रु० 50, रुपए 40, रुपए 30, नगद पुरस्कार के रूप में दिए जाएंगे।

सरकारी काम-काज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना :—

सदस्यों ने सूचित किया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दिनांक 16-2-88 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 2/12013/2/87-रा०भा० (क-2) परिपत्र संख्या 21/88 के आलोक में सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना लागू करने का प्रावधान है। गृह मंत्रालय के उपरोक्त ज्ञापन के अनुसार यह योजना प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय में स्वतन्त्र रूप से चलाई जा सकती है जब कि केन्द्रीय जल आयोग नई दिल्ली के सहायक निदेशक (राजभाषा) के पत्रांक सं० 2(4)/88–हिन्दी दिनांक 15-6-88 के अनुसार उपरोक्त योजना स्वतन्त्र रूप से न चलाकर भौगोलिक दृष्टि से अलग-अलग जगहों पर स्थित कार्यालयों को मिलाकर चलाई जा रही है जिससे योजना में उचित संख्या में कर्मचारी भाग नहीं ले रहे हैं और जो कर्मचारी भाग ले रहे हैं उनको समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है। इस संदर्भ में सदस्यों ने सी०पी० डब्लू०डी० के मैनुअल का भी संदर्भ दिया जिसके अनुसार यह स्पष्ट है कि उपर्युक्त योजना सी०पी०डब्लू०डी० प्रत्येक परिमंडल एवं मंडल कार्यालय में स्वतन्त्र रूप से चलाए जाने का प्रावधान है।

अतः यह निर्णय किया गया कि इस वर्ष में अर्थात् वर्ष 1991-92 में भुवनेश्वर स्थित केन्द्रीय जल आयोग के सभी कार्यालयों को मिलाकर संयुक्त रूप से उपर्युक्त प्रोत्साहन योजना लागू की जाएगी एवं अगले वर्ष से उपर्युक्त योजना प्रत्येक मंडल एवं परिमंडल कार्यालय में स्वतन्त्र रूप से लागू की जाएगी। इस संबंध में यदि सहायक निदेशक (राजभाषा) केन्द्रीय जल आयोग नई दिल्ली की ओर से कोई आपत्ति 31 मार्च, 1992 प्राप्त नहीं होती है तो यह समझा जाएगा कि उपर्युक्त प्रोत्साहन योजना को लागू करने में मुख्यालय की तरफ से आपत्ति नहीं है।

हिन्दी कार्यशाला में भाग लेने का प्रमाण-पत्र

बैठक में यह निर्णय लिया गया कि हिन्दी कार्यशाला में भाग लेने वाले समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यशाला में भाग लेकर अभ्यास करने का प्रमाण-पत्र संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति, केन्द्रीय जल आयोग भुवनेश्वर की ओर से दिया जाएगा।

कार्यशाला में भाग लेने का प्रमाण-पत्र पूर्वी नदियां मंडल, भुवनेश्वर द्वारा तैयार कराया जाएगा।

7. आयकर उपायुक्त बठिंडा (पंजाब)

समिति की बैठक 31-12-1991 को हुई,

आयकर उपायुक्त ने बैठक में किए गए निर्णयों के कार्यान्वियन पर संतोष प्रकट किया।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने 30 और 31 दिसम्बर को बठिंडा स्थित सभी आयकर कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। बैठक के दौरान आयकर उपायुक्त कार्यालय, आयकर अधिकारी कार्यालय तथा आयकर आयुक्त अपील के निरीक्षण संबंधी रिपोर्ट उप आयकर को प्रस्तुत की गई। निरीक्षण के दौरान पाई गई कमियों के बारे में उपायुक्त ने सभी उपस्थित अधिकारियों तथा कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित किया।

निरीक्षण रिपोर्टों के अध्ययन से पता चलता है कि उपायुक्त कार्यालय तथा आयकर कार्यालय में हिंदी में जारी पत्रों की स्थिति में उत्साहजनक सुधार हुआ है। उपस्थित मु. लिपकों ने आश्वासन दिया की आगामी तिमाही में हिन्दी में पत्राचार में और वृद्धि की जाएगी। आयकर अपील के कार्यालय में तो कार्यालय का सभी कार्य हिंदी में हो रहा है।

लगभग सभी प्रशासनिक आदेश हिन्दी में जारी हो रहे है। केवल वेतन निर्धारण आदेश का प्रोफार्मा हिंदी म उपलब्ध नहीं था जो प्रा. शाखा को सहायक निदेशक राजभाषा ने उपलब्ध करा दिया है।

अध्यक्ष ने निर्देश दिया कि बठिंडा में देवनागरी की काफी टाइप मशीन उपलब्ध हैं, यहां पर अंशकालिक हिंदी टाइप का स्कूल खोला जाना चाहिये। सहायक निदेशक ने सूचित किया कि केन्द्र खोलने संबंधी राजभाषा विभाग के अनुदेश श्री रमेश कुमार गर्ग को दिये जाएंगें और यह केन्द्र अप्रैल से शुरू किया जा सकता है। सभा में उपस्थित सभी सदस्य विचार-विमर्श के बाद हिंदी टाइप के केन्द्र के 15 अप्रैल, 1992 के शुरू किया जाने के लिये सहमत हो गए।

केवल आयकर कार्यालय अबोहर को छोड़कर रेंज के सभी कार्यालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण पूरा कर लिया है और निरीक्षण रिपोर्ट भी जारी कर दी है। उपायुक्त ने और निर्देश दिये की आयकर कार्यालय, अबोहर का भी निरीक्षण कर लिया जाए।

सदस्यों के सुझाव है कि हिंदी में प्रकाशित पत्रिकाएं खरीदी जानी चाहिएं। अध्यक्ष महोदय ने निर्देश किए कि इंडिया टुडे (हिंदी) और कादम्बिनी पत्रिकाएं मंगवाने संबंधी सुझाव आयकर आयुक्त जालंधर को भेजा जाए।

हिंदी में पत्राचार को बढ़ाने हेतु निर्देश दिए कि उपायुक्त कार्यालय की न्यायिक शाखा तथा सांख्यिकी शाखा में रिमांडर तथा शून्य स्टेटमेंट हिन्दी में जारी की जाएं। उन्होंने निर्धारण अधिकारियों को निर्देश दिया कि उनके कार्यालयों में निल स्टेटमेंट और पच्चीस हजार से अधिक रिफंड मंजूरी के लिए हिंदी में भेजा जाए।

समरी कर निर्धारण हिंदी में जारी करने का अनुरोध सहायक निदेशक ने दिया। सदस्यों का विचार था कि इंटीमेशन पर्ची हिंदी में बनवा दी जाए तो ये हिंदी में भरी जाएगी।

अध्यक्ष ने अनुरोध किया कि बठिंडा रेंज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग और बढ़ाने के लिए और प्रयास करें ताकि यह रेंज प्रथम स्थान पर आ सके।

8. आकाशवाणी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

वित्तीय वर्ष 1991-92 की तृतीय बैठक दि 22 नवम्बर, 1991 को श्री के. एस. इसरानी, अध्यक्ष तथा केन्द्र निदेशक की अध्यक्षता में हुई।

हिंदी प्रशिक्षण के लिए नामांकन—अंशकालिक हिंदी शिक्षण योजना, प्राज्ञ प्रशिक्षण के लिए आकाशवाणी कार्यालय से तीन कर्मचारियों को नामित करने संबंधी निर्णय किया गया।

हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर समीक्षा :— दि. 1-7-91 से 30-9-91 तक के तिमाही में आकाशवाणी कार्यालय से कुल 2,349 पत्र जारी किए गए, जिसमें हिंदी में जारी पत्रों की संख्या 1247 है। हिंदी का प्रतिशत 53% है। नियमों के अनुसार हिंदी में कामकाज 60% से अधिक होना चाहिए। निर्णय किया गया कि जब तक यह प्रतिशत पूरा नहीं होता तब तक कोई भी सक्षम अधिकारी अंग्रेजी में जारी पत्रों पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।

द्विभाषिक इलेक्ट्रानिक्स टाइपराइटर की खरीद :—आकाशवाणी महानिदेशालय नई दिल्ली तथा राजभाषा विभाग से समय-समय पर प्राप्त अनुदेशों को ध्यान में रखते हुए समिति ने निर्णय लिया कि इसे यथाशीघ्र खरीदा जाए।

हिंदी पत्रिकाओं की खरीद :—कार्यालय में कर्मचारियों की हिंदी के प्रति बढ़ी हुई रुचि और उनका हिंदी का ज्ञान बढ़ाने के लिए "दिनमान" और "इंडिया टुडे" ये दो हिंदी की पत्रिकाएं खरीदने संबंधी निर्णय लिया गया। साथ ही दैनिक हिंदी समाचार पत्र "जनसत्ता" को भी नियमित रूप से खरीदने संबंधी सिफारिश की गई।

सिविल निर्माण संबंधी आकाशवाणी की समिति के सदस्य के रूप में आमंत्रित करने संबंधी समिति ने निर्णय लिया। क्योंकि यह कार्यालय आकाशवाणी से ही संबंधित है और उनके कर्मचारियों की संख्या बहुत कम होने से वहां राजभाषा समिति का गठन करना उनके लिए असुविधाजनक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भविष्य में नियमित रूप से इस कार्यालय के प्रतिनिधि को आमंत्रित किया जाए। □

[पृष्ठ 47 का शेषांश]

अधिसूचित कार्यालयों की संख्या का कॉलम जोड़ना स्वीकार किया गया।

अध्यक्ष ने इस विचार-विमर्श में राजभाषा विशेषांक और वरिष्ठ कार्यपालकों की संगोष्ठी का उल्लेख किया।

अध्यक्ष ने तत्काल इस संबंध में प्रतिनिधियों की राय जाननी चाही। सभी प्रतिनिधियों ने राजभाषा विशेषांक का स्वागत किया परन्तु रा०क्रु० और ग्रा०वि० बैंक के प्रतिनिधि ने खर्च की बात की। इसपर अध्यक्ष महोदय ने कहा कि आप ही इस उपसमिति में शामिल होकर खर्च कम करने की ओर ध्यान दें। उपसमिति के अन्तर्गत पंजाब नैशनल बैंक, देना बैंक, सिंडिकेट बैंक, केनरा बैंक, रा०क्रु० और ग्रा०वि० बैंक तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र का समावेश किया गया। साथ ही अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि हर महीने राजभाषा अधिकारी एक दिन तय कर आपस में मिलकर विचार विमर्श करें।

इसके बाद सचिव ने बैठक का दूसरा हिस्सा संगणक का द्विभाषीकरण आरम्भ किया। आरम्भ में समिति के अध्यक्ष के हाथों श्री विजयकुमार मल्होत्रा, निदेशक (राजभाषा) रेलवे बोर्ड, डा० श्री हरी मराठे, श्री रविश कनौजिया और श्री राजेश चिरपुटकर का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया और इस डेमॉन्स्ट्रेशन का सूत्रसंचालन श्री मल्होत्रा को सौंपा।

डेमॉन्स्ट्रेशन के आरम्भ में ही मल्होत्रा ने कहा कि जीवन के सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर ने प्रवेश किया है और इसके द्विभाषीकरण से अंग्रेजी का वर्चस्व समाप्त हो जाता है। केवल एक ही बटन दबाने से हम सभी भारतीय भाषाओं में काम कर सकते हैं। आज बाजार में कई पैकेज उपलब्ध हैं। इसलिए इस संबंध में उचित मार्गदर्शन मिलना चाहिए। इसके बाद डॉ० मराठे, श्री चिरपुटकर और श्री कनौजिया ने संगणक के द्विभाषीकरण का डेमॉन्स्ट्रेशन दिखाया। इसपर उपस्थित प्रतिनिधियों ने प्रश्न पूछे और विशेषज्ञों ने जवाब दिये।

अध्यक्ष ने विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों और संगणक के विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि बैठक में डॉक्टर अधिक हैं फिर भी मरीज के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं दिखाई देता, इसलिए कोशिश करनी चाहिए कि सभी डॉक्टर मिलकर मरीज को स्वस्थ बनाएं। साथ ही श्री. मेहता ने जो कमियां बताई हैं उन्हें दूर करने के लिए हम सब मिलकर प्रयास करेंगे। उन्होंने अपने भाषण का समापन एक कविता से किया।

"जीना सब जानते हैं। मरना कोई-कोई,
डुबना सब जानते हैं। तैरना कोई-कोई,
इस प्रवाह पाती दुनिया में देखा है। मैंने
कहना सब जानते हैं। करना कोई-कोई।" □

पूर्वांचल हिन्दी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

यूनियन बैंक की सहभागिता

वाराणसी तथा गोरखपुर मंडल के 13 जनपदों में व्याप्त प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था पूर्वांचल हिंदी परिषद् का वार्षिक अधिवेशन 21 दिसम्बर, 1991 को डी सी एस के स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊ में किया गया जिसमें उत्तर प्रदेश सरकार में कारागार राज्यमंत्री श्री उमानाथ सिंह मुख्य अतिथि थे तथा इसकी अध्यक्षता, पूर्वांचल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उदय प्रताप सिंह ने की। अधिवेशन में पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध साहित्यकारों, विद्वानों एवं हिंदी सेवियों ने भाग लिया।

अधिवेशन के उद्घाटन अवसर पर कुलपति डॉ. उदय प्रताप सिंह ने गृह पत्रिका समीक्षा के पं. श्याम नारायण पांडेय स्मृति अंक का विमोचन किया। उन्होंने बैंक के कामकाज में हिंदी के प्रयोग तथा प्रचार-प्रसार में आजमगढ़ क्षेत्र द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। कारागार मंत्री श्री उमानाथ सिंह ने कहा—"इसके पहले मैंने सोचा भी नहीं था कि हिंदी के विकास में किसी बैंक द्वारा इतना योगदान दिया जा रहा होगा।" परिषद् के अध्यक्ष डा. कन्हैया सिंह, महाविद्यालय के प्राचार्य तथा स्वागताध्यक्ष डॉ. लाखपति लाल एवं अन्य विद्वानों, साहित्य मनीषियों, प्रतिभागियों ने हिंदी के कार्यान्वयन तथा विकास के क्षेत्र के बढ़ते हुए कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर. पी. सिंह ने हिंदी में कामकाज में यूनियन बैंक तथा क्षेत्रीय स्तर पर आजमगढ़ क्षेत्र की स्थिति प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्रेष्ठ हिंदी कार्य के लिए आजमगढ़ को बैंक का "क" क्षेत्र का प्रथम पुरस्कार तथा राष्ट्रीय स्तर पर सभी बैंकों, वित्तीय संस्थाओं में यूनियन बैंक को इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड का पंचम पुरस्कार प्रदान किया गया है।

उद्घाटन सत्र के बाद साहित्यिक संगोष्ठियां की गईं। प्रथम संगोष्ठी "राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्यकार का दायित्व" विषय पर हुई, जिसका विषय प्रवर्तन डॉ. आदित्य नारायण मिश्र ने किया। डॉ. कुबेर नाथ राय, डॉ. वासुदेव सिंह आदि अनेकों विद्वानों ने परिचर्चा में भाग लिया। विद्वानों ने राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा तथा एकता हेतु जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्रवाद, वर्गवाद आदि से ऊपर उठकर कार्य करने का आह्वान किया।

द्वितीय संगोष्ठी "हिंदी का समकालीन काव्य-प्रश्न और चुनौतियां" विषय पर हुई जिसका विषय प्रवर्तन डॉ. उमाशंकर तिवारी ने किया तथा परिचर्चा में डॉ. रामचन्द्र तिवारी, डॉ. शिव प्रसाद सिंह, डॉ. विश्वनाथ तिवारी, डॉ. श्रीपाल सिंह "क्षेम" आदि विद्वानों ने भाग लिया।

अधिवेशन का अंतिम सत्र "हल्दीघाटी महोत्सव" रात्रि में आयोजित किया गया जिसमें वीर रस के सम्राट कवि स्व. श्याम नारायण पांडे की पुण्य स्मृति में कवि सम्मेलन हुआ। इसका संचालन श्री प्रभु नारायण "प्रेमी" ने किया तथा श्री व्रजेन्द्र अवस्थी, श्रीपाल सिंह "क्षेम", चन्द्रशेखर मिश्र, वेद प्रकाश आर्य, श्री पंकज गौतम, श्री शिवकुमार पराग, श्री राम प्रकाश शुक्ल निर्मोही आदि सहित अनेक कवियों ने काव्य पाठ किया।

क्षेत्र की गृह पत्रिका "समीक्षा" की सराहना की गई। पत्रिका के माध्यम से आजमगढ़ एवं मऊ की साहित्यिक विभूतियों का परिचय प्रस्तुत करने के प्रयास पर प्रतिभागियों ने संतोष व्यक्त किया तथा सभी ने भविष्य में एक-एक प्रति उन्हें भी भेजने का अनुरोध किया। समापन अवसर पर परिषद् के अध्यक्ष डॉ. कन्हैया सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। □

आकाशवाणी : अहमदाबाद

कवि सम्मेलन

वार्षिक कार्यक्रम (1991-92) का अनुपालन करते हुए केन्द्र के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता एवं उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह के अन्तर्गत विविध कार्यक्रमों/प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में गुजरात के प्रतिष्ठित हिंदी कवियों : डॉ. अम्बा शंकर नागर, डॉ. किशोर कावरा, प्रो. भगवान दास जैन, डॉ. द्वारका प्रसाद साहर, डॉ. भगवत शरण अग्रवाल आदि 12 कवियों ने भाग लिया। संचालन डॉ. अम्बा शंकर नागर ने किया। इस कार्यक्रम के ध्वनिमुद्रित अंश का रात्रि 10-15 से 11.00 बजे तक आकाशवाणी : अहमदाबाद, वड़ोदरा, राजकोट तथा भुज केन्द्रों से प्रसारण किया गया।

दि. 16-9-91 से 21-9-91 तक आकाशवाणी, अहमदाबाद एवं विज्ञापन प्रसारण सेवा, अहमदाबाद में हिंदी सप्ताह के कार्यक्रम किए गए।

48 प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए गए। हिंदी सप्ताह के समापन भाषण में विभागाध्यक्ष श्री जी. एल. रावल ने अधिकाधिक सरकारी कार्य राजभाषा हिंदी में करने का भी अनुरोध किया। □

हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड
जिंक स्मेल्टर, विशाखापट्टणम्-530015

राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन

जिंक स्मेल्टर विशाखापट्टणम में दिनांक 6 दिसंबर, 1991 को एक राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का उद्घाटन आंध्र विश्वविद्यालय के प्रो. एस. वी. माधवराव ने स्मारिका का विमोचन करने के साथ किया। सेमिनार में निम्नलिखित विषयों पर पत्र प्रस्तुत किये गये :

1. जिंक स्मेल्टर विजाग स्थित प्रदूषित जल उपचार संयंत्र : एक विश्लेषण —श्री ए. श्रीहरिराव, ए.एफ. एम.
2. यशद परिद्रावकों के जिंक सल्फेट में फ्लोराइड निर्धारण की उचित पद्धति —श्री एन.के. प्रकाशम्, प्रयोगशाला सहा.
3. विशाखापट्टणम के पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा मॉनीटरिंग वाहन की खरीद —श्री के. के. कुलश्रेष्ठ, वरि. रसायनज्ञ
4. रासायनिक उद्योगों में माइक्रोप्रोसेसर—माइक्रोकंप्यूटरों का योगदान —श्री एस. पी. सक्सेना, प्रबंधक (इंस्ट्र. मैं.)
5. हिंदुस्तान जिंक लेड स्मेल्टर में पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण —श्री वी. साम्बशिवराव, क.प्र.शा.सहा.
6. जिंक स्मेल्टर में विद्युत् ऊर्जा का प्रबंधन —श्री वाई. श्रीमाली, प्रबंधक (यांत्रिक)

आलेख प्रस्तुत कर्ताओं ने आलेख प्रस्तुत करने के उपरांत श्रोताओं की जिज्ञासाओं का व्यावहारिक समाधान भी सुझाया।

श्रोताओं को संबोधित करते हुए श्री माधवराव ने कहा कि भाषा के विकास के लिए ऐसा प्रयत्न बहुत ही कम देखने में आता है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने भाषा और टैक्नोलॉजी का बेजोड़ समन्वयन करने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में यह एक रचनात्मक प्रयास है। उन्होंने प्रश्नोत्तर कार्यक्रम को बहुत ही रोचक और उपयोगी बताया तथा प्रबंधन को इस सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

अध्यक्षीय प्रवचन में महाप्रबंधक श्री ए. पी. मुखर्जी ने कहा कि भाषा के मामले में धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा तथा इसे व्यवहार में लाने से ही इसकी वास्तविक प्रगति हो सकेगी। उन्होंने तेलुगु भाषी कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि तेलुगु भाषी कर्मचारियों ने हिंदी में तकनीकी आलेख प्रस्तुत करने की हिम्मत दिखाई, इसके लिए ये साधुवाद के पात्र हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से कर्मचारियों के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा साथ ही कारखाने के उत्पादन से संबंधित कई समस्याओं का समाधान भी आसान हो जाता है।

सेमिनार के बोधकगण का कार्यभार डॉ. एस. एन. वाही, मुख्य प्रबंधक (अनुरक्षण), श्री ए. बी. श्रीवास्तव मुख्य प्रबंधक (कार्य) एवं श्री एस. सी. दत्त वरिष्ठ प्रबंधक (विद्युत् अनुरक्षण) ने ग्रहण किया।

मुख्य अतिथि प्रो. माधव राव ने सेमिनार में आलेख प्रस्तुत करने वालों को नकद पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री ओ. पी. सिरोठिया, वरिष्ठ प्रबंधक (माल) ने किया तथा डॉ. बलबीर सिंह भटनागर, राजभाषा अधिकारी ने आभार व्यक्त किया। □

आयुध निर्माणी वरणगांव में पश्चिमी क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन

आयुध निर्माणी वरणगांव में दिनांक 14-12-91 को पश्चिमी क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में आयुध निर्माणी अम्बरनाथ, एम. टी. पी. एफ. अंबरनाथ, आयुध निर्माणी देहूरोड, एच. ई. फैक्ट्री खड़की, एम्युनिशन फैक्ट्री खड़की, आयुध निर्माणी भुसावल, आ. नि. वरणगांव, आ. नि. अंम्बाझरी, आ. नि. चांदा और आ. नि. भंडारा के महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक, प्रशासन अधिकारी, हिंदी अधिकारी, हिंदी अनुवादकों ने तथा आयुध निर्माणी बोर्ड की संयुक्त निदेशक श्रीमती तप्ती घोष और हिंदी अधिकारी श्री आर. पंडित ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि श्री आर. सुन्दरम्, सदस्य (आयुध निर्माणी बोर्ड) तथा अन्य अतिथियों का स्वागत छात्र/छात्राओं ने किया।

श्री आर. सुन्दरम ने दीप जलाकर उद्घाटन किया। इसके बाद श्री आर. के. चतुर्वेदी, हिंदी अनुवादक, आ. नि. चांदा ने स्वागत गीत गाया। हर निर्माणी के प्रतिनिधि ने अपनी निर्माणी में हुए हिंदी कार्य की प्रगति एवं कार्य में आने वाली समस्याओं को स्पष्ट किया। इस पर कार्यक्रम के अध्यक्ष ने मार्गदर्शन किया तथा अधिकाधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने का आवाहन किया। श्रीमती घोष ने आभार प्रकट किया। सम्मेलन का संचालन आ. नि. बोर्ड के हिंदी अधिकारी श्री आर. पंडित ने किया। □

केनरा बैंक, मण्डल कार्यालय, आगरा

मण्डल कार्यालय, आगरा की शाखाओं के अधिकारी और कामगार वर्ग के हिन्दी प्रतिनिधियों की बैठक का आयोजन स्थानीय क्षेत्रीय स्टाफ प्रशिक्षण कालेज में दिनांक 19-12-91 और 20-12-91 को किया गया जिससे मण्डल के अन्तर्गत कार्यरत शाखाओं में हिन्दी का प्रयोग अधिक से अधिक किया जा सके। भारत सरकार की राजभाषा नीति तथा वार्षिक कार्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुए, विभिन्न शाखाओं से आए अधिकारियों ने अपनी-अपनी शाखाओं में हिन्दी कार्यान्वियन की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला।

बैठक की अध्यक्षता मण्डल कार्यालय, आगरा के मण्डल प्रबन्धक श्री एम०एस० नायक ने की और कहा कि देश के इस भूभाग में बैंकिंग की हमारी सफलताएं स्थानीय भाषा हिन्दी के प्रयोग पर निर्भर हैं और इस बात को ध्यान में रखते हुए हमें अपनी शाखाओं का अधिकतर कार्य हिन्दी में करना चाहिए।

डा० उपेन्द्र नारायण सेवक पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी ने कहा कि आगरा मण्डल की राजभाषा कार्यान्वियन में अग्रणी रहने की प्रवृत्ति रही है और हिन्दी प्रतिनिधियों से आशा की जा सकती है कि वे इस परम्परा को बनाए रखेंगे। मण्डल के प्रबन्धक श्री ए०एन० कृष्णप्पा ने भी आशा व्यक्त की कि हिन्दी प्रतिनिधि हिन्दी का प्रयोग बैंकिंग की विभिन्न विधाओं में करेंगे और सफलता के नए मानदण्ड स्थापित करेंगे। श्री अशोक कुमार सेठी, राजभाषा अधिकारी, (मण्डल कार्यालय, आगरा) ने आशा व्यक्त की कि हिन्दी प्रतिनिधि शाखाओं में वापस जाकर अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह सफलतापूर्वक करेंगे। क्षेत्रीय स्टाफ प्रशिक्षण कालेज, आगरा के सकाय सदस्य श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल ने रिपोर्टिंग पद्धति पर प्रकाश डाला और रिपोर्टिंग की बारीकियों को प्रतिभागियों तक पहुंचाया। श्री के०सी० कनौजिया अधिकारी ने जमा राशियों को बढ़ाने के लिए राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की महत्ता पर प्रकाश डाला।

बैठक में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सुझाव आए:

राजभाषा अधिकारी शाखाओं में जाएं और उनकी स्टाफ बैठकों में भाग लें।

शाखा ग्रेडेशन में हिन्दी कार्यान्वियन को स्थान दिया जाए।

राजभाषा अधिकारी शाखाओं में जाकर इस बात की जांच करें कि प्रगति रिपोर्ट में आंकड़े ठीक दिए जा रहे हैं।

मण्डल कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में शाखाओं के उन कर्मचारियों को बुलाया जाए जो हिन्दी में अच्छा कार्य करते हैं। ऐसे कर्मचारियों की प्रशंसा भी की जाए।

शाखा प्रबन्धक सम्मेलन में शाखा प्रबन्धकों को हिन्दी प्रतिनिधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाए।

प्रधान कार्यालय से आने वाले परिपत्र हिन्दी में भी हों।

लिपिक से अधिकारी वर्ग हेतु पदोन्नति परीक्षा हिन्दी में हो।

राजभाषा अधिकारी डा० पाण्डेय व श्री सेठी ने हिन्दी प्रतिनिधियों को क्रमशः अंचल व मण्डल की ओर से आश्वासन दिया कि उनके स्तर से कार्यान्वित होने वाले सुझावों को तुरन्त लागू किया जाएगा। प्रधान कार्यालय स्तर से लागू होने वाले सुझावों के बारे में उन्हें लिखा जाएगा। □

चित्र समाचार

हिंदी सप्ताह समारोह में दूरदर्शन मद्रास केन्द्र के अधीक्षक अभियंता श्री एन. एस. गणेशन् संबोधित करते हुए।

यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कं. लि. बेंगलर में हिंदी कार्यशाला के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए श्री मंगल प्रसाद संयुक्त निदेशक केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो बेंगलूर।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सचिव एवं कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग के संयुक्त सचिव डॉ. गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार देते हुए।

(बाएं से) मुख्य अतिथि श्री शंभु शरण शुक्ल, सहायक महाप्रबंधक (सुरक्षा) (प्रबन्धन प्रशिक्षणार्थियों हेतु आयोजित राजभाषा कार्यशाला में बोलते हुए) (डायस में बैठे हुए) डॉ. मनराखन लाल साहु, प्रबंधक (हिन्दी) एवं श्री मा. बा. बक्षी, सहा. महाप्रबंधक (प्रशिक्षण)

यंत्रालय, पूर्वोत्तर रेलवे इज्जत नगर में हिंदी दिवस समापन समारोह 1991 में हिंदी में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिए श्री मदन लाल भटनागर, कार्यालय, अधीक्षक को चल वैजन्यती देते हुए श्री राजेन्द्र नाथ सोनी मंडल रेल प्रबंधक, इज्जतनगर।

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, बारासात में हिंदी दिवस समारोह की एक झलक

लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर में हिन्दी सप्ताह के दौरान अध्यक्षीय भाषण करते हुए कार्यालय के श्री राज कुमार बारापात्रे उपनिदेशक (प्रभारी)

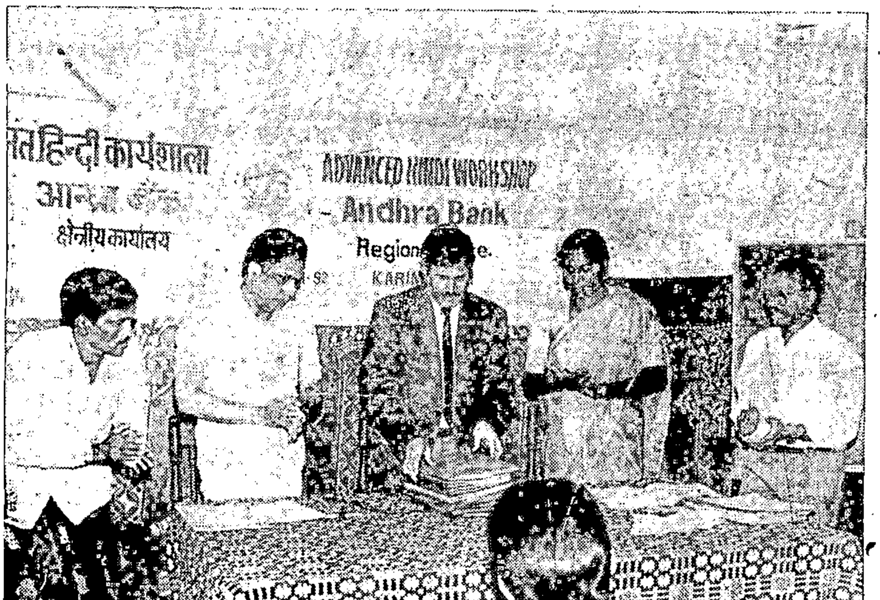

आन्ध्र बैंक करीमनगर में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री वी. सुरेन्द्र रेड्डी क्षेत्रीय प्रबंधक।

ग्रेफ सैंटर दिघी कैम्प पुणे में हिंदी सप्ताह समापन समारोह में पुरस्कार वितरित करते हुए कर्नल वी. के. ओबेराय कमांडर ।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, गुवाहाटी में हिंदी सप्ताह एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाषण करते हुए मुख्य अतिथि श्री चन्द्रशेखर' कार्यकारी सम्पादक हिंदी सेंटिनल।

यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, इम्फाल में कवि सम्मेलन के अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक से उपहार लेते हुए कवि एवं अध्यक्ष श्री नीलवीर शास्त्री और बीच में मणिपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रधान डा. जवाहर प्रसाद एवं हास्य कवि श्री समरेन्द्र सिंह ।

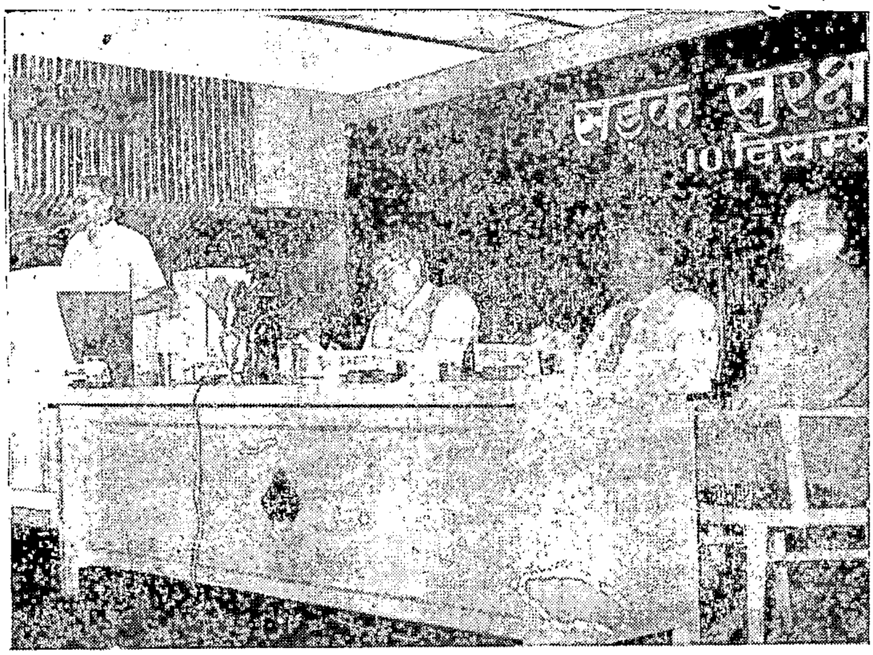

(बाएं से) स्वागत भाषण करते हुए डॉ. मनराखन लाल साहू, प्रबंधक (हिन्दी) (मंच पर बैठे हुए) मुख्य अतिथि श्री अनन्त कुमार सिन्हा, महाप्रबंधक (प्रबंधन सेवाएं); श्री शंभु शरण शुक्ल, सहायक महाप्रबंधक (सुरक्षा); श्री उमेश चंद माथुर, प्रमुख (संपर्क प्रशासन एवं जन संपर्क) तथा राजभाषा अधिकारी।

पंजाब नैशनल बैंक में हिंदी सप्ताह समारोह में बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री साशिद जिलानी बोलते हुए।

हिंदुस्तान जिंक लि., विशाखापट्टनम् में राजभाषा तकनीकी सेमिनार में ओवर हैड प्रोजेक्टर पर प्रदर्शन।

नराकास बंबई (बैंक) में सर्वश्री सुधा श्रीवास्तव सहायक निदेशक, प्रबोध कुमार गोविल सचिव, रमेश शर्मा, प्रबंधक, प्रभाकर चितले, अध्यक्ष, कृष्ण ना. मेहता उपनिदेशक ।

आयुध निर्माणी वरणगांव में पश्चिमी क्षेत्र राजभाषा सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते हुए आ. नि. बोर्ड के सदस्य कार्मिक श्री आर. सुन्दरम तथा दाएं हैं --महाप्रबंधक श्री आर. सुन्दरम्, अपर महाप्रबन्धक श्री जी. खेड़ा और संयुक्त निदेशिका श्रीमती ताप्ती घोष, आ. नि. बोर्ड, कलकत्ता।

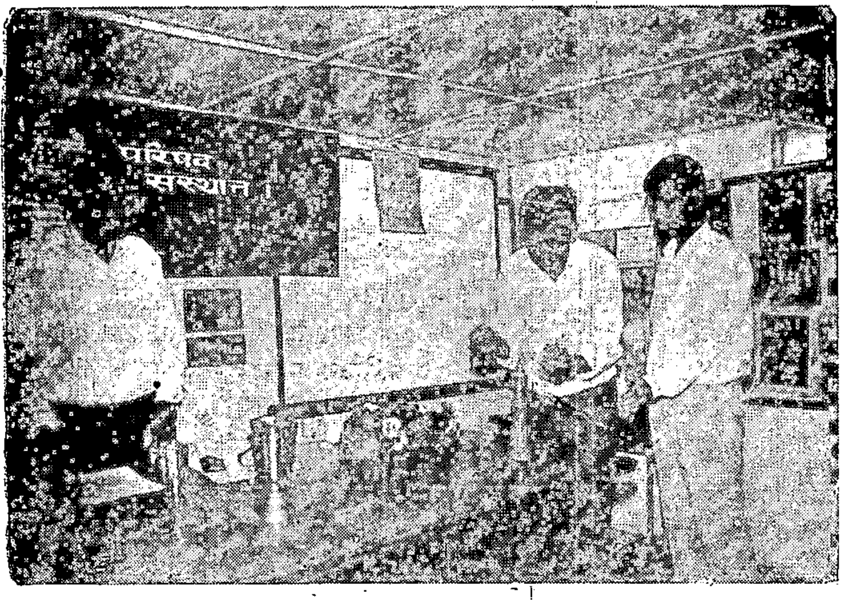

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली में डॉ. सत्याशरण घोष, प्रधान वैज्ञानिक उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए ।

रायपुर: श्री के. के. सेठ, आंचलिक प्रबंधक सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया सदस्यों को संबोधित करते हुए। मंच पर बाएं से दायें श्री राधा कृष्ण झा, श्री रम्मू श्रीवास्तव, श्री चन्द्र गोपाल शर्मा, श्री इशरत उल्लाह।

मदुरै मंडल दक्षिण रेलवे में हिंदी सप्ताह समापन समारोह में श्री एस. गोपालकृष्णन् प्रबंधक आदि।

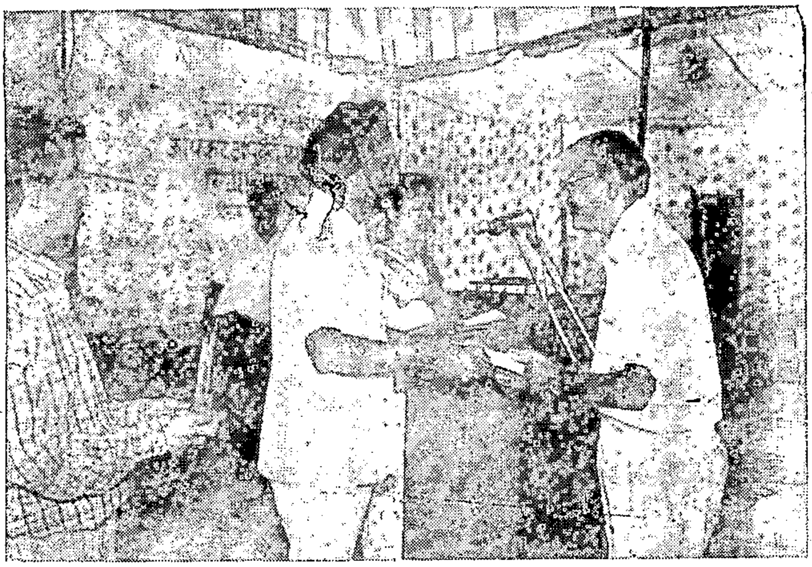

आयकर आयुक्त कार्यालय पटियाला में हिंदी सप्ताह समारोह में श्री जी. एस. सिंद्धू आयकर आयुक्त, श्री वाई. के. शर्मा सहायक आयकर आयुक्त (अन्वेषण) को पुरस्कार देते हुए।

केनरा बैंक बम्बई में हिंदी सप्ताह समारोह की एक झलक ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग उत्तर-पश्चिम सर्कल में हिंदी दिवस समारोह में बाएं से ले. कर्नल कुलदीप सिंह खत्री, ब्रिगेडियर अनिल मोहन चतुर्वेदी, तथा मेजर जनरल पृथ्वी राज।

आकाशवाणी बम्बई में हिंदी सप्ताह के अवसर पर आशु भाषण प्रतियोगिता के लिए श्री सि. ब. शिंगे, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी को पुरस्कार देते हुए श्री एस. सुन्दरम् अधीक्षण अभियंता ।

बैंक ऑफ इंडिया चन्द्रपुर में हिंदी सप्ताह समारोह में बोलते हुए विधायिका एवं भूतपूर्व राज्य मंत्री (महाराष्ट्र) श्रीमती यशोधरा बजाज ।

भारत डायनामिक्स लिमिटेड (रक्षा मंत्रालय) हैदराबाद में संपन्न "हिन्दी दिवस" के अवसर पर बोलते हुए प्रो. शिवेन्द्र कुमार वर्मा निदेशक, केन्द्रीय अंग्रेजी तथा विदेशी भाषा संस्थान हैदराबाद ।

भारत गोल्ड माइन्स लि. में हिंदी दिवस समारोह की एक झलक ।

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लि. नागपुर में राजभाषा सप्ताह समापन समारोह में सम्बोधित करते हुए श्री सत्य प्रकाश वर्मा अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक ।

हिंदुस्तान लैटेक्स लि. तिरुअनंतपुरम् में हिंदी दिवस समापन समारोह में बाएं से श्री एन. पी. पोरी, श्री. रामचन्द्र मिश्र तथा श्री जी राज मोहन ।

श्री टी. अनन्ताचारी, महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल, पंजाब फ्रंटियर के प्रतिनिधि श्री जी. डी. सिंह, प्रधान स्टॉफ अधिकारी को राजभाषा शील्ड देते हुए ।

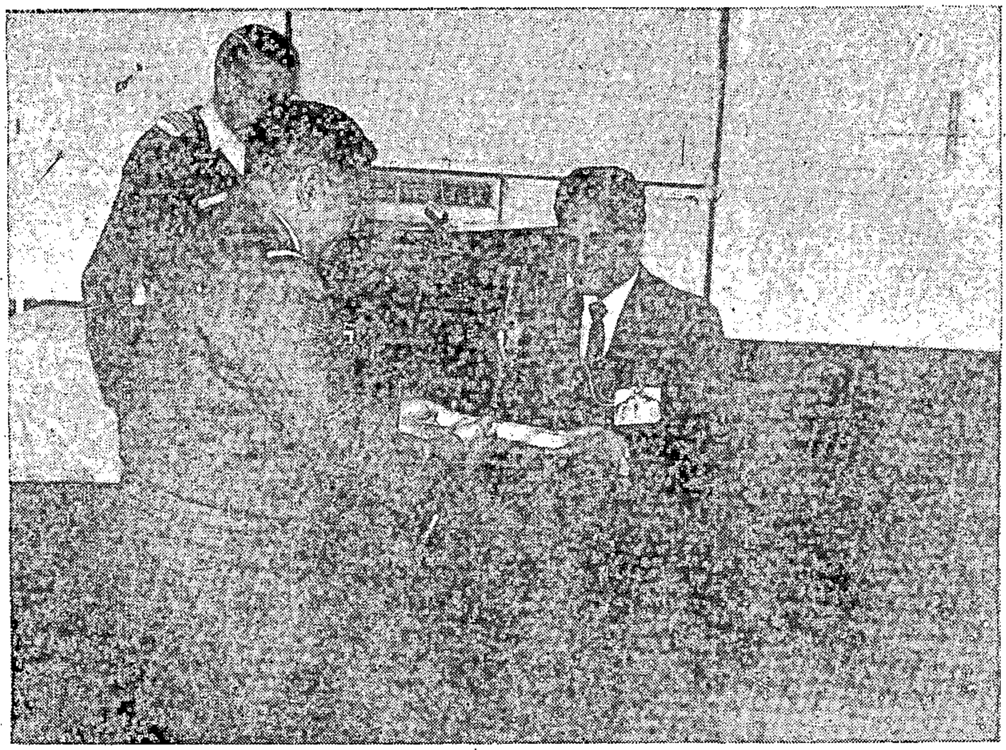

वायुसेना मुख्यालय में निबन्ध प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार श्री जगदीश प्रसाद गुप्त भंडार अधीक्षक को देते हुए एयर मार्शल नरेश कुमार ।

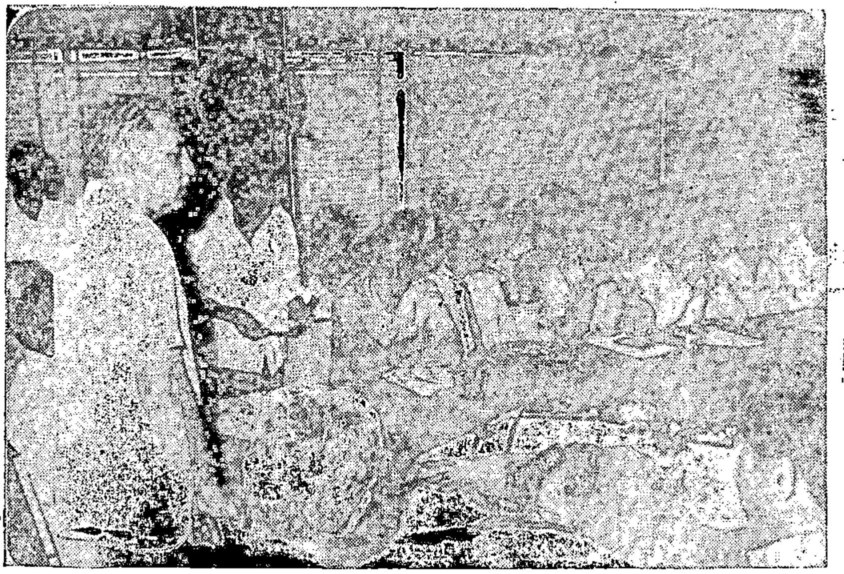

नौवहन महानिदेशक (बंबई) श्री प्रवीण सिंह बोलते हुए

भारत हैवी प्लेट एण्ड वेसल्स लि. विशाखापट्टणम में हिंदी कार्यशाला में भाषण देते हुए महाप्रबन्धक (प्रचालन) श्री वी. एस. प्रसाद राव ।

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया हैदराबाद में हिंदी कार्यशाला में बोलते हुए श्री एन. एस. रमणन् मुख्य प्रबंधक ।

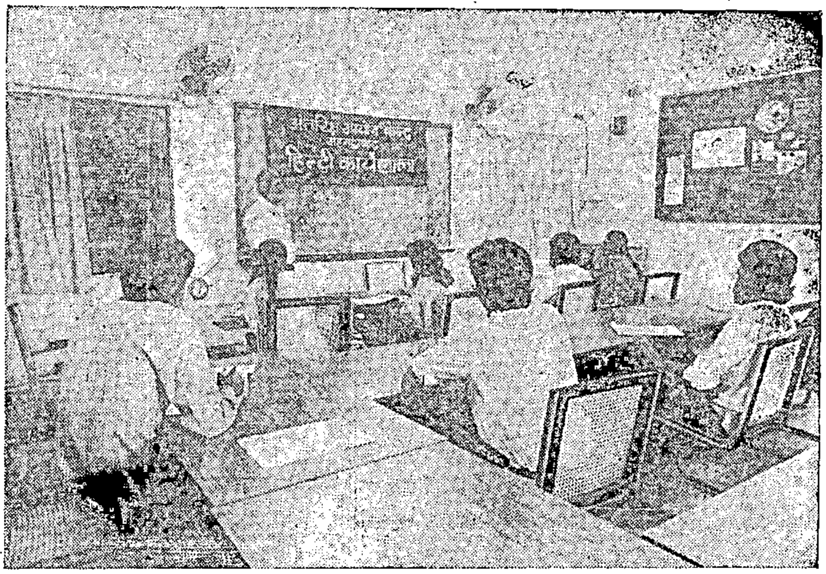

अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र अहमदाबाद में हिंदी कार्यशाला की एक झलक ।

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन में हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री एस. पेरियकरुप्पन, महाप्रबंधक भाषण देते हुए ।

भोपाल में मध्य क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी संगोष्ठी

मध्य क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर दिनांक 9-1-92 को क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, भोपाल में राजभाषा अधिकारी संगोष्ठी हुई, जिसकी अध्यक्षता राजभाषा विभाग के उप सचिव (कार्यान्वयन) श्री भगवान दास पटैरया ने की। बैंकों की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री वी०ए० होया विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे।

क्षेत्रीय उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री चंद्र गोपाल शर्मा ने विषय प्रतिपादित करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी में केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों आदि में राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम लागू करने के बारे में विस्तार से चर्चा की जानी है।

श्री शर्मा ने स्पष्ट किया कि राजभाषा विभाग के दिनांक 31-8-87 के आदेशानुसार कंप्यूटर, शब्द संसाधक आदि सभी प्रणालियां द्विभाषिक खरीदी जानी हैं तथा 30-5-87 के आदेशानुसार सभी इलेक्ट्रानिक टाइपराइटर भी द्विभाषिक खरीदे जाएं। वार्षिक कार्यक्रम में हिन्दी टाइपिस्ट/आशुलिपिक की संख्या पूरी करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का प्रयास किया जाना चाहिए। संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के अनुसार जारी हुए दिनांक 29-3-1990 के संकल्प के अनुपालन के लिए राजभाषा अधिकारियों की जिम्मेदारी के गुणात्मक आयाम बढ़े हैं। नियम 12(1) के अनुसार संबंधित कार्यालय अध्यक्ष की यह जिम्मेदारी है कि वे वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्रवाई करें।

श्री पटैरया ने स्पष्ट किया कि राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए हम केवल कार्यपालिका तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि न्यायपालिका और व्यवस्थापिका के क्षेत्र में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए जिम्मेदार हैं। इस क्रम में संसदीय राजभाषा समिति के समक्ष 5वीं रिपोर्ट की तैयारी का काम चल रहा है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं बिहार के उच्च न्यायालयों में तो हिन्दी में निर्णय होने लगे हैं किन्तु दिल्ली उच्च न्यायालय में भी हिन्दी लाने की प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत स्थायी आदेश द्विभाषिक ही जारी किए जाने चाहिए। सरकार प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भाव से हिन्दी में कामकाज कराने के लिए प्रतिबद्ध है किन्तु सरकार के दिनांक 22-8-1989 के आदेश के अनुसार राजभाषा हिन्दी में कामकाज संबंधी नियमों आदि के उल्लंघन पर कार्यवाही की जा सकती है।

उपनिदेशक श्री शर्मा ने अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों के बारे में अपने विचार रखें और उनका निराकरण करने के लिए अध्यक्ष से अनुरोध किया।

बैंक ऑफ बड़ौदा, जयपुर के राजभाषा प्रबंधक श्री उमाकांत स्वामी ने स्पष्ट किया कि "क" क्षेत्र में बैंकों द्वारा पत्राचार का 90 प्रतिशत का लक्ष्य रखा गया है और उनके बैंक में सितम्बर 1993 तक 96 प्रतिशत कार्य हिन्दी में हुआ है। उनके बैंक के जयपुर अंचल की सभी शाखाएं 2 वर्ष पूर्व नियम 10(4) के अन्तर्गत अधिसूचित और नियम 8(4) में विनिर्दिष्ट की जा चुकी हैं। श्री स्वामी ने बताया कि कार्यशालाओं के आयोजन के स्थान पर उन्होंने सभी शहरी शाखाओं में डैस्क प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम चलाया है। इस कार्ययोजना के अन्तर्गत प्रत्येक बैंक में 5 सदस्यीय टीम शाखा विशेष में 5 दिन तक शिक्षण कार्य लगाती है। सभी कर्मचारियों को उनकी सीट से संबंधित काम हिन्दी में करने के लिए सहायक साहित्य दिया जाता है। ग्राहकों से संपर्क स्थापित करके बैंक से हिन्दी में व्यवहार करने की उन्हें प्रेरणा दी जाती है और बैंकों का समस्त कार्य हिन्दी में करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रशिक्षण योजना से प्रशिक्षित कर्मचारी हिन्दी में काम करने में सक्षम हो जाते हैं।

प्रस्तुति : डॉ. गुरुदयाल बजाज

आयकर विभाग के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री अशोक कुमार शर्मा ने बताया कि नराकास भोपाल के तत्वावधान में संयुक्त हिन्दी दिवस आयोजित किया गया। आयकर विभाग से लगभग 40 प्रतिशत पत्रादि हिन्दी में जारी हो रहे हैं और 19 प्रतिशत तार हिन्दी में भेजे गए हैं। आकाशवाणी केन्द्र और राष्ट्रीय अभिलेखागार, भोपाल में शतप्रतिशत कार्य हिन्दी में हो रहा है।

भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड के प्रबंधक (कार्मिक) श्री पवन कुमार गोयल ने बताया कि उनके उपक्रम में लगभग 18 हजार अधिकारी/कर्मचारी हैं। और उनका संस्थान नियम 10(4) के अन्तर्गत 1987 में अधिसूचित कर दिया गया था। भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड में विभिन्न प्रदेशों के कर्मचारी कार्यरत हैं। उन्हें प्रेरित, प्रोत्साहित करने के लिए वर्ष 1988 से एक हिन्दी प्रेरणा समिति गठित की गई है, जिसके अध्यक्ष महाप्रबंधक हैं। उस समिति के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी को बढ़ाने का कार्यक्रम चल रहा है।

[शेष पृष्ठ 64 पर]

सड़क दुर्घटना रोकने के लिए तीन "इ" जरूरी

सड़क सुरक्षा पर भिलाई इस्पात संयंत्र में आयोजित सेमीनार

भिलाई इस्पात संयन्त्र के सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग और हिन्दी अनुभाग के संयुक्त प्रयास से 10 दिसम्बर, 91 को 'सड़क-सुरक्षा" विषय पर भिलाई तकनीकी संस्थान में आयोजित तकनीकी सेमीनार में संयन्त्र के अधिकारियों के अतिरिक्त केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, यातायात पुलिस, जिला प्रशासन, प्रेस और शिक्षा विभाग से अध्यापक और छात्र आमंत्रित थे।

भिलाई इस्पात संयन्त्र के महाप्रबंधक (प्रबंधन सेवाएं) श्री अनन्त कुमार सिन्हा ने भारतीय पद्धति से दीप प्रज्ज्वलित करके सेमीनार का उद्घाटन किया। श्री सिन्हा ने विस्तृत आंकड़े देकर बताया कि हमारे देश में सड़क-दुर्घटना की दर विश्व में सबसे अधिक है। उन्होंने यह भी बताया कि इसका मुख्य कारण वाहन चालकों द्वारा यातायात नियमों का पालन न करना ही है। साथ ही उन्होंने उन सभी समस्याओं को भी रेखांकित किया जिन पर सेमीनार में विचार किया जाना चाहिए।

सेमीनार में 3 आलेख प्रस्तुत किए गए तथा सड़क-दुर्घटनाओं के कारणों को मार्मिक ढंग से दर्शाने वाली एक फिल्म दिखाई गई है।

भिलाई इस्पात संयंत्र के शिक्षा विभाग के विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्यों और अध्यापकों की ओर से सेमीनार के लिए 7 आलेख तैयार किए गए थे जिन्हें समेकित करके व्याख्याता श्री विजय दिल्लीवार ने एक आलेख के रूप में प्रस्तुत किया। शिक्षा विभाग का मत था कि अभिभावक अपने अवयस्क और ड्राइविंग लाइसेन्स न रखने वाले बच्चों को चलाने के लिए अपने पेट्रोल-वाहन न दिया करें। उनका यह भी मत था कि फिल्मों में दिखाए जाने वाले वाहन-चालन के अवास्तविक दुस्साहसिक दृश्य किशोरों के संवेदनशील मन में उसी नाटकीय ढंग से वाहन चालन की प्रवृत्ति पैदा करते हैं. अतः फिल्म निर्माताओं को ऐसे अवास्तविक वाहन चालन के दृश्य दिखाने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। शिक्षा विभाग के आलेख में कई रचनात्मक सुझाव दिए गए थे जिनके द्वारा किशोर छात्रों को बचपन से ही यातायात सम्बन्धी सतर्कता के बारे में प्रशिक्षित किया जा सकता है। उनका एक बहुत ही व्यावहारिक सुझाव यह था कि शालेय पाठ्यक्रम में प्राथमिक कक्षाओं से ही "सड़क सुरक्षा" पर पाठ रखे जाने चाहिए।

सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री शभुशरण शुक्ल ने सड़क दुर्घटनाओं के तकनीकी व मानवीय कारणों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला और उन प्रयासों का उल्लेख किया जो भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए किए जा रहे हैं।

यातायात पुलिस के नगर निरीक्षक श्री भोजराज सिंह और यातायात सूबेदार श्री रजत शर्मा ने यातायात पुलिस के विचार प्रस्तुत करते हुए इस बात पर बल दिया कि नगरों की आयोजना अथवा उनके विस्तार के कार्यक्रम तैयार करते समय यातायात पुलिस से विचार-विमर्श आवश्यक कर दिया जाना चाहिए ताकि नगर आयोजना के चरण से ही उन सम्भावित समस्याओं को ध्यान में रखा जा सके जो सड़क दुर्घटना के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कारण बन सकते हैं।

निर्माण विभाग के अधीक्षक अभियन्ता श्री त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय ने सड़क निर्माण के समय नजर अन्दाज की जा रही त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। उनका अभिमत था कि सड़क निर्माण के समय इंजीनियरी मानकों को पूरी तरह ध्यान में रखा जाना चाहिए। सड़कें यदि सुरक्षित बनाई जाएं तो घातक दुर्घटनाएं बहुत कुछ कम हो जा सकती हैं।

प्रश्नोत्तर सत्र में देश-विदेश के यातायात के नियमों और वहां अपनाई जाने वाली सावधानियों के कई पहलू उभर कर सामने आए। प्रश्नोत्तर सत्र में उठाए गए विभिन्न प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में यह अनुभव किया गया कि वस्तुस्थितियों को देखते हुए वर्तमान में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने का एकमात्र व्यावहारिक विकल्प यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर यातायात-सतर्कता अपनाए तथा दुपहिए वाहनों के चालक घातक दुर्घटना से बचने के लिए क्रैश-हेलमेट का उपयोग अनिवार्य रूप से करें।

सेमीनार का संचालन हिन्दी अनुभाग के सहायक प्रबंधक डा० गिरीश जी० सिंहल ने किया। स्वागत भाषण और विषय प्रवर्तन प्रबंधक (हिन्दी) डा० मनराखन लाल साहू ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक श्री ए०पी० अग्रवाल ने किया। सेमीनार में लगभग 200 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। □

परमाणु ऊर्जा विभाग, नाभिकीय ईंधन सम्मिश्र, हैदराबाद

तकनीकी संगोष्ठी-1991

17 दिसम्बर, 1991 को सम्मिश्र की नियंत्रण-प्रयोगशाला में "पर्यावरण संरक्षण के नियंत्रण की विधियां" विषय पर तकनीकी संगोष्ठी की गई। ईश-वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तत्पश्चात् राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री उमेश चंद्र गुप्त ने स्वागत भाषण में कहा कि "पिछले पांच वर्षों से समिति राजभाषा समारोह का आयोजन करती रही है और इन समारोहों का महत्त्वपूर्ण अंग तकनीकी संगोष्ठी है। वैसे तो आए दिन संगोष्ठियां होती रहती हैं परन्तु अधिकांशतः अंग्रेजी में होती हैं। सम्मिश्र के मुख्य कार्यपालक श्री के० बलराम मूर्ति के सुझाव एवं प्रेरणा से सम्मिश्र में पिछले 5 वर्षों से तकनीकी संगोष्ठियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा रहा है। विशेष बात यह है कि इसमें अहिन्दी भाषी विद्वान अपने आलेख प्रस्तुत करते हैं। इससे यह सिद्ध हो गया है कि तकनीकी कामकाज भी भारतीय भाषाओं में उतनी ही सरलता से किया जा सकता है जितना कि किसी अन्य विदेशी भाषा में। हमारी देशी भाषाओं की क्षमता किसी भी विदेशी भाषा से कम नहीं है। प्रश्न केवल साहसपूर्वक प्रयास करने का है।"

संगोष्ठी आयोजन का पूर्व इतिहास :

1. 11 दिसम्बर, 1986 को प्रथम तकनीकी संगोष्ठी
2. 'उन्नत प्रौद्योगिकी हेतु पदार्थ' विषय पर 11-12-87 को दूसरी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन।
3. 'विशेष महत्त्व के उद्योगों में गुणता-आश्वासन' विषय पर 23-12-1988 को तीसरी संगोष्ठी का आयोजन।
4. "विशेष महत्त्व के उद्योगों में संरक्षा-जागरूकता"–विषय पर 22-12-1989 को चौथी संगोष्ठी का आयोजन।
5. "उत्पादकता बढ़ाने में कम्प्यूटरों की भूमिका" विषय पर 19-2-1991 को पांचवी संगोष्ठी का आयोजन।

सम्मिश्र के मुख्य कार्यपालक श्री कंभंपाटि बलराम मूर्ति ने उद्घाटन भाषण में कहा कि—"आज संयंत्रों (प्लांट) के आसपास के वातावरण पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण पर बल और महत्त्व दिया जा रहा है। इसके लिए उचित होगा कि हम अनुशासित ढंग से उत्पादन के तरीकों में सुधार लाएं, उन्हें अच्छा बनाएं तथा प्लांट के नजदीक रहने वाले लोगों के योगक्षेम का ध्यान रखें। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हम उत्कृष्ट तकनीक को अपना कर निकास व बहिःस्राव नियंत्रण की नई तकनीक का विकास करें"। उन्होंने यह आशा व्यक्त की कि इस चर्चा से "प्रदूषण के नियंत्रण" की दिशा में नये विचार सामने आयेंगे।

संगोष्ठी की शुरुआत में "मुख्य-भाषण" सम्मिश्र के उप मुख्य कार्यपालक श्री वाय. एस. सुब्रह्मण्यम ने "सम्मिश्र में ईंधन–समुच्चय के उत्पादन में बाहिःस्राव प्रबंधन" विषय पर दिया।

दूसरे तकनीकी सत्र के अन्तर्गत सम्मिश्र के वैज्ञानिकों के अतिरिक्त परमाणु खनिज प्रभाग, रक्षा धातुकी अनुसंधान प्रयोगशाला, बी एच ई एल, भारत डायनामिक्स, राष्ट्रीय दूर संवेदन प्राधिकरण, आई डी पी एल, एन जी आर आई, तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान से पधारे लगभग 20 वैज्ञानिकों, अभियंताओं तथा भाषाविदों ने उत्साहपूर्वक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

मुख्य कार्यपालक श्री बलराम मूर्ति ने राजभाषा समारोह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों तथा आमंत्रित वक्ताओं को पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए। पुरस्कार में हिन्दी का उत्कृष्ट साहित्य तथा शब्दकोष दिए गए। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव श्री चंद्रमोहन श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन किया। ☐

[पृष्ठ 27 का शेषांश]

है। पुस्तकों में कथा-कहानी की पुस्तकों की ही मांग रहती है। गुरूदत्त यहां पढ़े जाने वाले उपन्यासकारों में नंबर एक पर हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अमेरिका में हिंदी अपनी प्रारंभिक सीमाओं के बीच फल-फूल रही है। अभी उसकी स्थिति अमेरिका में बसे अन्य इथनिक ग्रुप्स की भाषा के समान अमेरिका की जानी-पहचानी भाषा की नहीं बन सकती है। परन्तु फिर भी गंभीर प्रयासों एवं समग्र संस्थाओं के परस्पर सहयोगात्मक रवैये से हिंदी अपना स्थान स्थिर करेगी–यह निश्चित है।

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय पश्चिमी खंड—7, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली की त्रैमासिक पत्रिका 'भाषा' मार्च 1991 से साभार) ☐

नौवहन महानिदेशालय, बंबई

"अंतरराष्ट्रीय उद्योग में हिन्दी का प्रचार"

नौवहन महानिदेशालय, बंबई, शिपिंग जैसे अंतरराष्ट्रीय उद्योग में "संघ की राजभाषा नीति" का अनुपालन सुनिश्चित कराने तथा सद्भाव एवं प्रोत्साहन के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके सरकारी कामकाज में राजभाषा के रूप में हिंदी का अधिक-से-अधिक प्रयोग बढ़ाने के लिए लगातार प्रयत्न करता आ रहा है। इसी क्रम में, महानिदेशालय के अनुभागों तथा "ख" एवं "ग" क्षेत्रों में स्थित क्रमशः 10-10 संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों में एक साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करने के लिए "नौवहन महानिदेशालय राजभाषा चल शील्ड" का शुभारम्भ किया गया।

"नौवहन महानिदेशालय राजभाषा शील्ड" दिए जाने के लिए अवधि की गणना, पिछले वर्ष के हिंदी दिवस से चालू वर्ष के हिंदी दिवस तक की होती है। दिनांक 1-10-90 से 30-9-91 तक के दौरान विभिन्न कार्यालयों/मुख्यालय के अनुभागों के हिंदी में कामकाज का मूल्यांकन के आधार पर विभागाध्यक्ष ने निम्नलिखित अनुभाग/कार्यालयों को "शील्ड" दिए जाने का अनुमोदन प्रदान किया :—

1	मुख्यालय का अनुभाग	समन्वय
2.	"ख" क्षेत्र में स्थित अधीनस्थ कार्यालय	नौवहन कार्यालय, बंबई
3.	"ग" क्षेत्र में स्थित अधीनस्थ कार्यालय	समुद्री वाणिज्य विभाग, गोआ

श्री प्रवीण सिंह, तत्कालीन नौवहन महानिदेशक ने दिनांक 23-12-91 को एक सादे एवं भव्य समारोह में संबंधित कार्यालयों/अनुभाग के प्रभारी अधिकारी को राजभाषा चल शील्ड प्रदान किया।

इस अवसर पर कैप्टन पी. एस. वर्वे भारत सरकार के नाटिकल सलाहकार (सेवा निवृत्त) तथा कैप्टन श्याम सुंदर सिंह रिवाड़ी, प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री नाटिकल एवं इंजीनियरिंग कालेज बंबई का हिन्दी की सराहनीय सेवाओं के लिए अभिनंदन किया गया। सर्वश्री एस. कालिदास राव, उप मुख्य शिप सर्वेक्षक, श्री अनंत प्रसाद एन. एस., सहायक नौवहन महानिदेशक, श्री एम. संथानम, कार्यकारी अधिकारी, श्री पी. डी., सिंह, अनुवादक ग्रेड-5 और श्री एस. एल. तांबे, गेस्टेटनर आपरेटर को भी सम्मानित किया गया।

नौवहन महानिदेशक जी ने श्री सुरेश प्रसाद चौबे, सहायक निदेशक (राजभाषा) को उनके उत्कृष्ट कार्य निष्पादन तथा महानिदेशालय और इसके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों में सरकारी कामकाज में राजभाषा (हिन्दी) का प्रयोग बढ़ाने हेतु रुपया 1000/- का नक़द पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया।

नौवहन महानिदेशक ने हिंदी में डिक्टेशन देने, टिप्पणी मसौदा लिखने, आशुलिपि, टंकण एवं अभिव्यक्ति की प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान पाने वाले निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कृत किया :—

श्री जी. आर. आहुजा, इंजीनियर एवं शिप सर्वेयर, श्री वी. के. जी. नायर, कार्यकारी अधिकारी, श्री एम. ई. हुसैन, सहायक नौवहन महानिदेशक,

हिंदी में नोटिंग-ड्राफ्ट लिखने की प्रतियोगिता :—

कुमारी वीणा सलूजा, प्रवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती शारदा एन. धीमर, प्रवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती रुखसाना ई. सोलकर, प्रवर श्रेणी लिपिक कु. रोज डिसूजा, अवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती लीला होनमुखे, प्रवर श्रेणी लिपिक।

हिन्दी में टाइप करने की प्रतियोगिता :—

श्रीमती शारदा एन. धीमर, प्रवर श्रेणी लिपिक, कुमारी रोज डिसूजा, अवर श्रेणी लिपिक, कुमारी शीलावती चव्हाण, आशुलिपिक, श्री आर. ए. पालव, अवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती एस. वी. दुबला, आशुलिपिक, श्री फतेबहादुर चौहान, अवर श्रेणी लिपिक,

हिंदी में अभिव्यक्ति की प्रतियोगिता :—

कुमारी रोज डिसूजा, अवर श्रेणी लिपिक, कुमारी वीणा सलूजा, प्रवर श्रेणी लिपिक, श्रीमती रुखसाना ई. सोलकर, प्र. श्रे. लिपिक, श्रीमती शारदा एन. धीमर, प्र. श्रे. लिपिक, श्री वी. डी. वेदपाठक, प्र. श्रे. लिपिक, श्रीमती ए. एक्स., में डिस, प्र. श्रे. लिपिक, श्री पी. एस. जांन, आशुलिपिक,

हिंदी में श्रुत लेखन प्रतियोगिता :—

कुमारी शीलावती जी. चव्हाण, आशुलिपिक, श्रीमती शारदा एन. धीमर. प्र. श्रे. लिपिक, कुमारी रोज डिसूजा, अवर श्रेणी लिपिक,

दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं बंबई से प्रकाशित होने वाले प्रमुख समाचार-पत्रों में उपर्युक्त समारोह का "कवरेज" किया। □

पंजाब नैशनल बैंक, मध्य प्रदेश अंचल, भोपाल
हिंदी में कामकाज का लेखा-जोखा

1. 91% पत्राचार हिन्दी में किया जा रहा है।

2. 80% साधारण तार हिंदी में भेजे जाते हैं तथा अंचल कार्यालय से शत-प्रतिशत तार हिन्दी में भेजे जाते हैं।

3. हिन्दी टंकण यंत्र कुल टंकण यंत्रों का 50% है।

4. हिन्दी टंकक 72% हैं। जबलपुर में यह स्थिति शत-प्रतिशत और अंचल कार्यालय में 77% है।

5. अंचल कार्यालय, भोपाल में हिन्दी आशुलिपि एवं टंकण प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया है। इस केन्द्र में पिछले वर्ष 10 अंग्रेजी टंककों को हिन्दी टंकण में प्रशिक्षित किया गया था। इस वर्ष अभी तक 3 टंकक प्रशिक्षित कर लिए गए हैं एवं अंचल तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के 6 अंग्रेजी टंकक तथा 5 अंग्रेजी आशुलिपिक इस केन्द्र में प्रशिक्षणाधीन हैं।

6. अंचल में हिन्दी आशुलिपिकों का प्रतिशत 45 है।

7. अंचल कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पुस्तकालय हैं एवं इनमें प्रतिवर्ष क्रमशः 3000 और 2500 रुपये की हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकें खरीदी जाती हैं।

8. प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय एवं अंचल कार्यालय में प्रतिमाह 6 हिन्दी पत्रिकाएं/समाचार पत्र की खरीद भी की जाती हैं।

9. अंचल प्रशिक्षण केन्द्र, अंचल कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय अपने-अपने स्तर पर स्टाफ सदस्यों के दैनिक प्रयोग में काम आने वाली सहायक सामग्री एवं पुस्तकों आदि को हिन्दी में तैयार कर रहे हैं। अंचल के सभी स्टाफ सदस्यों को बैंकिंग शब्दावली एवं राजभाषा निर्देशिका नामक हिन्दी पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं जो कि उनके दैनिक कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में काफी लाभप्रद सिद्ध हुई हैं।

10. सभी राजभाषा/नामित राजभाषा अधिकारी, क्षेत्रीय प्रबन्धक एवम् अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण शाखा निरीक्षण के समय सम्बद्ध शाखा में राजभाषा संबंधी निरीक्षण भी करते हैं इससे राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में काफी अधिक वृद्धि संभव हो गई है।

11. अंचल कार्यालय में शाखाओं में हिन्दी के प्रचार-प्रसार को जीवन्त बनाए रखने के लिए शहरी एवं अर्द्ध शहरी शाखाओं में राजभाषा प्रेरक नामित किए हुए हैं।

12. वर्ष 1991 के दौरान प्रशिक्षण केन्द्र में भोपाल स्थित सभी बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिये सामान्य बैंकिंग पर 2 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। इसी प्रकार अंचल के हिन्दीतर भाषियों के लिये प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

13. राज्य के बस्तर, राजनांदगांव, दुर्ग, छिंदवाड़ा, दमोह, नरसिंहपुर और सागर जिलों को हिन्दी जिला घोषित किया जा चुका है। अंचल की सभी शाखाएं नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित हैं।

14. अंचल कार्यालय एवं शाखा मारवाड़ी रोड, भोपाल में द्विभाषिक टेलेक्स मशीन स्थापित करा ली गई हैं एवं अन्य कार्यालयों के लिये कार्रवाई जारी है।

15. पिछले वर्ष अंचल में 24 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें कुल 527 स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया। इस वर्ष भी अप्रैल से सितम्बर, 91 की छमाही में 15 कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनमें 337 स्टाफ सदस्यों को प्रशिक्षित कर लिया गया है।

16. अंचल प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल में प्रशिक्षार्थियों को पूर्णतया हिन्दी में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। केन्द्र में प्रशिक्षण देने की सभी नवीनतम तकनीकें साधन उपलब्ध हैं।

17. सितम्बर, 91 माह को हिन्दी माह के रूप में माना गया। इस दौरान स्टाफ में हिन्दी प्रयोग के प्रति रुचि जागृत करने हेतु विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। अंचल कार्यालय में इस दौरान आयोजित कार्यक्रम में चारों क्षेत्रों की एक-एक शाखा को सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कार्य निष्पादन हेतु अंचल कार्यालय राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। अंचल के 11 स्टाफ सदस्यों को हिन्दी में अधिकतम कार्य करने तथा अन्य स्टाफ सदस्यों को प्रेरित करने के लिये सम्मानित किया गया।

18. अंचल प्रबन्धक ने संकल्प लिया कि वे आज से सभी पत्रों पर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में ही किया करेंगे और ऐसा किया भी जा रहा है।

19. मध्य प्रदेश अंचल में बैंक में हिन्दी कागजात बढ़ाने पर मध्य प्रदेश से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल की ओर से 21-09-1991 को आयोजित एक कार्यक्रम में अंचल प्रबन्धक, श्री के. एस. शेखर का सम्मान मध्यप्रदेश के महामहिम राज्यपाल कुंवर महमूद अली खां ने किया। प्रदेश के मुख्य मंत्री, श्री सुन्दरलाल पटवा भी उपस्थित थे।

20. प्रधान कार्यालय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत अंचल कार्यालय, भोपाल को इसमें अखिल भारतीय स्तर पर द्वितीय तथा अंचल प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है।

21. अंचल कार्यालय, भोपाल को पिछले 3 वर्षों से लगातार बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भोपाल से श्रेष्ठ हिन्दी कार्य निष्पादन के लिये पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। □

हिंदी के पाठक बढ़ रहे हैं, किताबों की नहीं

हिंदी के पाठक बढ़ रहे हैं, हिंदी का समाज फैल रहा है, हिंदी भाषा का फलक विस्तृत हो रहा है, हिंदी की संस्कृति, खासकर रंगमंच और सिनेमा को विस्तार मिल रहा है, फिर भी हिंदी की किताबें क्यों उपेक्षित हालत में पड़ी हुई हैं ? यह सवाल आज हर हिंदी भाषी को कचोट रहा है।

चौथे राष्ट्रीय पाठक सर्वेक्षण के नतीजे बताते हैं कि हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की पाठक-संख्या निरंतर बढ़ रही है, लेकिन दूसरी तरफ लगभग हर महानगर में अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं के पाठक घट रहे हैं। दिल्ली महानगर में अंग्रेजी के पाठक पिछले दस साल में 4.5% घटे हैं। इसी तरह मद्रास में अंग्रेजी के 2.2% पाठक घटे हैं। जबकि दिल्ली में हिंदी पाठकों की संख्या में कम से कम 10% इजाफा हुआ है। अकेले 'नवभारत टाइम्स' के 16% पाठक बढ़े हैं जबकि इस बीच दिल्ली व आसपास के शहरों में कई हिंदी दैनिक व साप्ताहिक अखबार छपने शुरू हुए हैं। उन्होंने जो अपने नए पाठक बनाए हैं, वे अलग हैं।

हिंदी भाषी समाज में अखबार पढ़ने के रुझान में हुई इस वृद्धि का एक बड़ा कारण यह रहा है कि निम्न-वर्ग से निम्न-मध्य तथा मध्य-वर्ग की ओर बड़ी संख्या में लोगों ने कदम बढ़ाए हैं। हिंदीभाषी पाठकों में जो जो वृद्धि हुई है, उसमें 2000 रुपए से अधिक की मासिक आय वाले लोगों की संख्या बेतहाशा बढ़ी है।

(नवभारत टाइम्स—हिन्दी दैनिक 12-1-92 से साभार)

☐

यूनियन बैंक में हिंदी

"यूनियन बैंक की राजस्थान, हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश की सभी शाखाएं आगामी गणतंत्र दिवस से अपना सारा कामकाज हिन्दी में करेंगी। यह घोषणा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक एस.पी. तलवार ने बंबई में आयोजित बैंक के 11वें अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारियों के सम्मेलन में की।

बैंक के उपप्रबंधक (राजभाषा) डी.आर. धारीवाल ने बताया कि इसके पूर्व 1 अप्रैल, 89 से मध्य प्रदेश स्थित बैंक की समस्त शाखाएं हिन्दी शाखाएं घोषित की जा चुकी हैं। चार हिन्दी भाषी राज्यों की समस्त शाखाओं को हिन्दी शाखाएं घोषित करने में यूनियन बैंक पहला राष्ट्रीयकृत बैंक है। अब इन चार राज्यों में बैंक की समस्त शाखाएं हिन्दी में कार्य करेंगी। इस तरह के निर्देश इन चार राज्यों में स्थित बैंक की सभी शाखाओं को पहले भी जारी किए जा चुके हैं।"

☐

[पृष्ठ 59 का शेष]

परमाणु ऊर्जा विभाग कोटा से श्री सुनील सरवाही, भविष्य निधि कार्यालय, भोपाल से डा० चंद्रा सायता, ग्रे आयरन फांउड्री से श्री के०एन० शुक्ल भारतीय मानक ब्यूरो, भोपाल के श्री एस०पी० अरोड़ा आदि ने अपने कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में आनेवाली कठिनाइयों का जिक्र किया, जिनके बारे में श्री पटैरया ने समुचित समाधान सुझाए।

भारतीय जीवन बीमा निगम, जबलपुर मंडल के श्री देवेंद्र सिंह पासी ने बताया कि उनके मंडल में भर्ती परीक्षाओं में 50 प्रतिशत प्रश्नपत्र हिन्दी में होते थे ताकि हिन्दी भाषी लोग सेवा में आ सकें। उनके मंडल द्वारा हिन्दी में पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है।

श्री पटैरया ने बताया कि हिन्दी अधिकारियों से हिन्दी संबंधी कार्य ही कराने के बारे में राजभाषा विभाग द्वारा निदेश दिए गए थे। हिन्दी कार्य संबंधी पदों को भरने के लिए यदि कोई कठिनाई हो तो भोपाल क्षेत्रीय कार्यालय के माध्यम से कार्रवाई करें। राजभाषा अधिकारियों के पदोन्नति के अवसर जुटाने के लिए राजभाषा विभाग ने सभी विभागों को निदेश दिया है और इस विषय में प्रगति भी हो रही है।

विशिष्ट अतिथि श्री होया ने संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए श्री चंद्र गोपाल शर्मा तथा प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे हिन्दीतर भाषी होते हुए भी इस संगोष्ठी से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं और भविष्य में वे अपना कार्य हिन्दी में ही करेंगे।

राजभाषा विभाग के अनुसंधान अधिकारी श्री आर० जे० यादव ने आभार व्यक्त किया। ☐

हिंदी दिवस समारोह

आयुध निर्माणी वरणगांव

वर्ष 1991-92 के वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम में निहित निर्देशानुसार गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में निर्माणी में दिनांक 9 सितम्बर, 1991 से 14 सितम्बर, 1991 तक "हिन्दी सप्ताह" मनाया गया।

दिनांक 9-9-91 को "हिन्दी सप्ताह" के उद्घाटन के समय स्वागत भाषण करते हुए श्री वी यू जाधव, कार्य प्रबन्धक ने कहा कि "हिन्दी सप्ताह" जैसे कार्यक्रमों से निर्माणी में हिन्दी प्रेमियों की संख्या बढ़ रही है और अधिकाधिक कर्मचारी अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने हेतु प्रेरित हो रहे हैं। इसके उपरान्त श्री आर. सुन्दरम, महाप्रबन्धक ने दीप प्रज्ज्वलित करके हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन किया तथा नारा प्रतियोगिता के अन्तर्गत सर्वश्रेष्ठ घोषित हिन्दी नारे का विमोचन भी किया। सप्ताह के प्रतिदिन निर्माणी के भीतर सभाकक्ष में कहानी, नारा, कविता पाठ, हिन्दी निबन्ध, हिन्दी टाईपिंग, समय स्फूर्त भाषण, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, चुटकुला, वादविवाद, प्रश्नमंजुषा आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। भारी संख्या में तथा उत्साह के साथ कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया।

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह का समापन समारोह किया गया। समारोह में हिन्दी परिषद के संयुक्त सचिव श्री वी डी शिपी ने स्वागत भाषण किया तथा श्री आर सुन्दरम्, महाप्रबन्धक ने हिन्दी पत्रिका "राजभाषा प्रगति" के चतुर्थ अंक का विमोचन किया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री जी. खेड़ा ने पत्रिका की एक प्रति महाप्रबन्धक को भेंट की। श्री टी ओ जान ने विचार व्यक्त किए। 61 प्रतियोगियों को श्री आर सुन्दरम्, महाप्रबन्धक ने नकद पुरस्कार वितरित किए। हिन्दी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले सफल कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

श्री आर सुन्दरम् ने हिन्दी को मजबूत बनाने का आवाहन किया और कहा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को बढ़ाने के लिए समर्पित भावना से कार्य करने की आवश्यकता हैं। हिन्दी का उपयोग केवल कार्यालयीन कार्य करने के लिए नहीं बल्कि देश की उन्नति के लिए हैं। श्री वी एस दांडेकर ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध कवि श्री वी वी के शर्मा "राही" ने किया।

ग्रेफ सेंटर दिघी कैम्प, पुणे-15

14 सितम्बर, 91 को हिन्दी दिवस तथा 14 सितम्बर से 20 सितम्बर, 91 तक संयुक्त रूप से हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया। 14 सितम्बर, 91 को समारोह का शुभारंभ कर्नल वी.के. ओबराय, कमांडर, ग्रेफ सेंटर ने दीप प्रज्जवलित करके किया।

उन्होंने उद्घाटन भाषण में हिन्दी के प्रयोग पर अत्यधिक बल दिया। उन्होंने कहा कि हालांकि हिन्दी हमारे देश के लगभग हर क्षेत्र में बोली व समझी जाती है, परन्तु इसका जितना विकास होना चाहिए था वह नहीं हुआ है। हिन्दी के विकास के लिए अधिकारियों को चाहिए कि वह कर्मचारियों को अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित करें। हिन्दी के विकास के लिए आवश्यक है कि हम हिन्दी के प्रति अपने अन्दर पनपी हीन भावना को समाप्त करें तथा हिन्दी के प्रति झिझक भी दूर करें।

हिन्दी सप्ताह के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग-अलग की गई :—

(अ) हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता, (ब) हिन्दी भाषण प्रतियोगिता, (स) हिन्दी नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, (द) हिन्दी टंकण प्रतियोगिता।

इस अवसर पर एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। उक्त कार्यशाला में हिन्दी शिक्षण, योजना, पुणे के हिन्दी प्राध्यापक श्री आर पी गौतम ने राजभाषा के संबंध में सरकार की नीतियों से अवगत कराया तथा अभ्यास भी कराया।

सप्ताह के दौरान ग्रेफ सेंटर एवं रिकार्ड में लगभग 70 प्रतिशत कार्य हिन्दी में हुआ तथा हिन्दी के संबंध में विभिन्न महापुरुषों के विचारों के पोस्टर बनवाकर जगह-जगह लगाए गए एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर बैनर भी लगाए गए।

20 सितम्बर, 91 को हिन्दी सप्ताह के समापन समारोह में उक्त सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को "क", "ख" तथा "ग" क्षेत्र के आधार पर अलग-अलग पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कार्मिकों को प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किए गए।

हिंदी निबंध

1. श्री गिरीश चन्द्र, 2. श्री पूरन सिंह, 3. श्री एच.पी. पाण्डेय, श्री अशोक मधुकर महामुनि, श्री के.एस.राव, श्री जोसेफ कुट्टी, श्री वी.वी. पिल्लै।

हिंदी भाषण

1. श्री पूरन सिंह, 2. श्री हरि ओम, 3. श्री एच०पी० पाण्डेय, श्री के.एस.एस. राव, श्री जोसेफ कुट्टी।

हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग

1. श्री पूरन सिंह, 2. श्री हरिओम, 3. श्री अर्जुन शर्मा।

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाहर्तालय, नागपुर

दिनांक 16-9-91 से दिनांक 20-9-91 तक हिन्दी सप्ताह समारोह में 5 प्रतियोगिताएं की गई। इन प्रतियोगिताओं में मुख्यालय तथा प्रत्येक मंडल कार्यालय का प्रतिनिधित्व मिल सके। इसलिये इन प्रतियोगिताओं को दो बार किया गया। पहली अर्थात् प्रवेश प्रतियोगिता इसे प्रत्येक कार्यालय स्तर पर किया गया और प्रत्येक प्रतियोगिता से दो-दो कर्मचारियों को अर्थात् प्रथम अथवा द्वितीय को अन्तिम प्रतियोगिता के लिये चुना गया।

प्रवेश प्रतियोगिता मुख्यालय कार्यालय तथा प्रत्येक मंडल कार्यालय में दिनांक 3-9-91 से दिनांक 5-9-91 तक आयोजित की गई और दिनांक 10-9-91 तक अन्तिम प्रतियोगिता के लिये कर्मचारियों की सूची तैयार कर ली गयी। प्रत्येक प्रतियोगिता के लिये प्रश्नपत्र, उत्तर पत्र तैयार करना एवं प्रतियोगिताओं को समय पर आयोजित करना आदि सभी कार्य हिन्दी अनुभाग द्वारा किया गया जिसमें कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री राजू रतनसिंह गुलडू एवं श्री डब्ल्यू.एम. कुंदेलवार, प्रवर श्रेणी लिपिक ने सराहनीय कार्य किया।

दिनांक 16-9-91 से समारोह का उद्घाटन हुआ और हिन्दी प्रयोग की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। नागपुर शहर के माने हुए लेखक एवं महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी से पुरस्कृत श्री रज्जन त्रिवेदी मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। श्रीमती एस गोलवालकर और उनके साथियों ने सरस्वती वंदना की।

श्री रज्जन ने हिन्दी को अति प्राचीन एवं भारतीय संस्कृति की भाषा बताया और कहा कि नागपुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा इस समाहर्तालय को दिनांक 30 अप्रैल 1991 को राजभाषा शील्ड प्रदान की गई है जो इस समाहर्तालय में राजभाषा नीति के कुशल कार्यान्वयन को प्रमाणित करती हैं।

श्री कृष्णचन्द्र ममगांई, समाहर्ता ने कहा कि जहां तक देश में भाषाई एकता का प्रश्न है और जहां तक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्तर पर एक भाषा की बात है हिन्दी का कोई विकल्प नहीं है। हिन्दी को आना ही है, हां हो सकता है इसमें थोड़ा समय लग जाए। अतः हमें हर स्तर पर प्रयत्न करना होगा कि हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार हो।

समारोह का समापन श्री डी सी दिधे, सहायक समाहर्ता एवं अध्यक्ष प्रवन्ध समिति के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। दिनांक 16-9-91 को दोपहर के बाद हिन्दी निबन्ध एवं हिन्दी टिप्पण एवं आलेख प्रतियोगिताएं हुई।

निबंध प्रतियोगिता :

1. श्रीमती गीता आनन्द, 2. श्री प्रमोद वाकले, 3. श्री आर.पी. कुंभारे।

हिन्दी टिप्पणी एवं आलेखन प्रतियोगिता

1. श्री बी.बी. मेश्राम, 2. श्री गिरीश गोले, 3. श्री ए.जी अन्सारी।

हिन्दी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता :—

1. कुमारी सी. भदमलता राव, 2. श्री जे. डेविड आसरा, 3. श्री राजेश दानी।

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता :—

1. श्री पी.पी. पारखी, 2. श्री सतीश जोशी, 3. श्री संदीप देशमुख।

हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता :—

1. श्री गिरीश गोले, 2. श्री राजेश वी. शंभरकर, 3. श्री प्रदीप कुमार बन्सोडे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम :—

1. श्री भरत जाधव, वेयरर, 2. श्री एस.एस. लोखडे, 3. श्री पी.पी. पारखी, 4. मास्टर पूर्व पाचपोर, 5. मास्टर के.पी. मदने, 6. मास्टर प्रवन कुमार, 7. श्री महेश दानी, 8. श्री मोनेश रुघवानी।

हिन्दी सप्ताह समारोह के समापन के अवसर पर श्री द्वारकादास जी वेद, प्रधान मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा एवं सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली तथा समाहर्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रेक्षक, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे श्री वेद ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सबसे बड़ी बाधा हमारी आधुनिक मानसिकता, खासकर अंग्रेजी सभ्यता से प्रभावित मानसिकता को बताया। उनके कहने के अनुसार विदेशी सभ्यता और भाषा से प्रभावित मानसिकता को बदलना जरूरी है तभी हम अपनी सभ्यता और भाषा से जुड़ेंगे। इस अवसर पर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं खासतौर पर "हम चालीस" पर भी उन्होंने व्यापक प्रकाश डाला।

समाहर्ता ने कहा कि हिन्दी सप्ताह को इतना व्यापक स्तर पर मनाने के पीछे हमारा उद्देश्य यही था कि इस अवसर पर महान प्रतिभाएं हमारे बीच उपस्थित हो जिससे हमारे अधिकारी/कर्मचारी उनका लाभ उठा सकें।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनु) कार्यालय पुणे

मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनुसंधान) और केन्द्रीय सचिवालय, हिंदी परिषद भारत मौसम विज्ञान शाखा पुणे द्वारा 9–16 सितम्बर, 1991 तक हिन्दी सप्ताह समारोह मनाया गया। जिसमें 13 को हिन्दी तकनीकी संगोष्ठी भी की गई। 16 सितम्बर 1991 हिन्दी दिवस मनाया गया। समारोह का शुभारंभ वन्दनागीत से हुआ। हिन्दी निबंध (वाद विवाद) कविता (लोकगीत) गजल और प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्री माण्डे पुणे मौसम कार्यालय के एक कर्मचारी द्वारा लिखित हिन्दी एकांकी नाटक "एक दिन अचानक" का मंचन भी किया गया। समारोह की अध्यक्षता डा एच एन श्री वास्तव ने की, जो मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (अनुसंधान) हैं। डा वा ह जोशी, फर्युसन कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष और डा ए पी पुजारी, प्रवक्ता मुख्य अतिथि थे।

केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, मौसम कार्यालय पुणे शाखा के अध्यक्ष श्री व्ही नटराजन ने सबका स्वागत और अभिनन्दन किया। हिन्दी परिषद के मंत्री श्री वंशराज मिश्रा ने हिन्दी परिषद की गतिविधियों पर प्रकाश डाला एवं कार्य संचालन किया। सभाध्यक्ष डा श्रीवास्तव ने हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा बनाए रखने का अनुरोध किया। डा. जोशी ने कार्यालय में हिन्दी की प्रयोजन मूलकता की महत्ता को बताया। डा. पुजारी ने हिन्दी के मनो-विनोद कार्यक्रम के साथ हिन्दी की प्रयोजन मूलकता को बनाए रखने का प्रयत्न करने के लिए कहा। श्री नूतन दास, मौसम विज्ञान के अपर महानिदेशक (कृषि) ने प्रतियोगिताओं को पुरस्कार प्रदान किए। डा. श्रीकान्त दीक्षित ने सभी को हार्दिक धन्यवाद दिया।

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल (मणिपुर)

16 सितम्बर 1991 को हिन्दी दिवस/सप्ताह क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केन्द्र के संयुक्त निदेशक श्री एम.के.आर. नोमानी ने की। इस अवसर पर अध्यक्ष ने अपने भाषण में हिन्दी दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 14 सितम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा में हिन्दी भाषा का हिन्दी दिवस के रूप में दर्जा दिया गया था। जिसकी स्मृति में हम सब लोग संपूर्ण भारत में राजभाषा हिन्दी दिवस इसी दिन मानते हैं, तथा उन्होंने कहा कि भारत की सभी भाषायें साहित्यक संस्कृति की धरोहर हैं। हम सब लोगों का कर्तव्य है कि इस भाषा की उन्नति के लिए अधिक से कार्य हिन्दी में करें। "राजभाषा हिन्दी ही क्यों" विषय पर उपनिदेशक श्री पी.के. दास, ने दिनांक 17 सितम्बर से 19 सितम्बर 1991 तक हिन्दी शब्दावली प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता एवं पत्र लेखन प्रतियोगिताएं की गई। प्रतियोगिताओं में अलग-अलग प्रकार के विषय दिए गए 20 सितम्बर 1991 के दिन हिन्दी दिवस/सप्ताह समापन-समारोह क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, इम्फाल में धूम-धाम के साथ मनाया गया।

16 सितम्बर 1991 से 20 सितम्बर 1991 तक आयोजित हिन्दी दिवस/सप्ताह के अवसर पर निम्नलिखित कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

शब्दावली प्रतियोगिता :—

1. डा. आर.के. पाण्डेय, व.अ.अ. 2. श्री प्रियोकुमार मीतै, क्षेत्र सहायक 3. श्री पी.एन. मिश्रा, व.अ.अ.

1. श्री एम.के. घोष, व.अ.अ. 2. श्री टी. लुनिवा, क्षेत्र सहायक 3. श्रीमती विद्यापति देवी, व.अ.स. 4. श्री पी. रंजीत सिंह, नि.श्रे.लि.

निबंध प्रतियोगिता :—

1. पी.एन. मिश्रा, व.अ.अ. 2. श्री केशवराम मौर्या, व.अ.स. 3. श्री प्रियोकुमार, मीतै, क्षेत्र सहायक

1. श्री टी. लुनिवा, क्षेत्र सहायक 2. श्रीमती विद्यापति देवी, व.अ.स. 3. श्री पी. रंजीत सिंह, नि.श्रे.लि. 4. डा. राजेन्द्र सिंह, व.अ.अ.

पत्र लेखन प्रतियोगिता :—

1. श्री केशवराम मौर्या, व.अ.स. 2. श्री यू.के. पाल, व. क्षे.स. 3. श्री प्रियोकुमार मीतै, क्षेत्र सहायक

1. श्री शांतिकुमार मैतै, क्षेत्र सहायक 2. श्री एम.के. घोष, व.अ.अ. 3. श्री विजय मैतै, क्षेत्र सहायक 4. श्री टी. लुनिवा, क्षेत्र सहायक

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, उत्तर पूर्वी पर्वतीय कृषि अनुसंधान क्षेत्र उमरोई रोड, बड़ा पानी, मेघालय -793103

बड़ा पानी स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के कृषि अनुसंधान संस्थान में दिनांक 18–9–91 को हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन समारोह सोल्लास सम्पन्न हुआ।

हिन्दी सप्ताह के आयोजन के साथ राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित एक मनमोहक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें महापुरुषों व राष्ट्रीय नेताओं की उद्‌गार भरी अमर वाणियां विशेष रूप से प्रदर्शित की गई थीं। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. रघुनन्दन प्रसाद की कर्मचारियों के नाम अपील को व्यापक रूप से प्रसारित किया गया।

समारोह स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय, नेपा के छात्र-छात्राओं के समूह गान से आरम्भ हुआ जिनके समवेत स्वर ने सबका मन मोह लिया। इसके उपरांत प्रभारी निदेशक डॉ. रवीन्द्रनाथ वर्मा ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया था, संविधान-सभा के इस ऐतिहासिक निर्णय की पावन स्मृति में हम हिन्दी दिवस/सप्ताह मनाते हैं और केन्द्रीय सरकारी प्रतिष्ठानों में हिन्दी की प्रगति की समीक्षा करते हैं तथा संविधान-निर्माताओं के सपनों को साकार रूप देने का दृढ़ संकल्प करते हैं। आइये, हम अपने महापुरुषों की भावनाओं के अनुरूप काम करें और उनके दिशा-निर्देश का अनुसरण करें।

वरिष्ठ व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सत्यशरण घोष ने दीप प्रज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। डा. घोष ने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने का आह्वान किया।

संस्थान में हिंदी के प्रगामी प्रयोग के बारे में सर्वश्री ज्योत्स्नेन्द्र सिंह, डॉ. विजेन्द्र सिंह, श्री विजयलाल मीना, डॉ. गौरचंद्र मुण्डा, श्री अरूणाव पटनायक, चिकित्सा अधिकारी, डॉ. विष्णु प्रसाद चक्रवर्ती और ई.एल. वालंग ने उद्‌गार व्यक्त किए।

दिनांक 24–9–91 को रंगारंग कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण के उल्लासमय वातावरण में बड़ा पानी स्थित उत्तर पूर्वी पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, में हिन्दी सप्ताह का समापन हुआ।

समारोह स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय, नेपा के छात्रों के स्वागत-गान से आरम्भ हुआ, इसके बाद उनके द्वारा और दो समूह-गान प्रस्तुत किए गए। उनकी प्रस्तुति आकर्षण का मुख्य केन्द्र बिन्दु रही।

मुख्य अतिथि श्री जी.सी. रैंगर, निदेशक (नेपा) ने कहा कि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए एक लिंगुआ फ्रैंका (Lingua—Franca) संपर्क भाषा की आवश्यकता होती है, इस दृष्टि से देश के अधिकतर भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही सच्चे अर्थों में हमारी संपर्क भाषा और राजभाषा व राष्ट्रभाषा की सच्ची अधिकारिणी है तथा भावनात्मक एकता के लिए यह आवश्यक भी है क्योंकि जब तक भावनात्मक एकता नहीं होती तब तक राष्ट्र का एकीकरण भी संभव नहीं होता। उन्होंने कहा कि किसी भी देश में विदेशी भाषा हमेशा के लिए नहीं रह सकती। देश के हर भाग में आज विभिन्न भाषा भाषी लोग हिन्दी में संपर्क स्थापित करते हैं। आज जब हम बाजार में जाते हैं तो कितना पैसा कितना दाम, कैसी सब्जी कैसा भाव पूछताछ करते हुए सब हिन्दी में ही वार्ता करते हैं।

संस्थान के निदेशक डॉ. रघुनन्दन प्रसाद ने राष्ट्रभाषा के पद पर हिन्दी को स्थापित करने पर बल देते हुए कहा कि भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा था कि "मां को मां कहने में कोई शर्म की बात नहीं है।" उन्होंने कहा कि संस्थान के कर्मचारी प्रायः हिन्दी में बात करते हैं।

आकाशवाणी, शिलांग, पूर्वोत्तर सेवा के हिंदी उद्‌घोषक अकेला भाई ने कहा कि हिन्दी के विकास का दायित्व हम सभी भारतीयों का है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज पूरे देश में हिन्दी बोली और समझी जाती है और देश में आम तौर पर संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने इस क्षेत्र में अंग्रेजी माध्यमों के शिक्षा संस्थानों की बढ़ती संख्या पर चिंता व्यक्त की।

मुख्य अतिथि ने हिन्दी सप्ताह के दौरान हुई हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी लेख प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता एवं हिन्दी वाक जैसी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।

विजेता प्रतियोगियों की सूचीः

हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

श्री शारदा नन्द वैठा, श्री विजयलाल मीना, श्री कुल बहादुर गिरी, श्री सत्यरंजन बरूआ, श्री निरंजन नस्कर, श्री प्रबोध चन्द्र शर्मा

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

श्री ध्रुवेन्द्र कुमार, श्री ओंकारनाथ तिवारी, श्री महेश कुमार, श्री प्रबोध कुमार चन्द्र शर्मा, श्री निरंजन नस्कर

हिन्दी वाक प्रतियोगिता

श्री अरूनाव पट्टनायक, श्रीमती अरूणिमा बोरा, श्री निखिल राय, श्री ई.एल. वालंग, श्री सुखेंन्दु होर, श्री सपन करमजी

वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी लेख प्रतियोगिता

डा. शिवगोविन्द गुप्ता, श्री विजयलाल मीना, डा. रामचन्द्र, डा. बिजेन्द्र सिंह, डा. विनय महाजन

पुरस्कार वितरण के पश्चात् अनेक प्रतियोगियों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व सुझाव प्रस्तुत किए जिनमें सर्वश्री अरूणाव पट्‌नायक, परिमल घोष, इ.एल. वालंग, एस.एच. नौम्भ्री एवं श्रीमती अरूणिमा बोरा प्रमुख थे ।

वक्ताओं ने इस समारोह की सराहना करते हुए कहा कि इससे हिन्दी के प्रति सबका अनुराग बढ़ा है । जिसने सबको एक भावनात्मक सूत्र में पिरो दिया है । इस बात पर सबकी सहमति थी कि राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित किए जाने वाले प्रावधानों/प्रोत्साहनों से सम्बन्धित जानकारी न रहने के कारण ही इसका अपेक्षित प्रयोग नहीं हो रहा है ।

श्री पटनायक ने कहा कि आज हिन्दी सप्ताह का समापन नहीं बल्कि इस संस्थान में सच्चे अर्थों में आज से हिन्दी के प्रयोग की शुरुआत हुई है ।

तत्पश्चात् सभा-भवन में खचाखच भरी भीड़ के बीच असम क्रीस्ती केन्द्र, शिलांग के कलाकारों द्वारा बिहू गीत व नृत्य की प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। उनकी आकर्षक प्रस्तुति और नयनाभिराम नृत्य को देख दर्शक झूम उठे और ऐसा लगा कि पूर्वांचल में हिन्दी की गूंज ने हिन्दी के प्रति भ्रान्तिपूर्ण धारणा को तोड़ डाला और हिन्दी की महत्ता के सामूहिक एहसास से ऐसी समा बंधी कि समूचा वातावरण हिन्दीमय हो गया । समारोह की पराकाष्ठा तो तब पहुंची जब संचालन कर रहे संस्थान के हिंदी अधिकारी श्री प्रभु प्रसाद साव ने मुख्य अतिथि/उपस्थित जनसमूह, छात्रों बिहू नृत्य के कलाकारों व अपने सहयोगियों को धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में निदेशक के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया । कविवर बच्चन की 'मधुशाला' की एक रूबाई भेंट की:—

"मृदु भावों के अंगुरों की आज बना लाया हाला
प्रियतम अपने ही हाथों से आज पिलाऊंगा प्याला,
पहले भोग लगा लूं तेरा फिर प्रसाद जंग पायेगा,
सबसे पहले तेरा स्वागत करती हिंदी कार्यशाला" ।

मदुरै मंडल दक्षिण रेलवे

हिन्दी सप्ताह और हिन्दी पुस्तकालय दिवस समारोह दिनांक 13-12-1991 को मनाया गया । दिनांक 9-12-91 को शुरू हुए सप्ताह के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, अधिकारियों, कर्मचारियों और कर्मचारियों की संतानों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं, राजभाषा संगोष्ठी, बहु भाषा कवि सम्मेलन, राजभाषा प्रदर्शनी जैसे विविध प्रकार के कार्यक्रम किए गए ।

श्री एस. गोपालकृष्णन मंडल रेल प्रबंधक (दक्षिण रेलवे मदुरै) ने अध्यक्षासन ग्रहण किया ।

श्री एम. वी. सुब्बुरामन, हिन्दी विभागाध्यक्ष (अमेरिकन कालेज, मदुरै) मुख्य अतिथि थे ।

श्रीमती पदमिनी गोपालकृष्णन, अध्यक्षा, दक्षिण रेलवे महिला संगठन, मदुरै ने कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में की गई सेवाओं के लिए तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में दिलचस्पी दिखाई कर्मचारियों और समारोह के सिलसिले में चलाई गई विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए ।

श्री एस. गोपालकृष्णन, ने कहा कि हिन्दी के व्यापक कार्यक्षेत्र और साहित्य के कारण हरेक को हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है ।

श्री एम. वी. सुब्बुरामन ने कहा कि हिन्दी एक सरल भाषा है जिसे आसानी से पढ़ा और लिखा जा सकता है । सरल, मामूली बोलचाल की हिन्दी से हम दूरदर्शन के कार्यक्रम, सिनेमा आदि मनोविनोद के विषयों को समझ सकते हैं ।

समूचे भारत के लोगों से मिल सकते हैं, संपर्क कर सकते है और राजभाषा हिन्दी को आसानी से सीखने में भी इससे सहायता होगी ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत एक लघु हिन्दी नाटक और "लाइट म्यूजिक" आदि का प्रबंध किया गया । नाटक का उद्देश्य लोगों के "विशेष रूप से बेकार व्यक्तियों के मन से निराशा से उत्पन्न आतंकवाद और बल प्रयोग की प्रवृत्ति को मिटा देने पर जोर देने के संबंध में था ।"

श्री मोहन ए. मेनोन, मंडल कार्मिक अधिकारी, ने सभी का स्वागत किया । श्री पी. शिवशंकरन राजभाषा अधिकारी ने रिपोर्ट प्रस्तुत की और श्री एन. वी. जयराम, राजभाषा अधीक्षक ने धन्यवाद समपर्ण किया ।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर

दिनांक 9 दिसम्बर, 1991 से 13 दिसम्बर, 1991 तक आयोजित होने वाले हिन्दी सप्ताह का उद्‌घाटन समारोह दिनांक 9 दिसम्बर, 1991 को हुआ । कार्यक्रम का उद्‌घाटन श्री हरगोविंदजी चौरसे, संगठन मंत्री (विदर्भ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मोर भवन, नागपुर) ने किया ।

श्री चौरसे ने हिन्दी को तुलसीदास, कबीरजी, गांधीजी की भाषा बताते हुए बताया कि वह हमारी संस्कृति और गरिमा की प्रतीक है ।

श्री राजकुमार बारापात्र, उपनिदेशक, (प्रभारी) लघु उद्योग सेवा संस्थान, नागपुर) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की । उन्होंने कहा कि जिस दिन हिन्दी देश के कोने-कोने में राजभाषा के रूप में अपनाई जाएगी, उसी दिन से हिन्दी सप्ताह के आयोजन की आवश्यकता नहीं रहेगी । उन्होंने हिन्दी सप्ताह पर यह शपथ लेने को कहा कि हमें देश की भाषाओं के विकास में लगना चाहिए तथा सारा सरकारी कामकाज हिन्दी में प्रारम्भ कर देना चाहिए ।

श्री टी. सी. परमार, सहायक निदेशक (रसा०) एवं राजभाषा अधिकारी ने कार्यक्रम का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया कि हिन्दी भाषा जनता की भाषा है और इससे

सरकारी नीतियों को जनता तक पहुंचा सकती है और इससे जनता और प्रशासन के बीच की दूरी का काम सरलता से करने में सहायक होती हैं। कार्यक्रम में श्री सतीष दुबे, एवं श्री शैलेन्द्र जैन, ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन कार्यालय के श्री वसंता दाढे ने तथा आभार प्रदर्शन डा. पी. के. एस. राठौर ने किया।

दिनांक 10 दिसम्बर, व 11 दिसम्बर, 91 को हिन्दी सप्ताह के मध्य हिन्दी वाक् व हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिताओं में श्री सुधीर गौतम, श्रीमती विद्या रालेगांवकर, श्री वी. आर. पुरी, श्री विजय आवले, एवं श्री बी. एस. इंगले विजयी रहे। विजयी प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार श्री राजकुमार बारापात्र उपनिदेशक (प्रभारी) ने दिए।

नागदा-भोपाल रेल विद्युतीकरण परियोजना वडोदरा

केन्द्रीय संगठन रेल विद्युतीकरण, इलाहाबाद में 14 सितम्बर, 1991 में हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।

सप्ताह के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। श्री कृष्णकुमार अग्रवाल, मुख्य परियोजना प्रबंधक ने 26 जनवरी, के समारोह में हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रशंसापत्र दिए जो कि निम्नप्रकार से हैं –

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

श्री होसियारसिंह, श्री हेमंतकुमार र. देसाई, श्री संजय कुमार एस. सोनवणे ।

टिप्पणी एवं मसौदा लेखन

श्री रामगोपाल जोशी, श्री डी. एन. बघेल, श्री के.सी. भावसार।

हिन्दी टंकण लेखन

श्री रघुनाथन पी. वी., श्री टी. शंकर नारायणन् नायर, कुमारी शेतल जोन क्रिश्चन।

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

श्री रमेश कि. जसवाणी, श्री किशोर धिरजलाल देसाई, श्री जयरामभाई शं. वालन्द।

इस अवसर पर हिन्दी में सराहनीय कार्य करने वाले निम्नलिखित कर्मचारियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए –

1. श्रीमती निकुंज डी. गांधी, 2. श्री भगवतीप्रसाद ठाकर, 3. श्रीमती प्रभा शर्मा

4. श्री देवन्द्र ह. वालन्द

संकेत व दूर संचार विभाग में हिन्दी में कार्य करने का प्रयत्न किया।

रेल कर्मचारियों को यात्रा सुविधा पास व पी० टी० ओ० शतप्रतिशत हिन्दी में जारी किए।

वाक् प्रतियोगिता का संयोजन श्री के. एल. मदान, वरिष्ठ लेखा अधिकारी व श्रीमती पी. गोपीनाथन सहायक कार्मिक अधिकारी ने किया। अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन श्री रा. प्र. शर्मा, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं श्री ज. स. ब्राह्मणकर, मुख्य टंकक/हिन्दी सहायक ने किया।

अपर महासर्वेक्षक कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र, चंडीगढ़, एवं उत्तर-पश्चिमी सर्कल, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र (चंडीगढ़) और भारतीय सर्वेक्षण विभाग उत्तरी-पश्चिमी सर्कल द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 13 सितम्बर, 1991 को चंडीगढ़ में वार्षिक हिन्दी दिवस अत्यन्त उत्साहपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता ब्रिगेडियर अनिल मोहन चतुर्वेदी, निदेशक, उत्तर-पश्चिमी सर्कल ने की और समारोह सचिव का कार्यभार संभाला उपनिदेशक उत्तर-पश्चिमी सर्कल, ले. कर्नल कुलदीप सिंह खत्री ने।

मेजर जनरल पृथ्वी राज, अपर महासर्वेक्षक, उत्तरी क्षेत्र समारोह में मुख्य अतिथि थे, सर्वप्रथम ब्रिगेडियर चतुर्वेदी ने मेजर जनरल पृथ्वी राज को माल्यार्पण कर उन्हें अनुरोध किया कि वे दीप-प्रज्जवलन कर समारोह का उद्घाटन करें। उद्घाटन समारोह के पश्चात् अध्यक्ष ने समारोह में उपस्थित सभी लोगों का स्वागत किया और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग, प्रचार एवं गरिमा के संबंध में अपने विचार प्रकट किए। सरकारी कामकाज में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी एक समर्थ, सशक्त तथा सरल भाषा है जिसे रोज के सरकारी कामकाज में बिना किसी कठिनाई के अपनाया जा सकता है। पूरे देश को एक सूत्र में बांधने में हिन्दी एक कड़ी के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

ईश वन्दना उपरान्त समारोह स्थल पर सूत्रधार का कार्य श्री अनिल कुमार डोगरा, मानचित्रकार ग्रेड II एवं कुमारी बबिता अवर श्रे. लि. ने किया। उन्होंने समारोह में सभी उपस्थित सज्जनों का स्वागत करते हुए कविता पाठ प्रतियोगिता द्वारा समारोह का आरम्भ किया। जिसमें उत्तर-पश्चिमी सर्कल के विभिन्न लिपिक वर्गीय/तकनीकी एवं चतुर्थ श्रेणी अधिकारियों ने भाग लिया। कविता पाठ प्रतियोगिता के उपरान्त श्रीमती सरोज डोगरा, हिन्दी अनुवादक को सर्कल की वार्षिक रिपोर्ट में बताया कि हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिए जाते हैं, 30 से 40% तक मूल पत्राचार हिन्दी में किया जाता है। सरकारी विज्ञापन हिन्दी और अंग्रेजी दोनों

भाषाओं में जारी किए जाते हैं। वर्ष 1990-91 में 36 मानचित्र शीटें हिन्दी में तैयार की गई। 24 अवर श्रे. लि. में से 20 को हिन्दी टंकण प्रशिक्षण दिलाया गया है। दोनों आशुलिपिक हिन्दी आशुलिपिक में प्रशिक्षित हैं 5 अवर श्रे. लि. को अंग्रेजी टाइप के साथ हिन्दी टाइप करने के लिए प्रोत्साहन भत्ता एवं एक आशुलिपिक को हिन्दी आशुलिपिक प्रोत्साहन भत्ता प्रदान किया जा रहा है।

सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पण/आलेखन प्रोत्साहन योजना के अधीन 6 कर्मचारियों को इस वर्ष नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इस वर्ष 4 अवर श्रे. लि. ने हिन्दी टंकण प्रशिक्षण प्राप्त किया और उनमें से 3 ने अच्छे अंक प्राप्त कर नकद पुरस्कार भी पाए अम्बाला स्थित सं. 3 एवं 42 पार्टी के 2 अवर श्रे० लि. ने हिन्दी टंकण प्रशिक्षण पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा प्राप्त किया। इस वर्ष 1046 रु० की हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों पर खर्च किए गए। भारत सरकार के आदेशानुसार इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर केवल द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) में खरीदे जा रहे हैं।

समारोह से पूर्व विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं की गई थीं उनमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार दिए गए। सर्कल के कार्मिकों के बच्चों के लिए हिन्दी पोस्टर प्रतियोगिता विशेष तौर पर आयोजित की गई थी। समारोह स्थल पर खुला मंच प्रश्नोत्तरी (Open House Quiz Contest) प्रतियोगिता विशेष आकर्षण रही। प्रश्नोत्तरी का संचालन श्रीमती नीलम बजाज, प्राध्यापक हिन्दी शिक्षण योजना, चंडीगढ़ एवं श्रीमती सरोज डोगरा हिन्दी अनुवादक ने किया। सभी उपस्थित लोगों से हिन्दी/हिन्दी साहित्य एवं सामान्य ज्ञान संबंधी 10 प्रश्न पूछे गए और हर सफल उत्तर देने वाले को साथ ही साथ इनाम दिए गए। बहुत से उपस्थित दर्शकों ने प्रश्नोत्तरी में भाग लेने का प्रयास किया समारोह में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का यह प्रथम प्रयास काफी सफल रहा।

इसके उपरान्त मेजर जनरल पृथ्वी राज, अपर महासर्वेक्षक उत्तरी जोन ने निम्नलिखित प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वालों को पुरस्कार दिए।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

श्री गोपाल कृष्ण, कु. बबिता बस्सी, श्री बलविन्द्र सिंह

निबन्ध लेखन एवं तकनीकी शब्दावली

श्री मंगल राम, मानचित्रकार ग्रेड—4 श्री कृष्ण लाल, पटलचित्रक ग्रेड—II श्री कृष्ण कुमार, सर्वेक्षक

सुलेख प्रतियोगिता (केवल समूह घ कर्मचारियों के लिए)

श्री केवल कृष्ण, श्री राम सिंह, श्री कमरुदीन।

पोस्टर प्रतियोगिता (उ. प. सं. कर्मचारियों व अधिकारियों के बच्चों के लिए)

कु. दीप्ति गौतम, सहायक निदेशक (आ. टं.) श्री धर्मपाल गौतम, हिन्दी शिक्षण योजना की बेटी, श्री बलविंदर सिंह, श्रीमती जसवंत कौर का बेटा, कुमारी नीरु सूद, श्रीमती गीता सूद की बेटी।

कविता प्रतियोगिता

श्रीमती जसवन्त कौर, श्री के. पी. मैंथानी, श्री ब्रज मोहन लाल शर्मा।

पुरस्कार वितरण के उपरान्त मेजर जनरल पृथ्वीराज ने कहा कि समारोह में उपस्थित होकर उन्हें अत्यन्त हर्ष हो रहा है, इस उपलक्ष्य में जो प्रतियोगिताएं आयोजित की गई विशेषतः कविता एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में जिस उत्साह से सभी ने भाग लिया उससे सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और यह भी अनुरोध करूंगा कि धारा प्रवाह हिन्दी बोलने वाले/प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीतने वाले और दूसरे अधिकारी अपने कार्यालय में भी हिन्दी में पत्राचार अधिक से अधिक करें और इसमें हीन भावना की बजाए स्वाभिमान महसूस करें ताकि वे दूसरे लोगों के लिए प्रेरणापुंज बनें। भाषा में संवादहीनता से बचने के लिए अन्य भाषाओं के शब्दों का निस्संकोच प्रयोग करें। समारोह के सफल आयोजन के लिए उन्होंने ब्रिगेडियर चतुर्वेदी एवं. ले. कर्नल खत्री को बधाई दी।

अन्त में समारोह सचिव ले. कर्नल खत्री ने मुख्य अतिथि, उप महासर्वेक्षक ब्रिगेडियर जगजीत सिंह आहूजा एवं सभी उपस्थित लोगों को समारोह में शामिल होने के लिए धन्यवाद दिया।

इस समारोह में गीत व नाटक प्रभाग, चंडीगढ़ के सौजन्य से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त समारोह में शामिल हुए सभी लोगों के लिए जल पान की व्यवस्था की गई।

सर्कल के अधीनस्थ सं. 17 आरेखण कार्यालय जम्मू में भी दिनांक 19-9-91 को हिन्दी दिवस आयोजित किया गया इसी प्रकार सं. 25 पार्टी मसूरी में भी दिनांक 16-9-91 को हिन्दी दिवस मनाया गया।

कार्यालय प्रधान मुख्य लेखानियंत्रक केन्द्रीय प्रत्यक्षकर बोर्ड, नई दिल्ली

दिनांक 16 सितंबर 1991 से 20 सितंबर, 1991 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। हिंदी सप्ताह से पूर्व श्री रवि कठपालिया, प्रधान मुख्य लेखा नियंत्रक ने दैनिक सरकारी कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के

लिए अपील जारी की । इस सप्ताह के अवसर पर निम्न-लिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :—

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 16-9-1991 और 17-9-1991 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 16 अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी की सांवैधानिक स्थिति, सेवा पुस्तिकाओं में प्रविष्टियों से संबंधित टिप्पणियां, सामान्य प्रशासनिक पत्राचार व टिप्पणियां तथा कार्यालय के कामों में हिंदी का प्रयोग विषयों में प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कार्यालय के तत्कालीन मुख्य लेखा नियंत्रक श्री सी. एस. नरूला ने कहा कि कार्यालय में अधिकांश लोगों के हिंदी में प्रशिक्षण होने और सहायक साहित्य के उपलब्ध होने पर कोई कारण नहीं कि सरकारी कामकाज हिंदी में न किया जा सके।

हिंदी सप्ताह के दौरान आशु निबंध, हिंदी टिप्पण और आलेखन तथा हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के विजेता इस प्रकार हैं :—

निबंध प्रतियोगिता

श्री देशराज सिंह, कु. अमृतवर्षा, कु. इंदिरा, श्री अमरजीत सिंह, श्री धर्मपाल वर्मा।

टिप्पण और आलेखन प्रतियोगिता

श्री एस. के. सुभरा, श्री देशराज सिंह, श्रीमती पूनम, श्री वि. बि. माथुर, श्री प्रवीण कुमार, श्री हरपाल सिंह, कु. अमृत वर्षा, श्रीमती सुमन छाबड़ा, श्री डी. पी. सिंह, श्री शीशराम, श्री अमरजीत सिंह, कु. इंदिरा, श्री धर्मपाल वर्मा, श्रीमती अंशु, श्री धनीराम।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रथम टीम:—श्री बी. एल. माली, श्री योगेश कुमार, श्रीमती वीरबाला शर्मा; श्रीमती इंदु भटनागर, श्री आर. डी. गुप्ता, श्रीमती सुमन छाबड़ा, श्री हरपाल कुंद्रा, श्री देशराज सिंह, श्री धर्मपाल वर्मा, श्रीमती पूनम।

द्वितीय टीम :—श्री वि. बि. माथुर, श्रीमती गुरमीत संधु, श्री पी.के. शर्मा, श्री अनिल शर्मा, श्री विकल राज, श्री एम.सी. डागर, कु. इंद्रा, श्री विजेन्द्र सिंह।

हिन्दी समारोह

कार्यालय में 28 अक्तूबर, 1991 को हिंदी समारोह किया गया। प्रधान मुख्य लेखा नियंत्रक, श्री रवि कठपालिया समारोह में मुख्य अतिथि थे। सहायक निदेशक (राजभाषा), कु. आशा नय्यर ने स्वागत किया और उन्हें राजभाषा हिंदी की प्रगति से अवगत कराया। तत्पश्चात् श्री रवि कठपालिया ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए। उन्होंने हिंदी समारोह के आयोजन के लिए बधाई दी और राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए प्रयास जारी रखने के लिए कहा। श्री सी.एस. नरूला, मुख्य लेखा नियंत्रक ने भी कार्यालय में राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए आरंभ की गई योजनाओं की सफलता की कामना की। उप लेखा नियंत्रक, श्री जे.पी. माथुर, ने सभी को धन्यवाद दिया और अपील की कि सभी अपना काम हिंदी में शुरू करें, धीरे धीरे कठिनाइयां अपने आप दूर होती चली जायेंगी।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस, महानिदेशालय

महानिदेशालय, भारत तिब्बत सीमा पुलिस एवं उसके केन्द्रीय रिकार्ड कार्यालय में 16 से 20 सितम्बर, 1991 तक पहली बार "हिन्दी सप्ताह" का आयोजन किया गया। इससे पूर्व हमेशा केवल "हिन्दी दिवस" ही मनाया जाता रहा था। दोनों कार्यालयों में पूरे सप्ताह अलग-अलग विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए महानिदेशक महोदय की ओर से "हिन्दी सप्ताह"—एक अपील जारी की गई, जिसमें सभी से राजभाषा के प्रति लगन, निष्ठा तथा कर्मठता से सरकारी कामकाज में हिन्दी में कार्य करने का आह्वान किया गया। महानिदेशालय के "हिन्दी सप्ताह" का उद्घाटन श्री एन.आर. पटनायक, महानिरीक्षक (मुख्यालय) ने 16-9-91 को किया। महानिरीक्षक (मुख्यालय) ने "हिन्दी सप्ताह" के सफल आयोजन के लिए शुभ कामनाएं देते हुए कहा कि हिन्दी में कार्य करने का संकल्प केवल सप्ताह तक ही नहीं वरन् हमेशा के लिए सोचते हुए आरम्भ किया जाए। उन्होंने सभी प्रतियोगिताओं में प्रतियोगियों की सफलता के लिए अपनी सद्भावना प्रकट की।

"हिन्दी सप्ताह" का आरम्भ 16 तारीख को "हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता" से किया गया। इस प्रतियोगिता में 12 कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 17-9-91 को "हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 16 प्रतियोगियों ने ने भाग लिया तथा दिनांक 18 9-91 को "अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता" की गई जिसमें 16 कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 19-9-91 को "हिन्दी भाषण प्रतियोगिता" की गई जिसमें एक अधिकारी तथा 10 कर्मचारियों ने भाग लिया। "हिन्दी सप्ताह" के अन्तिम दिन "हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता" की गई।

सभी प्रतियोगिताओं के लिए 300, 200 तथा 100 रुपए के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार निर्धारित किए गए थे।

केन्द्रीय रिकार्ड कार्यालय में भी महानिदेशालय के जैसे ही प्रति दिन अलग-अलग कार्यक्रम किए गए यथा उद्घाटन बैठक, कर्मचारियों के लिए निबंध लेखन

प्रतियोगिता, टिप्पण तथा प्रारूपण प्रतियोगिता तथा हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता । सभी प्रतियोगिताओं के लिए 300, 200 तथा 100 रुपये के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार निर्धारित किए गए थे।

सप्ताह के अन्तिम दिन अर्थात् 20 9-91 को महानिदेशालय तथा केन्द्रीय रिकार्ड कार्यालय के "हिन्दी सप्ताह" का समापन समारोह संयुक्त रूप से किया गया। मुख्य अतिथि बल के महानिदेशक श्री डी. बी. एल. एन. रामकृष्ण राव थे। समारोह के आरंभ में श्री के. बी. एल. दुबे, अपर महानिरीक्षक (स्थापना) ने स्वागत किया। उन्होंने हिन्दी सप्ताह के सफल आयोजन के लिये सभी को धन्यवाद दिया तथा भविष्य में भी इसी प्रकार प्रतियोगियों को अपना उत्साह बनाये रखने को कहा। महानिदेशक ने सभी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कार दिये । इसके अतिरिक्त 1990-91 में केन्द्रीय सरकार की हिन्दी प्रोत्साहन की विभिन्न योजनाओं तथा अधिकारियों द्वारा हिन्दी में सबसे अधिक डिक्टेशन देना, हिन्दी में टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन योजना में नकद पुरस्कार प्राप्त करने वालों को भी प्रशंसा पत्र दिए गए।

महानिदेशक द्वारा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे सरकारी कामकाज में सरल एवं सुबोध हिन्दी का प्रयोग करें एवं इस दिशा में इतनी उन्नति करें कि पुनः इस प्रकार के समारोहों के आयोजन की आवश्यकता ही न पड़े। उन्होंने आशा व्यक्त की कि भारत तिब्बत सीमा पुलिस में उनके कार्यालय से लेकर बल के टाइपिस्ट तक सरकारी कामकाज हिन्दी में ही होना शुरू हो जाएगा।

गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा उत्पादन एवं पूर्ति मंत्रालय, नई दिल्ली

दिनांक 9 दिसम्बर 91 से 13 दिसम्बर 91 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं की गईं।

दिनांक 28 फरवरी, 1992 को वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह हुआ। इस अवसर पर रक्षा उत्पादन एवं आपूर्ति सचिव श्री एन रघुनाथन मुख्य अतिथि थे। गुणता आश्वासन महानिदेशक ले. जनरल क० मेहरा ने श्री रघुनाथन का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि इस माह 13/11 फरवरी, 92 को बंगलूर में तकनीकी और वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 5 वैज्ञानिकों ने शोध पत्र हिन्दी में पढ़े। द्विभाषी/हिन्दी के कम्प्यूटरों व वैज्ञानिक पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई।

अनुवाद अधिकारी श्री प्रेम चन्द्र धस्माना ने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की प्रगति का उल्लेख किया। यूनिटों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का अध्ययन करने के उद्देश्य से अहमद नगर, पुणे, मद्रास, तिरूचिरापल्ली, शाहजहांपुर, मुरादनगर, कानपुर, सिकन्द्राबाद व मेढक स्थित गुणता आवासन महानिदेशालय के कार्यालयों का संयुक्त निरीक्षण किया गया। तकनीकी अधिकारियों को हिन्दी में काम करने की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से एक हजार तकनीकी शब्दों की अंग्रेजी हिन्दी शब्दावली मुद्रित कराई है। इसी प्रकार लगभग 1000 शब्दों की साइक्लोस्टाइल प्रशानिक शब्दावली व 20 पृष्ठों के अमानक फार्म का साइक्लोस्टाइल संकलन निदेशालयों को उपलब्ध कराया गया। प्रत्येक यूनिट व निदेशालयों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार की गई। समेकित शब्दावली की प्रतियां भेजी गई। इस वर्ष भण्डार "आयुद्ध" इलैक्ट्रानिकी, युद्धपोत परियोजना प्रशासन निदेशालय में वरिष्ठ अधिकारियों के हिन्दी कार्यशालाएं की गई। रक्षा मंत्रालय के सहयोग से "जी" ब्लाक में हिन्दी टाइप व आशुलिपिक का केन्द्र खोला गया। नकद पुरस्कार योजना के अन्तर्गत दो कार्मिक श्री योगेश कुमार व श्री तीरथ राज त्रिपाठी को पुरस्कृत किया गया। इसके पश्चात् राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई जो कि पिछली पांच टीमों में विजयी प्रथम दो टीमों के बीच हुआ।

प्रतियोगिता का संचालन श्री प्रेम चन्द्र धस्माना ने किया जिसमें इलैक्ट्रानिकी निदेशालय व वाहन निदेशालय की टीमों से राजभाषा नीति, राजभाषा नियम, अधिनियम, विभिन्न परिभाषा एवं प्रोत्साहन योजनाओं से संबंधित प्रश्न किए।

मुख्य अतिथि श्री एन. रघुनाथन ने सभी सफल प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र व शील्ड प्रदान की :

क. हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता

श्री राम चन्द्र पात्रो, आयुद्ध–1, श्री आर. चन्द्र शेखरन वाहन–5, श्री जे वी कुलकर्णी, इंजी० उपस्कर,

क. हिन्दी टिप्पण/प्रारूपण प्रतियोगिता

श्री वी वी पन्डम, युधपोत परि, श्री रामचन्द्र पात्रो, आयुद्ध–1, श्री सुकुमार गुप्ता, प्रशा (6-क),

(ख) हिन्दी निबन्ध

श्री अनुरुद्ध कुमार, युधपोत, श्री पदम सिंह युद्धपोत-6 श्रीमती नीलम बत्रा, इलै.,

(ख) हिन्दी नोटिंग/ड्राफटिंग प्रतियोगिता

श्री योगेश कुमार गुप्ता, प्रशासन, श्री पदम सिंह, युद्धपोत, श्रीमती कुसुम जैन, भण्डार,

हिन्दी वाक् प्रतियोगिता

श्री आर आर लोढ़ा, इंजी, उपस्कर, श्री जे वी कुलकर्णी इंजी, उपस्कर, श्री वी वी पेन्डम, युद्धपोत

[शेष पृष्ठ 87 पर]

आकाशवाणी/दूरदर्शन

दूरदर्शन केन्द्र, मद्रास

दिनांक 8-9-1991 से 13-9-1991 तक हिन्दी सप्ताह और दिनांक 13-9-1991 को हिन्दी दिवस समारोह मनाया गया।

13-9-1991 को केन्द्र के स्टूडियो में सभा का आयोजन किया गया। केन्द्र के अधीक्षण अभियंता, श्री एन.एस. गणेशन ने सभा की अध्यक्षता की। मद्रास शहर के नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सदस्य सचिव एवं आयकर आयुक्त श्री ए.सी. चन्द्र मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। श्रीमती पदमा शंकरन, लिपिक वर्ग-1 के प्रार्थना गायन के साथ सभा का आरंभ हुआ। हिन्दी अनुवादक श्री सुन्दरराज वर्मा ने कार्यक्रम की जानकारी दी।

हिन्दी सप्ताह समारोह के उपलक्ष्य में हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे, निबंध-लेखन, वाक प्रतियोगिता और कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्रों का वितरण करते हुए मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में बताया था कि जब लोग बड़ी इच्छा से प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार पा रहे हैं तो वे जरूर हिन्दी में काम कर सकते हैं।

प्रशासनिक अधिकारी श्री के.पी. नारायणन-कुट्टी के धन्यवादार्पण के पश्चात, राष्ट्रगीत के समूह गायन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आकाशवाणी : बम्बई

आकाशवाणी बम्बई में दिनांक 14 सितम्बर, 91 से 21 सितम्बर, 91 तक हिन्दी सप्ताह का एवं इसी क्रम में दिनांक 23 सितम्बर, 91 से 28 सितम्बर, 91 तक हिन्दी कार्यशाला के आयोजन किए गए।

हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन श्रीमती विजय लक्ष्मी सिन्हा, निदेशक (केन्द्रीय विक्रय एकांश) ने किया। इस दौरान कवि गोष्ठी एवं पांच प्रतियोगिताएं की गई। सप्ताह के अंतिम दिन केन्द्र के अधीक्षण अभियंता, श्री एस. सुन्दरम ने छत्तीस प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

कार्यशाला 23 सितम्बर को एक सप्ताह की हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्र निदेशक, श्री मधुकर गायकवाड़ ने किया। कार्यशाला में "संघ की राजभाषा नीति" पर केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो बम्बई के संयुक्त निदेशक, डा० नगेन्द्रनाथ पाण्डेय के व्याख्यान के अतिरिक्त आकाशवाणी के श्री अवधूत हर्डीकर, श्री अनूप सेठी, श्री सि.ब.शिंगे, श्री कौशल पाण्डेय तथा कुमारी अंजु बिष्ट ने व्याख्यान दिए तथा अभ्यास के द्वारा हिन्दी में काम करने के लिए कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया।

बाद में प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी दिए गए।

दूरदर्शन केन्द्रः जयपुर

दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर में दिनांक 16-9-91 को हिन्दी दिवस तथा दिनांक 16 सितम्बर, 1991 से 22 सितम्बर, 1991 तक हिन्दी सप्ताह के आयोजन किए गए।

(1) **हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन** : दिनांक 16 सितम्बर, 91 को कार्यक्रम का उद्घाटन निदेशक श्री बी० सी० बोस ने किया। हिन्दी में काम करने की अपील की। उन्होंने कहा कि हिन्दी में काम करना आसान है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सारे देश में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाती है।

हिन्दी टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिता : 18 सितम्बर, 91 को हिन्दी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन प्रतियोगिता की गई। इसमें श्री जगदीश प्रसाद को प्रथम, श्री राजीव भाटिया को द्वितीय, श्रीमती ममता गुप्ता को तृतीय और श्री गुरिन्दर पाल सिंह को सांत्वना पुरस्कार मिले।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता : दिनांक 21 सितम्बर, 91 को हिन्दी टंकण प्रतियोगिता में श्रीमती आशा बाछवानी, श्री जगन्नाथ मीणा को क्रमशः प्रथम एवं सांत्वना पुरस्कार मिले।

हिन्दी में सराहनीय कार्य : हिन्दी सप्ताह आरंभ होने से पूर्व कार्यालय में एक परिपत्र जारी कर सभी कर्मचारियों अधिकारियों से अनुरोध किया गया था कि अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें और सप्ताह में हिन्दी में सराहनीय कार्य करने वाले कर्मियों को पुरस्कृत किया जायगा। इस प्रतियोगिता में श्री जगदीश प्रसाद को प्रथम, श्री विनोद कुमार त्रिपाठी को द्वितीय तथा श्री उमेश खटाना को सांत्वना पुरस्कार मिले।

हिन्दी में सराहनीय शासकीय कार्य करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार

हिन्दी में सराहनीय शासकीय कार्य करने के लिए केन्द्र के अधीक्षण अभियन्ता श्री लोकवीर शर्मा एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी श्री सत्य प्रकाश खन्ना को पुरस्कृत किया गया।

आकाशवाणी लखनऊ
राजभाषा पर्व

एक पखवारे तक निरन्तर कार्यक्रम चलते रहे। 16-9-91 के समारोह उद्घाटन समाज कल्याण मंत्री श्री रमापतिशास्त्री ने किया। इस अवसर पर प्रकाशन विभाग द्वारा एक पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई ।

आरंभ में आकाशवाणी, लखनऊ के कलाकारों ने सरस्वती वंदना और श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' द्वारा लिखित 'हिन्दी महिमा' गीत प्रस्तुत किया। तदुपरान्त कार्यालयाध्यक्ष श्री आर.के. सिंह ने मंत्री महोदय और आमंत्रित विशिष्ट साहित्यकारों का स्वागत माल्यार्पण से किया। मंत्री महोदय ने दीप प्रज्वलित करते हुए कहा—"हिन्दी के गौरव को अक्षुण्ण रखने के लिये, हमें अपनी भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत और हिन्दी को सम्मान देना होगा। दूसरी भाषाओं की जानकारी और उनका ज्ञान होना अच्छी बात है किन्तु वे हमारी हिन्दी भाषा का स्थान नहीं ले सकतीं।

इस अवसर पर एक विचारगोष्ठी का भी आयोजन किया गया जिसका विषय था—हिन्दी को सर्वप्रिय और व्यावहारिक कैसे बनाएं।

हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष डा. परिपूर्णानन्द वर्मा ने कहा—'हिंन्दी के साथ उसकी सभ्यता और संस्कृति जुड़ी हुई है'।

उ.प्र. हिन्दी संस्थान के निदेशक श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय ने कहा—'आज आवश्यकता है हिन्दी को उसका सर्वोच्च स्थान दिलाने की, क्योंकि यह कोटि-कोटि कंठों की वाणी है'।

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार श्री शिवसिंह 'सरोज' और श्री आदित्य कुमार चतुर्वेदी ने भी संबोधित किया।

16-9-91 को फिल्म प्रभाग की ओर से हिन्दी से संबंधित फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। 16-9-91 को ही पंचदिवसीय कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ, जिसके आरंभ में वरिष्ठ पत्रकार श्री के. विक्रमराव ने कहा कि हिन्दी को समृद्ध करने के लिए दूसरी भाषाओं का अध्ययन/अध्यापन तथा उनके शब्दों और मुहावरों का समावेश आवश्यक है, इससे हिन्दी समृद्ध और सर्वग्राह्य बनेगी।

कार्यशाला का समापन 20-9-91 को हुआ, इसके मुख्य अतिथि थे लोक निर्माण मंत्री डा. सरजीत सिंह डंग। समारोह के आरंभ में आकाशवाणी, लखनऊ के कलाकारों ने बटोही गीत और हिन्दी महिमा गीत प्रस्तुत किया–रचना श्री रामेश्वर दयाल दुबे की थी। इस अवसर पर लोक निर्माण मंत्री डा. डंग ने कहा—मातृभाषा के बिना कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता। हमें अपने दैनन्दिन जीवन में हिन्दी को उतरना होगा क्योंकि आचरण से परिवेश सुधारना है।

उर्दू और फारसी की ज्ञाता डा. आसिफा जमानी ने कहा कि देश की पहचान भाषा से ही होती है। हमें व्यावहारिक रूप से हिन्दी को ढालना होगा, तभी हमारी पहचान बन सकेगी।

तमिल भाषी श्रीमती पी.वी. पदमावती ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द ने 'भाइयों, बहनों' शब्दों का प्रयोग करके सभी विदेशियों का मन जीत लिया था। उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों को अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लोगों को हिन्दी सिखानी चाहिए।

हिन्दी भाषा की विदुषी डा. सरला शुक्ल ने कहा, 'गूंगे देश की वाणी कौन सुनेगा? हमारी भाषा ही अपनी नहीं है। जब तक हमारे पास वाणी, मौलिक चिन्तना और अभिव्यक्ति' नहीं है, तब तक हमारा व्यक्तित्व भी हमारा नहीं है—रोज के प्रयोग में हिन्दी लाइये। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर हिन्दी विद्वान श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र निशंक श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, डा. रमा सिंह, श्री विनोद चन्द्र पाण्डेय, 'विनोद' और डा. चंद्रिका प्रसाद शर्मा ने भी संबोधित किया।

इसके बाद 23 और 24 सितम्बर को विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के संबद्ध कार्यालयों ने भाग लिया। इनमें विजयी प्रतियोगियों को उ.प्र. शासन के मंत्री महोदय ने पुरस्कृत किया।

अधिकाधिक हिन्दी में डिक्टेशन देने का पुरस्कार उनके कार्य को देखते हुए तीन अधिकारियों में बराबर-बराबर बांट दिया गया।

श्री भोलानाथ, केन्द्र अभियन्ता, श्री रामजी त्रिपाठी, समाचार सम्पादक, श्री मुक्ता शुक्ल, सहायक केन्द्र निदेशक।

आकाशवाणी लखनऊ ने 30-9-91 को हिन्दी पखवारे का समापन समारोह मुख्य अतिथि श्री अम्बरीशचन्द्र माथुर मुख्य आयकर आयुक्त की उपस्थिति में हुआ। आकाशवाणी के कार्यालयाध्यक्ष श्री राकेश कुमार सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् आकाशवाणी, लखनऊ द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित पुस्तिका 'नागरी' का विमोचन मुख्य अतिथि श्री अम्बरीशचन्द्र माथुर ने किया। श्री माथुर ने आशा व्यक्त की, कि आयोजन मात्र आयोजन तक ही सीमित न रहकर वर्ष भर चलता रहेगा। प्रसिद्ध गांधीवादी श्री करण भाई ने लोगों से आग्रह किया कि हिन्दी को अपने व्यवहार में भी उतारना होगा। मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरण तथा अध्यक्ष ने सहायक केन्द्र निदेशक श्री मुक्ता शुक्ला के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विदेश प्रसारण प्रभाग, आकाशवाणी, नई दिल्ली

दिनांक 18 सितम्बर, 1991 को आयोजित समारोह की अध्यक्षता डा. विजयेन्द्र स्नातक ने की। इस अवसर पर विदेश प्रसारण प्रभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक पत्रिका "राजभाषा प्रतिवेदन" के पांचवें अंक का विमोचन भी डा. स्नातक ने किया। उन्होंने हिन्दी सहित सभी देशी भाषाओं के आदर एवं व्यवहार में उनके प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि ऐसा नहीं लगता कि आज की पीढ़ी हिन्दी के प्रति समर्पित नहीं है। हिन्दी सीखने की भावना और इसके प्रयोग की कमी को दूर करना आज आवश्यक हो गया है। इस अवसर पर कार्यालय में आयोजित निबन्ध एवं टिप्पण/प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार तथा शेष प्रतियोगिताओं के लिए प्रोत्साहन स्वरूप एक-एक पुस्तक भेंट में दी गई। हिन्दी में काम की प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अन्तर्गत भी कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए। "राजभाषा प्रतिवेदन" में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों को उपहार दिए गए।

श्री पी. महादेव अय्यर, निदेशक ने डा. स्नातक का स्वागत पुष्प गुच्छ से किया। माधवी दीक्षित, हिन्दी अधिकारी ने समारोह का संचालन किया।

बैंक

स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर
(भारतीय स्टेट बैंक का सहयोगी)
प्रधान कार्यालय : तिरुअनन्तपुरम्

केरल प्रान्त के प्रमुख बैंक "स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर" द्वारा केरल की राजधानी तिरुअनंतपुरम में इसके प्रधान कार्यालय और तिरुवनन्तपुरम आंचलिक कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में और उसके कोट्टयम, कोषिक्कोड और एरणाकुलम में आंचलिक कार्यालयों में ही नहीं अपितु उसके बंबई, दिल्ली के कार्यालयों में भी "हिन्दी दिवस" को धूमधाम से मनाया गया।

तिरुअनंतपुरम में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालय, उपक्रम, निगम और सरकारी क्षेत्र के बैंक तथा केरल हिन्दी प्रचार सभा आदि मिलकर विभिन्न हिन्दी कार्यक्रम आयोजित करते हैं। उनका यह सम्मिलन रंग लाता है हफ्ते भर के रंगारंग, ज्ञानपूर्ण, उत्साहवर्धक कार्यक्रम के रूप में।

इस वर्ष भी 14 से 20 सितम्बर 1991 तक पूरे सप्ताह प्रमुदित मन से कर्मचारियों ने हिन्दी उत्सव में भाग लिया। स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर द्वारा आयोजित हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन उत्पादन शुल्क मंत्री श्री एम. आर. रघुचन्द्रबाल ने 14 सितम्बर 1991 को केरल हिन्दी प्रचार सभा के सभा भवन, वषुतक्काड, तिरुअनंतपुरम में किया। समारोह में अध्यक्ष थे श्री वर्कला वी. राधाकृष्णन (पूर्व अध्यक्ष केरल विधान सभा) उप महा प्रबंधक श्री के. सुकुमारन के स्वागत भाषण और श्री के. चन्द्रन (प्रबन्धक राजभाषा) के कृतज्ञता ज्ञापन की मीठी बौछारों के बीच प्रो. एस. गुप्तन नायर (पूर्व अध्यक्ष, केरल साहित्य अकादमी), डा. न.ई. विश्वनाथ अय्यर (पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोचीन विश्वविद्यालय, कोचिन तथा डा० के. ए. यमुना (प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय) आदि विद्वतजनों के भाषणों की छटा छाई रही। हिन्दी दिवस के उद्घाटन समारोह के पुनीत अवसर को पुरस्कार वितरण का श्रेष्ठ अवसर जानकर बैंक में हिन्दी दिवस से संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन 10 सितम्बर और 7 सितम्बर को किया गया था। कर्मचारियों के लिए निबन्ध लेखन, वाक कला प्रतियोगिता, सुलेखन, कविता-वाचन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ उत्सव को सफल बनाने के लिए उनके बच्चों के लिए भी सुलेखन, श्रुतलेखन और कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया था। कर्मचारी और बच्चे इस अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करके आनंदित हुए।

यह उद्घाटन समारोह केरल में हिन्दी प्रसार के एक और महत्वपूर्ण पहलू से भी जुड़ा था। हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान रामवर्मपुरम, तृश्शर में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में और केरल के हिन्दी शिक्षण अधिकारी के रूप में हिन्दी शिक्षा के विकासार्थ की गई स्वैच्छिक सेवाओं के लिए "श्री पी.जी. गोपालकृष्ण कामत" को सम्मानित करने हेतु लगभग चार वर्ष पूर्व केरल के हिन्दी प्रेमियों ने तदर्थ समिति बनाकर निधि एकत्रित की और उसे "पी.जी. कामत अक्षय निधि पुरस्कार" के रूप में स्थापित कर उसका ट्रस्टी "स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर" को बनाया। उनके द्वारा सौंपे गए ट्रस्टी के पद का निर्वाह करते हुए बैंक की ओर से प्रतिवर्ष केरल सरकार द्वारा संचालित हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान की हिन्दी प्रशिक्षण डिप्लोमा परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र को और उसी प्रकार केरल के अन्य सभी हिन्दी प्रशिक्षण संस्थानों में से उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र को रैंक के अनुसार प्रथम एवं द्वितीय दो पुरस्कार प्रदान करते हैं। इस अवसर पर श्री के.एम. जॉर्ज ने उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले दोनों छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए।

हिन्दी सप्ताह समारोह के सिलसिले में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बैंक को अधिकतम अंक (प्रथम स्थान) मिले और इसके लिए एक शील्ड दी गई और 20 सितम्बर 1991 को वी.जे.टी. हाल तिरुअनंतपुरम में आयोजित हिन्दी सप्ताह समारोह के समापन समारोह में महा प्रबंधक (योजना एवं विकास) ने केरल के मुख्य मंत्री श्री के. करुणाकरणजी से शील्ड प्राप्त की।

कोट्टयम आंचलिक कार्यालय

14 सितम्बर, 1991 को आंचलिक कार्यालय, कोट्टयम में भी 'हिन्दी दिवस" मनाया गया। इस सिलसिले में, कोट्टयम अंचल में कार्यरत स्टाफ सदस्यों के लिए 11 सितम्बर, 1991 को हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा—कविता पाठ, वक्तृता, हिन्दी प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन, अनुवाद एव सुलेख का कार्यालय परिसर में आयोजन किया गया। विविध शाखाओं, कार्यालयों से 20 प्रतियोगियों ने उक्त प्रतियोगिताओं में भाग लिया। निर्णायकगण के रूप में बी.सी.एम. कालेज, कोट्टयम से श्री एम.के. लूका और सी.एम.एस. कॉलेज, कोट्टयम से श्री पी.जे. चाको आमंत्रित थे। समस्त प्रतियोगियों ने इन प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। "हिन्दी दिवस का आयोजन 14 सितम्बर, 1991 को कार्यालय परिसर में किया गया। इस अवसर पर श्री आशीष कुमार सिंह (उप जिलाधीश, कोट्टयम) मुख्य अतिथि थे। श्री ए.बी. सीतापति राव (आंचलिक प्रबंधक) ने समारोह की अध्यक्षता की। क्षेत्रीय प्रबंधक-1 श्री वी टी. जेम्स ने मुख्य अतिथि एवं बैठक में उपस्थित अन्यों का स्वागत किया। फिर आंचलिक प्रबंधक का अध्यक्षीय भाषण हुआ। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने मलयालम भाषा में धाराप्रवाह भाषण देकर समस्त श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया यद्यपि वे उत्तर भारत के रहने वाले हैं। अंत में प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। हिन्दी अधिकारी श्री राजकुमार के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह संपन्न हुआ।

कोषिक्कोड़ आंचलिक कार्यालय

14 सितम्बर, 1991 को ही आंचलिक कार्यालय, कोषिक्कोड में भी हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। प्रो. वी.ए. केशवन् नंबूतिरी। उन्होंने केरल प्रांत में पनप रही हिन्दी के बारे में जानकारी दी। समारोह की अध्यक्षता कर रहे आंचलिक प्रबंधक श्री डी नरसिंहन ने भी हिन्दी के सम्मान में कुछ शब्द कहे। इसी दिन निबंध, वक्तृता, प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ, सुलेखन प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन किया गया था। प्रतियोगियों की संख्या पिछले वर्ष से अधिक थी। आंचलिक प्रबंधक श्री टी.जे. इग्नेषियस ने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया और अन्य में हिन्दी अधिकारी डा. कुलदीपसिंह चौहान के धन्यवाद भाषण के साथ समारोह संपन्न हुआ।

एरणांकुलम आंचलिक कार्यालय

14 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह समारोह का उद्घाटन उप महा प्रबंधक श्री एस प्रसाद राव ने किया। 17 और 18 सितम्बर, 1991 को आंचलिक कार्यालय तथा निकटवर्ती शाखाओं के सदस्यों के लिए निबंध लेखन, वक्तृता, कविता पाठ, सुलेखन, हिन्दी प्रश्नोत्तरी तथा बोर्ड पर प्रदर्शित शब्दों से संबंधित प्रतियोगिताएं की गई थीं। 19 सितम्बर को समापन समारोह किया गया। प्रार्थना के बाद श्री के सदाशिवन पिल्लै, क्षेत्रीय प्रबंधक के स्वागत भाषण के साथ समारोह प्रारंभ हुआ। उप महा प्रबंधक श्री एस प्रसाद राव ने उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि डा. के.जी. प्रभाकरन, प्रोफेसर, महाराजा कालेज थे। हिन्दी के प्रयोग, उसकी क्षमता एवं उसकी वृद्धि के प्रति उपर्युक्त सभी गणमान्य व्यक्तियों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर उपस्थित श्री के.के. सत्यनाथन ने, जो यूनियन बैंक आफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक होने के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक) के अध्यक्ष भी हैं, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर द्वारा किए जा रहे हिन्दी कार्यों के लिए उन्हें बधाई दी। तत्पश्चात श्रीमती सेलिन वर्गीस, हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम वाद्य-वृन्द और देशभक्ति गीतों तथा राष्ट्रगीत की मधुर गूंजों के साथ समारोह संपन्न हुआ।

बंबई स्थित शाखाएं

14 सितम्बर, 1991 को बम्बई केन्द्र में स्थित सभी शाखाओं ने मिल जुल कर हिन्दी दिवस कार्यक्रम आयोजित किए। सभी कार्यक्रमों का आयोजन उल्लासपूर्वक किया गया था। अतः भागीदारों का उल्लास भी अपूर्व था। इस सिलसिले में ग्राहकों के लिए भी "हमारी ग्राहक सेवा के संबंध में आपके विचार" विषय पर प्रतियोगिता का आयोन किया गया।

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर अध्यापन के क्षेत्र की जानी मानी हस्ती श्रीमती मंजु भार्गव को आमंत्रित किया गया था। शाखा प्रबंधक श्री एस शिवस्वामी की अध्यक्षता में समारोह का सफल संचालन देखते ही बनता था। हिन्दी दिवस के दिन बच्चों के लिए फैन्सी पोशाक, स्मरण शक्ति तथा म्यूजिकल चेयर आदि प्रतियोगिताएं की गई। बड़ों के लिए कविता पाठ और गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन था। स्टाफ के अधिकांश सदस्य सपरिवार उपस्थित थे जो अन्य बातों के साथ-साथ सर्विस शाखा के प्रबंधक श्री दिवेश कुमार मिश्रा के हिन्दी महत्त्व के संबंध में दिए गए भाषण से भी प्रभावित हुए। मुख्य अतिथि सहित सभी उपस्थित जनों ने समारोह के आयोजन की सराहना की। हिन्दी समारोह से संबंधित कुछ प्रतियोगिताएं 30 अगस्त और 7 सितम्बर को की गई थी। इन प्रतियोगिताएं यानी सुलेख, निबंध, प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद आदि सभी के विजेताओं को तथा हिन्दी दिवस के दिन आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 14 सितम्बर 1991 को ही पुरस्कार प्रदान किए गए और अंत में श्री शिवस्वामी के धन्यवाद प्रस्ताव एवं राष्ट्रगीत के साथ उत्सव संपन्न हुआ।

नई दिल्ली स्थित शाखाएं

हिन्दी दिवस समारोह राजभाषा कार्यान्वियन समिति द्वारा करोल बाग शाखा के परिसर में 14 सितम्बर, 1991 को

किया गया। इस अवसर पर दिल्ली की अन्य शाखाओं (रामकृष्ण पुरम, सरोजिनी नगर तथा रोहिणी) के शाखा प्रबंधकों तथा कर्मचारियों को आमंत्रित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री वैद्यनाथन शर्मा को आमंत्रित किया गया।

हिन्दी दिवस समारोह का प्रारंभ सचिव श्री राज कुमार भगत के स्वागत भाषण से हुआ, जिसके पश्चात् सभापति श्री के.एस. मोहनन् ने सभी को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा अपने बैंक की शाखाओं में रोजमर्रा के कार्यों में हिन्दी के ज्यादा से ज्यादा प्रयोग पर जोर दिया। मुख्य अतिथि श्री वैद्यनाथन् शर्मा ने कर्मचारियों के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं यानी निबंध, सुलेखन, काव्य पाठ, वाक्-पटुता, प्रश्नोत्तरी आदि के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार वितरण के पश्चात् मुख्य अतिथि ने सभा को संबोधित किया। समारोह का समापन भी श्री राजकुमार भगत ने किया।

यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया, थांगल बाजार इम्फाल

पूर्वोत्तर क्षेत्र के बैंक के इतिहास में एक नवीन अध्याय की अवतारणा करते हुए हिन्दी सप्ताह के अंतिम स्वर्णिम तिथि के अवसर पर 28 सितम्बर 1991 को द्विभाषी (हिन्दी मणिपुरी) कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। उक्त सम्मेलन में स्थानीय आधुनिक हिन्दी कवियों के अलावा हिन्दी में प्रवीण राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात कवियों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। सम्मेलन की और एक विशेषता यह थी कि प्रत्येक कवि के हिन्दी कविता का मणिपुरी भाषांतर एवं मणिपुरी कविता का हिन्दी भाषांतर पाठ द्वारा सम्मेलन में उपस्थित अलेख श्रोता-दर्शकों के हर्षोल्लास से सम्मेलन कक्ष गूंज रहा था। सम्मेलन में भाग लेने वाले कवियों के कविता पाठ द्वारा मंत्रमुग्ध श्रोताओं की "भीड़" प्रेरणा का द्योतक बनी।

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक गुवाहाटी

विकास बैंक के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी में आयोजित राजभाषा सप्ताह का उद्घाटन बैंक के महाप्रबंधक श्री बी जे बी एंड्यूज ने दीप जलाकर किया। सप्ताह के दौरान विविध प्रतियोगिताएं जैसे बच्चों के लिए ड्राइंग और कविता पाठ तथा स्टाफ सदस्यों के लिए सुलेख/श्रुतलेख, निबन्ध, ज्ञान-परीक्षा, प्रश्नमंच एवं परिचर्या आदि आयोजित की गई।

सप्ताह समापन वाले दिन "राजभाषा प्रदर्शनी" लगाई गई, जिसका उद्घाटन स्थानीय हिन्दी दैनिक "सेन्टिनल" के कार्यकारी सम्पादक तथा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री चन्द्रशेखर ने किया। प्रदर्शनी में हिन्दी में कार्य करने के लिए उपलब्ध शब्दकोश, तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावलियां, अन्य सहायक सामग्री राजभाषा संबंधी नियम अधिनियम, हिन्दी के कार्यान्वयन तथा के प्रचार प्रसार में लगी सरकारी एवं स्वैच्छिक समस्याओं और समितियों आदि की जानकारी के साथ-साथ विभिन्न बैंकों, प्रतिष्ठानों एवं सरकारी कार्यालयों की गृह राजभाषा पत्रिकाएं और बाजार में उपलब्ध उपयोगी तथा तकनीकी विज्ञान संबंधी पुस्तकें/पत्रिकाएं आदि प्रकाशित की गई। कम्प्यूटर की मदद से तैयार की गई "राजभाषा स्मारिका" का विमोचन राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी के उपनिदेशक श्री हरिओम श्रीवास्तव ने किया। बाद में स्टाफ सदस्यों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा मुख्य अतिथि ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए।

बैंक आफ बड़ोदा केन्द्रीय कार्यालय बंबई

दिनांक 18 सितम्बर, 1991 को बम्बई में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। बैंक के निदेशक मंडल की सदस्या श्रीमती इंदिरा मायाराम समारोह में मुख्य अतिथि थीं तथा अध्यक्षता महाप्रबंधक (प्राथ. क्षेत्र व आयोजना) श्री के. कन्नन ने की।

प्रारम्भ में उप महाप्रबंधक श्री सी. वी. राममूर्ति ने स्वागत किया। मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) डा. सोहन शर्मा ने बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डा. ए.सी. शाह का संदेश पढ़ा। संदेश था—हिन्दी इस देश में "सम्पर्क भाषा" के रूप में एक सफल व सार्थक भूमिका निभा सकती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों के जन सामान्य को जोड़ने की एक कड़ी के रूप में हिन्दी का महत्त्व है।

मुख्य अतिथि श्रीमती इंदिरा मायाराम ने दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। बैंक की संस्था पत्रिका "द बैंक ऑफ बड़ौदा न्यूज" के हिन्दी दिवस विशेषांक का विमोचन भी किया और कहा कि स्वाधीनता संग्राम के दिनों में राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वभाषा के गौरव के प्रति समर्पण की जो चेतना थी उसी चेतना के अनुरूप आज "सम्पर्क भाषा" और "राजभाषा" के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करना होगा।

बैंक के निदेशक मंडल के सदस्य श्री के. आई. तलरेजा ने इस बात पर बल दिया कि हम बैंक में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अध्यक्ष श्री के. कन्नन् ने कहा कि भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में एक "सम्पर्क भाषा" का होना अनिवार्य है। हिन्दी में संपर्क भाषा बनने की पूरी क्षमता है। इस अवसर पर विभिन्न साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा बैंक के स्टाफ सदस्यों ने भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सहायक महाप्रबंधक श्री एस.वी.आर. नायर ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती श्यामा ठाकुर ने किया।

बैंक ग्राफ इंडिया, चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)

क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी-दिवस 14 सितम्बर, 91 को स्थानीय बैंकों, सरकारी क्षेत्र की वित्तीय संस्थानों, बीमा निकायों और केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए आयोजित एक वाद-विवाद स्पर्धा में चन्द्रपुर क्षेत्र (वेस्टर्न कोलफील्डस लिमिटेड) के लेखा-लागत-सहायक श्री पी. एम. धोपड़े ने प्रथम पुरस्कार और लेखा अधिकारी (सामग्री प्रबन्धन विभाग) श्री प्रेम कुमार गोपलानी ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किए। प्रतियोगिता का विषय था—"हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए क्या प्रोत्साहन योजनाएं आवश्यक है?"

चन्द्रपुर क्षेत्र (वैकोलि) के क्षेत्रीय मुख्यालय में कार्यरत श्री धोपटे एवं श्री गोपलानी को वादविवाद प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि एवं विधान परिषद सदस्या व पूर्व राज्यमंत्री (महाराष्ट्र शासन) श्रीमती यशोधरा बजाज ने पारितोषिक व प्रमाणपत्र प्रदान किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री महेश दुबे ने की।

कार्यक्रम का संचालन आयोजक बैंक के राजभाषा अधिकारी श्री शैलेष कुमार मालवीय ने किया।

चन्द्रपुर : बैंक ऑफ इण्डिया के यहां स्थित क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी-दिवस 14 सितम्बर, 1991 को स्थानीय बैंकों, सरकारी क्षेत्र की वित्तीय संस्थानों, बीमा निकायों और केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए आयोजित एक वादविवाद स्पर्धा में चन्द्रपुर क्षेत्र (वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के लेखा लागत-सहायक श्री पी.एम. धोपटे ने प्रथम पुरस्कार और लेखा-अधिकारी (सामग्री-प्रबन्धन विभाग) श्री प्रेमकुमार गोलानी ने वित्तीय पुरस्कार प्राप्त किया। प्रतियोगिता में विभिन्न कार्यालयों के कोई 20 कर्मचारियों ने भाग लिया था। प्रतियोगिता का विषय था—"हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन योजनायें आवश्यक हैं?

चन्द्रपुर क्षेत्र (वेकोलि) के क्षेत्रीय मुख्यालय में कार्यरत श्री धोपटे एवं श्री गोपलानी को वादविवाद प्रतियोगिता म मुख्य-अतिथि एवं विधान परिषद सदस्या व पूर्व राज्यमंत्री (महाराष्ट्र शासन) श्रीमती यशोधरा बजाज के करकमलों से परितोषिक व प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक ऑफ इण्डिया के क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री महेश दुबे कर रहे थे।

इसी वादविवाद प्रतियोगिता में वेकोलि चन्द्रपुर-क्षेत्र के निज-सहायक (राजभाषा) श्री सुभाषसिंह शुक्रवार को भी निर्णायक-मण्डल के सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम का संचालन आयोजक बैंक के राजभाषा-अधिकारी श्री शैलेशकुमार मालवीय कर रहे थे।

इंडियन बैंक के.आर. रोड़, बंगलूर

दिनांक 14-9-91 को "हिन्दी दिवस" मनाया गया। इस सिलसिले में शाखा के परिसर में विभिन्न स्थानों पर बोर्ड] चार्ट लगाए गए। सभी ग्राहकों को हिन्दी दिवस मनाने की सूचना दी गई और इस संदर्भ में मिठाइयां भी बांटी गई।

कर्मचारियों की एक बैठक आयोजित की और राजभाषा कार्यान्वियन की प्रगति की समीक्षा की गई और विभिन्न कर्मचारियों से प्राप्त सुझावों को नोट किया गया और भविष्य में प्रगति के लिए कई कदम लेने का निर्णय लिया गया। इसी दिन से "प्रति दिन एक हिन्दी शब्द सीखिए" योजना शुरू की गई।

विजया बैंक
अंचल कार्यालय, बम्बई

दिनांक 14-9-1991 को हिन्दी दिवस समारोह और 'राजभाषा परिज्ञान मास" का उद्घाटन किया गया। उप महा-प्रबन्धक ने कर्मचारियों से अपील की और पांच सूत्री कार्यक्रम की घोषणा की जिसके अनुसार राजभाषा का प्रयोग आगामी रूप से बढ़ता जाएगा।

विभिन्न प्रतियोगिताओं, निबन्ध, बैंकिंग विषय पर लेख, कविता, कहानी, पत्र लेखन व गायन आदि सम्मिलित थे। विजेताओं को दि. 10-10-91 को पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी दैनिक, जनसत्ता के सम्पादक श्री राहुल देव मुख्य अतिथि के रूप में आकर हिन्दी के प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया व कहा कि हिन्दी का प्रचार व प्रसार स्वाभाविक रूप से हो रहा है और होकर रहेगा। अतः यह अच्छा होगा कि हिन्दी दिवस को रस्मो रिवाज न बनाकर अपने दैनिक कार्य में हिन्दी को समाहित कर लें।

श्री के. दिवाकर शेट्टी ने अध्यक्षीय भाषण में हिन्दी के प्रयोग पर जोर दिया। पुरस्कार वितरण के पश्चात् मनोरंजन कार्यक्रम किया गया। श्री पी.वी. मुतालिक, राजभाषा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर
प्रधान कार्यालय, जयपुर

दिनांक 9 सितम्बर से मनाया जा रहा राजभाषा सप्ताह बैंक के प्रधान कार्यालय में आयोजित मुख्य समारोह के साथ दिनांक 14 सितम्बर, 1991 को सम्पन्न हुआ। इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर राजस्थान के बाड़मेर, जैसलमेर व जालौर को हिन्दी जिले घोषित किया गया है। गत वर्ष डूंगरपुर एवं सीकर जिलों को हिन्दी जिले घोषित किया गया था। इस प्रकार राजस्थान के इन पांच जिलों में कार्यरत बैंक की सभी शाखाएं अपना समस्त कार्य हिन्दी में करेंगी इसके अलावा बैंक की 698 शाखाओं में से 543 शाखाओं को राजभाषा नियम 10(4) के अन्तर्गत भारत सरकार के राजपत्र में अधिसूचित किया गया है।

मुख्य समारोह में राजस्थान सरकार के भाषा विभाग के निदेशक श्री कलानाथ शास्त्री ने बड़े ही प्रभावोत्पादक शब्दों

में कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारे राष्ट्र का गौरव है। अखिल भारतीय संप्रेषण के लिए हिन्दी ही सक्षम है।

राजस्थान विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र भानावत ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के नाम पर रखे गए राज्य संकीर्णता के प्रतीक हैं हिन्दी आक्रमण की भाषा नहीं है उसमें आदान की ताकत है। वह सभी भारतीय भाषाओं के बीच पारस्परिक सम्पर्क का सूत्र बन सकती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता कायम करने में भी हिन्दी की कारगर भूमिका है। आज इसका क्षेत्र भारत की सीमा को लांघ कर सिंगापुर, मारीशस व मालदीव तक पहुंच गया है।

समारोह की अध्यक्षता बैंक के महाप्रबंधक श्री कृष्ण लाल मग्न ने की। राजभाषा सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

महाप्रबंधक ने बैंक के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना दैनिक कार्य हिन्दी में करने की सलाह दी और ग्राहकों को जमा रसीदें, पास बुक तथा जमा पत्रों हिन्दी में [illegible] करने से ग्राहकों को अपने खाते की सभी प्रविष्टियों की जानकारी अत्यन्त सरल ढंग से प्राप्त होती है इससे आम आदमी को बैंकिंग की परिधि में बड़ी आसानी से लाया जा सकता है जो हमारे देश के आर्थिक विकास के लिए परम आवश्यक है। पूर्व में बैंक के महाप्रबंधक श्री के.एल. मग्न ने स्वागत किया। प्रबंधक राजभाषा—माणक चन्द कोचर ने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा बैंक के दैनिक कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनुरोध किया एवं तृतीय अखिल भारतीय बैंक राजभाषा सम्मेलन के 14–15 दिसम्बर 1991 को जयपुर में किए जाने की जानकारी दी।

जयपुर में बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के द्वारा भी हिन्दी मास मनाया गया जिसमें बैंको में विभिन्न प्रतियोगिताएं की गई और दिनांक 7 अक्टूबर 1991 को हिन्दी समारोह का आयोजन किया गया।

पंजाब नेशनल बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय एस. 20/56 डी, दी माल
वाराणसी कैण्ट—221002

दिनांक 14-9-91 को को हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री यशपाल आनन्द ने की। समारोह में क्षेत्रीय कार्यालय सहित स्थानीय शाखाओं के स्टाफ को भी आमंत्रित किया गया।

आरम्भ में राजभाषा अधिकारी श्री रामकुमार ने हिन्दी दिवस 14 सितम्बर के महत्व पर प्रकाश डाला और राजभाषा नीति के अनुपालन में बैंक व क्षेत्र की स्थिति प्रस्तुत की। आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्रीय प्रबन्धक मुख्य निर्णायक और श्री उदयराज श्रीवास्तव, श्री के. के. शर्मा और श्री राजेश गोयल (सभी प्रबन्धक) निर्णायक थे। प्रतियोगिता में श्री अनिल श्रीवास्तव "प्रथम" श्री मंजुल कुमार द्विवेदी "द्वितीय" तथा श्री एस. विजय कुमार "तृतीय" रहे।

श्री उदयराज श्रीवास्तव प्रबन्धक ने बैंक में हिन्दी प्रयोग की प्रगति की सराहना की और बताया कि पहले की अपेक्षा बैंकों में हिन्दी की प्रयोग में प्रगति हुई है।

क्षेत्रीय प्रबन्धक ने हिन्दी में काम करने के लिए स्टाफ को प्रोत्साहित किया और पुरस्कार प्रदान किए।

केनरा बैंक
दिल्ली अंचल, कनाट प्लेस नई दिल्ली

दिनांक 17-9-91 को हिन्दी दिवस समारोह के भव्य आयोजन में श्री शंकर दयाल सिंह, संसद सदस्य व संयोजक, संसदीय राजभाषा समिति मुख्य अतिथि के रूप में एवम् श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर सचिव (संसदीय राजभाषा समिति) विशेष आमंत्रित के रूप में पधारे। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती मंजु तिवारी, प्रबन्धक के वंदना गीत से हुआ।

महाप्रबंधक श्री एच. दिनेश नायक ने मुख्य अतिथि श्री शंकर दयाल सिंह का स्वागत किया। तत्पश्चात् उप महाप्रबंधक श्री के. श्रीनिवास राव ने श्री ग्रोवर का स्वागत किया।

श्री शंकर दयाल सिंह ने कहा कि "यह दुःख की बात है कि हमारे देश की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। वर्तमान हिन्दी में अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के बहुत से शब्द आ गए हैं और वे शब्द इतने रूढ़ हो चुके हैं कि साधारण पढ़े लिखे व्यक्तियों में भी काफी प्रचलित हो गये हैं।"

श्री शंकर दयाल सिंह ने इस सुअवसर पर राजभाषा से संबंधित स्टिकरों का विमोचन किया। तत्पश्चात रंगारंग कार्यक्रम किया गया।

विशेष रूप से बुलाए गए कवियों ने अपनी-अपनी कविताएं सुनाकर दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

श्री कृष्णकुमार ग्रोवर ने राजभाषा अक्षय योजना 1990-91 के अन्तर्गत प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त कार्यालयों, शाखाओं, अनुभागों को राजभाषा ट्राफियां एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

श्री के. श्रीनिवास राव ने हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। इसके साथ ही उन स्टाफ सदस्यों को भी अपनी ओर से पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र प्रदान करके सम्मानित किया जिन्होंने पिछले एक

वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सराहनीय योगदान दिया। इसके पश्चात् उन्होंने अपने भाषण में बैंक के सभी कर्मचारियों को हिन्दी में अधिकाधिक कार्य करने का आह्वान किया।

श्रीमती जीवनलता जैन प्रबंधक एवं श्रीमती उषा ढींगरा, ने मंच संचालन किया।

आकाशवाणी महानिदेशालय
नई दिल्ली

आकाशवाणी महानिदेशालय में हिन्दी सप्ताह के दौरान कुछ कार्यक्रम चलाए थे। इस अवसर को न केवल आकाशवाणी महानिदेशालय में अपितु दिल्ली स्थित और दिल्ली से बाहर के सभी केन्द्रों/कार्यालयों ने इस दिवस/सप्ताह को बड़ी निष्ठा और उत्साह के साथ मनाया। आकाशवाणी महानिदेशालय में इस अवसर पर जो कार्यक्रम किए गए, उनका ब्यौरा इस प्रकार है :

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में लगभग 90 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के अलावा प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए गए। 12 अधिकारियों/कर्मचारियों को ये पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में 75 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया और इसमें भी 12 पुरस्कार दिए गए।

हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मचारियों को उनकी पात्रता के अनुसार प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार और प्रमाण-पत्र दिए गए।

सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना भाग में लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कार दिए गए।

पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 24-9-91 को किया गया। इसकी अध्यक्षता महानिदेशक, आकाशवाणी श्री एस.पी. भाटीकर ने की।

पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र प्लेस
नई दिल्ली

दिनांक 9 सितम्बर, 1991 से 16 सितम्बर, 1991 तक प्रधान कार्यालय, अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित हिंदी सप्ताह में सभी कर्मचारियों को अपना कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करने के साथ-साथ श्रुतलेखन, हिन्दी टिप्पण व प्रारूप लेखन, हिन्दी निबंध एवं हिन्दी ज्ञान (प्रश्नमंच) प्रतियोगिताएं की गई जिनमें बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया।

17 सितम्बर, 1991 को केन्द्रीय स्टाफ कालेज, दिल्ली में मुख्य समारोह हुआ जिसकी अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री राशिद जीलानी ने की। दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। श्री स्वराजकुमार गुप्ता, उप महाप्रबंधक ने स्वागत करते हुए बैंक में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की मौजूदा स्थिति पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष ने हिन्दी सप्ताह समारोह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए। पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारी/कर्मचारियों को बधाई देते हुए अध्यक्ष ने कहा कि पुरस्कार विजेता अपने प्रयासों में ढील न आने दें क्योंकि आज के युग में दौड़ वही जीतता है, जो पुराने कीर्तिमान तोड़े।

समारोह के मुख्य आकर्षण के रूप में हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें हास्य रस के जाने माने कवियों, श्री सुरेन्द्र शर्मा, श्री ओमप्रकाश आदित्य, श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी, श्री हुल्लड़ मुरादाबादी और डा. सरोजिनी प्रीतम ने तथा बैंक के युवा कवि श्री राकेश शरद ने अपनी हास्य-व्यंग्य काव्य रचनाओं से श्रोताओं को मुग्ध कर लिया।

अंचल प्रबंधक श्री सुधांशु अवस्थी ने आभार व्यक्त किया।

उपक्रम

लोकतक जल विद्युत परियोजना,
विद्युत विहार, मणिपुर

दिनांक 14-9-91 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना के अधिकारी/कर्मचारीगण एवं आमंत्रित व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री उपेन्द्र चोपड़ा, वरिष्ठ प्रबन्धक (कार्मिक) ने दीप प्रज्जवलित करके हिन्दी दिवस का उद्घाटन किया। उन्होंने वर्तमान समय में हिन्दी की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा देश विभिन्न भाषाओं का देश है, और सभी भाषाओं का अपना-अपना महत्त्व है। लेकिन सरकारी काम-काज के लिए एक भाषा का होना बहुत आवश्यक है। इसलिए हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाना जरूरी है। इसके अलावा अनेक अधिकारियों/कर्मचारियों ने विचार व्यक्त किये। हिन्दी दिवस के उद्घाटन के बाद 14-9-91 से 20-9-91 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह के दौरान हिन्दी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई :—

दिनांक 16-9-91 को निबन्ध लेखन प्रतियोगिता दो समूहों में की गई। जिसमें विजेताओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रथम समूह

श्री योगश चन्द्र सक्सेना, श्री जयदेव शर्मा, श्री राजदेव, यादव श्री केशव प्रसाद शर्मा

द्वितीय समूह

श्री अचाउबी शर्मा, श्री स्वपन कुमार दे, श्री के.पी. प्रेमराजन।

उसी दिन वाद-विवाद प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें 7(सात) कर्मचारियों ने भाग लिया। वाद-विवाद का विषय था "सरकारी काम-काज और हिन्दी" पक्ष-विपक्ष दोनों प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार दिए गए। नकद पुरस्कार पाने वाले कर्मचारीगण इस प्रकार हैं :—

श्री अचाउबी शर्मा, श्री के. बुद्धिचन्द्र सिंह, श्री जयदेव शर्मा, श्री श्रीनाथ मिश्रा।

हिन्दी कार्यशाला

दिनांक 17-9-91 व 18-9-91 को दो दि्वसीय हिन्दी कार्यशाला की गई। जिसमें 21 कर्मचारियों को हिन्दी में टिप्पणी लेखन तथा मसौदा तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया।

दिनांक 19-9-91 को हिन्दी टिप्पण व प्रारूपण प्रतियोगिता की गई। जिसमें 11 कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें विजेता प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार दिए गए।

1. श्री राजदेव यादव, 2. श्री स्वपन कुमार दे, 3. श्री के. बुद्धिचन्द्र सिंह।

उसी दिन हिन्दी टाईपिंग प्रतियोगिता भी की गई जिसमें सफल हुए कर्मचारियों को नकद पुरस्कार दिए गए।

1. श्री राजदेव यादव, 2. श्री केशव प्रसाद शर्मा, 3. श्री ओ. चन्द्रहास सिंह।

दिनांक 20-9-91 को समापन समारोह का आकर्षण "कवि गोष्ठी,, रही, जिसमें बाहर से आमंत्रित कविगण के साथ-साथ परियोजना के कर्मचारियों ने भी कविता पाठ किया। अधिकारियों/पर्यवेक्षकों के लिए हिन्दी में हस्ताक्षर प्रतियोगिता की गई। विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार भी दिए गए।

प्रथम समूह

श्री अरुण कुमार चौधरी, श्री श्याम कुमार लाल, श्री शारदा नन्द प्रसाद, श्री प्रमोद कुमार सक्सेना, श्री केशव देशमुख।

द्वितीय समूह

श्री शिवराम महन्ती, श्री के.आर. अजय कुमार, श्री एल. शरत कुमार सिंह, श्री जसवीर सिंह, श्री के. रविन्द्रन।

उद्घाटन करते हुए मुख्य अभियंता ने कहा कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे जितनी सरलता से चाहे, इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि किसी अंग्रेजी शब्द का हिन्दी अर्थ मालूम न हो तो उस अंग्रेजी शब्द को देवनागरी में ज्यों के त्यों लिख दें। आज के समय में एक ऐसी भाषा की जरूरत है जो सभी को एक सूत्र में बांध सके। उस रूप में केवल एक ही भाषा दिखलाई पड़ती है। वह है हिन्दी, जिसमें इतनी क्षमता है कि वह विविधता में एकता स्थापित कर सकती है। इस अवसर पर उन्होंने "पूर्वांचल दर्पण" पत्रिका का विमोचन किया।

इस अवसर पर नवम्बर 1990 में हुई प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ परीक्षा में उत्तीर्ण हुए 23 (तेइस) कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र दिए गए। डा. एम.एस.भटनागर, वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारत ब्रेक्स एण्ड वाल्वस लिमिटेड
22 गोआ रोड, कलकत्ता

बी.बी.वी.एल. राजभाषा कार्यान्वियन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 12-11-1991 को हुई। बैठक की अध्यक्षता कम्पनी के प्रबन्ध निदेशक श्री एम.जी. राजू ने की।

कम्पनी के कार्यपालक (कार्मिक) श्री असित मित्र ने बताया कि कम्पनी का लेखन सामग्री को द्विभाषिक रूप में एक-एक करके छापना शुरू हो गया है।

कोड्स, मैन्युअल्स, आदि को केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो नई दिल्ली को अनुवाद के लिए भेजने का व्यवस्था हो रहा है।

सूचना, परिपत्र, आदि द्विभाषी जारी किए जा रहे हैं, लेकिन विज्ञापनों को द्विभाषी जारी करना सम्भव नहीं हैं क्योंकि यह कार्य काफी खर्चीला पड़ता है।

कम्पनी में राजभाषा कार्यान्वियन समिति की नियमित बैठकें होती हैं।

कम्पनी में हिन्दी शिक्षण के कार्यक्रम को आरम्भ करने की व्यवस्था हो रही है।

कम्पनी के उत्पादों पर अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी उनके नाम अंकित किए जा रहे हैं।

वर्दियों के बैजों (बिल्ला) को द्विभाषी बनाया जा रहा है। उपर्युक्त कार्यक्रमों के अलावा अन्यान्य कार्यक्रमों को भी जारी रखा गया है।

हिन्दुस्तान लैटेक्स लिमिटेड तिरुअनंतपुरम्

कम्पनी में हिन्दी सप्ताह समारोह दिनांक 14 सितम्बर, 91 से 20 सितम्बर 91 तक पिछले वर्षों से काफी बढ़कर बड़े धूम-धाम से मनाया गया।

14 सितम्बर हिन्दी दिवस को कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से, हिन्दी में अनेक प्रतियोगिताएं—जैसे, निबन्ध लेखन, अनुवाद, टंकण, टिप्पण तथा आलेखन, प्रश्नोत्तरी, कविता पाठ, भाषण आयोजित की गई। तिरुअनन्तपुरम्, यूनिवर्सिटी कॉलिज के सेवानिवृत्त विभागाध्यक्ष प्रो. के.के. कृष्णन् नम्बूतिरी और तिरुअनन्तपुरम् दूर संचार विभाग का हिन्दी अधिकारी श्रीमती इन्दिरा जी नायर इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक रहे थे। कर्मचारियों एवं उनके बच्चों ने बड़ी रुचि के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

हिन्दी सप्ताह समारोह के दौरान प्रशासनिक कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए 16 सितम्बर से 18 सितम्बर तक हिन्दी कार्यशाला चलाई गई। प्रशासन विभाग के अधीक्षक श्रीमती जी. रमादेवी की प्रार्थना से कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्री जी. राजमोहन समारोह में अध्यक्ष रहे।

महाप्रबन्धक श्री एन. पी. पोटी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। श्री जी. राजमोहन ने नेहरूजी के त्रिभाषा-सूत्र की ओर इशारा करते हुए हिन्दी की प्रगति की आवश्यकता पर जोर दिया। राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा होने के साथ ही हिन्दी सम्पर्क भाषा भी होने से उसकी अधिकाधिक प्रगति होने की ओर भी उन्होंने प्रकाश डाला। समारोह के उद्घाटक थे केरल परिमण्डल का मुख्य पोस्टमास्टर जनरल श्री वी. राधाकृष्णन् जो तिरुअनन्तपुरम् नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का अध्यक्ष भी हैं। उद्घाटन करते हुए श्री वी. राधाकृष्णन् ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की आवश्यकता पर जोर दिया और राजभाषा हिन्दी को समुचित स्थान पर प्रतिष्ठित करने का अनुरोध भी किया। कार्मिक एवं औद्योगिक सम्पर्क के उप महा-प्रबन्धक श्री के. रामचन्द्रन पिल्लै ने कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में आई प्रगति पर खुशी प्रकट की और इसके लिए आयोजित ऐसी कार्यशालाओं की जरूरत का भी जिक्र किया। उन्होंने कार्यशाला के प्रतियोगियों से इस अवसर का पूरा फायदा उठाने का भी अनुरोध किया।

तिरुअनन्तपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री डी. कृष्ण पणिक्कर ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के वास्ते सरकार के द्वारा उठाए जानेवाले कदमों का जिक्र किया। हिन्दी अधिकारी श्रीमती वी.के. जयश्री ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड नागपुर

मुख्यालय में राजभाषा सप्ताह दिनांक 24-9-1991 से 30-9-1991 तक विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। सप्ताह के दौरान हिन्दी निबंध, टिप्पण-आलेखन, वाद-विवाद, काव्य स्पर्धा, प्रश्नमंच एवं तात्कालिक भाषण प्रतियोगिताएं की गई जिनमें काफी संख्या में अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। दिनांक 24-9-91 को राजभाषा सप्ताह का उद्घाटन करते हुए प्रमुख अतिथि और ख्यात साहित्यकार श्री रज्जन त्रिवेदी ने कहा कि हम सब हिन्दवीं हैं और राष्ट्रभाषा से ही राष्ट्रीयता की पहचान होती है। प्रमुख वक्ता डॉ. (श्रीमती) कविता शनवारे ने कहा कि साहित्य और कलाएं जीवन दृष्टि देती हैं और राष्ट्रभाषा को वास्तविक स्थान देने के लिए हम सभी को सामूहिक प्रयास करना चाहिए। अध्यक्ष श्री गौतमराज भंडारी, निदेशक (कार्मिक) ने कहा कि कंपनी में राजभाषा के क्षेत्र में काफी कार्य हुआ है तथापि इस दिशा में और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है। दिनांक 30-9-91 को आयोजित समापन समारोह में में मुख्य अतिथि श्री सत्य प्रकाश वर्मा, अध्यक्ष प्रबन्ध-निदेशक (वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड) ने कहा कि हिन्दी हमारे देश की संपर्क भाषा है, इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए इसे स्वीकार करना अत्यावश्यक है। श्री गौतमराम भंडारी, निदेशक (कार्मिक) ने कहा कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांध सकती है। श्री सत्यप्रकाश वर्मा, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। श्री जनार्दन पाण्डेय, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री सतील जैन ने आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर वर्ष 1990-91 के दौरान हिन्दी में सबसे अधिक डिक्टेशन देने के लिए श्री वी.वी. काबरा, उप मुख्य खनन अभियन्ता (एच आर डी), श्री आर.एम. आचार्य, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी (एचआरडी) और श्री अब्दुल सलाम खान,, प्राचार्य एस. टी. आ ई., छिन्दवाड़ा को क्रमश: 500/-, 300/- और 200/- रुपए का पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इसके अलावा श्री एच.एस. सिंह को 500/- रुपए विशिष्ट पुरस्कार दिया गया।

विजेताओं की सूची नीचे दी गई है:

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता : श्री डी.एच. लालवानी, श्री जितेन्द्र काकू, श्री एल.एस. जोशी।

हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता : श्री मधुसूदन सिसोदिया, श्री डी.एच. लालवानी, श्रीमती राजेश्वरी राव।

वादविवाद प्रतियोगिता : श्रीमती अर्चना सिंह, श्रीमती दिव्या शर्मा, श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह।

काव्य स्पर्धा : श्री बी.एस. नन्दवाना, श्रीमती कुसुम राव, श्री प्रेम कुमार सतीजा।

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता : श्री सत्येन्द्र प्रसाद सिंह, श्री के.के. घोष, श्री जी.एम भगत।

2209 HA/92—12

नेशनल टैक्सटाइल कारपोरेशन (महाराष्ट्र उत्तर) लि. बम्बई

दिनांक 16 सितम्बर, 1991 को निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री के.एस. सिधू की अध्यक्षता में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। निगम के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ लल्लन पाठक ने आमंत्रित कविगण तथा अन्य मान्य जनों का हार्दिक अभिनंदन करते हुए श्रोताओं से उनका परिचय कराया। इस समारोह के मुख्य अतिथि भारत के जाने-माने हास्य कवि, दूरदर्शन धारावाहिक तथा फिचर-फिल्म के चरित्र अभिनेता श्री शैले चतुर्वेदी थे। शैल जी ने राजभाषा हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा अपनी हास्य व्यंग्य कविताओं से लोगों को आह्लादित किया।

इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता भी की गई निबंध के निम्नलिखित विषय थे :

1. राष्ट्रीय एकता में राजभाषा हिन्दी की भूमिका

2. सरकारी कार्यालयों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, कठिनाइयाँ तथा निराकरण।

3. समाजसुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।

निगम के अधीनस्थ बम्बई स्थित मिलों के कर्मचारियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। भाग लेने वाले कर्मचारियों में से क्रमशः तीन कर्मचारियों को श्रेष्ठ निबंध लेखन के लिए नक़द पुरस्कार दिए गए। साथ ही भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा जून 91 में आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अधिकारी तथा मार्च-अप्रैल 91 की एस.एस.सी. परीक्षा में हिन्दी विषय में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों को भी पुरस्कार दिए गए, जिनका ब्योरा यहां प्रस्तुत है

श्री विजय महादेव टक्के, श्री हरिद्वार सिंह, श्री कैलाश नाथ शर्मा।

हिन्दी प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर नक़द पुरस्कार :

श्री एस.के. नवलकर महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

मार्च/अप्रैल 1991 की एस.एस.सी./एच.एस.सी. परीक्षाओं में हिन्दी विषय में 60 % से अधिक अंक प्राप्त करने वाले निगम के कर्मचारियों के बच्चों को नक़द पुरस्कार।

1. श्री विनोद कुमार सुपुत्र श्री रमेश बाल्मीकि, उप-प्रबन्धक (जनसंपर्क) रु. 100/-

निदेश (कार्मिक) श्री आर. एच. भट्ड ने आभार प्रदर्शित किया।

दि ओरिएण्टल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड मंडल कार्यालय, अहमदाबाद

दिनांक 18 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह समारोह मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, नेवासा शाखा के कार्याध्यक्ष डॉ. शहाबुद्दीन शेख मुख्य अतिथि थे। कार्यालय के मंडल प्रबंधक श्री जुगलकिशोर रामपालजी करवा ने सभी का स्वागत करते हुए अपने प्रास्ताविक भाषण में कहा कि वर्तमान स्थिति में हिन्दी से दूर रहकर काम नहीं चलेगा, क्योंकि धीरे-धीरे हिन्दी हमारे निकट आ रही है, इसलिए उसे गले लगाना चाहिए। वह समय अब चला जा रहा है, जब अंग्रेजी का शतप्रतिशत बोलबाला था।

कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी के बढ़ते चरणों का उल्लेख करते हुए श्री करवाजी ने हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. शहाबुद्दीन शेख ने कहा कि हद तक सम्मान मिल रहा है। परन्तु आवश्यकता है कि राजभाषा के रूप में हिन्दी को उचित सम्मान मिले।

राष्ट्रभाषा हिन्दी सरल, सुगम और मधुर भाषा है। उसके प्रयोग में ही हमें अपनी शान समझनी चाहिए। हिन्दी की लिपि नागरी लिपि है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि है। इसके अतिरिक्त डॉ. शहाबुद्दीन शेखजी ने भारत सरकार की राजभाषा विषयक नीति पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान पाने के लिए हिन्दी शिक्षण योजना की हिन्दी प्रवीण तथा प्राज्ञ की परीक्षाएं उत्तीर्ण करें। श्री कानीफनाथ गाडेकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिन्दी सप्ताह के उपलक्ष्य में कर्मचारियों के लिए "कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी का प्रयोग" तथा "राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का योगदान" इन विषयों पर वाक्प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सभी कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। उत्कृष्ट वक्ताओं को डॉ. शहाबुद्दीन शेख ने सम्मानित किया

कु. भारती लालवेगी, कु. अंजली जोशी, श्री रामकृष्ण दलवी।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली

दिनांक 11-11-91 से 16-11-91 तक 'हिन्दी सप्ताह' का भव्य आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन संसद-सदस्या श्रीमती वीणा वर्मा ने सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण करके व दीप जलाकर किया। श्रीमती वर्मा ने इस अवसर पर कहा कि हमारे संविधान में हिन्दी को जो राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है वह वास्तव में इसे अभी तक सच्चे अर्थों में नहीं मिल सका है। इसके लिए हम सबको सच्चे मन से प्रयास करना होगा। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता

संस्थान के निदेशक डा. संतोष कुमार कक्कड़ ने की, उन्होंने कहा कि संस्थान में हिन्दी के कामकाज में आने वाली सभी बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया गया है। उन्होंने यह भी विश्वास व्यक्त किया कि आगे आने वाले दिनों में संस्थान का अधिकतर कामकाज हिन्दी में किया जाएगा इसके लिए कर्मचारियों व अधिकारियों को चरणबद्ध तरीके से हिन्दी में कामकाज करने का प्रशिक्षण कार्यशालाओं में दिया जा रहा है। उन्होंने इस अवसर पर सहर्ष घोषणा की कि वर्ष 1992 से संस्थान द्वारा ली जाने वाली एम.बी.बी.एस. की प्रवेश परीक्षा अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी माध्यम से भी ली जाएगी।

इस सप्ताह के अन्तर्गत संस्थान के कर्मचारियों को अपना दैनिक कामकाज हिन्दी में करने के लिए हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में संस्थान के विभिन्न केन्द्रों/विभागों/अनुभागों से लगभग 28 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशालाओं में व्याख्यान के लिए सर्वश्री डा. सूरजभान सिंह, डा. नारायण दत्त पालीवाल, श्री ओम प्रकाश वर्मा, श्री देवेन्द्र दत्त नौटियाल, डा. विचार दास, डा. रामबाबू शर्मा आदि विद्वानों ने कार्यालय में हिन्दी के प्रयोगों से संबंधित अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान दिए। दोपहर बाद विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें संस्थान के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। संस्थान के निम्नलिखित कर्मचारियों ने हिन्दी की अलग-अलग प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्राप्त किए।

निबंध प्रतियोगिता (प्रथम वर्ग) कुमारी विमल भुटानी, श्रीमती संगीता अजमानी, श्रीमती निशा

निबंध प्रतियोगिता (द्वितीय वर्ग)

कुमारी ओमना ई.आर., कुमारी गीता देवी जी., श्रीमती सुशीलम्मा ई.वी.

टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता के परिणाम

कुमारी विमल भुटानी, श्रीमती निशा द्विवेदी, श्री अतर सिंह,

हिंदी टाइपिंग प्रतियोगिता

कुमारी मोहिन्दर कौर,

श्रुतलेख प्रतियोगिता

श्रीमती संगीता अजमानी, कुमारी विमल भुटानी, श्रीमती रेणु भारद्वाज।

इस सप्ताह के अंतर्गत दिनांक 12-11-91 को जवाहरलाल सभागार में "हिंदी अकादमी" के सौजन्य से 'कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। सम्मेलन में श्री ओम् प्रकाश आदित्य, श्री गोविन्द व्यास, डा. सरोजिनी प्रीतम, श्री अशोक चक्रधर, श्री संतोषनन्द, मधुर शास्त्री, कु. नूतन कपूर जैसे प्रमुख कवियों एवं कवियित्रियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। दिनांक 15-11-91 को दिल्ली के सुप्रसिद्ध 'विहान' नाट्य मंच द्वारा 'जब हम न होगें' नामक नाटक का सफलतापूर्वक मंचन किया।

'हिंदी सप्ताह' का समापन समारोह दिनांक 16-11-91 को किया गया। जिस के मुख्य अतिथि केन्द्रीय हिंदी संस्थान के भूतपूर्व निदेशक डा. पी. गोपाल शर्मा थे। उन्होंने प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार दिए। समारोह की अध्यक्षता संकायाध्यक्ष डा. उर्मिल शर्मा ने की। उन्होंने संस्थान में हिंदी प्रयोग की प्रगति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'कालेज आफ नर्सिंग की द्वितीय वर्ष की छात्राओं एवं संस्थान के कर्मचारियों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कार्पोरेशन, भोपाल

दिनांक 19 सितम्बर, 1991 को "तरंग म्यूज़िक ग्रुप" का रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के आरम्भ में मुख्य अतिथि श्री एम. प्रकाश विस्फोटक नियंत्रक, का श्री एस. बालसुब्रमणीयन्, प्रबंधक परिचालन ने माल्यार्पण करके स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में श्री ए. एम. अत्रि, प्रबन्धक एल. पी. जी. ने हिन्दी के प्रयोग की प्रगति के लिए कहा कि हमें नियम/कानून जो बनाए गए हैं उनकी आवश्यकता नहीं होनी चाहिए स्वतः ही हमें हिन्दी का प्रयोग व्यक्तिगत एवं कार्यालयीन कार्यों में करना होगा।

मुख्य अतिथि श्री एम. प्रकाश ने कहा कि हिन्दी के प्रयोग के लिए हमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए बल्कि गर्व अनुभव होना चाहिए। बाद में उन्होंने हिन्दी सप्ताह के दौरान आयोजित हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता तथा हिन्दी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। विजेताओं के नाम इस प्रकार है :

श्री विश्वास मण्डलेकर, श्री अशोक टेंभरे, श्रीमती शांति बारा, श्री संदीप राय, श्री राजीव विग, श्रीमती मैरी जॉन।

उक्त कार्यक्रम का संचालन श्री सुधीर रायकवार ने किया।

इस अवसर पर कार्यालय के श्री सुधीर रायकवार, हिन्दी टंकक, श्री विकास मेश्राम हिन्दी अनुवादक, तथा श्री विश्वास मण्डलेकर, वरिष्ठ बिक्री अधिकारी ने अपनी मधुर आवाज़ में लोकप्रिय हिन्दी गीत प्रस्तुत किए।

श्री पी. सी. अग्रवाल, उप-प्रबन्धक (बिक्री) ने आभार प्रदर्शन किया।

नेशनल टेक्सटाइल कारपोरेशन लिमिटेड (दिल्ली, पंजाब और राजस्थान)

दि. 06 से 12 सितम्बर, 1991 तक हिन्दी सप्ताह समारोह में किए गए विभिन्न कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं का विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी कार्यशाला: 06 तथा 11 दिसम्बर, 1991

इस सप्ताह के दौरान दो हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया ।

निबन्ध प्रतियोगिता

निबन्ध प्रतियोगिता विषय था :

"भारत की आर्थिक स्थिति संकट के दौर में" इस में मुख्यालय, 9 इकाइयों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों (शो रूमों सहित) के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता : 09-09-1991

श्रुतलेख प्रतियोगिता : 09-09-1991

वाद-विवाद प्रतियोगिता : 10-9-1991

यह आयोजन तीन क्षेत्रों में किया गया, एक पंजाब स्थित मिलों तथा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़, दूसरा राजस्थान स्थित मिलें तथा क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर और तीसरा दिल्ली स्थित मिल, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली तथा मुख्यालय के कर्मचारी ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय था :

"वर्तमान स्थिति में राष्ट्रीय सरकार आवश्यक"

समापन समारोह : 12-09-1991

12 सितम्बर, 1991 को हिन्दी सप्ताह समापन समारोह में मुख्य अतिथि, माननीय कपड़ा मंत्री श्री अशोक गहलोत थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्षता एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर. रामकृष्ण ने की। इस अवसर पर अंतिम वाद-विवाद प्रतियोगिता, पुरस्कार वितरण तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किए गए !

विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

उन कर्मचारियों को विशेष रूप से प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कृत किया गया जिन्होंने राजभाषा के प्रयोग में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। निगम में लागू नकद प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत भी कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

अर्धवार्षिक पत्रिका "प्रेरणा" के पांचवे अंक का विमोचन कराया गया जिसमें निगम के मुख्यालय मिलों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनाएं प्रकाशि की गई। पुस्तकालय के लिए 1500 रुपये की हिंदी में प्रकाशित पुस्तकें खरीदीं गईं।

दीपक परियोजना मुख्यालय, शिमला

दिनांक 14 से 20 सितम्बर, 91 तक हिन्दी सप्ताह समारोह का आयोजन मुख्यालय, मुख्य अभियंता दीपक परियोजना में हुआ, जिसकी अध्यक्षता कार्यालय अध्यक्ष ब्रगेडियर शशि भूषण जोशी, मुख्य अभियंता ने की : हिन्दी सप्ताह के अंतर्गत अयोजित प्रतियोगिताओं के मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष श्री राम प्रकाश, शौर्य-चक्र, अधीक्षण अभियंता (सिविल) एवं सदस्य श्री राज कुमार मेहरा, अधिशासी अभियंता (सिविल) व श्री नरसिंह बहादुर सिंह, लेखाधिकारी थे। मुख्य अभियंता ने निम्नलिखित प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों को पुरस्कृत किया :—

वाद-विवाद प्रतियोगिता

सर्वश्री श्याम बिहारी सिंह, अर्जुन सिंह, एस. स्वामीनाथन, वी. सेल्वराज,

आर. डी. एस. कुमार, रविंद्रन एस, गणेश दत्त जोशी, समर सील

टंकण प्रतियोगिता

सर्वश्री ओम नारायण सिंह, मनन राम, सुरेन्द्र कुमार, बाल दत्त त्रिपाठी, भरत सिंह, जरम सिंह, रमेश कुमार तोमर सुरेन्द्र कुमार, बाल दत्त त्रिपाठी, भरत सिंह, रमेश कुमार तोमर,

निबन्ध प्रतियोगिता

हेमन्त कुमार त्रिवेदी, बचन सिंह, अर्जुन सिंह, बलदेव सिंह जौहल,

सुरेन्द्र कुमार, श्री भगवान, सतबीर सिंह, गणेश दत्त जोशी

मुख्य अभियंता ने कहा कि हमें कार्यालय के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए ।

इंडियन आयल कार्पोरेशन लिमिटेड (विपणन प्रभाग) उत्तरी क्षेत्र : नई दिल्ली

इंडियन ऑयल कार्पोरेशन (विपणन प्रभाग) के उत्तरी क्षेत्र में दिनांक 16-9-1991 से 20-9-1991 तक हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह पूरे उत्साह से मनाया गया। इस सप्ताह से पूर्व तक क्षेत्रीय स्तर पर "तकनीकी लेख" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। दिनांक 16-9-1991 को राजभाषा कार्यान्वियन समिति के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, उत्तरी क्षेत्र का हिंदी दिवस/सप्ताह पर "संदेश" जारी किया गया जिसमें उन्होंने दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का अनुरोध किया । सप्ताह के दौरान निम्नलिखित दो रंगदार पोस्टर/स्टिकर उ. क्षेत्रीय कार्यालय के प्रमुख स्थलों पर लगाए एवं सभी लोकेशनों में भेजे गए :

पोस्टर :

1. "हिंदी में काम करना शर्म की बात न होकर गर्व की बात है क्योंकि यह हम सबकी राजभाषा है ।"
2. "कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से भी जरूरी है।"

स्टिकर :

1. "हिंदी का प्रयोग विवशता नहीं, आवश्यकता है"

2. "हिंदी में हस्ताक्षर, लगें सुन्दर और प्रखर"

सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगिताओं, पुरस्कार आदि का विवरण निम्नलिखित है:

तकनीकी लेख प्रतियोगिता:

सौर ऊर्जा एवं इसकी उपयोगिता

श्री विश्वजीत बोस, लखनऊ मंडल, श्री उमेश गर्ग, बरेली मंडल। श्रीमती कमला सिंह, श्रीमती विभु जैन, श्रीमती नीलम अग्रवाल,

निबन्ध प्रतियोगिता

जनसंख्या वृद्धि नियंत्रण उपायों की उपेक्षा क्यों?

श्री जयप्रकाश भारद्वाज, श्री सुनीत कुमार वासन, श्रीमती सतवीर कुमारी हीरा, श्री सजीव डबर, श्री उमेश चन्द्र शर्मा, श्रीमती वीना बत्रा, श्री उमेश कुमार ताम्रकार।

हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता

श्रीमती अनित वधवा, श्रीमती वीना बत्रा, श्री रविंद्र नाथ गुप्ता, श्री सुभाष चन्द्र दुआ।

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

श्री एस. के. खरे, श्री भारत भूषण सरदाना, श्री प्रवीण कुमार शर्मा, श्रीमती संगीता कोहली, श्री जयप्रकाश।

स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता

श्री प्रवीण कुमार शर्मा, श्री एस. के खरे, श्रीमती सतबीर कुमारी हीरा, श्री के. के. चड्ढा, श्रीमती संगीता कोहली।

हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता

श्रीमती अनिता वधवा और श्री मेघराज पाहवा।

टिप्पण एवं प्रारुपण प्रतियोगिता

श्री सुनीत कुमार वासन, श्री रविंद्र कुमार सपरा, श्री बृजलाल, श्रीमती कमला सिंह,

दिनांक 12-10-91 को प्रतिभागियों को महाप्रबन्धक श्री आर के जैन ने पुरस्कार वितरित किए। □

[पृष्ठ 73 का शेष]

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता

श्री नन्दन सिंह बिष्ट–वाहन, श्री भास्कर नौटियाल–बजट, श्रीमती जयन्ती वर्मा–इलै.।

हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता

श्रीमती वीणा वर्मा–वाहन, श्री नन्दन सिंह बिष्ट–वाहन, कुमारी वीणा–इलै.।

हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए 9 व्यक्तियों को 100-100 रूपये के पुरस्कार दिए गए। हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाली तीन निदेशालयों को शील्डें प्रदान की गई, जो कि इस प्रकार हैं:—

प्रथम— युद्धपोत परियोजना कमोडोर सी पी जार्ज
द्वितीय— भण्डार मेजर जनरल हरवंश सिंह
तृतीय— आयुद्ध मेजर जनरल बी नियोगी

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के वाहन की निम्नलिखित टीम को चल शील्ड दी गई —

श्री राम सरन, श्री वी एस शर्मा, श्री नन्दन सिंह बिष्ट, श्री वाई एन सिंह।

मुख्य अतिथि श्री एन रघुनाथन ने राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता को उपयोगी बताया और आशा व्यक्त की कि इससे राजभाषा के क्षेत्र में सभी अधिकारियों व कार्मिकों के सामान्य ज्ञान में अवश्य वृद्धि हुई होगी। उन्होंने बताया कि संविधान में दी गई व्यवस्थाओं का पालन करना हमारा दायित्व है और हिन्दी का प्रयोग करके हम केवल नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं, वरन भारत वर्ष के निर्माण में भी योगदान दे रहे हैं। उन्होंने आह्वान किया कि इस समारोह को हम तभी सफल मानेंगे जब हम सभी आज से प्रतिदिन अधिक से अधिक सरकारी कार्य हिन्दी में करने का संकल्प लें। अन्त में पुरस्कार विजेताओं को बधाई व शुभ कामना करते हुए अगले वर्ष अधिक से अधिक कार्मिकों को प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने की प्रेरणा दी। निदेशक (प्रशासन) श्री वी पी दीवान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मुख्य अभियंता चेतक परियोजना मुख्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

सीमा सड़क संगठन की एक परियोजना के अन्त में राजस्थान के रेतीले एवं दुर्गम प्रदेशों में सड़क मार्ग के निर्माण एवं रख रखाव के द्वारा इन आर्थिक रूप से पिछड़े प्रदेशों को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने में सक्रिय रूप से काम करने वाली परियोजना में दिनांक 23 सितम्बर, 91 से 28 सितम्बर, 91 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। सप्ताह में निम्न लिखित प्रतियोगी परीक्षाएं की गई:

(क) हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
(ख) टिप्पण प्रारुपण प्रतियोगिता
(ग) हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता

सफल कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र के साथ निम्नांकित पुरस्कार राशियां दी गई:—

श्री बी डी अग्निहोत्री, श्री प्रकाश चन्द्र, अश्रेलि, हवलदार लिपिक एस के यादव, श्री एस एन ठाकुर, अश्रेलि, श्री महेश आर, अश्रेलि, श्री ओम प्रकाश, अश्रेलि, श्री विक्रम सिंह, पायनियर, श्री विनोद कुमार।

इसके अतिरिक्त सप्ताह में सर्वाधिक काम काज राजभाषा में करने वाले अनुभाग को विजय चिन्ह ट्राफी तथा रू. 20 की नकद पुरस्कार राशि प्रतियोगिता के आधार पर की गई।

सप्ताह के दौरान हर स्थान पर महान व्यक्तियों के कथनों से उद्धरण चिपकाए गए तथा सप्ताह से वांछित तर तक हिन्दी में काम काज का लक्ष्य प्राप्त किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
भारी पानी संयंत्र, भा०पा०स० कालौनी
तूतीकोरिन (तमिलनाडु)

तमिलनाडु राज्य में स्थित परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन में 20 अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए द्वितीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 27 एवं 28 दिसम्बर, 1991 को किया गया। केलेंडर वर्ष 1991 के अन्तर्गत संयंत्र में अब तक दो हिन्दी कार्यशालाएं की जा चुकी हैं।

भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन के श्री नरसिंह राम, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने भारी पानी बोर्ड बम्बई, भारी पानी संयंत्र—कोटा/बडौदा/तालचेर एवं तूतीकोरिन के आमंत्रित पदाधिकारियों एवं कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का स्वागत किया। राजभाषा अधिकारी श्री के. श्रीनिवासन ने हर्ष व्यक्त किया कि संयंत्र के लिए यह सौभाग्य रहा है कि इसी कार्यशाला के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वियन समितियों की संयुक्त बैठक भी यहीं की गई।

महाप्रबंधक श्री एम. पेरियकरुप्पन ने उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि भा०पा० सं. तूतीकोरिन में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि हुई है। तमिलनाडु संतों, साहित्यकारों एवं वैज्ञानिकों की भूमि है और यहां संयुक्त राजभाषा कार्यान्वियन समितियों की बैठक एवं हिन्दी कार्यशाला का आयोजन होना अत्यन्त गर्व की बात है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा न होकर पूरे देश की भाषा है और हिन्दी जानने से रोजगार मिलने की प्रबल संभावनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विषयों पर फिल्म प्रभाग द्वारा तैयार की गई वी. एच. एस. हिन्दी कैसटों का प्रदर्शन भी किया गया।

हिन्दी कार्यशाला समापन सत्र में भा०पा०बो० बम्बई के मुख्य प्रशासन अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी श्री एस. राधवन ने भा०पा० सं. तूतीकोरिन में राजभाषा हिन्दी संबंधी होने वाली गतिविधियों की सराहना की और भविष्य में भी हिन्दी कार्यशाला करने के लिए विशेष बल दिया। महा-प्रबंधक श्री. एम. पेरियकरुप्पन् ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए और अपील की कि वे दैनिक काम-काज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

अन्त में, श्री नरसिंह राम, सहायक निदेशक (राजभाषा) का आभार प्रकट करते हुए कार्यशाला का समापन किया।

लघु उद्योग सेवा संस्थान, इम्फाल (मणिपुर)

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में तथा हिन्दी में सरकारी कामकाज करने में अधिकारियों और कर्म-चारियों के होने वाले संकोच को दूर करने के उद्देश्य से उस संस्थान में मुख्यालय की 'हिन्दी प्रगति योजना' के अंतर्गत 18 और 19 फरवरी, 92 को दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 18-2-92 को 9.30 बजे किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डा. टी. कुंजकिशोर सिंह, प्राचार्य, राजकीय हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय को आमंत्रित किया गया था परन्तु कुछ अपरिहार्य कारणों से वे नहीं आ सके। अत: इसका उद्घाटन संस्थान के निदेशक श्री पी. के. लाहिड़ी द्वारा किया गया। इस अवसर पर द्वितीय सत्र के अतिथि वक्ता श्री के. सी. शर्मा, हिन्दी अधिकारी यू. बी. आई. क्षेत्रीय कार्यालय इम्फाल भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम संस्थान के हिन्दी अनुवादक श्री डॉ. एन० सिंह ने उठकर कार्यक्रम की शुरूआत की तथा आए अतिथि का परिचय दिया और कार्यशाला आयोजन का संक्षिप्त उद्देश्य बताया। संस्थान के सहा० निदेशक (या) और नामित राजभाषा अधिकारी श्री प्रदीप कुमार ने आमंत्रित अतिथि और अन्य समस्त उपस्थित सदस्यों के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कार्यशाला के दो दिवसीय कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी और इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने का सबसे अनुरोध किया।

तत्पश्चात् संस्थान के निदेशक महोदय ने बताया कि कि इसका उद्देश्य न तो देवनागरी लिपि सिखाना है और न हिन्दी भाषा शिक्षण बल्कि इसका वास्तविक सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी को अभ्यास करवाना है ताकि अधिकारी और कर्मचारी मुक्तरूप से हिन्दी में अपना काम कर सकें। उन्होंने संस्थान में हिन्दी कामकाजों को निरंतर प्रोत्साहित करते रहने के लिए नामित राजभाषा अधिकारी और हिन्दी अनुवादक को धन्यवाद दिया तथा अतिथि वक्ता श्री के. सी. शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया तथा कार्यशाला की सफलता की कामना की।

प्रथम सत्र में संस्थान के अनुवादक ने राजभाषा सम्बन्धी सरकार की नीतियों पर सविस्तार प्रकाश डाला और कार्यालय में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों और टिप्पणियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि टिप्पणी की भाषा वही होनी चाहिए जिसे हम सामान्य बोलचाल में प्रयोग करते हैं। उसमें आसान और परिचित शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

द्वितीय सत्र में आकस्मिक अवकाश, अर्जित अवकाश कार्यग्रहण रिपोर्ट, दौरा कार्यक्रम आदि को हिन्दी में लिखने और प्रस्तुत करने की विस्तृत जानकारी यू.बी.आई., क्षेत्रीय कार्यालय, इम्फाल के हिन्दी अधिकारी श्री के.सी. शर्मा ने दी तथा समस्याएं देकर हिन्दी में आवेदन आदि का अभ्यास कराया।

तृतीय सत्र में हिन्दी शिक्षण योजना, इम्फाल के हिन्दी प्राध्यापक श्री वेंकटलाल शर्मा ने पत्र, अर्द्धसरकारी पत्र, परिपत्र कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश लिखने और तैयार करने की विधि बतायी और तत्संबंधित प्रशिक्षणार्थियों की समस्याओं का समाधान किया।

दूसरे दिन प्रथम सत्र में संस्थान के हिन्दी अनुवादक ने पदसृजन, भर्ती, नियुक्ति, आरक्षण, स्थायीकरण एवं अनुशासनिक मामलों से संबंधित विभिन्न प्रकार की टिप्पणियों का उदाहरण बताया तथा समस्याएं देकर संबंधित टिप्पणियों का अभ्यास कराया।

दूसरे और तीसरे सत्र के अतिथि वक्ता मणिपुर विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर जगमल सिंह थे। उन्होंने विभिन्न प्रकार के आवेदन पत्र लिखने की विधि और अभ्यावेदनों के प्रारूप को बताया। यात्रा भत्ता बिलों पर आपत्तियां, बिलों का भुगतान, वेतन और लेखा कार्यालय से पत्राचार आदि के नमूनों को भी उन्होंने बताया। उनकी कक्षाओं में प्रशिक्षणार्थियों ने विशेष रूचि दिखलायी और अपनी तरह-तरह की समस्याएं और शंकाएं समाधान हेतु रखीं।

तृतीय सत्र के पश्चात् डा. जगमल सिंह ने समापन के अवसर पर कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी की आवश्यकता और महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए एक सारगर्भित भाषण दिया। संस्थान के निदेशक महोदय ने प्रशिक्षणार्थियों को लगनपूर्वक दो दिनों तक भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला में प्रशिक्षित अधिकारी और कर्मचारी अपना अधिकाधिक काम हिन्दी में ही करेंगे और राजभाषा नीति के समुचित अनुपालन में इस कार्यालय को अधिकाधिक सहयोग देंगे।

मुरगांव गोदी श्रम मण्डल, गोवा

उद्घाटन समारोह

दिनांक 9 से 11 दिसम्बर, 1991 तक तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 9 दिसम्बर को मण्डल के प्रभारी उपाध्यक्ष श्री जे.एल. विएगस ने किया। श्री विएगस ने कहा कि राजभाषा के कार्यान्वियन में सरलता आने के लिए ऐसी कार्यशाला की आवश्यकता है। उन्होंने कार्यशाला में प्रशिक्षण लेने के पश्चात् सभी कर्मचारी अपने प्रति दिन के कार्य में हिन्दी का प्रयोग करेंगे ऐसी आशा व्यक्त की। हिन्दी शिक्षण योजना के प्राध्यापक श्री प्रदीपकुमार शर्मा, मुरगांव पत्तन न्यास के हिन्दी अधिकारी श्री एस.ई. राव के भी भाषण हुए। आरंभ में राजभाषा अधिकारी श्री लारेन्स डिसोजा ने सभी का स्वागत किया तथा श्री श्याम कासकर ने धन्यवाद दिया। इस कार्यशाला में 24 कर्मचारी/अफसरों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय केरल और लक्षदीप कोट्टण हिल बंगला तिरुअनंतपुरम्

26 नवम्बर, 91 से 27 नवम्बर, 91 तक दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन तिरूअनन्तपुरम् नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के सदस्य सचिव एवं मुख्य पोस्टमास्टर जनरल के कार्यालय के हिन्दी अधिकारी श्री डी. कृष्णपणिक्कर ने किया और अध्यक्षता निदेशालय के हिन्दी अनुवादक श्रीमती निर्मला कुमारी ने की।

समापन समारोह में क्षेत्रीय कार्यान्वियन कार्यालय गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, कोच्ची (केरल) के उप निदेशक श्री राम चन्द्र मिश्र अध्यक्ष थे। इस अवसर पर तिरूअनन्तपुरम् नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति द्वारा प्रकाशित "राजभाषा पुस्तिका" का वितरण इस निदेशालय के कार्यालय अधीक्षक श्री ई. पी. के. नायर को देते हुए दूसरे दिन की कार्यशाला की शुरुआत की। मिश्राजी ने राज-भाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग सम्बन्धी जानकारी दी और अपने विचारों का माध्यम हिन्दी को बनाए रखने तथा कार्यालयीन कामकाज अधिकाधिक हिन्दी में करने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील की। कार्यशाला में 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आवास तथा नगर विकास निगम क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

दिनांक 7 और 8 जनवरी, 1992 को हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। मुख्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा मुख्यालय से बाहर कार्यशालाओं की शृंखला में यह चौथी थी। इससे मुख्यालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर, लखनऊ तथा अहमदाबाद में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर के सभी 12 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का उद्‌घाटन उड़ीसा के महालेखाकार श्री जी०सी० श्रीवास्तव ने जो कि राजभाषा विभाग द्वारा गठित भुवनेश्वर नगर राजभाषा कार्यान्वियन समिति के अध्यक्ष भी हैं, किया तथा उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता उड़ीसा राज्य आवास बोर्ड के अध्यक्ष श्री आर० के० मिश्रा ने की।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास प्रयोगशाला एवं अनुसन्धान केन्द्र इमारत, हैदराबाद

दिनांक 30 और 31 जनवरी, 1993 को दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जनवरी 1990 से इस प्रयोगशालाओं में नियमित रूप से हिन्दी कक्षाएं चलाई जा रही है। इस प्रशिक्षण का कुल 180 अभ्यर्थियों ने लाभ उठाया।

श्री पी. एन. रेड्डी, सदस्य सचिव (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद/सिकन्दराबाद) और श्री नरहर देव, हिन्दी अधिकारी (भारत डायनामिक्स लिमिटेड, हैदराबाद), इन दो अधिकारियों को कार्यशाला में हिन्दी टिप्पण तथा आलेखन और सरकारी कार्यालयों में हिन्दी पत्राचार के विषय पर अभ्यर्थियों को प्रशिक्षण देने के लिये आमंत्रित किया गया। प्रयोगशाला में से श्री आर. चोइथाणी, वैज्ञानिक "इ" और श्री डी. एस. पाण्डेय, वैज्ञानिक "डी" ने भी अभ्यर्थियों से दूसरे दिन के सत्र में टिप्पण तथा हिन्दी पत्राचार का अभ्यास (केस स्टडी) करवाया।

इस कार्यशाला के उद्‌घाटन के अवसर पर निदेशक, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने हिन्दी विशेषांक "अस्त्र", प्रशासनिक शब्दावली तथा राजभाषा सम्बन्धी मार्गदर्शिका की पुस्तिका को विमोचन किया। जनवरी–मई 1990 के सत्र में प्रबोध परीक्षा में उच्चांक प्राप्त करने वाले 7 कर्मचारियों को लेफ्टि. जन. (डॉ) वी. जे. सुन्दरम्, सह-निदेशक, ने नगद पुरस्कार दिए। भाग लेने वाले सभी कर्मचारियों को ब्रिगेडियर (डॉ.) एस. के. सलवान, निदेशक, प्रबंध सेवाएं, अनुसन्धान केन्द्र इमारत, ने प्रमाण-पत्र दिए।

अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद

दिनांक 22-12-91 से 30-12-91 तक आयोजित 5 दिवसीय हिन्दी कार्यशाला में 19 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में टिप्पण और आलेखन से संबंधित विविध विषयों पर प्रशिक्षण व अभ्यास करवाया गया। इस कार्यशाला में डा. कुंजबिहारी वार्ष्णेय, श्री रामचन्द्र, श्री सोनेलाल कोल, श्री दिनेश मिस्त्री, श्री जे. पी. पाण्डेय, श्री आर. एल. वर्मा तथा श्री वि. दत्त ने कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया।

केन्द्रीय मत्स्य नौचालन एवं इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान (सिफनेट), दिवान्स रोड कोच्चि-16

दिनांक 13 फरवरी से 14 फरवरी, 1992 तक हुई हिन्दी कार्यशाला में 19 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री पुराणम् प्रकाशम, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं संपर्क अधिकारी (राजभाषा) ने स्वागत किया। उद्‌घाटन सिफनेट के निदेशक श्री सी. पी. वरगीस ने किया। उन्होंने सिफनेट में प्रथम बार इस प्रकार की कार्यशाला आयोजित होने पर हर्ष व्यक्त किया और आशा भी प्रकट की कि कार्यशाला उपयोगी सिद्ध होगी। निदेशक ने अनुरोध किया कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग अपने दैनंदिन व्यवहार में करने की कोशिश करें।

श्री कृष्णदास, हिंदी अधिकारी, स्पाइसेस बोर्ड, एवं श्रीमती राधिका देवी, हिंदी प्राध्यापिका, (हिन्दी शिक्षण योजना) ने राजभाषा नियम, अधिनियम, व्याकरण आदि विभिन्न मुद्दों पर व्याख्यान दिए।

समापन समारोह में सभी प्रतिभागियों को निदेशक ने प्रमाण-पत्र दिए। श्री एम. के. देवराज, मुख्य अनुदेशक (समुद्री इंजीनियरी) की ओर से आभार के बाद समारोह समाप्त हुआ।

महालेखाकार (लेखा परीक्षा) जयपुर

महालेखाकार (लेखा परीक्षा) प्रथम एवं द्वितीय, राजस्थान जयपुर के कार्यालयों में संयुक्त तत्वाधान में हिन्दी की अर्द्ध दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 6-1-92 से 10-1-92 तक किया गया जिसमें महालेखाकार कार्यालय, जम्मू एवं कश्मीर से आए कर्मचारियों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया।

उद्‌घाटन दिनांक 6-1-92 को श्री वी. पी. मल्होत्रा, कल्याण अधिकारी ने किया। कल्याण अधिकारी ने हिन्दी के वाक्य विन्यास, ध्वनि आदि पर प्रकाश डाला एवं हिन्दी के सरल स्वरूप की प्रशंसा करते हुए हिन्दी के सरल शब्दों का प्रयोग करने का आग्रह किया तथा कश्मीर से आए

कर्मचारियों को जो इस कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु चयनित हुए थे, को हिन्दी सीखने एवं हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा दी और अधिकाधिक राजकार्य हिन्दी में किये जाने की महत्ता पर बल दिया ।

दिनांक 10-1-92 को कार्यशाला का समापन श्री वी.पी. मल्होत्रा, कल्याण अधिकारी के समापन भाषण से हुआ ।

आकाशवाणी, नागपुर

दिनांक 3-2-92 से 7-2-92 तक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

5 दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन समारोह दिनांक 3-2-92 को केन्द्र निदेशक की अध्यक्षता में हुआ । प्रारंभ में हिन्दी अधिकारी श्री एम. जी. डब्ली ने हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के महत्त्व पर प्रकाश डाला । केन्द्र निदेशक श्री श्याम शैन्डे ने कहा कि इस कार्यशाला का लाभ हमारे कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में उपस्थित होकर उठाना चाहिए एवं कार्यालयीन कार्य में हिन्दी का प्रयोग अधिकाधिक रूप में करना चाहिए ।

आकाशवाणी, भुज (कच्छ)

दिनांक 28-1-92 से दिनांक 30-1-92 तक आयोजित कार्यशाला में समस्त अधिकारीगण/कर्मचारीगण ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित आकाशवाणी के समस्त परिवार के बीच केन्द्र निदेशक, श्री दीक्षित ने हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने हेतु सभी कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने का और राजभाषा के उपयोग को बढ़ावा देने का अनुरोध किया।

दिनांक 30-1-92 को कार्यशाला का समापन समारोह किया गया। इस विशिष्ट समारोह में अतिथि विशेष पद पर एस.एस.बी. के कमाण्डेन्ट श्री नरेन्द्र कुमार भट्ट तथा कंपनी कमान्डेन्ट श्री किशनसिंह को आमंत्रित किया गया।

इस बीच कार्यालय के कार्यक्रम निष्पादक श्री कमलेश राणा तथा श्री अमृतलाल मीना ने हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु वक्तव्य दिया।

श्री भट्ट ने हिन्दी भाषा को बढ़ावा देने हेतु तथा कार्यालय का काम हिन्दी में करने के लिए अधिकारियों/कर्मचारियों को कहा कि यह जरूरी है कि हम चाहते हैं हिन्दी चले, आगे बढ़े। यह हमारी राष्ट्रभाषा है।

अतिथि कंपनी कमान्डेन्ट श्री किशनसिंह ने भी हिन्दी भाषा की प्रगति के बारे में कहा कि हिन्दी हमारी अपनी जो रग रग में दौड़ती शक्ति है जो हमें प्रदान करती है वह है हमारी राष्ट्रभाषा।

अन्त में श्री सिंह ने कहा कि हम खुद हिन्दी सीखें/सीखने के बाद परिवार को सिखाएं/पड़ोसियों को सिखाएं। इस तरीके से जो ज्ञान हैं एक दूसरों के साथ दीप से दीप जलाएं चलो और इसी तरह आगे ही आगे हिन्दी भाषा की प्रगति होती रहेगी तभी तो हमें होगा कि हमारी जो राष्ट्र-भाषा है, राजभाषा है उसको हम गर्व के साथ सिर ऊंचा करके बोल सकेंगे और हमारे दिल में भावना पैदा होगी दूसरों को सिखाने की।

हिन्दी अनुवादक श्रीमती नीना जे. मेहता ने अध्यक्ष की ओर से धन्यवाद दिया ।

आकाशवाणी राजकोट

दिनांक 4-1-92 से 10-1-92 तक हुई छः दिवसीय कार्यशाला में आकाशवाणी राजकोट, उच्च शक्ति प्रेषित आकाशवाणी राजकोट, दूरदर्शन केन्द्र राजकोट व पत्र सूचना कार्यालय के 27 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 3-1-92 को कार्यशाला का उद्घाटन पुलिस आयुक्त राजकोट के श्री सी.पी. सिंह ने दीप प्रज्जवलित करके किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी को अपनाए बिना हमारी स्वतन्त्रता अधूरी है तथा सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग ऐसी हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित करने से उत्तरोत्तर बढ़ता है।

इस अवसर पर सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा निर्मित वृत्त-चित्र "14 सितम्बर 1949" तथा "भारत की वाणी" भी दिखाए गए।

दिनांक 10-1-92 को कार्यशाला के समापन समारोह पर मुख्य अतिथि श्री आर.के. जैन उपायुक्त (सीमा शुल्क एवं उत्पाद शुल्क) ने भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रमाणपत्र वितरित किए। इसके अतिरिक्त मुख्य अतिथि श्री जैन ने स्वैच्छिक हिन्दी संगठनों की हिन्दी की तीसरी परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले कार्यालय के तीन कर्मचारियों को निम्नलिखित नकद पुरस्कार भी दिए:

1. श्री बी.सी. मोलिया, तकनीशियन को रु. 450/-
2. श्री एस.सी. रावल, लिपिक को रु. 450/-
3. श्री एम. एच. केसूर, लिपिक को रु. 450/-

इसके अतिरिक्त पूर्णकालिक गहन हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान दिल्ली द्वारा दो कर्मचारियों को 1. श्री पी. शान्तामूर्ति, (75 % अंक) तथा 2. श्री ई. जी. जोसफ ने 65 % अंकों के साथ प्रबोध परीक्षा उत्तीर्ण करने पर क्रमश: रु. 300/- तथा रु. 150/- के नकद पुरस्कार दिए गए।

केन्द्र निदेशक श्री सतीश सक्सेना ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वाधान में समिति के सदस्य संगठनों में कार्यरत हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों/सहायकों के लिए दिनांक 26-2-1992 और 27-2-1992 को द्विदिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत 14 हिन्दी अधिकारियों तथा 17 हिन्दी अनुवादकों/सहायकों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन समिति के अध्यक्ष एवं मुख्य आयकर आयुक्त श्री एम.के. केशवजी ने किया। अपने प्रमुख भाषण में श्री केशवजी ने "राजभाषा नीति का प्रभावशाली कार्यान्वयन—उपाय और तौर तरीका" विषय पर विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। श्रीमती मिनी मैथ्यु, सचिव, कयर बोर्ड, कोच्ची, श्री थोमस मैथ्यु, सचिव, नारियल विकास बोर्ड, कोच्ची, श्री रामचन्द्र मिश्र, उप निदेशक (कार्यान्वयन), कोच्ची तथा कुछ प्रतिभागियों ने भी इस विषय पर अपने-अपने विचार प्रकट किए। तदुपरान्त राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित राजभाषा हिन्दी के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाले वृत्त चित्रों का प्रदर्शन हुआ।

कार्यशाला के समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

श्री एम. श्रीधरन, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं सचिव (कोच्चि नराकास) के स्वागत भाषण से कार्यशाला का शुभारम्भ हुआ और श्री ए.एन. कृष्ण दास, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी (स्पाइसेस बोर्ड) के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ इसका समापन भी हुआ।

यूनियन बैंक आफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय कोषिकोड़ मरीय यंबी बिल्डिंग, कोषिकोड़

20 व 21 जनवरी, 1992 को दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 14 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

अन्त में एक मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की गई तथा प्रतिभागियों से उनका फीड बैक लिया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन एवं समापन श्री रा० पट्टाभिरामन, क्षेत्रीय प्रबंधक, ने किया। प्रशिक्षकों के रूप में श्री राधेश्याम गुप्ता, राजभाषा अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, कोषिकोड एवं श्री जय प्रकाश चौधरी, राजभाषा अधिकारी, क्षे.का., एर्णाकुलम की सेवाएं प्राप्त की गई। कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों को क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री रा. पट्टाभिरामन ने "प्रमाणपत्र" दिए।

इंडियन बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

31-01-92 से 01-02-92 (दो दिन) तक पटना में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें बिहार स्थित शाखाओं से 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दि. 31-01-92 को राजभाषा अधिकारी श्री विरेन्द्र प्रताप सिंह ने स्वागत किया। क्षेत्रीय प्रबंधक श्री पी.जी. पांडे ने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमारे पास अपनी पहचान के लिए एक राष्ट्रीय झंडा है, एक राष्ट्रीय गीत है तथा एक राष्ट्रीय पक्षी है। इसी तरह हमने अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनी राष्ट्रीय पहचान माना है।

हिन्दी कार्यशाला का संचालन इंडियन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना के राजभाषा अधिकारी श्री वीरेन्द्र प्रताप सिंह ने आंचलिक कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री निर्मल कुमार सिंह के सहयोग से किया।

आन्ध्र बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय
कोतपेट, तेनालि (आंध्र प्रदेश)

राजभाषा संपर्क अधिकारी एवं लिपिकों के लिए कार्यशाला सह सम्मेलन 1991-92

वर्ष 91-92 के लिए राजभाषा संपर्क अधिकारी एवं लिपिकों का दो दिवसीय राजभाषा कार्यशाला सह सम्मेलन तैनालि म दि. 24-10-91 और 25-10-91 को किया गया।

दि. 24-10-91: क्षेत्रीय प्रबंधक श्री के चलपति राव ने कार्यशाला सह सम्मेलन का उद्घाटन किया। क्षेत्रीय प्रबंधक ने शाखाओं में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए जो कार्रवाई करनी है उन विषयों पर ज्यादा जोर देने का प्रस्ताव किया। वार्षिक कार्य योजना के आधार सभी विषयों पर राजभाषा अधिकारी से चर्चा भी की।

दि. 25-10-91: सहभागियों की परीक्षा ली गई और परीक्षाओं में प्रथम तीन स्थान के अतिरिक्त प्रोत्साहन के रूप में 4 पुरस्कार भी दिए गए।

आन्ध्र बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, निजामाबाद

दिनांक 13, 14 व 15 फरवरी 92 को जि. आदिलाबाद में क्षेत्र की 31 वीं व वर्ष 91-92 की चतुर्थ उन्नत हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुद्रा तिजोरी के प्रबंधक श्री शेख सईद ने उद्घाटन ने करते हुए कहा कि राष्ट्र प्रेमी को राष्ट्र भाषा प्रेमी भी होना चाहिए। उन्होंने आव्हान किया कि हिन्दी को दिलोदिमाग से अपना कर हमारे बैंक के दैनंदिन कार्य में उसका अधिकाधिक प्रयोग करें।

कार्यशाला तीन दिन तक चली जिसमें कर्मचारियों को जहां भारत सरकार की संतुलित राजभाषा नीति के बारे में बताया गया वहीं हिन्दी व्याकरण, बैंकिंग शब्दावली, प्रशासनिक पदावली, अनुवाद, हिन्दी पत्राचार, एवं बैंकिंग परिचालन के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग आदि विषयों का गहन अध्ययन कराया गया। प्रत्येक सत्र के बाद प्रतिभागियों में प्रतिस्पर्धा की भावना जगाने हेतु प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जिस में रामकृष्णपुरम् शाखा के श्री ए.के. एस. एस. श्रीनिवास प्रथम, सिरपुर कागजनगर शाखा के श्री के. श्रीनिवासराव द्वितीय व मंचिर्याल शाखा के श्री सी.एच. सत्यनारायण तृतीय स्थान पर रहें।

आन्ध्र बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, करीम नगर (आन्ध्र प्रदेश)

दि. 7-1-91 से 9-1-92 तक 21 वीं और इस वर्ष की तीसरी कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्रीय प्रबंधक श्री वी. सुरेन्दर रेड्डी ने किया। सहभागी कर्मचारियों का संबोधन करते हुए उन्होंने कहा कि देश के विभिन्न भाषा भाषी लोग, बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठाते हैं। इसलिए, हिन्दी जो हमारे देश की राजभाषा है, माध्यम में खातादारों की सेवा करना जातीय एकीकरण का एक मात्र प्रयास होगा। उन्होंने यह भी सलाह दी कि हिन्दी में काम करें और जातीय एकीकरण में अपना योगदान दें। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करीमनगर शाखा के मुख्य प्रबंधक श्री टी. सांबसिवराव ने की।

निम्नलिखित सहभागी पुरस्कार विजेता रहे।

1. श्री वी.एस.एस.एस. शास्त्री, पहला पुरस्कार 2. श्री के. रामचंद्रय्या दूसरा पुरस्कार, 3. श्रीमती वी. रमा, तीसरा पुरस्कार।

श्री जे.वी. जलम, राजभाषा अधिकारी, के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यशाला समाप्त हो गई।

आन्ध्र बैंक, नई दिल्ली

दिनांक 24, 25 व 26 फरवरी 1992 को वर्ष 1991-92 की चौथी हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन श्री ए.आर. मूर्ति, उप महाप्रबन्धक ने किया। श्री मूर्ति ने बताया कि हिन्दी में काम करना सबका दायित्व है। कर्मचारियों को हिन्दी प्रयोग हेतु तैयार करने व उनकी झिझक मिटाने के उद्देश्य से बैंक समय-समय पर हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है। उन्होंने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि हिन्दी में प्रवीण कर्मचारी हिन्दी प्रयोग के लिए पहल नहीं करते।

इससे पहले लारेंस रोड़ शाखा प्रबंधक श्री पी.एस. गांधी ने स्वागत किया।

राजभाषा अधिकारी श्री केशर सिंह ने विस्तार स कार्यशाला आयोजन का उद्देश्य समझाया व कार्यशाला में पढ़ाए जाने वाले विषयों की जानकारी दी।

कार्यशाला तीन दिन चली। प्रथम दिन राजभाषा अधिकारी श्री केशर सिंह ने भारत सरकार की राजभाषा नीति व हिन्दी व्याकरण की विस्तार से जानकारी दी।

परीक्षा सत्र के बाद सुरक्षा अधिकारी द्वारा सुरक्षा उपायों पर एक सत्र लिया गया।

समापन सत्र की अध्यक्षता सेवा केन्द्र, नई दिल्ली के मुख्य अधिकारी श्री सेवा सिंह मक्कड़ ने की। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि कर्मचारियों को हिन्दी प्रयोग को गंभीरता से लेना चाहिए और अपने दैनंदिन कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए।

सैन्ट्रल बैंक आफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद

दिनांक 24-2-92 से 29-2-92 तक लिपिक वर्ग के लिये संघन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का उद्घाटन अंचल के मुख्य प्रबंधक योजना विकास श्री एन.एस. रमणन् ने किया। कार्यशाला का समापन अंचल के मुख्य आंतरिक लेखा परीक्षक श्री रघुनाथ ने किया।

इस समारोह में हैदराबाद क्षेत्र के 24 वरिष्ठ लिपिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में विषय वस्तु को प्रस्तुत करने के साथ-साथ शाखाओं में दैनिक स्तर पर किये जाने वाले कार्यों का अधिकतम अभ्यास करवाया गया जिससे सदस्यों को हिन्दी में कार्य करने के लिये प्रेरणा मिली। यह कार्यशाला पूरी तरह सफल रही। परिणामस्वरूप शाखा स्तर पर प्रशिक्षित स्टाफ सदस्यों ने हिन्दी में कार्य करना प्रारंभ कर दिया है। इस कार्यशाला का संचालन उप मुख्य अधिकारी (राजभाषा) एवं हैदराबाद क्षेत्र के राजभाषा अधिकारी श्री अग्रवाल ने किया।

इलाहाबाद बैंक, स्टाफ कालेज, गुड़गांव

दिनांक 18-11-91 से 30-11-91 तक बैंक के राजभाषा अधिकारियों के लिए एक विशेष हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्घाटन हिन्दी के प्रख्यात साहित्य-कार एवं समालोचक डा. नामवर सिंह ने किया। इस अवसर पर डॉ. मानवर सिंह ने बताया कि यद्यपि आवश्यकता पड़ने पर अनुवाद करना जरूरी है परन्तु इसकी बाध्यता किसी भी भाषा को दासी बनाने का अनुक्रम है। डॉ. सिंह ने कहा कि हिन्दी भाषा हर दृष्टि से एक परिपूर्ण व सक्षम भाषा है अत: इसे अनुचरी नहीं बनाया जा सकता। आवश्यकता इसके प्रयोग की है। प्रयोग से ही भाषा का प्रसार होता है। उन्होंने भाषा के विकास में बाधक तत्वों से राजभाषा अधिकारियों को सावधान किया एवं बताया कि भाषा का निर्माण आम

जनता के द्वारा होता है। अतः जनता के द्वारा व्यवहृत शब्दों को अपनाए जाएं, नए-नए शब्दों को ढूंढने एवं उनके प्रयोग की उपयोगिता तथा ऐसे प्रयोग करने वालों को पुरस्कृत करने की आज सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने भाषा को लोकतांत्रिकता की आवश्यकता पर जोर देते हुए आगाह किया कि विकास हिन्दी का ही नहीं देश का होना चाहिए। हिन्दी तो स्वयं विकसित है, उसे तो बस प्रयोग में लाए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने राजभाषा अधिकारियों को परामर्श दिया कि हिन्दी के प्रचार प्रसार में दूसरी भाषाओं का भी ख्याल रखते हुए हिंदी को जोड़ने का काम करने वाली भाषा बताया।

इस अवसर पर विषय प्रवर्तन करते हुए, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. महेशचन्द्र गुप्त ने बैंकों में हिन्दी दिवस एवं हिन्दी सप्ताह के कार्यक्रमों में शिक्षा जगत में कार्यरत साहित्यकारों एवं भाषाविदों के जुड़ने को राजभाषा हिन्दी के प्रसार हेतु अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणास्पद बताया। उन्होंने राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों को गति देने का अनुरोध किया।

श्री के.एल. अरोड़ा, सहायक महाप्रबन्धक ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बैंक द्वारा हिन्दी में किए जा रहे कामकाज का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए बैंक के उप-महाप्रबन्धक, श्री के.सी. रिखी ने बताया कि राजभाषाधिकारियों को दायित्व बोध कराती है तथा बैंकिंग विधियों को भी ज्ञान कराती है। उन्होंने बताया कि बैंकों को जनता से जुड़ने के लिए, बैंकों के कामकाज, नीतियों को जनता तक पहुंचाने के लिए हिन्दी का प्रयोग अनिवार्य है, और अब जबकि अधिकांश कर्मचारी हिन्दी लिखना पढ़ना जानते हैं तथा बैंक के सभी स्टेशनरी, नियमावली, मैन्युअल आदि द्विभाषिक हैं तो हिन्दी के प्रयोग में हिचकिचाहट पूर्णतः अनुचित है एवं इसे दूर किया जाना चाहिए। अन्त में कार्यशाला के सफलता की कामना करते हुए उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया।

स्टाफ कॉलेज के मुख्य प्रशिक्षक श्री ज्ञानेन्द्र कुमार सक्सेना ने अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। 15 दिवसीय इस विशेष कार्यशाला के समापन समारोह में दिनांक 30-11-91 को श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर, सचिव, संसदीय राजभाषा समिति ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय
मेरठ

1991-92 के लक्ष्य के अन्तर्गत दूसरी हिन्दी कार्यशाला दिनांक 11-12-91 को आगरा में हुई।

इसका उद्घाटन केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रो. अमर बहादुर सिंह ने किया जबकि इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ प्रबन्धक श्री एम. डब्ल्यू. अब्बासी ने की।

कार्यशाला का संचालन क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा अधिकारी श्री सुरिन्दर पाल सिंह कोछड़ ने किया। मुख्य अतिथि ने उद्घाटन करते हुए कार्यशाला के महत्त्व व राजभाषा नीति, नियम व अधिनियम पर विचार व्यक्त करते हुए इसकी सफलता की कामना की। श्री अब्बासी ने कहा कि हम अपनी झिझक को कार्यशाला में अपने अभ्यास से दूर कर सकते हैं।

भारतीय स्टेट बैंक स्थानीय कार्यालय,
लखनऊ

भारतीय स्टेट बैंक के "ग" क्षेत्र के प्रशासनिक कार्यालयों में हाल ही में नियुक्त हिन्दी अधिकारियों के लिए दो सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र लखनऊ में 6 जनवरी से 18 जनवरी 1992 तक किया गया। इस दौरान इन्हें सामान्य बैंकिंग तथा प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम की एक विशेषता यह भी थी कि इसका संचालन "ग" क्षेत्र के हिन्दी अधिकारियों ने किया। इनमें बेंगलूर की श्रीमती वेद श्रीनिवास, हैदराबाद की श्रीमती जयश्री आयंगर, तिरूपति के श्री हीरालाल कर्नावट के नाम उल्लेखनीय हैं, समापन सत्र में लखनऊ मंडल के महाप्रबंधक (योजना) श्री एस.एन. गोयल ने कहा कि अहिन्दी भाषी क्षेत्र में कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने के लिए "प्रेरणा और प्रोत्साहन" की आवश्यकता है। हिन्दी सिखाने के लिए सभी हिन्दी अधिकारियों को वहां की क्षेत्रीय भाषाएं भी सीखनी होंगी। केन्द्रीय कार्यालय ने राजभाषा विभाग के मुख्य अधिकारी डा. रवीन्द्र अग्निहोत्री ने सभी हिन्दी अधिकारियों से अनुरोध किया कि "ग" क्षेत्र के लिए निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को पाने के लिए सक्रिय योगदान और अनुकरणीय प्रयास करने होंगे। स्थानीय प्रधान कार्यालय में राजभाषा विभाग के प्रबंधक श्री रमेश चन्द्र सक्सेना ने नये वर्ष का अभिनंदन हिन्दी वर्ष के रूप में और प्रत्येक कार्य दिवस को "हिन्दी दिवस" के रूप में मनाने की अपील की। स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र के मुख्य प्रशिक्षण श्री एच.सी. राय ने सभी आमंत्रितों और अहिन्दी भाषी क्षेत्र के हिन्दी अधिकारियों को हिन्दी कार्यशाला में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया।

बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय
बड़ौदा

बड़ौदा नगर बैंक राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मंच से समय-समय पर सदस्य बैंकों के लाभार्थ विभिन्न प्रतियोगिताएं/कार्यक्रम एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती रही हैं। इन कार्यक्रमों के आयोजन से बड़ौदा स्थित बैंकों में हिन्दी में कामकाज का समुचित वातावरण तैयार करने में काफी मदद मिली है।

इसी कड़ी में बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय के तत्वाधान में समिति के मंच से दिनांक 28 फरवरी से 29 फरवरी 92 तक आगामी बैंकोन्मुख हिन्दी परीक्षा में बैठने वाले स्टाफ सदस्यों के लाभार्थ परीक्षा पूर्व तैयारी के रूप में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का

उद्घाटन बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक, श्री अश्विनभाई त्रिवेदी ने किया। ज्ञातव्य है कि "ख" क्षेत्र में इस परीक्षा का अधिक प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है और इस परीक्षा में बहुत थोड़े स्टाफ सदस्य ही भाग लेते रहे हैं। आयोजित कार्यशाला का मुख्य प्रयोजन सदस्य बैंकों के स्टाफ सदस्यों को अधिकाधिक संख्या में परीक्षा में बैठने के लिए तैयार करना, परीक्षा के स्वरूप की जानकारी उपलब्ध कराना था।

कार्यशाला के आयोजन में बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रशिक्षण केन्द्र, भारतीय स्टेट बैंक, सिंडीकेट बैंक, देना बैंक एवं यूनियन बैंक के संकाय सदस्यों/राजभाषा अधिकारियों ने सहयोग प्रदान किया।

संचालन बैंक ऑफ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा, श्री धनराज चोपड़ा ने हिन्दी अधिकारी, श्री जवाहर कर्नावट तथा कु. पारूल शाह के सहयोग से किया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर

दिनांक 27-01-92 से 31-01-92 तक 5 दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 8 कर्मचारियों को हिंदी का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में कार्यालय के सभी अधिकारी मौजूद थे। श्री शंकरलाल पुरोहित, प्रोफेसर, बी.जे.बी, कालेज, भुवनेश्वर अतिथि व्याख्याता थे। श्री पुरोहित ने हिन्दी के प्रसार के संबंध में बहुत ही उपयोगी सुझाव दिए।

कार्यशाला के समापन अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारी मौजूद थे। क्षेत्रीय निदेशक ने सभी कर्मचारियों से कुछ न कुछ काम हिन्दी में करने का आह्वान किया। उन्होंने श्री अशोक पट्टनायक की ओर संकेत करते हुए कहा कि हमें बहुत खुशी है कि श्री पट्टनायक चैक हिन्दी में लिखते हैं।

श्री महेन्द्र कुमार गोयल, हिन्दी अधिकारी ने कहा कि कर्मचारियों में हिन्दी में काम करने में बड़ी रूचि है।

भिलाई इस्पात संयंत्र

प्रबंधन प्रशिक्षणार्थी (तकनीकी) 1991 बैच के लिए 1-11-91 को विशेष राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन संयंत्र के सहायक महा-प्रबंधक (सुरक्षा) श्री शम्भु शरण शुक्ल ने दिया। उन्होंने सुरक्षा आवश्यकताओं की पृष्ठभूमि में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की उपयोगिता पर विशेष बल दिया।

इस विशेष कार्यशाला में प्रो. सुरेश चन्द्र शर्मा, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, दुर्ग तथा संयंत्र के अधिकारी डा. मनराखन लाल साहू, प्रबंधक (हिन्दी); श्री वीरेन्द्र नाथ दीक्षित, वरिष्ठ प्रबंधक (सामग्री प्रबंधन) एवं श्री गंगा प्रसाद सिंह, अवर कार्यपालक संकाय सदस्य थे। राजभाषा कार्यशाला में 106 प्रबंधन प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

कार्यशाला में प्रतिभागियों को राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की उपादयता दर्शाने वाली एक वीडियो फिल्म भी दिखाई गई।

ओरिएण्टल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

क्षेत्रीय कार्यालय, जनपथ, नई दिल्ली

दिनांक 12-12-91 को एक दिवसीय कार्यशाला (हिन्दी) का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय और नियंत्रणाधीन मंडलीय शाखा कार्यालयों के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में काम-काज करने हेतु प्रशिक्षित किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के निदेशक डा. महेश चन्द गुप्त ने किया। क्षेत्रीय कार्यालय के प्रभारी सहा. महा प्रबन्धक, श्री एस.एन. माथुर प्रबन्धक, श्री एस.के. अहलुवालिया के अतिरिक्त प्रधान कार्यालय के महा प्रबन्धक कैप्टन एस.एम. दिवेकर भी उपस्थित थे। सहा. महा प्रबन्धक श्री एस.एन. माथुर ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों को कार्यालय का दैनिक काम-काज हिन्दी में करने का आह्वान किया और कहा कि हम राजभाषा के विकास के प्रति कटिबद्ध हैं और हमें अपना ज्यादा-से-ज्यादा काम हिन्दी में करना चाहिए। डा. महेश चन्द्र गुप्त, ने प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा नीति और हमारा उत्तरदायित्व पर प्रकाश डाला। राजभाषा विभाग में उप-निदेशक (कार्यान्वयन) श्री मनोहर लाल मैत्रय ने भी प्रतिभागियों को हिन्दी में कामकाज के संबंध में आने वाली समस्याओं का समाधान किया। प्रधान कार्यालय के हिन्दी अधिकारी ने टिप्पण/प्रारूपण एवं मसौदा लेखन का अभ्यास कराया। प्रबन्धक श्री एस.के. अहलुवालिया और सह-प्रबन्धक श्री चन्द्र प्रकाश ने भी उपस्थितों को हिन्दी में काम-काज करने के बारे में प्रेरित किया। क्षेत्रीय कार्यालय के हिन्दी अधिकारी श्री सोरन सिंह ने कार्यक्रम संचालन के साथ-साथ कार्यालयीन हिन्दी का स्वरूप और बीमा-शब्दावली के संबंध में व्याख्यान दिया।

कार्यशाला में प्रशिक्षित, हुए सभी प्रतिभागियों को महा प्रबन्धक, कैप्टन एस.एम. दिवेकर ने प्रमाण-पत्र प्रदान किये।

यूनाइटेड इंडिया इन्श्योरेन्स लि. बेंगलूर

अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला

भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कंपनी युनाइटेड इंडिया इन्श्योरस कं. लि. के बैंगलूर प्रादेशिक कार्यालय ने केवल अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करके अपने फ्लैग कंपनी होने के पद की गरिमा को सार्थक किया। यह कार्यशाला शनिवार 01-02-92 को

[शेष पृष्ठ 97 पर]

विविधा

हिंदी में विज्ञान लेखन

रचनात्मक लेखन एवं प्रकाशन केन्द्र, आई.आई.टी. कानपुर और नेशनल बुक ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में 25–26 अक्तूबर 1991 को दो दिवसीय संगोष्ठी "हिन्दी में विज्ञान लेखन" का आयोजन कानपुर में किया गया। संगोष्ठी में चालीस से अधिक विज्ञान लेखकों, वैज्ञानिकों, संपादकों एवं विज्ञान लेखन के साथ जुड़े अन्य लोगों ने भाग लिया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री आनंद स्वरूप ने कहा कि यदि इस तरह की संगोष्ठियों में खुली और सार्थक बहस हो, तभी उन्हें उपयोगी कहा जा सकता है ।

उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि आज हमारे जीवन में विज्ञान का दखल बहुत ज्यादा हो गया है, इसलिए जीवन से जुड़ी बातों की जानकारी हासिल करने के लिए वैज्ञानिक सूचना साहित्य का विकसित किया जाना अत्यावश्यक है ।

श्री गिरिराज किशोर ने इस बात पर बल दिया कि विज्ञान का संसार निर्मित करने के लिए साहित्य सबसे सुगम जरिया हो सकता है। साथ ही उन्होंने आग्रह किया कि विज्ञान को अपनी मानसिकता का हिस्सा बनाने के लिए हमें कई स्तरों पर कार्य करना होगा।

इसी सत्र में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डा. स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि हमने यह एक भ्रम पाल रखा है कि विज्ञान लेखन के लिए अंग्रेजी ही उपयुक्त भाषा है । लेकिन अनेक देशों की यात्राएं करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि किसी भी देश के विकास में लोगों की मातृभाषा का योगदान ही सर्वोपरि रहता है। यदि ऐसा न होता तो रूस, फ्रांस, जर्मनी जैसे देश वैज्ञानिक और तकनीकी दृष्टि से ब्रिटेन से पीछे होते । इसी संदर्भ में उन्होंने आगे कहा कि भारत में अगर विज्ञान लेखन को लोकप्रिय बनाना है तो उसके लिए हिंदी को मजबूत करना होगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आई. आई. टी. कानपुर के यांत्रिकी इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर डा. सुन्दरराजन ने विज्ञान लेखन की सरल, सुगम और सुबोध भाषा पर बल दिया क्योंकि यदि पुस्तक में दिए गए शब्द जटिल और कठिन हैं तो कोई भी पाठक उसे पढ़ना नहीं चाहेगा । उन्होंने भारतीय भाषाओं में लोकप्रिय विज्ञान की पुस्तकों की कम संख्या की ओर भी प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया।

सत्र के अंत में नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक, श्री अरविन्द कुमार ने आमंत्रित अतिथियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि भारतीय भाषाओं में सामान्य पाठकों के लिए लोकप्रिय विज्ञान और विज्ञान कथा साहित्य की बहुत कमी है। विज्ञान लेखन चाहे अंग्रेजी, हिंदी अथवा किसी भी अन्य भारतीय भाषा में हो, कुल मिलाकर राष्ट्र की स्थिति इस परिप्रेक्ष्य में सुखद नहीं है ।

संगोष्ठी से पहले श्रीमती दीक्षा विष्ट और डा. बाल फोंडके द्वारा लिखित एक पृष्ठभूमि लेख सभी प्रतिभागियों को भेजा गया था ताकि अर्थपूर्ण चर्चा हो सके। इसके अतिरिक्त संगोष्ठी में श्री समरजीतकर, श्री देवेन्द्र मेवाड़ी और श्री गुणाकर मुले ने अपने लेखों के माध्यम से इस विधा के कई अछूते पक्षों पर चर्चा की ।

संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में आई.आई.टी. कानपुर के निदेशक डा. महेश प्रसाद कपूर ने कहा कि व्यक्ति अकेले भी बहुत कुछ कर सकता है, बशर्ते कि उसमें दृढ़ इच्छाशक्ति हो । डा. कपूर ने विषय पर आगे बोलते हुए नेशनल बुक ट्रस्ट में अपना विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि इस कार्य में ट्रस्ट जैसी संस्थाएं महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं ।

संगोष्ठी में अनुभव किया गया कि राष्ट्र के बहुमुखी विकास के लिए वैज्ञानिक नजरिया विकसित करने में लोकप्रिय विज्ञान लेखन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जहां तक हमारे देश का प्रश्न है, अभी तक हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में पर्याप्त मात्रा में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप में लोकप्रिय विज्ञान लेखन उपलब्ध नहीं है । इसके साथ ही विज्ञान लेखन से और भी कई समस्याएं जुड़ी हुई हैं । इन समस्याओं पर व्यापक विचार-विमर्श के बाद निम्नलिखित सिफारिशें की गयीं :—

1. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की भाषा शिक्षण की पाठ्यपुस्तकों में विज्ञान संबंधी अध्यायों का अधिक से अधिक समावेश होना चाहिए ।

2. समाचारपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञान विषयक सामग्री का अधिक से अधिक समावेश होना चाहिए। इसके लिए विज्ञान संबंधी स्थायी स्तंभों की शुरूआत लाभप्रद होगी।

3. विज्ञान लेखन के क्षेत्र में नई प्रतिभाओं के प्रोत्साहन के लिए निम्नलिखित कार्य प्रस्तावित हैं:

(क) रचनात्मक लेखन केन्द्रों की स्थापना आई.आई.टी. कानपुर की तरह अन्य तकनीकी संस्थाओं में भी की जाए तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विज्ञान और साहित्य संबंधी पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ किया जाए ।

(ख) इंजीनियरिंग मेडीकल और बेसिक साइंस के स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर संप्रेषण कौशलवर्धन विषय पढ़ाने की व्यवस्था की जाए।

(ग) ललित कला विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में विज्ञान संबंधी विषयों के चित्रण को भी शामिल किया जाएं।

(घ) वैज्ञानिकों, विज्ञान लेखकों और विज्ञान के चित्रकारों के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाएं ।

4. विज्ञान लेखकों एवं अनुवादकों को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं:

(क) विज्ञान साहित्य संबंधी पांडुलिपि तैयार करने के लिए लेखक को यात्रा, साक्षात्कार, संदर्भ सामग्री संकलन एवं स्टेशनरी, टंकण आदि के लिये अग्रिम आर्थिक सहायता का प्रावधान किया जाए ।

(ख) विज्ञान लेखकों एवं अनुवादकों को अंग्रेजी तथा अन्य सभी भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन के लिये दिये जाने वाला पारिश्रमिक एक समान हो।

(ग) तकनीकी विषयों पर विज्ञान लेखन के लिए लेखक को मार्ग दर्शन करने वाले विशेषज्ञ को मान दिये जाने का प्रावधान हो ।

5. प्रमाणिक विज्ञान लेखन के लिये अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की जाये जिनमें निम्न सुविधाओं की व्यवस्था हो:

(क) भारतीय भाषाओं में साइंस राइटर्स वर्क स्टेशन उपलब्ध हों जिनमें वर्ड प्रोसेसिंग, डेटा कोश, प्रबंधन, शैली सुधार साफ्ट वेयर, शब्दकोश, मुहावराकोश, रचनाओं के मूल्यांकन संबंधी साफ्ट वेयरों आदि की समुचित व्यवस्था हो ।

(ख) प्रशिक्षण और पांडुलिपियों के मूल्यांकन की सुविधायें उपलब्ध हों ।

(ग) भारतीय विज्ञान इतिहास और लोकप्रिय विज्ञान साहित्य संबंधी ग्रंथ व पत्र-पत्रिकाएं उपलब्ध हों।

(घ) विश्व विज्ञान साहित्य की समीक्षा संबंधी पत्रिका का प्रकाशन किया जाये ।

(ङ) विज्ञान और तकनीकी लेखन कैसे करें?—विषय सम्बन्धी पुस्तकें तैयार की जाएं ।

(च) केन्द्र पाठक प्रतिक्रिया का सर्वेक्षण एवं अध्ययन करें।

6. लोकप्रिय विज्ञान साहित्य के अनुवादकों को प्रोत्साहन के लिये प्रशिक्षण, समुचित पारिश्रमिक और उचित श्रेय दिया जाये।

7. लोकप्रिय विज्ञान लेखन सरल, स्पष्ट एवं बोधगम्य तथा रोचक हो । यथासंभव भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान का उल्लेख किया जाए ।

8. विज्ञान साहित्य के मूल्यांकन के मानदंड एवं पद्धतियां सुनिश्चित की जाएं ।

9. सामान्य पाठकों, स्वैच्छिक संस्थाओं और राज्य एवं केन्द्र सरकार की आवश्यकताओं के अनुरूप विषय-चयन और विज्ञान साहित्य का निर्माण किया जाये ।

(सौजन्य: नेशनल बुक ट्रस्ट की समाचार पत्रिका, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली) ☐

[पृष्ठ 95 का शेष]

की गई । उद्घाटन श्री ओ.एन. वेंकटरामन्, सहा. महा प्रबंधक, श्री एम.पी. दुबे, सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी प्रशि. उप-संस्थान, डा. मंगल प्रसाद, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा श्रीमती स्नेह शर्मा, सहा. प्रशा. अधिकारी द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ।

रोजमर्रा के कामकाज में प्रयोग की जाने वाली टिप्पणियों आदि का अभ्यास भी कराया गया। समापन समारोह में आयोजित सामूहिक चर्चा सत्र में सहा. महा प्रबंधक के अतिरिक्त हिन्दी विभाग के प्रबन्धक श्री पी. पट्टाभिरामन् तथा वरिष्ठ मंडल प्रबंधक श्री अ.सी. चन्द्रशेखर ने भाग लिया।

भारत हैवी प्लेट एण्ड वेसल्स लि., विशाखापट्टणम

हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं जन भाषा एवं विभिन्न भाषा भाषियों के बीच संपर्क स्थापित करने की संपर्क भाषा भी है। इसलिए हिन्दी सीखना, इसमें काम करना हर सरकारी कर्मचारी का कर्तव्य है। भारत हैवी प्लेट एण्ड वेसल्स लिमिटेड के महा प्रबधक (प्रचालन) श्री वी.एस. प्रसाद राव ने हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा। श्री जी.वी. रमण मूर्ति, वरिष्ठ प्रबन्धक (मानव संसाधन) ने समारोह की अध्यक्षता की । आन्ध्र विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिन्दी प्रोफेसर, साहित्याचार्य डा. जी. सुन्दर रेड्डी समारोह में मुख्य अतिथि थे ।

कार्यशाला हिन्दी पारिभाषिक शब्द, प्रारूप एवं टिप्पणी लेखन आदि विषयों पर 27 फरवरी से 28 फरवरी तक पूरे दो दिन चली। 28 फरवरी, 1992 को समाप्ति समारोह किया गया। श्री डी.वी.आर. राजु, उप महा प्रबन्धक (उत्पादन) ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिए। श्रीमती डा. जी. पद्मजा देवी, राजभाषा अधिकारी ने सभी का स्वागत किया। श्री अब्दुल रशीद ने धन्यवाद दिया । ☐

समाचार दर्शन

सिंडिकेट बैंक मंडल कार्यालय गाजियाबाद द्वारा राजभाषा दर्शिका (अंक–2) का प्रकाशन

"राजभाषा दर्शिका" राजभाषा संबंधी अनेक विषयों—वैंकों में हिन्दी, हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन, देवनागरी में तार, राजभाषा अनुभाग की प्रगति, राजभाषा संबंधी जांच बिन्दु तथा अन्य अनेक रचनाओं को स्थान दिया गया है। यह सिद्ध किया गया है कि कर्मचारी वृन्द को भ्रम है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार का दायित्व मात्र राजभाषा अधिकारियों का है या राजभाषा क्षेत्र से जुड़े कर्मचारियों का है। उन्हें अपनी इस सोच-समझ को बदलना होगा। वास्तव में प्रत्येक जागरूक कर्मचारी का यह दायित्व है कि वह अपनी भाषा अर्थात्, हिन्दी में ही काम करे। राजभाषा कार्यान्वियन का व्यावहारिक रूप तो आप पर ही निर्भर करता है।

"सचमुच उस समय मेरी आंखे भर जाती हैं जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं"।

—श्रीमती महादेवी वर्मा

भाषाओं पर आधारित हास्य व्यंग

एक अध्यापक ने कालेज-अध्यक्ष से कहा कि मुझे उप-प्राचार्य बना दो। अध्यक्ष ने कहा कि आपको अंग्रेजी बोलनी तो आती नहीं है, तो अध्यापक ने कहा नहीं ऐसा नहीं है, आप कोई भी वाक्य दें मैं उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर दूंगा तब तो ले लें। अध्यक्ष ने कहा ठीक है इस वाक्य की अंग्रेजी करो "भारत में जो कुछ होता है वो होता ही चला जाता है, होता ही चला जाता है" तो अध्यापक ने उसकी अंग्रेजी इस प्रकार की "विच थिंग डन इन इंडिया इज डन डना डन डन डना डन"। × × ×

एक बच्चे की अंग्रेजी की परीक्षा होने वाली थी उसने अपने मित्र से पूछा कि मैं कौन सा निवन्ध याद करके जाऊं? मित्र ने कहा कि "माय फ्रेन्ड" पर याद कर लो बच्चे ने माय फ्रेन्ड पर याद कर लिया। दूसरे दिन परीक्षा में 'माय फ्रेन्ड' के स्थान पर 'माय फादर' पर निबन्ध आ गया। बच्चा याद करके गया था 'माय फ्रेन्ड' सो बड़ी मुश्किल हुई। खैर उसने माय फ्रेन्ड के निबन्ध को ही 'माय फादर' में इस प्रकार बदल कर लिखा.—"आई हैव सो मैनी फादरस, बट रामलाल इज द बैस्ट, ही लिवस् नैक्स्ट डोर टू मी एण्ड माय मम्मी लव हिम वैरी मच"।

साहित्यिक कुम्भ

अंतर्राष्ट्रीय कला एवं संस्कृत परिषद नजीमाबाद (भारत) द्वारा आयोजित

हिन्दीतर भाषी लेखन से जुड़े देश-विदेश के हिन्दी लेखकों को एक मंच पर लाने हेतु प्रति वर्ष अक्तूबर माह में यहां एक साहित्यक कुम्भ का आयोजन करती है। इस आयोजन में हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों, प्रकाशकों, पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों, केन्द्रीय सरकार, सार्वजिनक उपक्रम/प्रतिष्ठान/उद्योग/बैंक/विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास/हिन्दीतर प्रदेशों की राज्य सरकार में कार्य कर रहे हिन्दीतर अधिकारियों, उनकी वार्षिक उपलब्धि/उपलब्धियों का संस्था के नियमानुसार मूल्यांकन करके, सम्मान किया जाता है। वास्तव में हमारा उद्देश्य भारत में भाषाई एकता स्थापित करने के साथ-2 राष्ट्रीय भावना जागृत करना है। माता कुसुम कुमारी अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान की स्थापना की गई है। हिन्दीतर भाषा-भाषी हिन्दी लेखकों की जो भी रचनायें प्राप्त होती हैं, सब शोध संस्थान के पुस्तकालय शोधार्थियों के लाभ हेतु उपलब्ध रहेंगी।

हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक सम्मान योजना

देश-विदेश में हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों हेतु निम्न वर्गों से उनकी प्रकाशित कृतियों का चयन कर उन्हें निम्न वर्ग के अनुसार पुरस्कृत व सम्मानित किया जाता है:—(1) समग्र लेखन 11000 रु. (2) गद्य उपन्यास/कथा 2000 रु. (3) नाटक 2000 रु. (4) पद्य-कविता—काव्य 2000 रु. (5) समीक्षा—3500 रु. (6) विविध—2000 रु. (7) अनुवाद—2000 रु. (8) पत्र–पत्रिकाओं सम्पादक 2000 रुपये (9) हिन्दी अधिकारी 2000 रु. (10) प्रकाशक 3500 रु. एवं चल वैजयन्ती।

इसके लिए समस्त नये प्रकाशनों/संस्करणों की दो-दो प्रतियां एवं पुराने समस्त प्रकाशनों की एक-एक प्रति पंजीकृत डाक से भेजना अनिवार्य है। लेखक अपना संक्षिप्त जीवन परिचय व हिन्दी साहित्य में योगदान का विवरण भी साथ में भेजने का कष्ट करें।

हिन्दी अधिकारियों की प्रोत्साहन स्वरूप योजना

विदेशों में भारतीय दूतावास—केन्द्र सरकार के मंत्रालय व विभाग, हिन्दीतर प्रदेशों में स्थित बैंक सार्वजनिक प्रतिष्ठान, संस्थान, उद्योग, उपक्रम, हिन्दीतर प्रदेशों की राज्य सरकार, हिन्दी प्रदेशों में हिन्दीतर भाषी हिन्दी अधिकारी इसमें भाग ले सकते हैं। निर्धारित पत्र के अनुसार अपने गत वर्ष की जनवरी से दिसम्बर तक की समस्त उपलब्धियां भरकर नजीबाबाद स्थित संस्था के कार्यालय 21 चौक को शीघ्र भेजनी चाहिए। अपने उच्चाधिकारी से अग्रसरित कराकर प्रमाण पत्रों सहित भेजनी चाहिए।

प्रकाशकों के लिए विशेष आकर्षण

हिन्दीतर भाषा हिन्दी लेखकों का हिन्दी प्रेम जनता के समक्ष तभी प्रकाशित होगा जब प्रकाशक राष्ट्रभाषा की उन्नति के लिए सक्रिय भूमिका निबाहें। प्रकाशकों से अनुरोध है कि वे अपने यहां से प्रकाशित समस्त हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों की एक-एक प्रति भिजवाकर इस पुनीत कार्य में भागीदार बनेंगे। पूरा सूची पत्र भी अपेक्षित है।

नियम :—

निर्णायकों का निर्णय अन्तिम रूप से कानूनन मान्य होगा। 2–पत्र पत्रिकाओं में पुराने अंकों के साथ कम से कम चार लगातार नवीनतम अंक आने चाहिए। 3–हर वर्ष पुरस्कार चयन में गत वर्षों की प्राप्त समस्त पुस्तकों को भी शामिल किया जाता है। निश्चित रूप से भाग लेने वाले इच्छुक बन्धुवर को तिथि की सूचना उनके द्वारा पूछे जाने पर ही दी जा सकेगी। 5-साहित्यिक कुम्भ की वीडियो कैसट तैयार कराई जाती है। खाली कैसट आने पर या 150 रु. अग्रिम आरक्षण पर वीडियो रजिस्टर्ड डाक से भेजी जा सकेगी। यदि लागत मूल्य कम होगा शेष धन वापिस कर दी जाती है। डाक व्यय संस्था वहन करती है।

हिमाचल में हिन्दी में काम करने का आदेश

हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री ने आदेश दिया है कि प्रशासन में हर स्तर पर पूर्ण रूप से हिंदी का प्रयोग किया जाए।

मुख्य मंत्री उच्च स्तरीय अधिकारियों की एक गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सभी राजस्व अदालतों के साथ-साथ वित्त आयुक्त की अदालतों में भी 15 अप्रैल तक सभी कामकाज हिंदी में ही हों तथा ऐसे प्रयास किए जाएं कि अदालतों के अन्य अधीनस्थ कर्मचारी भी अदालत का कार्य हिंदी में करें।

मुख्य मंत्री ने कहा कि अब से जिला तथा उप मंडलों के स्तर पर भी अंग्रेजी टाइपराइटरों को हिंदी टाइपराइटरों में बदल दिया जाएगा।

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो (बम्बई) के संयुक्त निदेशक की सेवा निवृत्ति

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बबई के संयुक्त निदेशक, डॉ. नागेन्द्रनाथ पाण्डेय के दिनांक 31 मार्च, 1992 से सेवानिवृत्ति पर जाने के संदर्भ में विदाई समारोह किया गया। हिन्दी शिक्षण योजना की उप निदेशक, श्रीमती इंदिरा पांड्या ने और कार्यान्वयन के उप निदेशक, श्री कृष्ण नारायण मेहता ने अपनी शुभकामनाएं अर्पित करते हुए उनके गुणों की प्रशंसा की। इसके साथ ही अनेक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने यह कहा कि डॉ. पाण्डेय एक कर्मठ, सहनशील तथा मिलनसार अधिकारी थे और उन्होंने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के संयुक्त निदेशक के पद पर गत साढ़े पांच वर्षों तक कुशल सेवा के दौरान इस विभाग के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ बड़ी घनिष्ठता स्थापित कर ली और ब्यूरो के काम को आगे बढ़ाया। श्रीमती शशिलाल, प्रशिक्षण अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. पाण्डेय ने आभार प्रकट करते हुए यह कहा कि सरकारी कर्मचारियों को अपने सेवा के दौरान अनेक कठिनाइयों एवं संघर्षों से गुजरना पड़ता है और उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपना कर्तव्य अत्यंत सहनशील एवं संघर्षशील होकर ही पूरा कर सकता है।

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बम्बई में 29वें सत्र का समापन समारोह

29वें सत्र का समापन समारोह दिनांक 31–3–92 को भारतीय रिजर्व बैंक के भूतपूर्व मुख्य अधिकारी (राजभाषा) की अध्यक्षता में हुआ। श्री रामगोपाल सिंह, मुख्य सर्वेक्षक, नौवहन महानिदेशालय, बंबई ने प्रशिक्षणार्थियों को स्वर्ण एवं रजत पदक तथा प्रमाण पत्र वितरित किए। राजभाषा विभाग, हिन्दी शिक्षण योजना की उपनिदेशक, श्रीमती इंदिरा पांड्या ने अपने विचार प्रकट किए। मुख्य अतिथि ने और हिन्दी में कार्य का बड़े उत्साह के साथ करने की अपील की। अनुवाद ब्यूरो के संयुक्त निदेशक, डॉ. नागेन्द्रनाथ पाण्डेय ने भी प्रशिक्षणार्थियों को यहां प्राप्त प्रशिक्षण का लाभ उठाते हुए अपने-अपने कार्यालयों में हिन्दी में काम बढ़ाने की अपील की। यह उल्लेखनीय है कि डॉ. नागेन्द्रनाथ पाण्डेय उसी दिन से सेवानिवृत्त हो रहे हैं, उन्हें भी प्रशिक्षणार्थियों ने अपनी शुभकामनाएं अर्पित की। श्रीमती शशि लाल, प्रशिक्षण अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

श्रीमती स्नेह लेले, राजभाषा सहायक, मध्य रेल, माटुंगा और श्री बी.एस. नकवाल, हिन्दी अनुवादक, दूर संचार जिला प्रबंधक, कोल्हापुर को रजत पदक प्राप्त हुए।

यह कविता श्री महावीर, सहायक आचार्य (असिस्टेंट प्रोफेसर) योजना तथा वास्तुकला विद्यालय, (स्कूल आफ प्लानिंग एण्ड आर्कीटैक्चर) ने अपने छात्र जीवन में लिखी थी। आज भी सामयिक होने के कारण इसे प्रकाशित किया जा रहा है। —सम्पादक

भारत की भाषा

हम सब भारतवासी
अंग्रेजी के दास और दासी
यदि गुलामी है इतनी ही पसन्द,
तो फिर रख अपनी ज़बान बंद
कारण, गुलामों की ज़बान नहीं होती
गुलाम होते हैं बेज़ुबान।

जब हम गुलाम थे
तब हम पर चलाने के लिए हुक्म
अंग्रेज 'हिन्दी' बोलता था,
साहबों की भाषा रच-पच गई इतनी
आज हम स्वयं को समझाने के लिए
बोलते हैं अंग्रेजी,
और समझते इसमें अपनी शान।

अब हम हैं 'इनडिपेंडेन्ट', परन्तु
अंग्रेजी पर 'डिपेंडेन्ट'
इससे तो गुलाम भारत ही अच्छा था,
रोज़ परस्पर हमारी राम-राम होती थी,
दुआ सलाम होती थी,
शादी ब्याह
सालगिरह होती थी।

अब हम दिन-रात 'बिजी' रहते हैं
किसी 'मैरिज' में
'बर्थडे' या 'डान्स' में
शायद 'टाइम' भी न हो
सुनने को यह बात
क्योंकि हमारे पास 'रेडीमेड एक्सक्यूज' रहते हैं—
कोई काम याद आ गया है
'मोस्टर्जेन्ट'
फिर भी,
कोई बात नहीं
बीती ताहे बिसारिए।
दास-दासी भाव छोड़िए
आपस में मिल
अपनी मातृभाषा में जुहारिए
अपने देव इष्ट का नाम
अपनी भाषा में भेजिए।
शनैः शनैः अंग्रेजी का अवसान होकर
मातृभाषा, राष्ट्र-भाषा को
स्थान मिल जाएगा।
तभी भारत,
'इन्डिपेन्डेन्ट' से 'स्वतंत्र' हो जाएगा।

ए-26, रोहित कुंज,
डॉ. रानी बाग,
दिल्ली—110034

हिन्दी सीखने पर जोर

मदुरै। केन्द्रीय शहरी विकास राज्यमंत्री श्री एम. अरुणाचलम् ने हिन्दी सीखने के महत्त्व पर जोर दिया है। उन्होंने कहा कि हिन्दी में नहीं जानने से उन्हें खुद काफी परेशानियां हो रहीं हैं। उन्होंने कहा कि हिन्दी नहीं जानना एक कमी है। इस कमी के कारण उन्हें अपने मंत्रालय की व्यवस्था करने में भी परेशानी हो रही है। तमिलनाडु के डिंडिगुलअन्ना जिले में गांधी ग्राम विश्वविद्यालय के तमिल भाषा शिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में, कल श्री अरुणाचलम् ने कहा कि उन्हें इस बात का दुख है कि अंग्रेजी की तरह हिन्दी को दक्षिण भारत में उचित महत्त्व नहीं दिया गया। यह कार्यक्रम दूसरे राज्यों के शिक्षकों तथा छात्रों के लिए आयोजित किया गया था। श्री अरुणाचलम् ने कहा कि मौके का लाभ उठाकर तमिलनाडु के छात्रों को हिन्दी तथा दूसरी भाषाएं सीख लेनी चाहिए।

राष्ट्रीय सहारा 6–7–92

आप 30 घंटे में हिन्दी बोलना सीख सकते हैं

वाशिंगटन 3 दिसम्बर (प्रे. ट्र.) हिन्दी या कोई अन्य विदेशी भाषा बोलना अब 30 घंटे में आप सीख सकते हैं। ऐसा विदेशी भाषा शिक्षा के लिए नवीनतम अविष्कारक तकनीकी का इस्तेमाल कर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रो. विश्वनाथ मिश्र ने संभव कर दिया है।

प्रो. मिश्र के अनुसार भाषा सीखने के पाठ्यक्रम के एक घंटे के बाद भाषा सीखने वाला व्यक्ति हिन्दी बोलने लगता है और 30 घंटे के बाद वह हिन्दी में बातचीत कर सकता है।

प्रो. विश्वनाथ मिश्र ने विसकानसिन-मडिसन विश्वविद्यालय में 30 घंटे का हिन्दी बोलचाल पाठ्यक्रम का निर्देशन किया। डॉ. मिश्र के अनुसार तीस दिन में एक-एक घंटे तक भाषा सीखी जाती है। दूसरी विधि के अनुसार एक पखवाड़े तक रोजाना दो-दो घंटे और तीसरे उपाय के मुताबिक पांच दिन तक 6–6 घंटे तक भाषा सीखने का अभ्यास किया जा सकता है।

(दै. हिन्दुस्तान 4–12–1991)

प्रेरणा पुंज

श्री कैलाश नाथ गुप्ता
सहायक निदेशक
केन्द्रीय जांच ब्यूरो

सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के बारे में प्रायः लोग भ्रांतिवश कह देते हैं कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों के लिए हिंदी में पर्याप्त पुस्तकें संदर्भ साहित्य की कमी है। सरकारी कामकाज हिंदी में करते हुए श्री कैलाशनाथ गुप्ता ने पुलिस विज्ञान व कम्प्यूटर जैसे तकनीकी विषय पर अनेक लेख लिख कर सिद्ध किया है कि जब हम मन से किसी कार्य को करना चाहते हैं, तो संदर्भ साहित्य अथवा भाषा विशेष की शब्दावली की कमी आड़े नहीं आती।

केन्द्रीय जांच ब्यूरो, नई दिल्ली में श्री कैलाशनाथ गुप्ता सहायक निदेशक (समन्वय) हैं। उन्होंने काशी विद्यापीठ वाराणसी से एम.एस.डब्ल्यू. तथा समाज विज्ञान में एम.ए. करने के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। केन्द्रीय जांच ब्यूरो में सीधी भर्ती में अधिकारी के रूप में नियुक्ति के बाद श्री गुप्ता ने उत्तर प्रदेश, बिहार, चण्डीगढ़ में भी कार्य किया है।

"पुलिस विज्ञान" "ग्रामोद्योग" "योजना", "कुरुक्षेत्र" "इलैक्ट्रानिकी" "विज्ञान गंगा" "उत्तर प्रदेश पुलिस पत्रिका" "सी. बी. आई. बुलेटिन" "तेल भारती" आदि पत्र-पत्रिकाओं में श्री गुप्ता के विभिन्न विषयों पर हिंदी में लेख प्रकाशित हुए हैं।

"पुलिस चिंतन", "नया सिपाही", "पुलिस अन्वेषण", "भारतीय पुलिस", "भारत में ग्रामीण अपराध और पुलिस की भूमिका", "अपराध कारण और निवारण" "पुलिस विधि-विज्ञान" "सी.बी.आई. फाईल" आदि अनेक तकनीकी पुस्तकों पर उनकी सटीक एवं सारगर्भित समीक्षाएं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

भारतीय तेल निगम के उत्तर क्षेत्रीय मार्केटिंग डिवीजन में प्रतिनियुक्ति पर वरिष्ठ सतर्कता अधिकारी के पद पर कार्य करते हुए श्री गुप्ता ने सरकारी कामकाज हिंदी में निपटाने की शुरूआत की। वर्ष 1987 में भारतीय तेल निगम द्वारा हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार उन्हें प्रदान किया गया। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली द्वारा हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में उनकी सेवाओं को मान्यता दी गई तथा तत्कालीन केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री चिंतामणि पाणिग्रही ने उन्हें विशेष पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया। परिषद् द्वारा आयोजित 10वीं अखिल भारतीय वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिंदी लेख प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर उन्हें वर्ष 1988 में पुनः सम्मानित किया गया।

सम्प्रति केन्द्रीय जांच ब्यूरो की मासिक 'सी.बी.आई. बुलेटिन' के संपादक हैं। सरकारी आदेशों का अनुपालन करते हुए श्री गुप्ता ने 'बुलेटिन' में हिंदी में सामग्री शामिल करके एक अच्छी शुरुआत की है।

हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने वाले अपने सहयोगी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए श्री गुप्ता प्रेरणा पुंज हैं।

प्रस्तुति : डॉ. गुरुदयाल बजाज

हिंदी (नागरी लिपि)

हिंदी (नागरी लिपि) ओडिया तथा अन्य भारतीय भाषाओं के उचित स्थान हेतु कांस वहाल के साउथ कालोनी क्लब में 8 फरवरी 1992 को "कांसवहाल राष्ट्र भाषा' की बैठक हुई।

प्रोत्साहन पुरस्कार

राजभाषा प्रयोग के लिये नेशनल टैक्सटाइल कार्पोरेशन का इन्दौर कार्यालय पुरस्कृत

भारत सरकार, गृह मंत्रालय के मध्य क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा इन्दौर में स्थित एन.टी.सी. प्रतिष्ठान को मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में स्थित केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिये द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

मध्य क्षेत्र राजभाषा विभाग द्वारा भोपाल के रवीन्द्र भवन में आयोजित 9 एवं 10 जनवरी को आयोजित दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि स्थानीय शासन एवं जनसंपर्क मंत्री श्री बाबूलाल गौर ने यह पुरस्कार ट्राफी एन.टी.सी. (म.प्र.) लि., इन्दौर के अध्यक्ष एवं प्रबंध संचालक श्री पी. सरवणन को प्रदान की। इस अवसर पर एन.टी.सी. (म.प्र.) लि. की हिन्दी अधिकारी डा. आशा पाटनी को राजभाषा कार्यक्रम के कार्यान्वयन में विशिष्ट योगदान एवं सहयोग के लिये श्रेष्ठता प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। उक्त अवसर पर सम्मेलन में भाग लेने आये राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के लगभग 30 अधिकारियों के बीच केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, व्यावसायिक बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किये गये श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु विभिन्न प्रशंसा पत्र प्रदान किये गये।

"हिन्दी भाषा"

ढूंढो तो बहाने लाखों हैं।
सीखो तो सरल ये भाषा है॥

हर प्रांत की अपनी भाषा है।
इस देश की अपनी भाषा है॥

हर प्रांत की भाषा के संग-संग।
हो राष्ट्रभाषा की भी उमंग॥

ये मेरी अभिलाषा है।
ये मेरी अभिलाषा है॥

☐ के.ए. शेख महाप्रबंधक, बामर लारी कं.
5 जे एन हेडिया मार्ग बलार्ड एस्टेट बम्बई।

हिन्दी कैसे आएगी

प्रेरणा प्रोत्साहन और सद्भाव से,
कुछ अपने व्यक्तिगत प्रभाव से,

जनमानस में जग रहे स्वभाव से,
हिन्दी आ रही है।

पत्रों-फाइलों में ही नहीं शोध संस्थानों में,
आकाशवाणी, दूरदर्शन और सभागारों में,

फिल्मी दुनियां में सबके दिल-दिमागों में,
हिन्दी छा रही है।

थोड़ी सी जरूरत है अभ्यास कराने की,
जिन्हें आती है उनसे भी प्रयोग कराने की,

संविधान-नियम, अधिनियम बताने की,
हिन्दी कार्यशाला चलाने की।

स्वस्थ स्पर्धा जगे जब सबके मन में,
होड़ लग जाएगी तब जन-जन में,

स्वकार्य सहजता से करके, पा सकेंगे,
पुरस्कार और सिर ऊंचा कर सकेंगे।

अब और विलम्ब न कर, आज से ही,
हिन्दी में काम करने का व्रत लें,

आइये, कुछ कर दिखाइये, यह न सोचिए कि,
हिन्दी कैसी आएगी।

☐ **भगवानदास पटैरया**
उप सचिव, भारत सरकार,
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
लोकनायक भवन, नई दिल्ली।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

पूर्वोत्तर क्षेत्र में तैनात हिन्दी अधिकारियों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित विभिन्न सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि में तैनात हिन्दी अधिकारियों (राजभाषा अधिकारी/सहायक निदेशक) के लिए राजभाषा के कार्यान्वयन के संबंध में एक पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 3 तथा 4 फरवरी, 92 में अगरतला में किया गया। इस क्षेत्र के लिए पहला आयोजन था।

राजभाषा की प्रगति के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा की गई। विभिन्न कार्यालयों में जो प्रगति हुई है, इसकी समीक्षा की गई। "ग" क्षेत्र में स्थित कार्यालयों में राजभाषा की प्रगति किस प्रकार बढ़ाई जाए इस संबंध में भी विस्तृत रूप से चर्चा हुई। कुछ विषय इस प्रकार है :

(1) हिन्दी में पत्राचार बढ़ाने के लिए इस क्षेत्र में सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का प्राथमिकता के आधार पर हिन्दी में प्रशिक्षण पाना जरूरी है, इसलिए जहां पर हिन्दी शिक्षण योजना के केन्द्र नहीं हैं वहां पर पत्राचार के माध्यम से प्रशिक्षण दिलाया जाए।

(2) हिन्दी टाइपिंग के केन्द्र गुवाहाटी तथा इम्फाल में है। लगभग सभी स्टेशनों पर स्थित ज्यादातर कार्यालयों में हिन्दी टाइपराइटर हैं। इसलिए कम से कम एक कर्मचारी को हिन्दी टाइपिंग की प्रैक्टिस कराई जाए और हिन्दी शिक्षण योजना के माध्यम से परीक्षा दिलायी जाए। इससे टाइपिंग की समस्या कुछ कम होगी।

(3) कुछ ऐसे पत्र जो कई कार्यालयों को एक साथ भेजने हों, उसे हिन्दी और अंग्रेजी में साथ-साथ टाइप/साइक्लोस्टाइल/प्रिंट करा लिया जाए। नाम पता और हस्ताक्षर हिन्दी में ही लिखे जाएं। धीरे-धीरे छोटे-छोटे पत्र हाथ से लिख कर या टाइप करा कर भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

(4) जिन कार्यालयों में संभव हो तो छुट्टी, नियुक्ति, पदोन्नति, वेतन वृद्धि संबंधी आदेश, कर्मचारियों को लाभ पहुंचाने वाले आदेश/पत्र, चेक या बैंक ड्राफ्ट भेजने वाले पत्र आदि पहले केवल हिन्दी में भेजे जाएं। बाद में अंग्रेजी प्रति भेजी जाए।

इस संबंध में पाठ्यक्रम के दौरान कई ऐसे विषय सामने आए जिनकी नियमों के आधार पर जानकारी दी गई :

(1) कुछ अधिकारियों का यह मत था कि "ग" क्षेत्र में अंग्रेजी में टाइप किए गए पत्र पर हिन्दी में हस्ताक्षर किया जाए तो वह पत्र हिन्दी में माना जाएगा।

उन्हें जानकारी दी गई कि यदि कोई कर्मचारी अपने कार्यालय में किसी आवेदन, अपील या प्रतिवेदन पर हिन्दी में हस्ताक्षर करता है तो उसका जबाव हिन्दी में देना अनिवार्य है। अंग्रेजी में लिखे पत्रों पर यदि हस्ताक्षर हिन्दी में किया गया है तो वह पत्र अंग्रेजी में ही माने जाएंगे।

2. हिन्दी अधिकारी को कार्यान्वयन की जिम्मेदारी के साथ अनुवाद संबंधी कार्यों को भी करना पड़ता है इससे कार्यान्वयन का कार्य पूरा नहीं हो पाता है।

उन्हें सुझाव दिया गया है कि वे सरकारी आदेशों को फाइल पर लिखित रूप में अपने प्रशासनिक प्रधान को प्रस्तुत करें क्योंकि विभागाध्यक्ष होने के नाते कार्यान्वयन की जिम्मेदारी प्रशासनिक प्रधान की है। अधिनियम की धारा 3(3) का अनुपालन कराने के लिए हिन्दी अनुभाग बनाए गए हैं। इसलिए यह उनका मुख्य कार्य है। उन्हें यह भी सुझाव दिया गया है कि वार्षिक कार्यक्रम के संबंध में विभिन्न अनुभागों को समय-समय पर जानकारी देते रहें। इससे वे अपने-अपने अनुभाग का कार्य करते समय राजभाषा संबंधी नियमों का भी पालन कर सकेंगे। यदि उसके बावजूद कोई अनुभाग जानबूझकर सरकारी आदेशों के प्रतिकूल कार्य करता है तो तिमाही बैठक में इस पर चर्चा की जाए ताकि विभागाध्यक्ष को इसकी जानकारी मिल सके।

3. हिन्दी कार्यशाला के संबंध में सरकारी नीति औ[र] उद्देश्य स्पष्ट करते हुए यह जानकारी दी गई कि हिन्द[ी] कार्यशाला में शामिल होने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों क[ो] राजभाषा नीति संबंधी लेक्चर को छोड़कर शेष पूरे सम[य] में उनसे हिन्दी में लिखाया जाए और अभ्यास कराया जाए

यह कोशिश की जाए कि कार्यशाला के बाद वे रोजाना फाइलों पर कम से कम एक दो वाक्य हिन्दी में अवश्य लिखें। इस क्षेत्र की भाषा/बोलियों को ध्यान में रखते हुए उनके द्वारा दी गई छोटी-मोटी गलतियों पर ध्यान नहीं दिया जाए।

इस पाठ्यक्रम में शामिल होने वाली सभी अधिकारियों की यह राय थी कि इस प्रकार के पाठ्यक्रम प्रत्येक दो माह के बाद अलग-अलग स्टेशनों पर किया जाए। इससे अधिकारियों को एक दूसरे के कार्यालय के संबंध में प्रगति की जानकारी मिलेगी। प्रगति के संबंध में अपनाए गए तरीके मालूम पड़ेंगे। जिस स्थान पर इस प्रकार के पाठ्यक्रम आयोजित किए जाएंगे उस स्टेशन पर स्थित कार्यालयों पर इसका विशेष प्रभाव पड़ेगा।

दक्षिण रेलवे, मण्डल कार्यालय, कार्मिक शाखा मदुरै
संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

गृह मंत्रालय के केन्द्रीय प्रशिक्षण ब्यूरो, बेंगलूर के तत्वावधान में मदुरै मंडल कार्यालय, दक्षिण रेलवे में दिनांक 16-12-91 से 20-12-91 तक संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया गया।

दिनांक 16-12-91 को श्री एस. गोपालकृष्णन्, मंडल रेल प्रबंधक, मदुरै द्वारा इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन हुआ। रेलवे जीवन बीमा निगम, बैंक और मदुरै में स्थित अन्य केन्द्र सरकार कार्यालयों के 30 कर्मचारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

जो कर्मचारी तीन महीनों के लिए बेंगलूर में जाकर प्रशिक्षण पा नहीं सकेंगे, उन कर्मचारियों को मदद दिलाने के मकसद से यह कार्यक्रम चलाया गया। इसे पांच दिनों के गहन और संक्षिप्त कार्यक्रम बनाया गया ताकि कर्मचारी बिना अपने दफ्तरी काम में दखल के, इस में शरीक हो सकें और दैनिक कार्य को हिन्दी में करने में प्रशिक्षण पाएं। यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपर्युक्त दृष्टि से पूर्णतः सफल रहा।

दिनांक 20-12-91 को समापन समारोह में श्री एस. गोपालकृष्णन्, मंडल रेल प्रबंधक ने अध्यक्षासन ग्रहण किया। ... एस. लीला, केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, मदुरै ने, ... प्रशिक्षण में भाग लिए कर्मचारियों को प्रमाण-पत्र ...तरण किया।

श्री एस.जी. सावदत्ती, सहायक निदेशक, केन्द्रीय ...ुवाद ब्यूरो, बेंगलूर ने आमंत्रितों का स्वागत किया। ... पी. शिवशंकरन्, राजभाषा अधिकारी/द. रेलवे, मदुरै ... धन्यवाद समर्पण किया।

इस सिलसिले में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में ...क्षणार्थियों ने लगन एवं रूचि के साथ भाग लिया।

पांडिचेरी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रयोग की गति

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद (सरोजिनी नगर, नई दिल्ली) ने सभी विश्वविद्यालयों से अनुरोध किया था कि वे अपने प्रशासनिक कार्यों में और शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाकर अपना राष्ट्रीय कर्तव्य निभाएं। इस दृष्टि से परिषद ने एक विस्तृत नोट भेजते हुए कार्यान्वयन योजना भी उन्हें दी थी। इस संदर्भ में पांडिचेरी विश्वविद्यालय ने अपने 1-10-91 के पत्र संख्या पीयू एसटी/ईटी 3/हिन्दी/91592/310 द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से सूचित किया है कि हिन्दी के परिपालन के लिए निम्न पग उठाए गए हैं :—

1 हमारे विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा हिन्दी के लिए छः महीनों का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम चलाया जाता है और उत्तीर्ण छात्रों के लिए प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे।

2 हिन्दी में प्राप्त पत्रों के लिए हिन्दी में उत्तर भेजे गए हैं।

3 इस विश्वविद्यालय के वार्षिक प्रतिवेदन का हिन्दी में अनुवाद करके प्रत्येक वर्ष भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजा गया है।

4 हर वर्ष वार्षिक आय-व्ययक प्राक्कलन का अनुवाद हिन्दी में करके भारत सरकार, मासंविमं को भेजा जाता है।

5 विश्वविद्यालय के शैक्षणिक अध्यादेश का अनुवाद हिन्दी में करके भारत सरकार, मासंविमं को भेजा जाता है।

6 प्रशासनिक अध्यादेश का अनुवाद हिन्दी में किया जा रहा है तथा भारत सरकार, मासंविमं को बहुत जल्दी भेज दी जाएगी।

7 अहिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है।

उक्त विश्वविद्यालय द्वारा उक्त कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। विश्वास है कि दक्षिण तथा पूर्वांचल के अन्य विश्वविद्यालय भी इससे प्रेरणा लेंगे। □

पुस्तक समीक्षा

मन के अंकुर

लेखक : डा० कृष्णलाल

प्रकाशन : अनिल प्रकाशन

2619-20 न्यू मार्किट, नई सड़क, दिल्ली-110006

"सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगें, घाव करें गंभीर।"

यह उक्ति प्रचलित थी बिहारी सतसई के संबंध में। सतसई के पश्चात् वैसी कोई रचना देख पाने के लिए भावुक मन शतियों से अधीर रहा है। फिर अंधेरे में टटोलते हुए अकस्मात् "मन के अंकुर" पर हाथ पड़ गया जिसमें विद्वान लेखक के मन की अतल गहराइयों से बरबस फूट निकले गंभीर भाव-पूर्ण विचारों के छोटे-छोटे अंकुर संगृहीत हैं, और प्रत्येक अंकुर से किसी सहृदय पाठक के लिए जीवन के उन्नायक भावों का विशाल छायाद्रुम ही झांक रहा है जिसकी ओर लेखक ने ऐसे संकेत करके छोड़ दिया है कि पाठक उस पल्लवित होते वृक्ष को देख आनंदित होने, उसका सौन्दर्य-रस-पान करने और उसकी रमणीक छाया में रमण करने के लिए अनन्त चिन्तन में मग्न हो जाता है। कथन का तात्पर्य कदाचित् एक उदाहरण से भली-भांति समझा जा सकता है—मानव संस्कृति का मूल आदर्श है "वैदिक साम्यवाद" (पृ. 100) जिसे वेद के एक मन्त्रांश "केवलाघो भवति केवलादि" (ऋग. 10/117/6) से अंकुरित पल्लवित एवं पुष्पित होता हुआ कुछ ही पंक्तियों में दिखाने में लेखक पूर्णतः सफल हुआ है।

विविध पकवान के सेवन से अफरा-ग्रस्त उदर के लिए हितकर खिचड़ी की भांति यह रचना साहित्य के वास्तविक अर्थ में हितकारी तत्त्वों से परिपूर्ण विविधा है, जो मोटे-मोटे उपन्यासों, गल्प-संग्रहों, कविता-अकविता, कहानी-अकहानी आदि से ऊबे हुए पाठकों के सम्मुख, जीवनोपयोगी सार-तत्त्व अनायास ग्रहण करने के लिए परोसी गई है। जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक किसी शल्य-क्रिया या आडंबरपूर्ण ईक्षा-परीक्षा के बिना ही सामान्य पथ्योपचार द्वारा सभी प्रकार के रोगों पर विजय पा लेता है, उसी प्रकार इस रचना का प्रणेता बहुत ही सरल शिलष्ट भाषा में प्रायः देखे-सुने जानेवाले प्रसंगों की कौशलपूर्ण चर्चा करके ही समाज के रुग्ण मानस को स्वस्थ दिशा-निर्देश देने में समर्थ हुआ है। ये प्रसंग भी, एक-दो, दस-बीस नहीं पूरे 191 हैं जिन्हें मात्र 158 छोटे पृष्ठों में समाहित करके विद्वान लेखक ने गागर में सागर ही पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है।

अपनी भाषा और अपनी संस्कृति के प्रति, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ हैं, लेखक का स्वाभाविक और सर्वथा उचित आग्रह और अनुराग है। इसलिए मानव-जीवन को सार्थक, सोद्देश्य और सुसंस्कृत बनाने के लिए इन्हीं का आश्रय लेना उचित है, ऐसी गूंज रचना में आद्यान्त सुनाई देती है। कुल मिलाकर रचना पढ़ने गुनने और सोचने-विचारने तथा जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि-कोण निर्माण करने के लिए सदा पास रखने योग्य आदर्श पुस्तिका है। छपाई, सफाई और जिल्द-बन्दी उत्तम है, लेखक सफल है प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। ऐसी श्रेष्ठ और उन्नायक कृति के लोकप्रिय होने की कामना है।

—विश्वंभर प्रसाद "गुप्तबन्धु"
बी-154, लोक विहार, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

कश्मीर समस्या और विश्लेषण

लेखक : **श्री जगमोहन**
पृष्ठ संख्या : 463
मूल्य : 175 रु०
प्रकाशक : **राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली**

कश्मीर समस्या विगत लगभग एक दशक से भारत की अनेक समस्याओं में से एक बहुत से न सुलझने वाली समस्या है। इसके कारणों का और इसके भावी प्रभावों का उक्त पुस्तक में अच्छा विश्लेषण किया गया है। वस्तुस्थिति यह है कि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में समस्या को परखने और उसकी पीड़ाओं के दिग्दर्शन कराने का भलीभांति यत्न हुआ है। लेखक स्वयं वहां की समस्याओं से भली भांति परिचित रहे हैं और पुस्तक में दिए गए तथ्य इतिहास के पन्नों से पुष्ट होते हैं। लेखक ने प्रारंभ में ही यह कहा है कि पुस्तक में मैंने ऐसा कोई भी दावा नहीं किया है जिसकी पुष्टि में ठोस सबूत न दिया हो। यह वाक्य पुस्तक के पढ़ने से यही प्रतीत होता है।

पुस्तक की भाषा कई जगहों पर व्यंग्यात्मक तो है ही साथ ही भाषा की लक्षणा शक्ति का भी ऐसा प्रयोग हुआ है जैसा कि हिंदी साहित्य के कुशल लेखक प्रायः करते हैं यद्यपि लेखक का हिंदी साहित्य में कोई उल्लेखनीय दखल नहीं है।

पुस्तक इतिहास के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी है और राजनीति के विद्यार्थियों के लिए तो पुस्तक में पर्याप्त मसाला उपलब्ध होता है जिससे उन्हें देश में घट रही घटनाओं को समझने का अच्छा अवसर मिलता है।

इस पुस्तक के प्रकाशन से हिंदी साहित्य को एक अच्छी कृति मिली है जिसमें भूगोल, इतिहास, राजनीति, कूटनीति और तथ्यों का समावेश एक साथ मिलता है।

—रणजीत कुमार सेन,
624, सैक्टर-4, रामकृष्ण पुरम्
नई दिल्ली

कुरल आलेखन

तमिल के सुप्रसिद्ध सन्तकवि तिरुवल्लुवर की अमरकृति तिरुक्कुरल पर आधारित तमिलनाडु के विख्यात लेखक, कवि श्री मु. करुणानिधि ने "कुरलोवियम" नाम से एक चर्चित पुस्तक लिखी है। इसी पुस्तक का अनुवाद है "कुरल आलेखन"।

सुन्दर कागज पर स्वच्छ छपाई से मुद्रित ये रसीली मन बहलाती नीति कथायें प्रत्येक को बरबस आकृष्ट करती हैं। लगभग 110 कथायें हैं, 350 पृष्ठों में लिखित पुस्तक का मूल्य केवल 125 रुपये है।

तमिलभाषी हिंदी लेखक की यह रचना कितनी मोहक एवं सुरुचिपूर्ण बनी है, यह तो तभी पता चलेगा जब पाठक इसको पढ़कर थपकी देते हुए अपनी भावना को दो शब्दों में लिखकर हमें और नूतन काव्य सृजन के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

अन्ततः हम सबका ध्येय तो हिंदी का व्यापक प्रसार करना है। सत्प्रयत्न से रचित लेखक के इस साहित्यिक यज्ञ में पाठकों की भी आहुति पड़ गई तो वह कितनी मनोहारी होगी और देश के दक्षिणछोर तक, कीर्ति गुंजित होगी।

अनुवादक : त शि क कृष्णन्
प्रकाशक : बंबई तिरुवल्लुर मन्रम
विलेज रोड़
भाण्डुप, बंबई-400070

शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश

लेखक : डा. हरदेव बाहरी
पृष्ठ : 758 मूल्य : 80 रुपये
प्रकाशक : राज्यपाल एण्ड संज, कश्मीरी गेट दिल्ली

आधुनिक युग में विश्व में तेजी से हो रहे परिवर्तनों और ज्ञान विज्ञान की चतुर्मुखी प्रगति की जानकारी प्राप्त करने लिए विश्व की अन्य भाषा सीखना जरुरी हो गया है ऐसे में हिंदी-अंग्रेजी, हिंदी-जर्मन, हिंदी-जर्मन, हिंदी-रूसी आदि अनेक शब्दकोश सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर प्रकाशित हुए है। डॉ. हरदेव बाहरी का नाम शब्दकोश निर्माण कर्त्ताओं की सूची में अंग्रेणी है। डाँ. बाहरी के सचित्र अनिवार्य शब्दकोश, मानक हिंदी कोश आदि पहले ही प्रकाश में आ चुके हैं।

कम कीमत में छात्रोपयोगी "शिक्षार्थी हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोश" में शब्द क्या है? उसका सही उच्चारण उनसे बनने वाले वाक्यांशों/मुहावरों आदि के अंग्रेजी अर्थ भी दिए गए हैं। इस कोश में लगभग दस हजार शब्द है। किसी भाषा के सीखने में सहज-सरल पर्यायवाची शब्द इस कोश में उपलब्ध है जिससे "शिक्षार्थी" लाभान्वित हो सकेंगे।

कोश के अन्त में जो परिशिष्ट रूप में मापतौल, मुद्रा, भारतीय त्यौहार-उत्सव, शब्दावलियां आदि दी गई हैं, वास्तव में ज्ञानवर्द्धक एवं उपयोगी हैं।

—डॉ॰ गुरुदयाल बजाज, सहायक निदेशक
केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

पुलिस-विधि-विज्ञान

लेखक : श्री शिवचरण मंत्री व आशीष बोस
पृष्ठ : 154
मूल्य : 100 रुपये

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी ने नई दिल्ली में केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो और राज्य भ्रष्टाचार निरोध एजेन्सियों के अधिकारियों के नंवे सम्मेलन में कहा था कि अपराधों पर नियंत्रण रखने में विफलता के कारण पुलिस की आलोचना व्यापक रूप से की जाती है। आजकल के अपराधी अपेक्षाकृत अधिक संगठित, आधुनिक हथियारों से लैस हैं। इसलिए पुलिस को उनके संबंध में कार्रवाई करने के लिए अधिक परिष्कृत तरीकों का प्रयोग करना चाहिए। हमें आधुनिक तकनीक का प्रयोग करके जांच तथा अन्वेषण के वैज्ञानिक तरीके अपनाने चाहिए, अधिक गतिशीलता तथा उचित आसूचना होनी चाहिए। इस दिशा में पुलिस विधि-विज्ञान का दिग्दर्शन कराती हुई यह पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। अपराध अनुसंधान की आधुनिक तकनीक एवं विधि विज्ञान (फॉरेंसिक साइंस) के ज्ञान व शिक्षण-प्रशिक्षण का अभाव ऐसा प्रमुख कारण है जिसका निदान आवश्यक है।

पिछले वर्षों में फोरेंसिक साइंस (न्याय वैद्यक विज्ञान) में हुई प्रगति पुलिस कार्यों को काफी सरल बना दिया है। इसकी सहायता से अपराधियों का शीघ्रता से पता लगाना और अपराध के भिन्न-भिन्न पहलुओं को सुलझाना आसान हो गया है।

अपराध के घटित होने से लेकर उसके न्यायालय में विचारण के लिए प्रस्तुत करने तक की प्रक्रिया के सही पालन के लिए विभिन्न अधिनियमों, नियमों आदि के अंतर्गत पुलिस के कर्त्तव्य तथा विधि विज्ञान आदि पुस्तक के प्रमुख विषय वस्तु हैं। पुस्तक पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पं. गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार प्रदान किया गया है।

पुस्तक की एक विशेषत यह भी है कि यह पुलिस बल में प्रशिक्षण लेने वाले अभ्यर्थियों के पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पुस्तक को बारह भागों में बांटा गया है यथा विधि विज्ञान का इतिहास अनुसंधान में विज्ञान का योगदान, प्रयोगशालाएं एवं संस्थान, राजस्थान में विधि विज्ञान प्रयोगशाला एवं देश की विभिन्न प्रयोगशालाएं, घटना स्थल, भौतिक साक्ष्य मैडिकल ज्यूरिसप्रूडेंस, शरीर के प्रधान अंग और उनके कार्य, मृत्यु, घाव व चोट के प्रकार, साक्ष्य और

[शेष पृष्ठ 110 पर]

संस्कृति के दर्पण में

लेखक : डॉ. नरेश कुमार

प्रकाशन : इण्डो-विजन प्रा. लि., II-ए-220, नेहरूनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)

मूल्य : 50 रुपए

"संस्कृति के दर्पण में" नामक पुस्तक में डॉ. नरेश कुमार ने भाषा संस्कृति, नैतिकता तथा लोकोपयोगी 26 निबन्धों का संकलन प्रस्तुत किया है।

सांस्कृतिक मूल्यों का संबंध और उनकी व्यापकता का प्रश्न राष्ट्र की सीमाओं के साथ जुड़ा है और उन मूल्यों के प्रति सजगता एवं प्रतिबद्धता हमारी सांस्कृतिक चेतना का मापदंड है। अपनी विशालता में भारतीय संस्कृति के उन्नायकों ने ईसाइयों के पवित्र ग्रंथ, 'बाइबिल' इस्लाम के पावन ग्रंथ 'कुरान' के प्रति अपनी सद्भावना व्यक्त की है। लेखक की यह पृष्ठ भूमि आज के प्रदूषित साम्प्रदायिक परिवेश के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य करेगी।

धर्म-निष्ठता ही भारतीय संस्कृति का प्राण है। इस पुस्तक के निबन्धों में भारतीय संस्कृति में संस्कारों को प्रमुख स्थान दिया गया है। सांस्कृतिक मूल्यों का संबंध और उनकी व्यापकता का प्रश्न राष्ट्र की सांप्रदायिक एकता के साथ जुड़ा है जो "जीओ और जीने दो" के सिद्धान्त पर जो आज के युग की आवश्यकता है लेखक ने ध्यानाकर्षण किया है। परम्पराएं ही संस्कृति की निश्चित पहचान है। वर्तमान युग में निश्चित रूप से चारित्रिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। आज का युवा वर्ग भारतीय परम्पराओं के अनुसार जीवन व्यतीत न करके कई कुप्रथाओं का शिकार है। मुक्ति के आधार हमारी भारतीय संस्कृति में निहित हैं जिनका अवलोकन इस पुस्तक में कराया गया है। जैसे भारतीय संस्कृति में सदाचार संपन्नता को ही सबसे बड़ी कीर्ति माना गया है, इस तथ्य पर विशेष बल पुस्तक में दिया गया है।

परिवार के स्वास्थ्य और कल्याण में माता, पुत्री, बहन और पत्नी के रूप में नारी की भूमिका का विशिष्ट महत्त्व है। आधुनिक काल में नारी की जिम्मेदारियां पुराने जमाने की अपेक्षा अधिक बढ़ गई हैं। पुरानी परम्पराओं व संस्कृति के मापदंडों को सम-सामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का यह एक अच्छा प्रयास है।

—शान्ति कुमार स्याल

ई-43, सै. 15, नोएडा-201301

आदेश-अनुदेश

राजभाषा नीति

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नई दिल्ली दिनांक 6 अप्रैल, 1992

का पत्र संख्या 12024/2/92–रा. भा. (ख-2)

कार्यालय ज्ञापन

विषय : संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के चौथे खण्ड में की गई सिफारिशें राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए जांच बिन्दुओं को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाना

उपर्युक्त विषय पर अधोहस्ताक्षरी को यह कहने का निदेश हुआ है कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट के चतुर्थ खंड में यह सिफारिश की है कि केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों एवं उनके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि में राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान, राजभाषा अधिनियम 1963 और उसके अधीन बनाये गये नियमों के अनुबंधों के समुचित अनुपालन के लिए जांच बिंदु बनाने के संबंध में अपनी जिम्मेदारी का निष्ठापूर्वक पालन करें और जांच बिंदुओं को प्रभावशाली ढंग से स्थापित करें। समिति की यह सिफारिश मानते हुए सरकार का निर्णय इस विभाग के संकल्प संख्या 12019/10/91-रा.भा. (भा.) दिनांक 28-1-1992 द्वारा सभी मंत्रालयों/विभागों को सूचित किया जा चुका है।

2. जांच बिंदुओं को प्रभावी ढंग से स्थापित किए जाने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग का कार्यालय ज्ञापन 20014/5/87–रा.भा. (ख-2) दिनांक 10-9-1987 जारी करते हुए सभी मंत्रालयों/विभागों से अनुरोध किया गया था कि वे राजभाषा नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कराने के उद्देश्य से जांच बिंदुओं को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाए।

3. मंत्रालयों/विभागों से संसदीय राजभाषा समिति की उक्त सिफारिश के परिप्रेक्ष्य में पुनः अनुरोध है कि वे राजभाषा नियमों की अनुपालना सुनिश्चित करने एवं हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने हेतु निम्नलिखित जांच बिंदु स्थापित करें:

1. सामान्य आदेश तथा अन्य कागज आदि को अनिवार्य रूप से द्विभाषी रूप में जारी करना

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित, 1967) की धारा 3(3) में उल्लेखित सभी दस्तावेज आदि हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी होने चाहिए। इसके लिए

हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि मसौदे पर तब तक हस्ताक्षर न किए जाए जब तक वांछित कागजात द्विभाषी रूप से तैयार न हों। इसके साथ ही उस अनुभाग को जहां दस्तावेज साइक्लोस्टाइल किए जाते हैं, जांच बिंदु बना दिया जाए और ऐसे दस्तावेज तभी साइक्लोस्टाइल किए जाए तब उनका हिंदी/अंग्रेजी रूपांतर भी साथ भेजा गया हो। साथ ही जो अनुभाग परिपत्रों आदि के प्रेषण का काम करता है, वह यह सुनिश्चित करे कि सभी प्रकार के दस्तावेज साथ-साथ हिंदी में भी जारी हो रहे हैं। भेजते समय यह ध्यान रखें कि हिंदी रूपांतर अंग्रेजी रूपांतर के उपर/पहले रखा जाए।

2. हिन्दी में प्राप्त पत्रों आदि के उत्तर हिन्दी में देना

जिस अधिकारी के हस्ताक्षर से कोई पत्रादि जारी होता है, स्वयं उसकी यह जिम्मेदारी होनी चाहिए कि यदि कोई पत्र हिंदी में प्राप्त हुआ है अथवा किसी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन पर यदि हिंदी में हस्ताक्षर किए गए हों तो उसका उत्तर हिंदी में ही दिया जाए।

3. "क" तथा "ख" क्षेत्रों की राज्य सरकारों को भेजे जाने वाले पत्र आदि

प्रेषण अनुभाग को जांच-बिंदु बनाकर उनसे यह सुनिश्चित करने के लिए कहा जाए कि वे "क" तथा "ख" क्षेत्रों की राज्य सरकारों को जाने वाले पत्रों आदि को प्रेषण के लिए तभी स्वीकार करें तब वे हिंदी में हों या उनका हिंदी अनुवाद साथ हो।

4. लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखना

प्रेषण अनुभाग को जांच-बिंदु बनाया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि "क" तथा "ख" क्षेत्रों को जाने वाले पत्रों के लिफाफों पर पते देवनागरी लिपि में ही लिखे जाएं।

5. देवनागरी टाइपराइटरों की खरीद

पूर्ति और निपटान महानिदेशालय अपने वहां टाइपराइटरों की खरीद संबंधी प्राप्त होने वाले इंडेंटों की जांच करके यह देखता है कि क्या देवनागरी टाइपराइटरों के लिए निर्धारित लक्ष्य का पालन हो रहा है। जो विभाग, कार्यालय या उपक्रम अपने टाइपराइटरों की खरीद, पूर्ति तथा निपटान महानिदेशालय के मार्फत न करके सीधे ही करते हैं, उन्हें भी इस प्रकार के जांच-बिंदु बना लेने चाहिए। उनका जो अधिकांश टाइपराइटर खरीदने के लिए आर्डर देता है उसे भी यह देख लेना चाहिए कि क्या देवनागरी टाइपराइटरों के लिए निर्धारित लक्ष्य का पालन हो रहा है। उन्हें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जब तक देवनागरी टाइपराइटरों के लिए निर्धारित लक्ष्य पूरा नहीं होता तब तक रोमन टाइपराइटर न खरीदें जाएं।

6. फार्मों, कोड़ों, मैनुअल और गजट की सामग्री का द्विभाषी प्रकाशन

शहरी विकास मंत्रालय के अधीन भारत सरकार के प्रेस इस बात का ध्यान रखते हैं कि (क) भारत के गजट में छपने वाली अधिसूचनाएं, नियम, संकल्प तथा (ख) कोड, मैनुअल, फार्म तथा रजिस्टरों के शीर्ष आदि हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हो। जो सामग्री दोनों भाषाओं में नहीं भेजी जाती उसे मुद्रण निदेशालय संबंधित विभाग को वापस कर देता है। इस प्रकार के जांच-बिंदु भारत सरकार के अन्य सभी मंत्रालयों/विभागों तथा इनके संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों आदि के अधीन स्थापित प्रेसों में भी बनाये जाने चाहिये जिससे ऐसी सामग्री केवल अंग्रेजी में न छपे। गैर सरकारी प्रेसों से छपाई जाने वाली सामग्री पर भी इसी तरह का जांच बिंदु स्थापित किया जाये।

7. रबड़ की मोहरें, नाम पट्ट, सूचना पट्ट आदि द्विभाषी रूप में बनाना

जो अनुभाग इन वस्तुओं को तैयार कराने का काम देखता है, उसके प्रभारी अधिकारी की जिम्मेदारी होनी चाहिये कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 में उल्लिखित वस्तुएं हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप में (और यथावश्यक क्षेत्रीय भाषा में भी) तैयार कराई जाएं।

8. सेवा मंजी में प्रविष्टियां

जिस अनुभाग में कर्मचारियों की सर्विस बुकों में प्रविष्टियां करने का काम होता है उसके प्रभारी अधिकारी की यह जिम्मेदारी होनी चाहियें कि "क" तथा "ख" क्षेत्रों में काम करने वाले अधिकारियों /कर्मचारियों की सर्विस बुकों में की गई प्रविष्टियां हिन्दी में की जाएं। इस प्रकार की प्रविष्टियां "ग" क्षेत्र में यथा संभव हिंदी में की जाएं। इस बात की पड़ताल सर्विस बुक में प्रविष्टि करते समय/उस पर हस्ताक्षर करते समय कर ली जाए।

9. सामान्य जिम्मेदारी

राजभाषा अधिनियम और उसके अधीन बनाये गये नियमों के अनुसार जो पत्र परिपत्र आदि हिन्दी में या हिन्दी और अंग्रेजी में जारी होने चाहिये या जो प्रलेख हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किये गये हों, वे उसी रूप में जारी होते हैं, यह देखने की जिम्मेदारी पत्र या प्रलेख पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की है। अतः हस्ताक्षर करने से पूर्व ऐसे अधिकारी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिये कि ऐसे पत्र/परिपत्र/प्रलेख आदि हिन्दी में या द्विभाषी रूप में जारी किए जाएं।

10. मंत्रालयों/विभागों से यह भी अनुरोध है कि उपर्युक्त जानकारी अनुपालनार्थ अपने सभी सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि के ध्यान में ला दें। इस संदर्भ में जारी किये गये निदेशों की प्रतियां इस विभाग को भी भिजवाएं।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

नई दिल्ली, का दिनांक 6 अप्रैल, 1992

का पत्र संख्या 12024/2/92--रा भा (ख)-2

कार्यालय ज्ञापन

विषय :--संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के चौथे खण्ड में की गई सिफारिशें राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित कराना

उपर्युक्त विषय पर अधोहस्ताक्षरी को यह कहने का निदेश हुआ है कि संसदीय राजभाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट के चतुर्थ खण्ड में यह सिफारिश की है कि मंत्रालयों/विभागों एवं उनके सम्बद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि में राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) का शतप्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कराया जाये और इसके लिये प्रतिवेदन के पहले खण्ड में की गई तत्सम्बन्धी सुविधाओं के बारे में सिफारिशों पर और राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार अधिकारियों, कर्मचारियों की नियुक्ति करने के बारे में के बारे में शीघ्र कार्रवाई की जाए। समिति की यह सिफारिश मानते हुए सरकार का निर्णय इस विभाग के संकल्प संख्या 12019/10/91रा.भा. (भा.) दिनांक 28-1-1992 द्वारा सभी मंत्रालयों/विभागों आदि को सूचित किया जा चुका है।

2. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग का कार्यालय ज्ञापन संख्या 12024/10/90-रा.भा. (ख-2) दिनांक 26 जून, 21990 जारी करते हुए सभी मंत्रालयों/विभागों आदि से अनुरोध किया गया था कि वे धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में, अर्थात् हिन्दी और अंग्रेजी में साथ-साथ जारी करें।

3. संसदीय राजभाषा समिति की उक्त सिफारिश के परिप्रेक्ष्य में सभी मंत्रालयों/विभागों से पुनः अनुरोध है कि वे राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) का अनुपालन सुनिश्चित करें। धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किये जाने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में साथ-साथ ही जारी किये जायें और जारी कराते समय यह ध्यान रखा जाये कि हिन्दी रूपान्तर अंग्रेजी रूपान्तर के ऊपर/पहले रहे। धारा 3(2) के अन्तर्गत जारी होने वाले दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे दस्तावेज द्विभाषी रूप में ही तैयार किये गये हैं, जारी किये जा रहे हैं।

4. मंत्रालयों/विभागों से यह भी अनुरोध है कि उपर्युक्त जानकारी अनुपालनार्थ अपने सभी सम्बद्ध अधीनस्थ कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों आदि के ध्यान में ला दें। इस संदर्भ में जारी किये गये निदेशों की प्रतियां इस विभाग को भी भिजवाएं।

गृह मंत्रालय--राजभाषा विभाग के दि. 26 जून 1990 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12224/10/90 रा. भा. (छ-2)

विषय :--राजभाषा अधिनियम, 1963 को धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित करना

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों तथा उनके संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, उपक्रमों आदि के लिए यह सांविधिक अपेक्षा है कि वे राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में यानि हिन्दी और अंग्रेजी में साथ-साथ जारी करें। परन्तु देखने में आया है कि इस अपेक्षा की की ओर बार-बार ध्यान दिलाए जाने पर भी उल्लिखित कागजात कई कार्यालयों द्वारा केवल अंग्रेजी में ही जारी किए जा रहे हैं लाइसेंस, परमिट करार, संविदाएं हिन्दी में भी तैयार होनी अनिवार्य हैं। कुछ मामलों में इस तरह के कागजात का हिन्दी रूपान्तर इतनी देर से जारी किया जाता है कि वह निरर्थक हो जाता है। इनमें से सामान्य आदेशों और परिपत्रों को तो अन्य मन्त्रालयों विभागों द्वारा और आगे परिचालित किया जाना होता है और यदि उन्हें इसका हिन्दी रूपाँतर साथ-साथ नहीं मिलता तो उन्हें हिन्दी अनुवाद स्वयं कराना पड़ता है। ऐसी स्थिति में जहां एक ओर समय और श्रम का दुरूपयोग होता है वहीं दूसरी ओर अनुवाद की प्रमाणिकता और एकरूपता भी नहीं रह पाती, वस्तुतः इस तरह के सभी कागजात मूल मंत्रालय/विभागों द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी में एक साथ जारी किए जाने अपेक्षित हैं।

अतः सभी मंत्रालयों/विभागों आदि से अनुरोध है कि वे राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में एक साथ जारी करें और जारी कराते समय यह ध्यान रखा जाए कि हिन्दी रूपान्तर, अंग्रेजी रूपान्तर के ऊपर/पहले रहे।

परिपत्र सं 8/92

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, लोकनायक भवन, खान मार्किट, नई दिल्ली–110003 के दिनांक 19-6-1992 का०का०ज्ञा० संख्या 14012/6/92–रा. भा. (ग)

कार्यालय ज्ञापन

विषय : हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों के अनुपात को पूरा करने के संबंध में

राजभाषा विभाग से प्रतिवर्ष राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों एवं देवनागरी टाइपराइटरों के अनुपात का निर्धारण किया जाता है और इस संबंध में कार्यालय ज्ञापन जारी करते हुए सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों से अनुरोध किया जाता है कि वे दिए हुए लक्ष्य के अनुसार कार्रवाई करें। इस संदर्भ में वर्ष 1992–93 के लिए राजभाषा विभाग से कार्यालय ज्ञापन संख्या 14012/6/92—रा. भा. (ग) दिनांक 12-2-92 को जारी किया गया है जिसमें उपर्युक्त विषय पर अनुपात निम्न प्रकार निर्धारित किये गए हैं :—

(क) "क" क्षेत्र में स्थित मंत्रालयों/विभागों/ के मुख्यालयों में	45 %
(ख) "क" क्षेत्र में स्थित अन्य कार्यालयों में	75 %
(ग) "ख" क्षेत्र में स्थित सभी कार्यालयों में	45 %
(घ) "ग" क्षेत्र में स्थित सभी कार्यालयों में	18 %

2. हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों के अनुपात के बारे में जो अन्य निदेश हैं उनके बारे में कहा गया है कि अन्य निदेश वही रहेंगे जो इस विभाग के कार्यालय ज्ञापन संख्या 14012/12/89—रा. भा. (ग) दिनांक 9 फरवरी, 1990 में दिए गए हैं। उसमें कहा गया है कि जब तक हिन्दी आशुलिपि जानने वाले आशुलिपिकों किसी कार्यालय में उपर्युक्त अनुपात के अनुसार नहीं हो जाते तब तक नई भर्ती में यदि हिन्दी आशुलिपि जानने वाले उम्मीदवार उपलब्ध हों तो केवल हिन्दी आशुलिपि के माध्यम से चुने हुए उम्मीदवारों को ही आशुलिपि पद पर नियुक्त किया जाए। यदि किसी कार्यालय में निर्धारित लक्ष्य से अधिक हिंन्दी में प्रशिक्षित आशुलिपिकों की आवश्यकता हो तो इस अनुपात से अधिक भी हिंन्दी आशुलिपि जानने वाले आशुलिपिकों को सीधी भर्ती द्वारा नियुक्त किया जा सकता है। उपर्युक्त निर्धारित अनुपात पूरा हो जाने के बाद भी अंग्रेजी आशुलिपिकों को हिन्दी आशुलिपि का और अंग्रेजी टाइपिस्टों को हिन्दी टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जाता रहेगा।

3. परन्तु देखने में यह आया है कि भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों तथा कार्यालयों में राजभाषा विभाग के उपर्युक्त आदेशों की अवहेलना करने और उनके द्वारा लगातार अंग्रेजी के आशुलिपिकों और टाइपिस्टों की भर्ती किए जाने की ओर समय-समय पर विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के द्वारा भी विभाग का ध्यान आकर्षित किया गया है। अतः सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों से अनुरोध है कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों की भर्ती की जाए और जब तक हिन्दी आशुलिपिकों और टाइपिस्टों का निर्धारित प्रतिशत पूरा न हो जाए तब तक किसी भी स्थिति में अंग्रेजी के आशुलिपिक/टाइपिस्ट भर्ती न किए जाएं। यदि अंग्रेजी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों की आवश्यकता फिर भी पड़े तो विभाग के 23 मार्च, 1976 के कार्यालय ज्ञापन सं. ई—11013/15/73/रा. भा. (ग) के अनुसार हिन्दी आशुलिपिकों टाइपिस्टों को भी अंग्रेजी आशुलिपि टाइपिंग का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। किन्तु यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हिन्दी आशुलिपिकों/टाइपिस्टों का निर्धारित प्रतिशत पूरा किया जाए और नई भर्ती के समय इसका समुचित ध्यान रखा जाए। यही नहीं, जो अधिकारी इन आदेशों का उल्लंघन करते हैं उनके विरुद्ध विभाग के 22 अगस्त, 1989 के कार्यालय ज्ञापन सं. 12019/3/89—रा. भा. (भा.) के अनुसार कार्रवाई की जाए।

इस संबंध में की गई कार्रवाई से राजभाषा विभाग को भी अवगत किया जाए।

[पृष्ठ 106 का शेष]
उनका अध्ययन (जैसे पदचिन्ह अंगुलि चिह्न, गोदन चिह्न, जाली नोट व सिक्के, मिट्टी, कांच, पेंट, कपड़े, टायर की रगड़, विवाद ग्रस्त दस्तावेज, नशीले व विस्फोटक पदार्थ आदि तथा अनुसंधान में सहायक) फोटोग्राफी, किरणें सूक्ष्म दर्शक यंत्र, झूठ दर्शक यंत्र, वायरलैस, कम्प्यूटर व अनुसंधान कर्ता के लिए नवीनतम खोजें आदि। अन्त में दो परिशिष्टों में अनुसंधान पेटी की सामग्री व देश की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भी विवरण है।

अपराध अनुसंधान की आधुनिक तकनीक व विधि विज्ञान में पारंगत होना नितांत आवश्यक है। इसके ज्ञान व शिक्षण प्रशिक्षण का भी अभाव सा है। ऐसी पुस्तकें अत्यंत लाभकारी है, जिससे पुलिस बलों को अपराध विधि विज्ञान की शिक्षा मिले पुस्तक से पुलिस अधिकारियों एवं अनुसंधानकर्ताओं को अनेक वैज्ञानिक विषयों की जानकारी मिलेगी।

प्रस्तुत ग्रंथ के रचनाकार भी काफी अनुभवी एवं जाने-माने हैं। श्री शिवचरण मंत्री को कई दशकों का अध्यापन एवं प्रशासनिक अनुभव है। उनके अनेक लेख-बाल कहानियां, अनूदित कृतियां व अन्य रचनाएं हैं। डॉ. आशीष वोरा भी अनेक वर्षों से चिकित्सकीय व्यवसाय से जुड़े हैं।

पुस्तक की साज-सज्जा काफी उत्तम है।

—माला गुप्ता
डी 1/ए/115, जनकपुरी दिल्ली-58

आकाशवाणी राजकोट में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए पुलिस आयुक्त राजकोट
श्री सी. पी. सिंह द्वीप प्रज्ज्वलित करते हुए

आकाशवाणी बीकानेर में आयोजित हिंदी कार्यशाला में बोलते हुए मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) वेद शर्मा
तथा मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध हिंदी उपन्यासकार श्री यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र'
पद पर आसीन

हिन्दी भाषा

"हिन्दी भाषा को एक ऐसा माध्यम बनना है ताकि देश की सभी भाषाओं का साहित्य हिन्दी में मिल सके। इस दृष्टि से अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का हिन्दी में अधिक से अधिक अनुवाद किया जाना चाहिए। .... दूसरी बात यह कि हिन्दी भाषा को अपनी बोलियों से भी जुड़े रहना है ...... मेरा दृढ़ विश्वास है कि भाषा लोगों के बीच फलती-फूलती है। भाषा ऐसी होनी चाहिए जो आसानी से लोगों की जुबान पर चढ़ सके तथा बोलने को यह अपनी लगे।"

—डॉ० शंकर दयाल शर्मा

—केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के रजत जयंती समारोह में
19 अप्रैल, 1991

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के लिए डॉ० गुरदयाल बजाज, उप-संपादक द्वारा नई दिल्ली - 110003 से प्रकाशित तथा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित, 1992.